



जीवन संदेश

शशि त्यागी की स्मृतियों का संकलन

संपादन

अर्चना कुमार, गैरी वर्थिंगटन

प्रकाश त्यागी, आर.पी.धीर



12.07.1947

14.11.2020

जीवन संदेश

शशि त्यागी की स्मृतियों का संकलन

2021

संपादन

अर्चना कुमार

गैरी वर्थिंगटन

प्रकाश त्यागी

आर.पी.धीर

प्रकाशन

ग्रामीण विकास विज्ञान समिति (ग्राविस)

3/437, 458 मिल्क मेन कॉलोनी, पाल रोड़

जोधपुर – 342 008, राजस्थान, भारत

फ़ोन : 91 291 2785317, 2785 116

ईमेल : email@gravis.org.in

www.gravis.org.in

“दुनिया में जो बदलाव आप देखना चाहते हैं, वो खुद बनें।”

महात्मा गाँधी

प्राक्कथन

शशि जी जैसे विशाल व्यक्तित्व का वर्णन कुछ पृष्ठों में करना संभव नहीं है। शशि जी हजारों लोगो के दिलो से जुड़ी हुई थी और उनका जीवन अद्भुत स्मृतियों से भरपूर रहा। लोगो के दिलो पर इतना गहरा प्रभाव छोड़ने वाले लोग कम ही होते हैं और वह अपने पीछे अपनी स्मृतियाँ और एक विरासत छोड़ जाते हैं।

14 नवम्बर, 2020 को शशि जी के निधन के पश्चात उनके परिवार व मित्रों ने यह सोचा कि उनके अविस्मरणीय जीवन के वृत्तान्तों को संकलित करना आवश्यक है। अतः यह संकलन किया गया और स्मृति लेख साझा किये जा रहे हैं। ये स्मृति लेख 25 से अधिक देशो से प्राप्त हुये हैं जिन्हें विभिन्न पृष्ठभूमियों से जुड़े लोगो ने लिखा है जिनमें परिवार, निकट के मित्र, सहकर्मी, सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधि, सर्वोदय व गांधीवादी कार्यकर्ता, युवा छात्र व शोधकर्ता तथा ग्रामीण जन प्रतिनिधि व आम लोग सम्मिलित हैं।

सभी लेखो के मूल भाव को यथावत रखने का पूर्ण प्रयास किया गया है। फिर भी पुस्तक की पृष्ठ सीमा को देखते हुये कुछ अंश सावधानीपूर्वक सम्पादित किये गये हैं। लेख शशि जी के जीवन के प्रत्यक्ष अनुभवों से जुड़े हुये हैं। पुस्तक में शशि जी का जीवन परिचय, 150 स्मृति लेख और एक फोटो संकलन है। प्रकाशन हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषाओं में विकसित किया गया है जो दोनो भाषा के पाठक समूहों के लिये उपयोगी होगा।

शशि जी की स्मृतियों को संकलित करने का यह अनुभव उनके जीवन को और गहनता से समझने का एक अवसर था। वो एक पूर्णतया निःस्वार्थ महिला थीं जिन्होंने बिना किसी विश्राम के अपना सम्पूर्ण जीवन मानवता की सेवा को समर्पित किया। हम आशा करते हैं कि यह संकलन विश्व के कई भागों तक पहुँच सके और प्रेम और मानवता को बढ़ाने में प्रेरणादायक हो।

इस प्रकाशन को संकलित करना हमारे लिए सम्मान और गौरव का विषय रहा।

अर्चना कुमार

गैरी वर्थिंगटन

प्रकाश त्यागी

आर.पी.धीर

अनुक्रमणिका

1. जीवन परिचय.....	09
2. स्मृति लेख	17
3. फोटो संकलन.....	177
4. योगदानकर्ताओं की सूची	205
5. अंतिम शब्द	213

जीवन परिचय

प्रेम, करूणा और सेवा की विरासत

मृदभाषी, सरल, साहसी, कर्मठ और सदा मुस्कुराने वाली शशि जी को उनके मित्र एवं सहकर्मी शशि बहिन या बहिन जी जैसे नामों से संबोधित करते थे। लखनऊ, उत्तर प्रदेश में सन् 1947 में जन्मी, वह अपने माता - पिता की चौथी संतान थीं। जब वह 3 वर्ष की थीं, उनकी माता का स्वर्गवास हो गया। उनके पिता जी भारतीय सेना में लेखाकार थे, व उनकी नियुक्ति अलग - अलग स्थानों पर होने के कारण शशि जी का बचपन भी कई स्थानों पर बीता। और अंत में वह मेरठ, अपने गृह नगर में बस गईं।

बचपन से ही शशि जी बहुत उत्सुक और मेहनती छात्रा थीं। उनका बचपन बहुत सी अच्छी यादों से परिपूर्ण रहा। जब वह बहुत छोटी थीं तभी उनकी दो बड़ी बहनों का विवाह हो गया था। उन्होंने अपनी पढ़ाई अपने भाई और छोटी बहिन के साथ जारी रखी। उनके पिताजी बहुत स्नेह करने वाले किन्तु अनुशासन प्रिय व्यक्ति थे। वह अपने बच्चों की हर आवश्यकता का ख्याल संवेदनशीलता के साथ रखते। शशि जी उच्च शिक्षा के लिए आगे बढ़ती रहीं और सन् 1969 तक उन्होंने दो डिग्रीयाँ प्राप्त कीं।

सन् 1969 में शशि जी का विवाह लक्ष्मी चंद त्यागी जी से हुआ। वह एक सम्पन्न कृषि परिवार से, उच्च शिक्षा प्राप्त, सामाजिक उद्धार के लिए प्रेरित युवक थे। गाँधी विचारधारा से प्रेरित त्यागी जी उस समय विनोबा भावे के भूदान आंदोलन से जुड़े थे। विवाह पश्चात शशि जी अपनी शहरी जीवनशैली को छोड़ अपने पति के साथ ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में रहने लगीं। विवाह के तुरंत बाद दोनों बिहार में जय प्रकाश नारायण के नेतृत्व में चल रहे अकाल राहत कार्यक्रम में कार्य करने लगे। वह लम्बी पद यात्रा कर ग्रामीणों के लिए अथक परिश्रम करते। इस तरह शशि जी का कठिन और त्याग से भरपूर सामाजिक जीवन शुरू हुआ।

सन् 1970 में शशि जी और त्यागी जी, श्री प्रेम भाई और डॉ. रागिनी प्रेम के नेतृत्व में चल रहे बनवासी सेवा आश्रम से जुड़े। यहाँ शशि जी ने करीब 9 साल लगातार, अत्यंत गरीबी में रह रहे आदिवासियों की सेवा की। शशि जी ने अपनी शैक्षणित योग्यता का उपयोग ग्रामीण बच्चों को पढ़ाने के लिए किया और कई वर्षों तक बनवासी सेवा आश्रम में अध्यापक के रूप में कार्य किया। यहाँ आश्रम में जीवन सीमित सुविधाओं के साथ बहुत सरल, किन्तु सामाजिक संबंधों और विचारों के आदान - प्रदान से भरपूर था। बनवासी सेवा आश्रम में कार्यरत शशि

जीवन संदेश

जी और त्यागी जी का जीवन बहुत कठिनाई में बीता, उन्होंने अपने आप को पूरी तरह गरीबों की सेवा में समर्पित कर दिया। बनवासी सेवा आश्रम में रहते हुए ही वह दो बच्चों - आभा और प्रकाश के माता - पिता बने।

सन् 1979 में आचार्य जे.बी. कृपलानी के कहने पर शशि जी और त्यागी जी राजस्थान, एक नए संगठन की शुरुआत करने गए। इस नए स्थान से वे पूर्णतया अनभिज्ञ थे। यहाँ जलवायु और भौगोलिक पृष्ठभूमि बहुत कठिन थी। इसी समय त्यागी जी को उत्तराखण्ड (जो उस समय उत्तर प्रदेश में था) में ब्लॉक स्तर पर विकास नियोजन की जिम्मेदारी दी गयी। त्यागी जी ने उत्तराखण्ड में कार्यभार संभाला और शशि जी जोधपुर, राजस्थान अपने दो छोटे बच्चों के साथ, एक नए जीवन, नए संगठन की शुरुआत करने पहुँची। त्यागी जी भी कुछ समय पश्चात वहाँ पहुँचे। जोधपुर में एक साल वह श्रीमती छगन बहिन जो एक प्रख्यात समाज सेविका थीं, के मकान में किराये पर रहे। उनके कुछ पुराने सहकर्मी - मानिक भाई, रमाशंकर भाई और रूद्र भाई ने उनके साथ मिलकर ग्राविस की स्थापना की। नई जगह और नए लोग होते हुए भी सभी ने बहुत धैर्यपूर्वक स्थिति और जरूरतों को समझते हुए, हिम्मत, आत्मविश्वास और आस्था के साथ बदलाव की शुरुआत की। रेगिस्तान और धोरो के बीच पहले ग्राविस केन्द्र की स्थापना जेलू - गगाड़ी गाँव में 1980 में की गई।

महात्मा गांधी और सर्वोदय विचारधारा से प्रभावित शशि जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन गरीबों और वंचितों को समर्पित कर दिया। वह समुदाय के समग्र विकास में विश्वास करती थीं, जहाँ लिंग, जाति और धर्म के नाम पर भेदभाव न हो। लोगो और उनकी जरूरतों को जानने के लिए वह पैदल ही दूर गाँव तक चली जातीं। ग्राविस की तरफ से शशि जी ने स्वास्थ्य, शिक्षा, जल, कृषि, महिला सशक्तिकरण, स्वच्छता, पोषण और मानवाधिकार के लिए पहल की। 1980 के दशक में ग्राविस ने जोधपुर जिले के 20 गाँवों में काम की शुरुआत की। वर्तमान समय में ग्राविस राजस्थान, उत्तराखण्ड और उत्तर प्रदेश के 10 जिलों के 1500 गाँवों में कार्यरत है।

गाँधीवादी विचारधारा का “सर्वोदय” - सबका विकास, किन्तु पिछड़ों का पहले - ग्राविस की नींव है। तदनुसार ग्राविस किसी भी आर्थिक स्थिति, जाति और धर्म के पुरुष, स्त्री और बच्चों के सामुहिक उत्थान के लिए कार्यरत है। आधुनिकता में बदलाव के साथ यह विचारधारा और भी उचित लगती है क्योंकि भारतीय समाज की विसंगतियाँ निरन्तर बढ़ती जा रही हैं। ग्रामीण समुदाय के सशक्तिकरण के लिए काम करते हुए ग्राविस एक और गाँधीवादी

विचारधारा “ग्राम स्वराज्य”, अथवा ग्राम स्वशासन का पालन करता है। ग्राविस ग्रामीण समुदाय के पुर्नवास, गाँव के स्वामित्व को सक्षम करना और अपने पर्यावरण पर नियंत्रण के लिए कार्यरत है। ग्राविस ग्राम स्वराज्य के विचार को एकीकृत विकास के व्यवहारिक दर्शन के रूप में लोगों के मन में बैठाता है। सभी गतिविधियों में लोगों की सहभागिता और प्रतिबद्धता को सुनिश्चित किया जाता है। ग्राविस के द्वारा किए गए कार्यक्रम आवश्यकता आधारित और समुदाय संचालित होते हैं। ग्राविस ग्रामीण पुर्ननिर्माण में समग्र दर्शन को अपनाता है और एक सहायक और उत्प्रेरक की भूमिका निभाता है।

थार मरूस्थल के गरीब, पिछड़े और अधिकारहीन समुदाय खासकर महिलाएं, बच्चे और वृद्धों के लिए ग्राविस के कार्य केन्द्रित है। बच्चों के विकास, महिला सशक्तिकरण और लैंगिक न्याय के लिए ग्राविस बहुत प्रतिबद्ध है। इसलिए सभी गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी को सुनिश्चित किया जाता है। ग्राविस के मुख्य कार्य क्षेत्र हैं - शिक्षा को बढ़ावा देना, स्वास्थ्य की स्थिति को सुधारना, जल सुरक्षा, कृषि तथा जंगल विकास, क्षमता निर्माण और मानवाधिकार। किशोर स्वास्थ्य, स्वच्छता, शिशु स्वास्थ्य, पोषण, बालिकाओं की शिक्षा और जल संरक्षण जैसे सामाजिक विकास के मुद्दों पर भी संस्था कार्य करती है। थार मरूस्थल की श्रमिक आबादी का एक बहुत बड़ा हिस्सा, खान मजदूर हैं व उनके अधिकारों के लिए भी ग्राविस कार्यरत है। ग्राविस खान मजदूर और उनके परिवारों के लिए जागरूकता और शैक्षणिक गतिविधियों, सुरक्षा उपायों और कानूनी सहायता के लिए भी प्रयास करता है। समान विचारधारा के समूहों, संस्थानों, सरकारी संस्थाओं और व्यक्तियों के साथ उचित भागीदारी करने में संगठन विश्वास रखता है।

थार के मरूस्थलीय समुदाय के सशक्तिकरण के लिए ग्राविस ने शशि जी व त्यागी जी के नेतृत्व में निम्न गतिविधियों का आयोजन किया -

- वर्षा जल संचयन का विस्तार
- बच्चों के लिए विद्यालयों की स्थापना और उनको चलाना।
- स्वास्थ्य समस्याओं के निवारण हेतु कार्य करना और एक अस्पताल बनाना।
- ग्रामीण समुदाय को प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक मुद्दों पर प्रशिक्षित करना और उनकी क्षमता का निर्माण करना।
- स्वयं सहायता विकास के जरिये महिला सशक्तिकरण।
- जैविक कृषि, बीज विकास, पौधारोपण और फलोद्यानों का विकास।

जीवन संदेश

- पशुपालन में सहायता करना।
- अकाल राहत और उससे बचाव के उपाय बताना।
- गाँधीवादी विचारों का प्रचार करना।

ग्राविस ने शशि जी और त्यागी जी के नेतृत्व में निम्न उपलब्धियाँ हासिल की -

- 900 से ज्यादा ग्राम विकास समितियों का गठन, ग्रामीण समुदायों में नेतृत्व और आत्मनिर्भरता के विकास हेतु 100 से ज्यादा गाँवों में ग्राम कोष, महिलाओं के 2,000 से भी ज्यादा स्वयं सहायता समूहों का निर्माण किया गया। 300 ग्राम वृद्ध संगठन, 72 ग्राम शैक्षणिक समितियाँ, 500 ग्राम स्वास्थ्य समितियाँ और 42 ग्राम नेत्र चिकित्सा समितियों का निर्माण किया गया।
- ग्राविस ने जरूरतमंद बच्चों के लिए 100 से अधिक प्राथमिक विद्यालयों की शुरुआत की, जिसमें से 46 विद्यालय सरकार या ग्राम समितियों को सौंपे गये। इन विद्यालयों में 7,000 से भी ज्यादा बच्चे शिक्षारत हैं। विद्यालय के बच्चों को भोजन और स्वास्थ्य सेवाओं जैसी योजनाओं से जोड़ा गया है। ग्राविस विद्यालयों में बच्चों को पर्यावरण, स्वास्थ्य और स्वच्छता संबंधी जानकारी देने पर पुरजोर प्रयास किया जाता है।
- जल संचयन के लिए 7,500 से ज्यादा टांके (पीने के पानी के संचयन के लिए), 5,500 से ज्यादा खड़ीन (कृषि के लिए), 300 से ज्यादा तालाब और 600 से ज्यादा बेरियाँ (पानी के पानी के लिए) का निर्माण किया गया। इससे करीब 10 लाख लोगों को लाभ हुआ।
- 500 से ज्यादा बीज बैंक, 5,000 से ज्यादा फलों के बाग, 67 सामुदायिक जंगल, 483 प्रदर्शन फार्म, 67 चारा भण्डार, 963 कम्पोस्ट पिट्स और 2,400 हैक्टेयर चारागाह भूमि का निर्माण किया गया।
- संस्था ने समुदाय आधारित स्वास्थ्य गतिविधियों से 5,00,000 से अधिक लोगो को लाभान्वित किया। ग्राविस ने एक ग्रामीण अस्पताल का निर्माण कराया और 550 से ज्यादा ग्रामीण स्वास्थ्य कर्मियों को शिक्षित किया।
- 1,500 से ज्यादा गाँवों में ग्राविस ने स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियों का आयोजन किया जिनका लक्ष्य प्रजनन स्वास्थ्य, पोषण, नेत्र चिकित्सा, मलेरिया, टी.बी., एच.आई.वी/एड्स और खनन से जुड़ी फेफड़ों की बीमारी पर ध्यान देना था।

- फूड फॉर वर्क कार्यक्रम के अन्तर्गत 5,00,000 कार्यदिवस प्रति वर्ष रोजगार उत्पन्न करने के लिए आयोजित किए गए।
- आपातकालीन सूखे की स्थिति में पीने का पानी, खाद्य सामग्री और चारा 400 से भी ज्यादा गाँवों में पहुँचाया गया।

शशि जी और त्यागी जी के नेतृत्व में ग्राविस एक सम्मानित विकास संगठन और अग्रिम गाँधीवादी संस्था के रूप में विकसित हुआ। ग्राविस के कार्यों से ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले करीब 15 लाख लोग प्रभावित हुए। साथ ही ग्राविस ने कई दूसरी संस्थाओं को थार मरूस्थल और भारत के अन्य हिस्सों में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। पिछले कुछ वर्षों में ग्राविस ने कई सरकारी संस्थाओं को ग्रामीण क्षेत्रों में अपने विकास के कार्यक्रमों से अवगत कराया।

शशि जी ने कई अवसरों पर ग्रामीण पुनर्निर्माण और सामुदायिक विकास पर वक्तव्य दिए। उन्होंने कई युवा नेताओं और सामुदायिक नेताओं को प्रेरित और प्रशिक्षित किया।

सन् 2005 में त्यागी जी की किडनी खराब हो गई थी। उनकी जान बचाने के लिए शशि जी ने अपनी एक किडनी उन्हें दी किन्तु दुर्भाग्यवश त्यागी जी को बचाया न जा सका। शशि जी ने बहुत ही साहस के साथ इस चुनौती का सामना किया और अपने बेटे प्रकाश और सहकर्मियों जैसे - रोशन जी, राजेन्द्र जी और राम अवतार जी की मदद से ग्राविस का नेतृत्व संभाला। शशि जी की मेहनत के फलस्वरूप आज ग्राविस भारत की सबसे प्रतिष्ठित संस्थाओं में से है।

अपने सामाजिक जीवन काल में शशि जी कई संगठनों से अलग - अलग प्रकार से जुड़ी रही। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

- अध्यक्ष, साउथ एशिया पार्टनरशिप
- अध्यक्ष, राजस्थान वॉलेन्टरी हैल्थ एसोसियेशन
- उपाध्यक्ष, राजस्थान समग्र सेवा संघ
- सचिव व संस्थापक, ग्राविस
- सदस्य, समाज कल्याण बोर्ड
- सदस्य, काउंसिल फॉर पीपुल्स एक्शन एण्ड रूरल टेक्नोलॉजी बोर्ड (कपार्ट)
- सदस्य, इंटरनैशनल डवलपमेंट एक्सचेंज बोर्ड, यू.एस.ए.
- सलाहकार, ग्लोबल फंड फॉर वुमन, यू.एस.ए.

जीवन संदेश

- सलाहकार, ग्रांटमेकर्स विदआउट बोर्डर्स, यू.एस.ए.
- सदस्य, मरूधर विज्ञान संस्थान बोर्ड
- सदस्य, नवज्योति मनोविकास केन्द्र बोर्ड
- सदस्य, वॉलेन्टरी हैल्थ एसोसियेशन ऑफ इंडिया बोर्ड

शशि जी को उनके जीवनकाल में कई संगठनों ने पुरस्कृत किया। कुछ पुरस्कार निम्न हैं - जमनालाल बजाज पुरस्कार - 2017, अनादी - कमल पुरस्कार - वीहाई, इंडियन मर्चेन्ट चैम्बर पुरस्कार व रामकृष्ण जयदयाल डालमिया पुरस्कार। अपने लम्बे सामाजिक जीवन में शशि जी ने विश्व के 25 से अधिक देशों में जाकर अपने अनुभव बाँटे।

अपने निजी जीवन में शशि जी बहुत सरल थीं। उन्होंने आजीवन खादी के कपड़े पहने, न कभी कोई गहना पहना और न ही कोई पूंजी एकत्रित की। उनके जीवन का लक्ष्य गरीबों की सहायता, ग्राविस के लिए कार्य करना और सर्वोदय की विचारधारा का प्रचार करना था। उनका विश्वास था कि संवाद के जरिये अंतर को भरा जाए और लोगों को जोड़ा जाए। जीवन के अंतिम 2 सालों में शशि जी की सेहत खराब रहने लगी, पहले पेट की बीमारी और बाद में रक्त कैंसर। फिर भी उन्होंने सक्रिय रहने की पुरजोर कोशिश की और कोविड - 19 के लॉकडाउन में लोगों की भरपूर मदद की। अंततः 14 नवम्बर, 2020 की शाम 4 बजे दिवाली के दिन रक्त कैंसर के कारण उनका निधन हो गया। उनके निधन से ग्रामीण समुदायों तथा स्वैच्छिक संगठनों में, साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय मित्रों में गहरे शोक की अनुभूति रही। अपने पीछे शशि जी प्रेम, करुणा व सेवा की एक अनमोल विरासत छोड़ गई हैं।

आभा त्यागी मलिक

दीपक मलिक

वसुन्धरा त्यागी

स्मृति लेख

- 1 -

एक युग का अंत

थार की देवी श्रीमती शशि त्यागी को शत - शत नमन। इस महान शख्सियत के जीवन जीने की कला को, लिखने के लिए कागज छोटा पड़ेगा, स्याही कम पड़ेगी। थार मरुस्थल की महिलाओं के लिए उनका जीवन वरदान साबित हुआ। गरीबी, अभाव, अशिक्षा में जीने वाले हजारों परिवारों को नई जिंदगी देने वाली शशि बहिन जी को युगों - युगों तक याद किया जायेगा। सुदूर ढाणी में बैठे परिवार में आत्मीयता का प्यार घोलने वाली शशि बहिन जी एक बार जिस परिवार से मिली समझों वह परिवार अपना हो गया। ऐसा भाव रखने वाली थार की देवी का जाना उन परिवारों के लिए बहुत ही दुःखद व कभी नहीं भूलने वाली बात है। शशि बहिन जी की विशेषता थी कि जब भी वह किसी महिला या पुरुष से मिलती तो उनका सारा हाल चाल उनकी पीड़ा अपने जहन में उतार लेतीं, फिर समय - समय पर उसकी परेशानी के निवारण के प्रयास भी करतीं। इसी कारण आज उनके निधन की बात सुनकर ग्रामीण बिलख पड़ते हैं।

बालिका शिक्षा के लिए वे विशेष रुचि लेती थीं, उनका मानना था कि बेटी पढ़ी लिखी होनी चाहिए ताकि वह अपने परिवार को सही ढंग से चला सके, उसके स्वास्थ्य का पूरा ख्याल रख सके। थार के परिवारों की गरीबी कैसे दूर हो इसके लिए खेती, पशुपालन, हाथ का हुनर बढ़ाने आदि काम उन्होंने किए जिससे आर्थिक रूप से सैकड़ों परिवार सम्पन्न हुए। फिजूल खर्ची, मृत्यु भोज, बाल विवाह, नशा आदि विषयों पर चर्चा कर कई परिवारों को जागरूक किया तथा उन्हें मजबूत भी किया। मुझे करीब 15 वर्षों तक आपके सानिध्य का लाभ मिला। सहज, मृदुभाषी, निडरता पूर्ण अभिव्यक्ति की धनी, शशि बहिन जी से बहुत कुछ सीखा मैंने। बहिन जी ने अपने सहयोगी लक्ष्मीचंद त्यागी जी के सपनों को पूरा करने का पूरा प्रयास किया।

अखेराज खत्री, भारत

श्री अखेराज खत्री एक पत्रकार हैं व ग्राविस से जुड़े हुए हैं।

- 2 -

अमूल्य यादें

ऐसा कहा जाता है कि यह भगवान का आशीर्वाद होता है कि हमारे जीवन में कोई अद्भुत आए। मुझे ये अहसास होता है कि इसी आशीर्वाद के कारण मुझे ग्राविस जाने, शशि जी और त्यागी जी के साथ जीवन की नई शुरूआत करने का जो अवसर मिला, उसने मेरे कार्य संबंधी जीवन और व्यक्तिगत संबंधों को गहराई से छुआ।

सन् 1997 में मैंने यह निर्णय लिया कि मुझे राजस्थान में डॉक्टरेट के लिए शोध करनी है। बहुत से विचार, जुनून, उत्साह और प्रतिबद्धताओं के साथ मैं रेगिस्तान में अलग - अलग

जगहों पर गई और लोगो से मिली। असल में मेरे मन में मेरी शोध को लेकर कई सवाल और उत्सुकता थी। 1998 की बसंत ऋतु में मेरा शोध मुझे जोधपुर और ग्राविस ले आया। ग्राविस के शुरूआती दौरों और शशि जी और त्यागी जी से मुलाकातों में मुझे पुराने और नये विचार, आधुनिकता और परम्परा का अनोखा मेल देखने को मिला, जो सातत्य के दो छोर नहीं, बल्कि आसानी से एक साथ चलते हैं। जहाँ त्यागी जी एक परिपक्व और शांत व्यक्ति थे वहीं शशि जी जुनून और दया का संगम थीं। एक साहसी स्त्री जो सबको उत्साहित करती थीं। शशि जी और त्यागी जी के बीच सम्पूरकता किसी उपन्यास जैसी थी, जो मुझे बहुत प्रभावित करती थी।

हमने केवल मेरे शोध के क्षेत्र को ही नहीं बल्कि मूल रूप से बहुत सारे विषयों जैसे जीवन के निजी और व्यवसायिक क्षेत्र, सहानुभूति और दया की भावना, भेदभाव, सम्मान और निंदा और बहुत सारे पहलुओं का अपनी मुलाकातों में अनुभव किया। हमारी चर्चाओं के दौरान आज जिसे 'गाँधीवादी' विचार समझा जाता है, उसमें बहुत चुनौतियाँ मिली और मैंने अपनी कई भ्रांतियों को दूर किया। उनके विचारों में स्पष्टता उनके सच्चाई के साथ प्रयोगों, यथार्थवादी विचारों और वास्तविक चुनौतियों के कारण आयी, जिसका मैं बहुत सम्मान करती हूँ।

जो संबंध कार्य व अध्ययन को लेकर शुरू हुआ उसने जल्दी ही पारिवारिक रूप ले लिया। मेरे बच्चे, पति, सास - ससुर, यहाँ तक की मित्र भी ग्राविस से जुड़े विषयों पर बात करने लगे। हर किसी से निकट संबंध बनाने की शशि जी की क्षमता ने उन्हें और उनके विचारों को सबका चहेता बना दिया था। चाहे वो स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा बनाये गये मसाले हों या उनके द्वारा निर्मित कशीदाकारी बैग, अकाल पीड़ित लोगो की पीड़ा या सिलिकोसिस की समस्या, जिस ऊर्जा से वह सबके लिए कार्य करतीं, यह देखकर मैं आश्चर्य चकित रह जाती थी।

जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ तो यह एहसास होता है कि शशि जी के साथ मेरी यात्रा ने मेरे व्यवसायिक और निजी जीवन को नया आकार दिया। मैं ईश्वर की आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे शशि जी से मिलने का अवसर दिया। उनके साथ की गयी खोजों में दूसरो से ज्यादा मैंने खुद को समझा। वों एक सच्ची गुरु थीं, उनके विचार और सानिध्य को हमेशा याद रखूँगी।

अर्चना कुमार, भारत

डॉ. अर्चना कुमार दिल्ली विश्वविद्यालय में प्राध्यापिका हैं तथा शशि जी की करीबी मित्र रहीं।

शशि जी : एक महान व्यक्तित्व

माननीय श्रीमती शशि त्यागी जी, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, जल सुरक्षा आदि के क्षेत्र में फैले अपने सामाजिक कार्यों के साथ एक महान व्यक्तित्व थीं। वह एक बहुत ही विनम्र और साहसी महिला थीं, जो ग्राविस के माध्यम से विभिन्न सामाजिक सुधारों की प्रणेता रही हैं।

मुझे डीआरएस प्रायोजित एक शोध परियोजना के दौरान उनके नेतृत्व में ग्राविस के साथ काम करने का सौभाग्य मिला। यह परियोजना-‘जल संरक्षण व नमी संचयन के लिए रेतीले टीलों व मैदानों का भूमि सुधार’- पश्चिमी राजस्थान में जल संरक्षण के उद्देश्य से ग्राविस एवं वीरमाता जीजाबाई टेक्नोलॉजिकल इंस्टीट्यूट (VJTI), मुंबई के संयुक्त तत्वाधान में की गई थी।

मैं एक कार्यशाला के दौरान उनके शब्दों को याद करता हूँ। एक परियोजना के तहत “जल चेतना” कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें उन्होंने पानी की गंभीर कमी के कारण स्थानीय लोगों, विशेषकर महिलाओं के सामने आने वाली तरह-तरह की चुनौतियों को कार्यशाला में साझा किया। उनके शब्दों का हवाला देते हुए - घर में बड़ी महिलायें कहती हैं “हाथ कंधों तक मत धोना, पानी ज्यादा खर्च होगा” (बूढ़ी महिलाओं का कहना है कि कंधे तक हाथ धोने के लिए अधिक पानी का उपयोग किया जाएगा), महिलाएं तालों में पानी रखती थीं और उनके साथ चाबी ले जाती थीं। उन्होंने आगे बताया कि कैसे ग्राविस ने राजस्थान के 850 गाँवों में 50,000 रेगिस्तानी परिवारों के साथ काम करके लोगों की सेवा की है, जो 10 लाख से अधिक की आबादी तक पहुँच गया है।

जरूरतमंद लोगों की सेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को उनके कुशल नेतृत्व में ग्राविस द्वारा किये गये अतुलनीय काम से समझा जा सकता है और मुझे विश्वास है कि उनके आशीर्वाद के साथ उनकी अमूल्य विरासत को प्रकाश जी और उनके साथियों द्वारा आगे बढ़ाया जाएगा।

अभय कुमार एस वायल, भारत

डॉ. अभय कुमार एस. वायल मुम्बई में सिविल और पर्यावरण इंजीनियरिंग के प्रोफेसर हैं व ग्राविस के मित्र हैं।

जीवन के क्षण

उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले में स्थित बनवासी सेवा आश्रम में श्री प्रेम भाई ग्राम विकास, रचनात्मक कार्य, ग्राम स्वराज्य की दिशा में आदिवासियों के बीच कार्यरत थे। उस काम का आकर्षण शशि बहन और लक्ष्मी चंद भाई को भी था और उनके साथ 1969 में ये दोनों भी जुड़ गए। आते जाते वाराणसी में स्थित सर्व सेवा संघ, राजघाट में इनका रुकना होता था, तब से मेरा सम्पर्क इनसे था।

8 - 10 वर्ष बनवासी सेवा आश्रम में काम करने के बाद इन्होंने राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित माणकलाव में स्वतंत्र रूप से अपने काम की शुरूआत की और दूरस्थ पिछड़े, रेगिस्तानी गाँवों को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। ग्रामीण विकास विज्ञान समिति (ग्राविस) नामक संस्था बनाई। काम का विस्तार क्रमशः बढ़ता गया और इन्होंने जोधपुर में अपने निवास और कार्यालय की स्थापना की। जोधपुर के कई संभागों के सुदूर गाँवों के किसान, मजदूर, शोषित, वंचित समूह के बीच पीने व सिंचाई के पानी की व्यवस्था, खेती, स्थानीय ग्राम उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कार तथा जागरूकता के संदर्भ में शशि जी सघन काम करती रहीं।

श्री लक्ष्मी चंद भाई अपने कार्यकर्ता साथियों तथा ग्रामीणों के शिविरों के सिलसिले में मुझे बुलाते रहे, उनके जाने के बाद शशि बहन ने भी इस क्रम को जारी रखा। दोनों के साथ मेरी अच्छी आत्मीयता रही। इनके मन में गाँधीजी के अंतिम व्यक्ति के प्रति बहुत लगाव था और उसकी पीड़ा, दुःख, दर्द निवारण की प्राथमिकता इनके काम में सहज ही दिखाई देती थी। अपना सारा जीवन निष्ठापूर्वक समाज की सेवा और गाँधीजी के ग्राम स्वराज्य को साकार करने में शशि जी ने लगाया।

शशि बहन का स्वभाव बहुत प्रेमल, सेवाभावी तथा कार्यकर्ता साथी के सुख-दुख के प्रति संवेदनशील था। अरसे से मेरा सम्पर्क बना रहा, देशभर के सर्वोदय कार्यकर्ताओं से शशि बहन का जुड़ाव था और उनके सुख - दुख से भी वह जुड़ी रहती थीं। पिछले लम्बे अरसे से वह अस्वस्थ चल रही थी। फोन पर मेरा सम्पर्क बराबर बना रहता था। पिछले दिनों उन्होंने बताया कि स्वास्थ्य सुधर रहा है, खून बनने की प्रक्रिया चालू हुई है पर कमजोरी अधिक है। यह समाचार उनसे फोन पर यह सुनकर मन में सहज ही खुशी हुई और मैंने कहा - कमजोरी धीरे - धीरे दूर हो जायेगी।

देहावसान से तीन - चार दिन पहले सर्व सेवा संघ के आपसी विवाद के बारे में कुछ बातें बताते हुए चिंता व्यक्त करने लगीं तो मैंने उनसे निवेदन किया कृपया इस समय इन सब बातों की चिंता छोड़कर स्वास्थ्य पर ही ध्यान दें। इसी बीच अचानक उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर मैं स्तब्ध रह गया किंतु इस सत्य को तो स्वीकार करना ही था। इस दुःखद समाचार से देश भर में उनके फैले हुये व्यापक परिवार का शोकाकुल हो जाना स्वाभाविक था।

ईश्वर उनकी दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें तथा आत्मीय जनों को उनका विछोह सहन करने की शक्ति दें। जिस जन सेवा को वह समर्पित थीं उस काम को विकसित करना और व्यापक बनाना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

अमरनाथ भाई, भारत

श्री अमरनाथ भाई एक जाने माने सामाजिक कार्यकर्ता व गाँधीवादी चिंतक हैं।

- 5 -

प्रार्थना और स्मरण

आदरणीय श्रीमती शशि त्यागी जी सारस्वत गुणों से सम्पन्न, बिरले व्यक्तित्व की धनी व अपने सरल स्वभाव, सादगी पूर्ण जीवन एवं उच्च आदर्शों से सबका मन मोह लेती थीं। उनका जीवन सदैव समाज एवं मानव जाति के उत्थान के लिए समर्पित रहा। जहाँ भी कोई दुख दर्द हो उनकी गरिमामयी उपस्थिति सदैव उस दुःख को दूर करने में बनी रहती थी। आप सदैव गुणी जनों का सम्मान करती थीं और समाज में उस गुण का संवर्धन हो, इसके लिए सदैव प्रयासरत रहती थीं। मुझे भी आप द्वारा कहने पर कई रोगियों की सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ। एक बार जब उन्हें प्रतिष्ठित जमनालाल बजाज पुरस्कार देने के लिए पूछा गया तो उन्होंने अपनी जगह दूसरे किसी व्यक्ति को देने की सिफारिश की। ऐसा व्यक्तित्व धन्य है। मैं उनके व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित था। आप अपनी बात स्पष्ट एवं प्रभावी तरीके से व्यक्त करने में सक्षम थी। स्पष्ट लक्ष्य, स्पष्ट विचार और वैसा ही आचरण का अद्भुत समन्वय था उनके व्यक्तित्व में। आपका ममतामयी एवं करुणामय जीवन हम सभी के लिए मार्गदर्शक के रूप में प्रेरणादायक रहेगा।

अरुण त्यागी, भारत

डॉ. अरुण त्यागी एक प्रख्यात आयुर्वेदिक चिकित्सक हैं तथा शशि जी को लम्बे समय से जानते हैं।

- 6 -

शशि जी को नमन

शशि बहिन जी के आकस्मिक निधन से मुझे बहुत ही आघात लगा और बहुत दुःख हुआ। ऐसा सुन कर विश्वास ही नहीं कर पाया। महान विभूति के चरणों में मैं परिवार सहित सादर श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ।

मैं खुद को बहुत भाग्यशाली मानता हूँ कि मैंने ग्राविस जैसे संगठन से अपने कार्य जीवन की शुरुआत की। शशि त्यागी जी और स्वर्गीय श्री लक्ष्मी चन्द त्यागी जी के सानिध्य में काम करने का

मौका मिला। इन महान हस्तियों ने मुझे न केवल अपनापन, प्रेरणा, नेतृत्व, अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा, सामाजिक समानता और परोपकार के बारे में जानने और सीखने का अवसर दिया हैं, बल्कि प्रतिकूल परिस्थितियों, व्यवहार, कौशल, समयबद्धता और कार्य प्रबंधन आदि में काम करने के लिए भी त्यागी दंपति ने ही प्रेरित किया। उनके सानिध्य में सामुदायिक नेत्र स्वास्थ्य परियोजना में कार्य किया और नेत्र स्वास्थ्य जागरूकता के साथ आँखों के हजारों ऑपरेशन द्वारा नवज्योति प्रदान की। आज लाखों लोग ग्राविस अस्पताल और ग्राविस संस्थान के प्रति कृतज्ञ हैं।

रेगिस्तान के हरे एक कण को हरा भरा बनाने और खुशहाली लाने के लिए अपने पूरे जीवन का त्याग और बलिदान शशि जी ने किया। उन्होंने अपना पूरा जीवन अथक परिश्रम और समुदाय की सेवा के साथ बिताया है, ताकि सामाजिक परिवर्तन ला सकें। थार मरुस्थल के समस्त समुदाय उनके द्वारा किये गये सामाजिक कार्य और बलिदान को सदैव याद रखेंगे। उनके अथक प्रयासों ने ही समुदाय में समानता, रोजगार और आर्थिक विकास के अवसर प्रदान किये और सामाजिक स्तर और आजीविका में वृद्धि की। उनके प्रयासों ने ग्राविस रुपी छोटे से पौधे को न केवल वटवृक्ष बनाया है, बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी एक अभूतपूर्व पहचान दी है। मुझे बहुत गर्व है कि मुझे इस महान संस्था के एक छोटे से कार्यकर्ता के रूप में काम करने का सौभाग्य मिला। शशि बहिन जी को शब्दों के माध्यम से श्रद्धांजलि देना बहुत ही मुश्किल होगा, क्योंकि उनके महान व्यक्तित्व के बारे में बताने के लिए शायद शब्द कम पड़ जायें। उनके त्याग, बलिदान, प्रेरणा और सेवा ने रेगिस्तान में भी नव हरिका और खुशहाली ला दी।

ऐसी पूण्य आत्मा को पुनः विनम्र श्रद्धांजलि और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उनका आशीर्वाद हम सब पर सदा बना रहे।

ग्राविस परिवार को उनके द्वारा किये गये सामाजिक पुनरुत्थान कार्य को और ज्यादा आगे ले जाने के लिए शुभकामनाएं।

अरुण परिहार, भारत

श्री अरुण परिहार पूर्व में ग्राविस के साथ काम कर चुके हैं तथा वर्तमान में बैंक मैनेजर हैं।

- 7 -

श्रीमती शशि त्यागी जी - एक विनम्र स्मरणिका

आप लोगो का यह निर्णय, कि श्रीमती शशि त्यागी जी, जिन्हें हम आदरभाव युक्त - प्रेमभाव से शशि बहिन जी कहते थे, की स्मृति में एक स्मारिका निकाली जाय, न केवल सर्वथा उचित है, वरन् भावी समाज सेवकों की दृष्टि से अत्यंत उपयुक्त भी हैं। जनसेवा में रत साथियों को, हो सके तो, जीवन मूल्यों के कुछ अनमोल मोती, चुनने का अवसर इस पुस्तक से मिल सकेगा।

कहा गया है कि यह संस्था एक बगीचा समान है, जहाँ फूल खिले हैं गुलशन - गुलशन, अर्थात् भिन्न - भिन्न प्रकार के लोग हैं, अतः मधुमक्खी की बात याद आती है, जो जहरीले फूल से भी मधुरस ले लेती है।

इस महत्वपूर्ण मौके पर मुझे अंग्रेजी की एक कहावत याद आती है - “Give everyone the ear, but few thy voice: take every man's censer, but reserve thy judgment” अर्थात् सत्यता और दृढ़ता दोनों का अनुपम मेल। तो को बैरी ‘नाहि’ बिमानी“ परन्तु अपनी सत्यता पर जमे रहना।

सर्वधर्म प्रार्थना में आता है, “सद व्यवहार करें जो मुझसे, उनसे सद व्यवहार करूँ। दुर्व्यवहार करें, उनसे भी मैं तो सदव्यवहार करूँ।” शशि बहिन की सदैव यह कोशिश रहती थी कि यह उनके व्यवहार में उतरे। यह उनकी मूल शिक्षा का ही सुफल है, कि उनके न केवल बेटे - बेटी वरन् जिसने भी उनके साथ काम किया, कंचन बन कर निकला। कल्पना नीत रूप से, देखते ही देखते, राष्ट्रीय ख्याति मिली, वरन उनको अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित होते देख हम भी गौरवान्वित हुए।

वे तो धन्य हैं जिन्हें उनके साथ काम करने का अवसर मिला, वे भी धन्य हैं, जो किसी न किसी रूप में उनके सम्पर्क में आये। व्यक्तिगत रूप से कहूँ, तो यद्यपि मैं 90 वर्ष की आयु का हूँ, मुझे स्व. श्री लक्ष्मी चंद त्यागी एवं शशि त्यागी, दोनों ने सदैव बड़ा दर्जा दिया, परन्तु इस युगल दम्पति से बहुत कुछ सीखने को भी मिला। इस दृष्टि से दोनों मेरे लिये गुरु तुल्य भी थे। गाँधीजी ने सेवक की प्रार्थना में लिखा: “हे नम्रता के सम्राट ... ग्रहणशीलता और खुला दिल दे, तेरी अपनी नम्रता दे हमें वरदान दे कि सेवक और मित्र के नाते, जिस जनता की हम सेवा करना चाहते हैं, उससे कभी अलग न पड़ जाय।” जहाँ तक मेरी अपनी समझ बनती है, इसका उन्होंने अक्षरशः पालन करने की कोशिश की और निःसंदेह, ईश्वर ने भी उन्हें इसमें मदद की।

यह सार तल है, मेरी अपनी दृष्टि, अपनी समझ का जो पिछले 50 वर्षों के सम्पर्क - सफर के फलस्वरूप प्राप्त हुआ। जिसकी शुरुआत स्व. श्री लक्ष्मी चंद त्यागी जी के “बनवासी सेवा आश्रम” गोविन्दपुर, जिला - सोनभद्र (उ.प्र.) के सेवाकाल से 1970 के आस - पास हुई, और बरास्ता सुचेता कृपलानी स्मारक निधि द्वारा प्रायोजित, शिक्षा निकेतन एवं बाद में ग्रामीण विकास विज्ञान समिति तक पहुँची, जहाँ नियति ने उन्हें अपना कार्य क्षेत्र बनाकर थार मरु भूमि की जन सेवा की चुनौतियों का वैज्ञानिक दृष्टि से सामना करने के लिये अभिप्रेरित किया। जहाँ इस युगल दम्पति को कर्मक्षेत्र की समस्याएँ भी झेलनी पड़ीं, और कहीं मिठे पानी के स्रोत भी मिले। गर्मी की तपश भी मिली और शीत लहरी का भी अनुभव किया। उखाड़ - पछाड़ भी झेली, परन्त कभी भी चेहरे पर शिकन न आने पाये, इसका भरसक प्रयास किया। न कोई बैरी, न कोई बेगाना, सकल संगि हमको लाने आई। बिसर गई सब नात पराई, जबने साथ संगत मोहि पाई। रोम - रोम से उठे तंरगे, सबका मंगल होय। तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल

जीवन संदेश

होय। शुद्ध धर्म, हम सब में जागे, बहु विधि मंगल होय। प्रेममय हो, अहिंसक बने, सब मंगलकारी हो। निर्भय हो, निबैर बने सब, सभी निरामय होय।

छोटे मुँह बड़ी बात, यह मेरी अपनी दृष्टि है। इसमें यदि किसी को अतिशयोक्ति लगे, तो उसके लिये विनम्रभाव से क्षमाप्राथी हूँ

सादर जय जगत।

अवधेश कुमार, भारत

श्री अवधेश कुमार एक जाने माने सामाजिक कार्यकर्ता व गाँधीवादी चिन्तक हैं तथा ग्राविस के संस्थापक सदस्य रहे हैं।

- 8 -

मातृ समान

शशि जी और त्यागी जी ने ग्राविस नाम का एक पौधा बोया था जो अब एक बड़ा पेड़ बन गया है। त्यागी जी मेरे लिए पिता समान थे और शशि जी मेरे लिए माँ समान थी।

एक कहावत है - माँ के समान छाया, सहारा, रक्षक और प्रिय कोई नहीं है। जैसे शशि जी थीं। ग्राविस का वृक्ष अमर रहेगा। शशि जी हमेशा समस्याओं को जड़ से हल करने में विश्वास रखती थी।

खोज नामक परियोजना में मुझे शशि जी के साथ काम करने का अवसर मिला, वो हमेशा प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने पर जोर देती थीं। शशि जी व त्यागी जी हमेशा आगे की सोच रखते थे। उन्होंने एक बहुत मजबूत संस्था बनाई, मुझे गर्व है कि मैं उनके साथ काम कर सका।

अवधेश कुमार पाण्डे, भारत

डा. अवधेश कुमार पाण्डे एक आयुर्वेदिक चिकित्सक हैं तथा पूर्व में ग्राविस के साथ काम कर चुके हैं।

- 9 -

प्रेरणा स्रोत - शशि दीदी

शशि दीदी के जीवन व कार्यों से न जाने कितने लोगों ने प्रेरणा ली। मुझे भी उनके सानिध्य में रहकर काम करने, सीखने के कुछ अवसर मिले। गाँधी विचार परिषद्, वर्धा में दिसंबर, 2016 के अंतिम सप्ताह में आयोजित ऑल इण्डिया युनिवर्सिटी स्टूडेंट्स कैम्प में पहली बार उनसे बातचीत, चर्चा हुई। उसके बाद धीरे-धीरे उनका स्नेह, मातृत्व आशीर्वाद व मार्गदर्शन मुझे निरंतर मिलता रहा। फरवरी, 2018 में दीदी ने पश्चिमी राजस्थान के जिलों में सुब्बाराव

जी व रमेश भाई के सानिध्य में गाँधी यात्रा करवाई थी जिसमें संजय भाई, विशाल जी व गौतम जी के साथ मुझे भी भाग लेने का अवसर मिला। इस यात्रा में ग्राविस व दीदी के कार्यों को देखा, हर वर्ग के लोगों, महिलाओं के साथ उनका आत्मीय जुड़ाव था मानो दीदी उनके परिवार की ही हों। दीदी व ग्राविस के कार्यों से इस क्षेत्र के लोगो को स्वावलंबन के अवसर मिले। कलराँ, खारा, उजलां, चौहटन के पास स्थित धीरासर में आयोजित कार्यक्रम तो जीवनभर याद रहेंगे, इस यात्रा ने मेरे जैसे नए कार्यकर्ताओं को नई दिशा दी। अक्सर रविवार को दीदी के जोधपुर स्थित आवास पर उनसे दीदी व त्यागी जी के वनवासी सेवा आश्रम, भूदान, गांधी व सर्वोदय के कार्यों व व्यक्तित्वों के जीवन प्रसंग व अनुभवों के बारे में जानने को मिलता था, जो नए संदर्भ व चिंतन सूत्र का स्रोत था।

दीदी ने डॉ. शोभना राधाकृष्ण जैसे कई गाँधीजनो से हमें अवगत कराया। दिसंबर, 2019 में दीदी ने डॉ. शोभना राधाकृष्ण व डॉ. रवि जी के सानिध्य में गगाड़ी, कलराँ व जोधपुर में गाँधी कथा का आयोजन कराया जिसमें मुझे भी उनके सानिध्य में रहने व सीखने को मिला। शशि दीदी के गाँधी, सर्वोदय विचार व कार्यों से हम सभी को दिशा मिली। जब उनसे इस विषय में बात होती थी तो वे अक्सर कहा करती थीं कि दूसरों की बारात में बाराती बनने से अच्छा है कि हम खुद कुछ करें और इससे प्रेरित होकर मुझे भी गाँधी स्टडी सर्कल के माध्यम से जोधपुर के शहर व ग्रामीण क्षेत्र में एनवाइपी व गाँधी विचार में रूचि रखने वाले लोगो के साथ काम करने की प्रेरणा मिली। दीदी ने मुझे लेखन हेतु प्रेरित किया और मैंने दीदी के मार्गदर्शन में आलेख लिखे जो राष्ट्रीय स्तर की कई पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। दीदी का पूरा जीवन सेवा कार्यों से ओतप्रोत था।

अशोक चौधरी, भारत

श्री अशोक चौधरी एक युवा पत्रकार हैं जो गाँधी स्टडी सर्कल से जुड़े हैं।

- 10 -

श्रीमती शशि त्यागी की यादें

त्यागी परिवार से मेरी पहचान तब हुई जब मैं 2005 में यू.एस.ए. फुलब्राइट फेलोशिप के लिए गया। मैं डॉ. प्रकाश त्यागी के साथ एक ही घर में रहता था जब हम न्यू आरलीन्स, लुइसीआना में टूलेन स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ और ट्रोपिकल मेडिसन में थे। हम वहाँ दो हफ्ते रहे, फिर जब न्यू आरलीन्स शहर में तूफान कैटरिना आया, तब हमें चैपल हिल में नार्थ कैरोलीना विश्वविद्यालय भेजा गया। चैपल हिल में भी हम एक साथ रहे।

पाठ्यक्रम के अलावा भी हमने बहुत सी व्यवसायिक विकास गतिविधियों और सभाओं में भाग

जीवन संदेश

लिया। मैं रोज बहुत देर तक डॉ. प्रकाश के साथ बात करता था। प्रकाश ने मुझे भारत में अपने जीवन के बारे में, अपने माता - पिता और किस तरह उन्होंने ग्राविस की स्थापना की, इस सब के बारे में बताया।

सितम्बर 2011 में मैं पहली बार जोधपुर शहर गया, जहाँ त्यागी परिवार ने मुझे अपने घर आमंत्रित किया, वहाँ मैं श्रीमती त्यागी से मिला। मुझे उन महान महिला से मिलने का अवसर मिला जो प्यार, सहानुभूति और दयालुता की प्रतीक थीं। जब हम जोधपुर से जा रहे थे तब त्यागी परिवार ने मुझे खाना, मिठाई का डिब्बा और एक पारंपरिक वेस्टकोट दिया जो मैं खास अवसरों पर पहनता हूँ। मैं त्यागी परिवार और शशि त्यागी जी के अतिथि सत्कार से बहुत प्रभावित हुआ।

यह बताना महत्वपूर्ण होगा कि जोधपुर में ग्राविस कार्यालय के अलावा मैं उन जगहों पर भी गया जहाँ ग्राविस की परियोजनायें चल रही थी जैसे कि ग्राविस संचालित अस्पताल, खान मजदूरों के बच्चों के लिए विद्यालय और कुछ जल संरक्षण परियोजनाएं। सन् 2017 में मेरे मित्र प्रकाश ने बताया कि उनकी माँ को उनके द्वारा किये गये कार्यों के लिए प्रतिष्ठित जमनालाल बजाज पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है। मैं यह खबर सुनकर बहुत खुश हुआ। वह इस सम्मान की सच्ची हकदार थीं।

नवम्बर 2020 में हमारे व्हॉट्स एप ग्रुप के द्वारा प्रकाश ने बताया कि उनकी माँ का निधन हो गया है। कोविड -19 और कहीं पर भी आने - जाने में लगे प्रतिबंध के कारण मैं भारत जाकर प्रकाश और उनके परिवार के साथ उनका दुःख नहीं बाँट पाया। प्रकाश और उनके परिवार को मैंने शोक संदेश भेजा और शशि जी की आत्मा की शांति के लिये प्रार्थना की। दुर्भाग्यवश सन् 2011 के बाद न तो भारत में और न ही अफगानिस्तान में उनसे मिलने का मौका मिला।

अल्लाह/भगवान उनकी आत्मा को शांति दें।

अहमदुल्लाह मोलाखाइल, अफगानिस्तान

डॉ. अहमदुल्लाह मोलाखाइल एक चिकित्सक है और यू.एन.एफ.पी.ए. की एक अफगानिस्तान इकाई के प्रमुख हैं।

- 11 -

शशि जी की स्मृति में

“जीवन में मेरा उद्देश्य केवल जीवित रहना ही नहीं है, बल्कि मुझे पनपना है और कुछ वृद्धशक्ति, कुछ करुणा, कुछ हास्य और शैली के साथ कुछ करना है।” अमेरिकी कवि और नागरिक अधिकार कार्यकर्ता माया एंजेलो के ये शब्द पहली बार श्रीमती शशि त्यागी से मिलने के समय मेरे कानों में जोर से बज रहे थे।

यह दो दशक पहले था जब मुझे पहली बार शशि जी से मिलने का अवसर मिला था। वह सामाजिक विकास के क्षेत्र में काफी प्रख्यात थीं। मैंने अपने पिता से उनके गहरे प्रभाव के बारे में कहानियां सुनी थीं। इसलिए उनसे मिलने का विचार थोड़ा घबराने वाला था। मिलने का दिन आखिरकार आ गया। लेकिन मैं उत्सुक थी। मैं अपनी दो महीने की बेटी को अपने साथ ले कर गई थी, यद्यपि मैं आशंकित थी। 'मातृ और बाल पोषण' स्वास्थ्य कार्यक्रम के लिए काम करते हुए मैंने जो कुछ भी उपदेश समुदायों को दिया उसका जीवन में अभ्यास भी किया। मैं अपनी बेटी को हर जगह ले जाती, जहाँ - जहाँ मैं गयी। हालांकि मन में डर था-क्या होगा अगर मेरा बच्चा रोने लगे ? अगर मैं शशि जी के साथ सार्थक बातचीत नहीं कर पाऊँगी तो क्या होगा? जैसे ही मैंने ग्राविस कार्यालय में प्रवेश किया, मेरी आशंकाएं गायब हो गईं। यह बापू के आश्रम में कदम रखने जैसा था। अमन और चैन अचंभित करने वाला था। कार्यालय एक तेल के पहिये की तरह सुचारु रूप से कार्य कर रहा था। सबसे ज्यादा सुखद त्यागी परिवार की गर्मजोशी थी।

हरी खादी की साड़ी पहने, शशि जी शांति और गर्मजोशी के साथ दिखाई दीं। उन्होंने ममता के साथ मेरा स्वागत किया और मेरी छोटी बेटी को अपनी गोद में ले लिया। मेरी घबराहट को देखते हुए, शशि जी ने मुझे सहज महसूस कराया। उन्होंने अपने दो बच्चों की जरूरतों के साथ अपने समाज कल्याण कार्यों को संतुलित करने की अपनी कहानियों को साझा किया। इससे मुझमें बहुत विश्वास पैदा हुआ। मैं उस दिन हमारे द्वारा की गई काम संबंधी आधिकारिक वार्ता को शायद ही याद कर पाऊँ, लेकिन उनकी करुणा और संवेदना की याद आज भी जीवंत है।

वर्षों से मैं अक्सर चल रही परियोजनाओं पर चर्चा करने के लिए उनसे मिलती रही। हर बार मैंने उनसे प्रबुद्ध सलाह और बहुत अधिक उत्साह का लाभ पाया। शशि जी हमेशा मेरी आदर्श रहेंगी।

वह अक्सर मुझसे कहती थी कि जिस तरह से मैं राजस्थान के गाँवों में जीप में बैठकर गाँव - गाँव गई, उससे मैंने स्थानीय महिलाओं में आत्मनिर्भरता का एक मजबूत संदेश दिया। “आभा, महिलाओं को जुटाना और सशक्त बनाना जारी रखना है,” शशि जी अक्सर कहती थीं। मुझे पता है कि मेरे पास उनका आशीर्वाद है क्योंकि मैं समुदाय में एक सार्थक प्रभाव बना रही हूँ।

मैं भाग्यशाली हूँ कि मेरे अस्तित्व निर्माण में उनकी भूमिका रही है जिनका जीवन मूल्य ही करुणा थी। शशि जी वास्तव में एक जीवनकाल भर में एक बार मिलने वाली मानव थीं। वह हमेशा मेरे द्वारा याद की जाएंगी।

मैं लगभग दो दशकों से विभिन्न क्षमताओं में शशि जी और ग्राविस से जुड़ी रही हूँ, जब भी उनका वर्णन करना शुरू होता है तो शब्दों की कमी महसूस होती है। केवल यह कह सकते हैं कि मुझे अपने जीवन में मिले लोगो में से वो एक शानदार व्यक्तित्व हैं।

आभा शर्मा, भारत

श्रीमती आभा शर्मा एक वरिष्ठ स्वास्थ्य सलाहकार हैं और उन्होंने केयर सहित कई संस्थाओं के साथ काम किया है।

शशिजी के बिना सूना है सर्वोदय का आकाश

खादी की साड़ी में लिपटी अपनी पतली-दुबली काया के साथ सबसे खुलकर और प्रेमपूर्वक बात करती एक कर्मठ और जुझारू महिला - यही पहचान थी शशि त्यागी जी की। इस पहचान को उन्होंने एक दिन में नहीं पाया था। इसके पीछे उनकी वर्षों की मेहनत और निष्ठा थी। शशि जी की निष्ठा सर्वोदय गाँधी-सर्वोदय विचार के प्रति थी, समर्पण उनका अपने उद्देश्य के प्रति था। बस इसी पथ पर वे आजीवन चलती रहीं और इसी राह पर चलते हुए उन्होंने अपने पति लक्ष्मी चंद जी त्यागी के साथ मिलकर गाविस को बड़ा किया और उसे ग्रामीण विकास और विज्ञान का पर्याय बनाया। उनके कार्य से सैकड़ों ग्रामीण जनों ने अपने जीवन में शिक्षा की रोशनी पाई, स्वावलम्बन का पाठ पढ़ा और रचनात्मक कार्यों के संस्कार पाए।

केवल जेलू -गगाडी ही नहीं पश्चिमी राजस्थान के अनेक ग्रामीण अंचल और वहाँ के लोग शशि जी के योगदान को कभी भूल नहीं पायेंगे। बाल निकेतन में श्रद्धेय बंधुजी की देखभाल उनकी नियमितता में रहा। श्रद्धेय रणछोड़ दास जी गट्टानी, श्री बाल कृष्ण जी थानवी, आदरणीय श्री नेमीचंद जी जैन “भावुक”, श्रीयुत कन्हैया लाल जी टाटिया, जिन्होंने सर्वोदय जीवन को जिया उनका सानिध्य भी उन्हें प्राप्त हुआ। उनके अवसान से त्यागी परिवार को ही नहीं पूरे गाँधी परिवार को अपूरणीय क्षति हुई है। शशि जी के बिना सर्वोदय का आकाश सूना है। वे हमारे बीच नहीं हैं, इस सत्य को स्वीकार करने में अभी समय लगेगा।

जब मैं शशि जी को याद करती हूँ तो मुझे चार दशक पहले के वे दिन याद आते हैं जब वर्ष 1979 व 1980 के आसपास लक्ष्मी चंद जी भाईसाहब और शशि बहिन ने सामाजिक कार्य के संबंध में जोधपुर में रहना प्रारम्भ किया था और हमारे परिवार के साथ पूज्यनीय बाबूजी श्री त्रिलोक चंद जी गौलेच्छा - बाई पूज्यनीया छगन बहिन के साथ रहना, मिलना-जुलना शुरू हुआ था। देखते ही देखते वह मेलजोल पारिवारिक प्रेम में बदल गया। बाबूजी के प्रति असीम श्रद्धा ने भी निकटता बढ़ाई जो तब से आज तक कायम है। इस अवधि के दौरान जोधपुर, जेलू-गगाडी, माणकलाव आदि कितने ही गाँव, नगर, देश- विदेश त्यागी दम्पति के कर्म क्षेत्र रहे और प्रत्येक स्थान में उन्होंने अपने सामाजिक कार्यों की अमिट छाप छोड़ी और जिसका सीधा प्रभाव वहाँ के जन-जीवन में देखने को मिला।

परिवार और सामाजिक कार्य दोनों को एक साथ साथे रखना और दोनों में परस्पर सहयोग समन्वय विकसित कर लेना प्रत्येक सामाजिक कार्यकर्ता के लिए चुनौतीपूर्ण होता है। जो इसमें सफल हो जाता है उसके लिये आगे की राह आसान हो जाती है। शशि जी ने अपनी कुशलता से इस राह का निर्माण किया था और यही उनके लिये ऊर्जा और उत्साह का मूल स्रोत था। शशि जी का एक बड़ा योगदान यह भी है कि उन्होंने अपने घर के सदस्यों को भी गाँधी-सर्वोदय के संस्कार प्रदान किये जो आज प्रकाश-वसुन्धरा और आभा-दीपक व उनके बच्चों के जीवन में फलीभूत हो रहे हैं। ग्रामीण विकास में विशेष योगदान और गाँधीवादी मूल्यों के उन्नयन के लिए उन्हें

जमनालाल बजाज पुरस्कार जैसा प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त हुआ जो उनके कार्यों पर और उनके दृष्टि और विचार पर एक बहुत बड़ी मोहर थी, जिस पर हम सभी को गर्व है। और भी कई संस्थानों व पुरस्कारों की सूची है जिनकी वे हकदार थीं पर जिन्हें पाने के लिये प्रयास नहीं किया।

पिछले कितने ही वर्षों से मैं और शशि जी दोनों देश में सर्व सेवा संघ के माध्यम से राजस्थान में सर्वोदय और गाँधी विचारों का काम देख रहे थे। चाहे संगठन को मजबूत करने की बात हो या कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण का कार्य हो, शशि जी हर कार्य में आगे थीं और दृढ़ निष्ठा और मजबूत इरादों के साथ अपना कार्य करती रहीं। मैंने और शशि जी ने देश भर में जाने कितने शहरों की यात्राएं साथ-साथ की, सभा सम्मेलनों में भाग लिया, अधिवेशन आयोजित किये। उनके साथ काम करने का हर अवसर नया अनुभव दे जाता था। मैं उनकी दूरदृष्टि और सबको साथ लेकर चलने और सबको जोड़कर रखने की क्षमता की कद्रदान रही हूँ। उनका साथ छूटने से मैं अपने आसपास भी एक त्रासद सन्नाटा महसूस कर रही हूँ। कई बार आत्मीयता के क्षणों में हमने अपने सामाजिक जीवन के सुख-दुःख, उतार-चढ़ाव आदि बातें बाँटीं और हर बार मुझे परस्पर हिम्मत और हौसला मिला। आज मुझे शशि जी की अनुपस्थिति खलती है।

उनके जैसी मित्र और अग्रजा अब कहाँ!

अपने जीवन के अंतिम समय तक भी शशि जी सक्रिय थीं और कोरोना काल में ही उन्होंने बाहर आना-जाना छोड़ा था। बीमारी में भी वे दूसरों की ही चिन्ता करती थीं। कार्यकर्ताओं तक और गाँवों तक भोजन पानी और दवाईयाँ पहुँच रही हैं या नहीं, इसकी खबर वे लेती रहती थीं और इसका प्रबंध भी करती रहती थीं। जिस समर्पण भाव से शशि जी ने अपना जीवन जीया और कार्य किया वह हम सभी को निरंतर प्रेरणा देता रहेगा। आज जब देश गाँधी मार्ग से विमुख होता जा रहा है और परिस्थितियाँ पहले की तुलना में कई गुना जटिल और चुनौतीपूर्ण बन रही हैं तब शशि जी जैसे कर्मठ साथी का बिछड़ना भीतर तक तोड़ देता है।

जब उनकी सबसे ज्यादा जरूरत थी तब ही ईश्वर ने उन्हें अपने पास बुला लिया लेकिन संतोष की बात है कि वे अपने पीछे एक संस्कारी परिवार और ग्राविस के कार्यकर्ताओं का पूरा कार्य समर्पित समूह छोड़कर विदा हुई हैं। उनके कार्य को आगे बढ़ाना और उनके सपनों को साकार करना हम सभी का कर्तव्य है।

आशा बोथरा, भारत

श्रीमती आशा बोथरा एक जानी मानी सामाजिक कार्यकर्ता व गाँधीवादी चिन्तक हैं तथा मीरा संस्थान की संस्थापिका हैं।

शशि त्यागी: महान जीवन

हम शशि त्यागी जी को निजी तौर पर बहुत लम्बे समय से नहीं जानते थे। आमने - सामने, हम सिर्फ एक बार मिले। हम बहुत भाग्यशाली रहे कि हमने ग्राविस की परियोजनाओं के स्थानीय दौरे पर पूरा एक दिन उनके साथ व्यतीत किया। हम लोग भौगोलिक रूप से उनके जीवन और उनके परिवार से बहुत दूर हैं।

इसलिए हम सबसे पहले उनकी यादों के संदर्भ में बहुत कुछ नहीं कह पाए, जैसा कि अन्य लोग ज्यादा अच्छा जानते हैं। हम जो जानते और करीब से महसूस करते हैं वो है - ग्राविस, शशि जी का जीवन का समर्पण और दुनिया के लिए उपहार। हम उन लोगों का बहुत सम्मान करते हैं जो गरीब और जरूरतमंदों से इतना प्यार करते हैं कि अपना सम्पूर्ण जीवन उनको समर्पित कर देते हैं। हमने देखा कि किस तरह शशि जी ग्रामीणों के साथ अपने आप को संलग्न कर लेती थीं, हमने सुना जब केरला भाखर विद्यालय में बच्चों से बात कर रही थीं या शिक्षा केन्द्र पर लड़कियों से, और हमें यह समझ आया कि उनके अंदर से एक उदार और स्नेही आत्मा बोल रही है। हमारे लिए शशि जी एक 'प्रकाश स्तम्भ' की तरह थीं जो हमेशा दूसरों के लिए खड़ी रहीं और दया और कृपा से वंचित अंधेरो में रह रहे लोगो पर प्रकाश डालती रहीं।

जब उनके निधन की खबर आयी और हम उनके स्मरणोत्सव में विडियों सम्मेलन के द्वारा भाग ले पाए। हमने अपने केरला भाखर विद्यालय के सह समर्थकों को हमारे क्षेत्र में और पूरे जर्मनी में चल रहें ग्राविस के कार्यों के बारे में बताया। हमने सभी से उनके कार्यों को देखने और समझने की बात की। हमने किसी से सहयोग नहीं मांगा, मगर शायद लोगों को यही एक तरीका लगा शशि त्यागी जी और उनके काम को धन्यवाद देने का। हमें बहुत आश्चर्य हुआ जब हमने कुछ ही दिनों में 15,000 यूरो शशि जी की स्मृति में जमा किए और दानशीलता की इस लहर को उनके निधन की अनुकम्पा से मापा।

हम आपके साथ ये शब्द साझा करना चाहते थे, उनके मित्र और परिवार को उनकी यादों में संजोने के लिए। हम उनको जानने के लिए व ग्राविस और शशि त्यागी जी के कामों में अपना योगदान देने के लिए बहुत सम्मानित महसूस करते हैं।

आपके आभार में

इमके फ़ॉर्डरमैन और राल्फ लैंग, जर्मनी

श्रीमती इमके फ़ॉर्डरमैन और श्री राल्फ लैंग एक जर्मन दम्पति हैं, अध्यापक हैं जिन्होंने साईकिल पर विश्व यात्रा की थी।

- 14 -

अपूरणीय क्षति

शशि जी को याद करते ही आँखे नम हो जाती हैं। शशि जी एक आशा की किरण थीं जिन्होंने अपना पूरा जीवन लोगो की भलाई के लिए समर्पित कर दिया। उनका मानना था कि महिलाएं परिवार की मजबूत नींव होती हैं। इसलिए वह महिला सशक्तिकरण के लिए काम करती रहीं। मेरे लिए वह माँ समान थीं जिन्होंने हमेशा मेरा मार्गदर्शन किया और अध्यापक बनने में मेरी मदद की।

कई वर्षों में एक बार एक ऐसी रोशनी आती है जो दूसरों को जीवन देती है। शशि जी एक ऐसी ही रोशनी थीं जिन्होंने हमेशा लोगो को प्रोत्साहित किया। उनका निधन अपूरणीय क्षति है।

एकता त्यागी, भारत

श्रीमती एकता त्यागी एक अध्यापिका हैं और करीब 20 वर्षों से ग्राविस से जुड़ी हैं।

- 15 -

पुरानी यादों से

शशि जी की स्मृति सभा में जुड़कर जॉन और मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। उनके निधन का समाचार सुनकर हमें बहुत दुख हुआ। हमें पता था कि जब हमने उनके पिछले जन्मदिन पर संदेश भेजा तो वह बीमार थीं। यह आपके और आपके परिवार के लिए कितना हृदयविदारक है। शशि जी का अद्भुत जीवन निश्चित ही उनकी पोतियों के लिए प्रेरणादायक होगा व उन्हें सशक्त बनायेगा। वह हमेशा कई परियोजनाओं में शामिल रहती थीं और हम उनके उत्साह, उनके समर्पण और महिलाओं के लिए विशेष रूप से उनके ज्ञान, जीवन में उनकी रुचि और कैसे वह बेहतर के लिए पुरुष प्रधान सांस्कृतिक मुद्दों में से कुछ को बदलने में कामयाब रहीं, याद करते हैं। हम निश्चित रूप से कई बार याद करते हैं जब हम शशि जी से मिलने गए थे और कई बार घर में या प्रधान कार्यालय जोधपुर में रुके थे। जब जेलू-गगाड़ी, जोधपुर में गए, शशि जी ने हमें अपने घर में रखा। उस आतिथ्य के हम आभारी हैं।

एक बार हम ग्राविस मुख्यालय में रहे थे। 2006 में हैल्थ फैलोशिप अवार्ड प्रदान करने से पहले मैंने सुना था कि मेडिकल सहायता कुछ मेडिकल कैंपों पर निर्भर थी जो कि आपके और ग्राविस के अन्य सहयोगियों द्वारा लगाए गए थे। इस अवसर पर मैंने एक भाषण दिया था, जिसका अनुवाद प्रकाश और शशि जी ने किया।

बाद में उसी यात्रा के दौरान, शशि जी और हम अरावली पर्वतों के कुछ बहुत दूरदराज के गाँवों के पार कोटरा के क्षेत्र में गए। एक स्कूल खड़ी पहाड़ी पर बना हुआ था और हमने सोचा कि यह वहाँ कैसे बनाया गया होगा। हम शशि जी के साथ एक छोटी नदी के पार पैदल चलते गए। हम दोनों

निडर खोजकर्ता की तरह आगे थे और साथ में साड़ियों में कई महिलाएं। वे उन्हें जानते थे लेकिन मैं उनका दौरा करने वाली पहली पश्चिमी (इतनी लम्बी) थी। शशि जी ने मुझे बताया कि कुछ महिलाओं के पति काम की तलाश में भारत के दूसरे हिस्सों में चले गए थे, महिलाओं को छोड़कर। यह एक उच्च जोखिम वाला मलेरिया संभावित क्षेत्र था और टीबी भी एक बड़ी समस्या थी।

एक विशेष स्मृति फलोदी का दौरा करते समय की है जहाँ बाल विवाह को लेकर एक प्रदर्शन हुआ था। एक बहुत ही तनाव भरा माहौल था, गाँव में पुरुष नहीं चाहते थे कि शशि जी और मैं इन युवा लड़कियों के साथ बात करें। लेकिन हमने गाँव के अंदर से दौरा किया और पुलिस को भी बुलाया गया, किसी अप्रिय घटना से बचने के लिए।

और भी कई बार शशि जी और मैं (कभी-कभी जॉन के साथ) हमारी संस्कृतियों और हमारे जीवन के बारे में गहराई से बात करते थे। तब भी, जब वह हमसे मिलने इंग्लैंड आई थीं। उनके समर्पण के लिए मेरे मन में हमेशा भारी सम्मान रहेगा।

एक समय था जब जॉन और उनकी बेटी, शशि जी और ग्राविस परिवार के साथ 'भालू' गाँव में एक नया स्कूल समर्पित करने गए थे। यह स्कूल 'जिल' की याद में था - जिल, जॉन की पत्नी जो एक शिक्षक थीं। शशि जी को न केवल अपने समर्पण के लिए बल्कि अपने शांत, विनम्र स्वभाव के व्यक्तित्व के लिए भी याद किया जाएगा।

मेरे लिए वह दुनिया की सबसे प्रभावशाली महिलाओं में से एक थीं।

एंजेला हगोट और जॉन विलिस, यू.के.

सुश्री एंजेला हगोट और जॉन विलिस एक दम्पति हैं जो क्रमशः नर्स व इंजीनियर हैं तथा सामाजिक कार्यों में सक्रिय हैं।

- 16 -

मेरे अनुभव और मेरी स्व. माँ की शशि जी से जुड़ी यादें

मैं पहली बार शशि जी से 1996 में मिला। मैं माता - पिता पीटर और वैरोनिका के साथ राजस्थान गया था और भारत के लिये बनी यू.के. चैरिटी वैल्स फॉर इंडिया के सहयोगियों और परियोजनाओं की यात्रा की। शशि जी से मिलने और आमने - सामने बात करने पर मैं उनकी दया, हिम्मत, अविश्वसनीय सत्यनिष्ठा को देखकर हतप्रभ रह गया। मैं कहाँ से आया हूँ और क्या करता हूँ इससे कोई फर्क नहीं पड़ता ऐसा शशि जी कहा करती थीं। मैं अपने आपको भाग्यशाली मानता हूँ कि इस बात से प्रभावित होकर मैं अपने जुनून को अपना कैरियर बना पाया। हालांकि, ग्राविस की यात्रा करने के बाद और ग्राविस के महत्वपूर्ण कार्यों की तुलना में मेरा काम मुझे बहुत हल्का लगा। शशि जी से मैंने यह सीखा की हम कई तरह से अपना योगदान दे सकते हैं और हमें वह करना चाहिए जिसके लिए हम उपयुक्त हैं।

मैंने कई बार ग्राविस की यात्रा की और शशि जी हमेशा मुझे परियोजनाओं की यात्रा के दौरान संगीत व संस्कृति देखने और सुनने को प्रोत्साहित करती थीं। एक अवसर पर जब शशि जी यू.के. आई तब उन्होंने मुझे एक ढफली उपहार में दी जिसे मैंने आज भी संभाल के रखा है। मैं शशि जी के जीवन से समर्पण, सकारात्मकता और सशक्तिकरण का अनुभव करता हूँ और हमेशा उनको याद कर खुश होता हूँ। मैं बहुत सम्मानित महसूस करता हूँ कि मैंने उनके जैसी प्रेरित व्यक्ति को जाना और मैं उनको सम्मान, मित्रता और प्रेम से याद करता हूँ।

शशि जी मेरे माता - पिता के लगातार सम्पर्क में थीं। वह और मेरी माँ वैरोनिका एक अच्छी दोस्त थी। वैरोनिका ने शशि जी के लिए “वुमेन, वर्ल्ड, स्पिरिट” नामक पत्रिका में एक लेख लिखा था, जिसे मैं साझा कर रहा हूँ -

शशि जी - एक दूरदर्शी महिला - वैरोनिका सैंडौन द्वारा (2017 का एक लेख)

1993 में मैंने और मेरे पति पीटर ने हमारे स्वर्गीय बेटे डोमिनिक की स्मृति में कुछ ऐसा करने का सोचा जो औरों को लाभ दे, जीवन दे। एलेक्जीना मर्फी, कैथोलिक वुमेन्स नेटवर्क, जो वुमन वर्ल्ड स्पिरिट की संस्थापक सदस्य हैं - उन्होंने मुझे बताया कि उनके और उनके पति ने मैरी और निकोलस ग्रे के द्वारा भारत में शुरू की गई एक संस्था को पेयजल व्यवस्था के लिए अनुदान दिया है। मैरी भी कैथोलिक वुमेन्स नेटवर्क की संस्थापक थीं। उनके और उनके पति ने भारत में कुँओं का निर्माण कराया तथा एक ऐसा संगठन बनाया जिसने भारत में अति - गरीब क्षेत्रों में कुँए बनाने के लिए धन एकत्रित किया। पीटर और मैंने डोमिनिक की याद में कुँआ बनाने के लिए दान देने का निर्णय किया।

मैरी ने मुझे कहा की 1994 में एक सामुहिक यात्रा हो रही है और हमें भारत जाना चाहिए। मैंने पूछा कि क्या दूसरे कुँए के लिए पैसा देना ज्यादा उचित होगा लेकिन उनका जवाब था कि लोग हमें वहाँ देखकर बहुत खुश होंगे। यह यात्रा हमारे लिए जीवन बदलने वाला अनुभव थी। घोर गरीबी और पानी की कमी की वजह से भूमिजल का निम्न स्तर हमने देखा। अगले दस सालों में हमने पाँच बार भारत यात्रा की इसके साथ ही पीटर वैल्स फॉर इंडिया के समाचार पत्र के लिए काम कर रहे थे और मैं, और मैरी महिलाओं और बालिकाओं के विकास के लिए काम कर रही थीं।

मुझे याद है कि हम अपनी राजस्थान की तीसरी यात्रा में शशि त्यागी जी से मिले। 1983 में उन्होंने और उनके पति लक्ष्मी चन्द जी त्यागी ने ग्राविस की स्थापना राजस्थान के मरुस्थल में अत्यंत गरीब लोगों की मदद के लिए की। शशि जी जो शहरी वातावरण में पली - बड़ी थीं, उन्हें मरुस्थल में रहना शुरू में बहुत कठिन लगा लेकिन उन्होंने अपने नये जीवन को ग्रहण कर लिया था। वे और उनके पति गाँधीवादी थे और किसी भी परिस्थिति में पूर्ण अहिंसा पर विश्वास करते थे। वे उपेक्षित और ऊँची जाति के लोगो के साथ एक साथ काम करते थे।

शशि जी महिलाओं और बालिकाओं की जरूरत के लिए बहुत भावुक थीं, बालिकाओं को रोज

पैदल चलकर कुँएँ और तालाब से पानी लाने जाना पड़ता था। वे आग जलाकर खाना बनाने के लिए लकड़ियाँ एकत्रित करने भी जाती थीं, जिसके कारण उनको विद्यालय जाने का समय नहीं मिलता था। लड़के पुरुषों के साथ जानवरों की देखभाल और फसल उगाने का काम करते थे। ग्राविस ने उन्हें कई तरीकों से खेत में पानी एकत्रित कर उत्पादन बढ़ाने का तरीका समझाया। ग्राविस ने एक ऐसा केन्द्र भी बनाया जहाँ वह सभाएं कर लोगो को पढ़ा सकें। उदाहरणार्थ महिलाओं को स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के रूप में प्रशिक्षित किया गया जिससे वह गाँव वालों को स्वास्थ्य संबंधी विषयों पर जानकारी दे सकें। मुझे याद है एक यात्रा के दौरान मेरी बेटी (एक डॉक्टर) हमारे साथ थीं और उसे स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के बारे में उसके विचार पूछे गये तो उसने कुछ पल विचार किया और फिर जवाब दिया “इस मरुस्थल में सुविधाओं की कमी को देखते हुए मुझे लगता है कि ग्राविस के प्रयास अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

एक यात्रा में हम शशि जी के साथ एक गाँव में गए जहाँ लोग चाहते थे कि ग्राविस के लोग आयें और उनके साथ काम करें। बारिश के पानी को एकत्रित कर फसल उगाना सिखायें और पीने का पानी एकत्रित करें। शशि जी गाँववालों के साथ दरी पर उनके सामने बैठकर बहुत दृढ़ता से बात कर रही थीं। मैं एक ग्राविस कार्यकर्ता के पास बैठी थी और मैंने उससे पूछा कि वह उन लोगो से क्या कह रही हैं, तो उसने बताया कि वो कह रही है “हम तब तक आपके साथ आकर काम नहीं करेंगे, जब तक वो लोग (एक समूह की तरफ इशारा करते हुए जो हमारे पीछे खड़ा था) आपके साथ दरी पर नहीं बैठेंगे” (वो निम्न जाति के थे और जो दरी पे बैठे थे वे उच्च जाति के थे)। वो लोग जो दरी पर बैठे थे, अपनी स्थिति को सुधारने के लिए ग्राविस के साथ काम करने को आतुर थे और इसलिए पिछड़ी जाति के साथ काम करने को तैयार हो गए। उन्होंने साथ में मिलकर बहुत अच्छा काम किया।

कई बार ग्राविस कार्यकर्ताओं को रात भर केन्द्र पर रुकना पड़ता था। सुबह वह सब एकत्रित होकर ध्यान लगाते और प्रार्थना करते, जब हम वहाँ होते तब हम भी उनका साथ देते। लक्ष्मी चंद त्यागी जी और शशि जी के दो बच्चे हैं, दोनों ही डॉक्टर हैं। प्रकाश (उनका बेटा) ने वसुंधरा जो कि एक डॉक्टर है से शादी की। कुछ सालों बाद लक्ष्मी चन्द त्यागी जी का निधन हो गया और प्रकाश जी ग्राविस के निदेशक बने। उन्होंने गरीबो के लिए अस्पताल बनाया जहाँ ग्रामीण उपचार पाते हैं। शशि जी सभी के लिए काम करतीं, खासकर महिलाओं और बालिकाओं के लिए। शशि जी एक विद्यालय बनाना चाहती थीं और वैल्स फॉर इंडिया के एक समर्थक ने अपनी पत्नी की याद में कुछ सहायता भी दी।

भूमि जल जहाँ से कुँओं में पानी आता है खत्म हो रहा था। इसलिए ग्राविस ने पानी प्रदान करने का दूसरा रास्ता ढूँढ़ा। एक बड़ा गोल गड्ढा करीब तीन से चार मीटर बड़ा और तीन मीटर गहरा खोदा जाता था। इस गड्ढे में फिर कनक्रीट लगायी गयी, टांके के प्रवेश द्वार पर एक ढक्कन लगाया गया और फिर प्रवेशद्वार के चारों तरफ विशाल कनक्रीट का आगोर बनाया गया जहाँ जानवर प्रवेश न कर सकें। जब बारिश आती, पानी आगोर से बहकर टांके को कुछ घंटों में भर देता। शशि जी अब 70 साल की हो गई हैं, और सभी के लिए काम कर रही हैं।

खासकर महिलाओं और बालिकाओं के लिए। जब तक आप इसे पढ़ेंगे शशि को मरुस्थलीय गाँव में काम करने के लिए पुरस्कार मिल चुका होगा। मेरे लिए वह एक संत हैं।

एम्ब्रोस सैडन, यू.के.

वैरोनिका सैडन, यू.के.

डॉ. एम्ब्रोस सैडन यू.के. में संगीत और कला के प्राध्यापक हैं।

श्रीमती वैरोनिका सैडन, एम्ब्रोस की माँ एक सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता व शशि जी की मित्र थीं जिनका 2019 में निधन हो गया।

- 17 -

“ जब हम दृढ़ विश्वास से काम करते हैं, वो काम नहीं हमारा उद्देश्य बन जाता है। ”

श्रीमती शशि त्यागी (या शशि जी जैसा कि हम उन्हें प्यार से बुलाते थे) एक दुर्लभ नेता और महान् व्यक्ति थीं। शक्तिशाली, दयालु और विनम्र- जिन्होंने उन कठिनाईयों में निर्भयता, जुनून और समर्पण के साथ काम किया जहाँ बहुत ही कम महिलाएं जाने का साहस कर पाती हैं।

एक समाज सुधारक और गुरु, उन्होंने और उनके पति स्व. श्री एल.सी.त्यागी जी ने अपना पूरा जीवन भारत के पश्चिमी राजस्थान में थार क्षेत्र की कमजोर जातियों के लिए गाँधीवादी विचारधारा के सर्वोदय के साथ सामाजिक और आर्थिक सुधार के लिए समर्पित कर दिया।

जोधपुर की और शशि जी के साथ काम करने की, उन समुदायों की, जहाँ ग्राविस और साईटसेवर्स साथ काम कर रहे थे, उससे जुड़ी 15 वर्ष की कई यादें हैं। मरुस्थलीय समुदाय के महत्वपूर्ण मुद्दे जैसे - स्वास्थ्य, मादक द्रव्यों का सेवन, जाति और लिंग का भेदभाव, पर्दा प्रथा, महिलाओं को अलग-थलग रखना, निरक्षरता, पानी का अभाव जैसे विषयों पर उनको काम करते देखना बहुत प्रेरणादायी अनुभव था।

मुझे खासकर याद है कि हमारी पहली मुलाकात - जो सौभाग्य से मेरी उम्मीद से ज्यादा चली। उन्होंने मुझे दोपहर के भोजन पर आमंत्रित किया और मैं उनके साथ उनकी रसोई में गयी। उन्होंने बातें करते- करते हुए बहुत जल्दी ही सबके लिए स्वादिष्ट खाना बना दिया। मैं चकित थी कि, कि किस तरह आसानी से वह एक किरदार से दूसरे (ग्राविस की सचिव से एक घरेलू महिला) में चली गयी। वह दिन आज भी मेरी यादों में उभरा हुआ है। उनका जीवन अद्भुत था, उनके निधन से दुनिया ने एक असाधारण महिला को खो दिया जिन्होंने अपना पूरा जीवन दूसरों को आगे बढ़ाने में लगाया और बदले में कुछ नहीं चाहा। एक महिला जो अपने समूह और समुदाय का बहुत ख्याल रखतीं। उनके पास अद्वितीय समर्पण और दृढ़ निश्चय था।

उनके कार्य - ग्राविस परिवार, उनके बेटे डॉ. प्रकाश त्यागी और उनके परिवार के बीच हमेशा जीवित रहेंगे। ग्राविस के कार्य इस बात का प्रमाण हैं कि किस तरह एक महिला का दृढ़ निश्चय

जीवन संदेश

और विनम्र नेतृत्व समाज का रूपांतरण कर सकता है। उनकी विरासत हम सब के लिए एक उदाहरण है, जिसका अनुसरण कर हम प्रगति कर सकते हैं।

मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि मैंने उनके साथ काम किया और उनसे बहुत कुछ सीखा।

एलिजाबेथ कुरियन, भारत

सुश्री एलिजाबेथ कुरियन मिशन फॉर विज्ञान की सी.ई.ओ. हैं और लम्बे समय से ग्राविस और त्यागी परिवार की मित्र हैं।

- 18 -

स्मृति में

कृपया शशि जी के निधन पर मेरी संवेदनाएँ स्वीकारें। किसी अपने का यूँ चले जाना एक गहरी रिक्तता छोड़ जाता है।

ग्राविस के काम को देखने की तथा लम्बे समय तक जुड़े रहने की यादें आज भी ताजा हैं। मुझे स्मरण है कि शशि जी स्थानीय समुदायों में अत्यन्त सम्मानित व लोकप्रिय थीं। उनका जोर हमेशा कमजोर लोगों की आवाज को सशक्त करने पर होता था।

मुझे विश्वास है कि यह स्मृति पुस्तिका शशि जी व त्यागी जी के जीवन का विस्तृत वर्णन करेगी और आशा करती हूँ कि उनके द्वारा किए जा रहे कार्य ग्राविस के माध्यम से आगे बढ़ेंगे।

एलिसन मैककॉल, न्यूजीलैंड

सुश्री एलिसन मैककॉल एक विकास सलाहकार व मानवाधिकार विशेषज्ञ हैं।

- 19 -

एक महान शिक्षिका और देखभाल करने वाली माँ

मेरी पहली मुलाकात शशि जी और उनके पति स्व. श्री एल.सी.त्यागी जी से 1996 के अंत में हुई और सन् 2001 से मैं उनसे कई बार जल संचयन के काम के सिलसिले में मिला।

शशि जी और उनके पति स्व. श्री एल.सी.त्यागी जी मेरे और मेरे परिवार के लिए एक प्रेरणा हैं। मुझे याद है जब वो हमारे घर पहली बार आये थे और कैसे उनके आने से हम सब प्रेरित हुए थे।

मेरे लिए शशि जी एक माँ की तरह थीं - कुछ सिखाने के लिए सख्त और ध्यान रखने के लिए नरम। मुझे याद है जब मैं उनके साथ गाँवों में जाता था, मरुस्थलीय लोगों और पानी से

संबंधित समस्याओं को कितनी बुद्धिमता से सुलझाती थीं। वह ज्ञान का सागर थीं। मरुस्थलीय महिलाओं के जीवन में बदलाव लाने का उन्हें जो जुनून था वह गाँव की ढाणियों में उनकी सभाओं में देखने को मिलता था।

शशि जी सरल जीवन जीने के लिए भी हम सब की प्रेरणा स्रोत रहीं। उन्होंने एल.सी.त्यागी जी के साथ सादा जीवन व्यतीत किया। मैंने उनसे कुछ सीखा जिसकी मैं आज भी पालना करता हूँ - हर व्यक्ति का सम्मान करना है, चाहे वो संगठन के किसी भी पायदान पर हो। मुझे याद है कि किस तरह से वो संगठन के हर सदस्य का ध्यान रखती थीं, चाहे वो संगठन के निचले हिस्से का कर्मचारी हो या चाहे उच्च स्तर का। उन्होंने कभी पद के आधार पर किसी से भेदभाव नहीं किया।

उनका मानना था कि ग्राम सभाओं में हर किसी को एक ही मंच पर बैठना चाहिए, मैंने यह उनसे सीखा और अपने कार्य जीवन में इसका पालन किया। एक मंच पर बैठना शुरूआत में बहुत सरल लगता है लेकिन ध्यान से देखने पर पता चलता है कि किस तरह उन्होंने वांछितों को एक ही मंच पर बैठने के लिए प्रेरित कर उन्हें सम्मानित जीवन दिलाया।

शशि जी को समाज में महिला उत्थान के लिए हमेशा याद किया जाएगा। उनका यह सुझाव कि जल सुविधा (टांका आदि) का नाम घर की किसी महिला के नाम पर ही रखा जाए, बहुत सी महिलाओं के जीवन में गर्व व स्वामित्व का विषय बना। सामुदायिक विकास जिस कठिन समय से गुजर रहा है उसमें मुझे लगता है सबसे बड़ी श्रृंखलाजलि उनके काम और आदर्शों को आगे बढ़ाना होगा, जो उन्होंने अपने पूरे जीवन में जिए।

ओम प्रकाश शर्मा, भारत

श्री ओम प्रकाश शर्मा एक इंजीनियर और विकास विशेषज्ञ हैं जिनको 30 वर्षों का अनुभव है। आप वाटर हार्वेस्ट के भारत निदेशक हैं।

- 20 -

शशि त्यागी - शानदार चरित्र वाले महान लोगों में से एक

शशि जी वास्तव में कुछ महान लोगों में से एक हैं, जिनसे इस जीवन में अब तक तीन बार मुझे मिलने का सौभाग्य मिला है। गाँधी जी की तरह उनका जीवन भी उनका संदेश है। और मेरी नजर में वह संदेश है सर्वोदय - पीड़ित और वंचित लोगों का शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान जिसके लिए निरन्तर उन्होंने व्यापक स्तर पर प्रभावशाली काम किया, विशेष रूप से महिलाओं के लिए। दूसरे शब्दों में, हमारे कलयुग में दमन और दुर्व्यवहार की दुनिया में वह निर्भीक नारीवादी रही हैं, जिन्हें देखकर और प्रेरित होकर न केवल राजस्थान में, बल्कि पूरी दुनिया में बहुत सी बालिकाओं और महिलाओं ने चुपचाप अपने भीतर और बाहर की लड़ाइयों में गरिमा, समानता और साहस की तलाश की है।

जीवन संदेश

मुझे मार्टिन लूथर किंग के शब्द याद आ रहे हैं कि “Unearned suffering is redemptive” (अनअर्जित कष्ट विमोचक है)। मैं यह सोचता हूँ कि जब शशि जी जैसी व्यक्ति, जिनका पूरा जीवन बिना शर्त के सेवा में संलग्न रहा, एक बहुत ही दर्दनाक अनुभव या अवधि से गुजरती हैं, यह अब तक अबूझ कर्मों के सामूहिक बोझ के स्वरूप को बदलने और शुद्ध करने के उद्देश्य से होता है। प्यार, प्रशंसा और आशीर्वाद के साथ!

क्लिफ टिलोट्सन, यू.एस.ए.

ऐसे मधुर स्वभाव वाली, स्वयंभू, शशि जी, जिन्होंने हमेशा दूसरों के हित को अपने आगे रखा, सचमुच महान, गाँधीवादी रूप से जीवन जीने का एक उदाहरण हैं। दुनिया के लिए, उनके समुदाय, दोस्तों और विशेष रूप से उनके प्यार करने वाले परिवार के लिए कितनी बड़ी क्षति है। मुझे यह सोचकर आँखों में आंसू आते हैं कि हम उन्हें फिर से उसी रूप में नहीं देखेंगे। इसलिए शशि जी के लिए, हम केवल अपने प्यार को उनके साथ भेज सकते हैं। जब तक कि हम नए सिरे से मिलते हैं वह अब एक शरीर में जीवन से मुक्त हैं। हम उनके शानदार चरित्र का अनुकरण करने का प्रयास करते रहेंगे। मेरी हार्दिक संवेदना और अभिवादन।

रेनी टिलोट्सन, यू.एस.ए.

शशि जी मेरे और बहुत सारे लोगों के लिए करुणा, दृढ़ निश्चय और साहस की प्रेरणा हैं, उनकी कहानियों, शिक्षाओं और ज्ञान ने मेरे पथ को निर्देशित किया है जिसको मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती हूँ। सेवा नेतृत्व, आत्मनिर्भर समुदाय का निर्माण, सशक्तिकरण, समानता और न्याय, और नारी-शक्ति वे मूल्य हैं जो उन्होंने मुझे दिए जिन्होंने मेरे जीवन के हर कदम पर मार्गदर्शन करने में मदद की।

सशक्त उदाहरण जो उन्होंने अपने आसपास, करीबी और दूर के लोगों के सामने खड़े किए, उनकी आत्मा हमेशा वहाँ जीवित रहेगी। शशि जी के काम, त्याग और उदारता का प्रभाव आने वाली पीढ़ियों में तरंगित होता रहेगा, विशेषकर राजस्थान की महिलाओं में।

मेरा विश्वास है कि ग्रामीण समुदाय खासकर राजस्थान की गाँव की महिलाओं के जीवन में शशि जी और त्यागी जी के निःस्वार्थ समर्पण से बेहद सकारात्मक बदलाव आया है।

हम हमेशा अपने दिल में शशि जी की महान आत्मा को सहेज कर रखेंगे।

2008 में, संध्या ने कॉलेज के अपने जूनियर वर्ष के दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका से 3 महीने ग्राविस के साथ स्वयंसेवक के रूप में काम करने के लिए यात्रा की। उनके पिता, उनके साथ ग्राविस में पहुँचाने के लिए आए और पहली बार त्यागी परिवार से मिले। ग्राविस के केन्द्रों में से एक छत पर सोते हुए, सितारों और नक्षत्रों को देखते हुए — संध्या और शशि जी ने गाँधी के अहिंसा और निःस्वार्थ सेवा के संदेश को अमेरिका में लाने के लिए चर्चा की। संध्या की माँ रेनी और पिता क्लिफ की मदद से उन्होंने जनवरी 2009 में सांता बारबरा, कैलिफोर्निया में विश्व संस्कृति संस्थान के साथ हैंड्स-ऑन गाँधीवादी रिट्रीट की सह-मेजबानी करके उस छत पर देखे सपने को

एक वास्तविकता का स्वरूप दिया। रिट्रीट में उपस्थित लोगों ने मैदान में एक पैदल ध्यान स्थल बनाया, चपातियां बनाईं और शशि जी और अन्य लोगों के नेतृत्व में कार्यशालाओं में भाग लिया। 2018 में टिलोट्सन परिवार ने शशि जी के साथ सैन फ्रांसिस्को में 'मेटा सेंटर फॉर नॉनवॉयलेन्स' और 'थाउजेंड करेंट्स' की यात्रा में भाग लिया। त्यागी परिवार और ग्राविस के साथ उनका गहरा आपसी प्रेम उनके जीवन को स्थायी प्रेरणा प्रदान करता है।

संध्याटिलोट्सन, यू.एस.ए.

विलफ और रेनी टिलोट्सन हवाई में रहते हैं व शशि जी के मित्र रहे हैं। उनकी बेटी संध्या कोलोराडो में रहती हैं व ग्राविस की पूर्व स्वयंसेवक हैं।

- 21 -

अमर यादें

कभी-कभी किसी के व्यक्तित्व के बारे में लिखने के सन्दर्भ में शब्दकोष से शब्द कम पड़ जाते हैं। फिर भी उनके व्यक्तित्व का वर्णन नहीं किया जा सकता है। ऐसी ही एक विशाल हृदय व्यक्तित्व वाली हमारी ग्राविस परिवार की शशि त्यागी जी थीं। महात्मा गाँधी के आदर्शों, विचारों व सिद्धान्तों व उनके बताये मार्ग पर चलना वर्तमान युग में बड़ा कठिन है, लेकिन शशि जी ने अपने जीवन काल में महात्मा गाँधी के आदर्शों व सिद्धान्तों को अपनाये रखा। सभी के साथ समान व्यवहार, मृदु भाषिणी, मिलनसारिता व सभी के प्रति मातृत्व - भाव यह एक छोटा सा संक्षिप्त परिचय है शशि जी के बारे में।

शशि जी का फोन आने पर उनकी विभ्रमता एवं उनकी मधुर वाणी में ग्राविस कार्यालय आने का सुन कर कभी कितना भी व्यस्त रहूँ, लेकिन कभी उनको “मना करने” का मन नहीं हुआ। जैसे ही ग्राविस कार्यालय में प्रवेश करता तो किसी भी विषय पर चर्चा-परिचर्चा करने से पूर्व सबसे पहले वे घर के सभी सदस्यों को हाल - चाल पूछती, फिर चाय मंगवाती उसके बाद ही किसी विषय पर चर्चा-परिचर्चा होती। हांलाकि उम्र में छोटा होने से एक “संकोच” व “भय” प्रारम्भ में शशि जी के साथ रहा लेकिन उन्होंने अपने वात्सल्य भाव से उसे भी मिटा दिया। यह उनका नैसर्गिक गुण था और जब भी हम कभी बाहर किसी गाँव में साथ जाते तो समस्त ग्रामवासी उनके पैर छूते और उन्हें प्यार से “बहिन जी” कहकर पुकारते। समाज सेवा का भाव उनके सामीप्य में रहकर ही जागृत हुआ।

पिताजी से तो मैंने “त्यागी जी” के बारे में खुब सुना था, लेकिन शशि जी से परिचय पिताजी की मृत्यु के पश्चात हुआ और तब से एक पुत्र की भांति स्नेह व आशिर्वाद प्राप्त हुआ। मुझे आज भी याद हैं मेरे विवाह के समय वे किसी कार्यवश जोधपुर शहर से बाहर थीं और नहीं आ सकीं तो उन्होंने बड़ा ही विभ्रमतापूर्वक खेद जताया और वापिस आने पर वहाँ से एक उपहार मेरी पत्नी के लिये लाई।

जीवन संदेश

एक बार ग्राविस के कार्यवश हम जयपुर गये तो बिल्कुल मातृत्व भाव से पूरे रास्ते भर ध्यान रखा और अपने घर से लाया हुआ खाना मुझे खिलाया और जयपुर में ही अपनी बेटी आभा के यहाँ ही रुकवाया और पूरे सम्मान के साथ ध्यान रखा।

ऐसी अनेक स्मृतियाँ, गुण और अनुभव हैं जिनको शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। शशि जी, आप हमारे जीवन में सदैव “शशि” के समान चमकती रहें व हमे शीतलता प्रदान करती रहें। ऐसी ही विशाल हृदय, वात्सल्य भाव, सादगी पसंद व सरलता की प्रतिमूर्ति को कोटि कोटि नमन करते हुये इतना ही लिख सकूँगा।

किशोर कुमार व्यास, भारत

श्री किशोर कुमार व्यास राजस्थान उच्च न्यायालय में अधिवक्ता हैं और ग्राविस के मित्र हैं।

- 22 -

साहसी महिला

शशि जी एक साहसी महिला थी। वो बहुत अच्छा नेतृत्व करती थीं। दुनिया में कुछ ऐसे लोग होते हैं जिनका हम पूरे दिल से सम्मान करते हैं। शशि जी उनमें से एक हैं। मैं अपने जन्मदिन पर उनसे आशीर्वाद लेने जाती थी। मैं 2018 में ग्राविस से जुड़ी और तब से मैं हर रोज उनसे सलाह लेने के लिए फोन पर बात किया करती थी। मैं बहुत खुशकिस्मत थी जो मुझे हर रोज उनसे मार्गदर्शन लेने का अवसर मिला।

मैं भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि उनकी आत्मा को शांति दें।

कृष्णा जोशी, भारत

सुश्री कृष्णा जोशी 3 वर्षों से ग्राविस में कार्यरत हैं।

- 23 -

एक सच्ची मित्र

मेरा नाम कॉनी मेरी है और मैं कैलिफोर्निया, यू.एस.ए में रहती हूँ। मेरे पति माइकल को लगभग 20 या 30 साल पहले भारत में कई बार त्यागी परिवार के घर अतिथि के रूप में रहने का सौभाग्य मिला, और माइकल इन यात्राओं से राजस्थान में उनके अच्छे काम की कहानियों को वापस लेकर आते थे। हमारे छोटे से कैलिफोर्निया स्थित शहर में हमारे सामुदायिक काम आंशिक रूप से भारत में देखे गए काम से प्रेरित थे। कई बार हमें शशि जी के हमारे साथ रहने का सौभाग्य मिला था। मेरी नजर में वह हमेशा अपनी अजेय ऊर्जा के साथ जुटी रहती थीं,

कोई भी काम सही करने के लिए, चाहे वह चूल्हे पर औषधीय उपचार व जड़ी-बूटियों को पका रही हों, या समर्थकों को धन्यवाद देने के लिए फोन कर रही हों, या ग्राविस के लिए इस देश में संपर्क बढ़ाने की योजना बना रही हों। उनकी इस अजेय ऊर्जा में सौम्यता, करुणा और गर्मजोशी इस तरह निहित थी कि उनके चारों ओर मौजूद हर व्यक्ति उनसे आकर्षित और जुड़ा हुआ महसूस करता था।

भले ही मैं उन्हें बहुत अच्छी तरह से नहीं जानती थी, फिर भी मुझे लगा कि उन्होंने दुनिया को जो तोहफा दिया है। वह ग्राविस के साथ उनकी निरन्तर उपलब्धियों से कहीं अधिक उनकी उपस्थिति का प्रभाव था, जिसने मुझे कहा, “तुम उस जगह पर पहुँच सकते हो जहाँ तुम जा रहे हो। आपको अपना सिर ऊँचा रखना है और सम्मानजनक तरीके के साथ ही काम करना है।”

कॉनी मेरी, यू.एस.ए.

सुश्री कॉनी मेरी कैलिफोर्निया में रहती हैं व वो तथा उनके स्वर्गीय पति माइकल लम्बे समय से ग्राविस के मित्र रहे हैं।

- 24 -

ना भूलने वाली यादें

सर्वप्रथम देवी स्वरूपी स्व. श्रीमति शशि त्यागी को शत्रु शत्रु नमन।

ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि श्रीमति शशि त्यागी जिनका देवलोक गमन दिनांक 14.11.2020 को हो गया की पुण्य आत्मा को ईश्वर सदैव अपनी शरण में रखें।

श्रीमति शशि त्यागी जी को मैं पिछले 30 वर्षों से जानता हूँ। श्रीमति त्यागी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव कल्याण व समाज सेवा में समर्पित किया। उन्होंने ग्रामीण विकास विज्ञान समिति (ग्राविस) को अपनी अथक मेहनत, प्रयत्नो व सेवाभाव रखकर ऊँचाईयों तक पहुंचाया। फलस्वरूप जोधपुर के ग्रामीण क्षेत्र के सैकड़ों गाँवों में ग्रामीण जनता को अपनी समिति के माध्यम शिक्षा व स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता के बारे में ग्रामीण क्षेत्र की विशेष कर महिलाओं वृद्धों व बच्चों का मार्गदर्शित कर उनको आर्थिक सहायता प्रदान की।

ग्रामीण क्षेत्र में आज भी कई जगहों पर पानी की बड़ी समस्या है। गाँव की महिलाएँ विशेष कर फलौदी, बाप क्षेत्र के दूरस्थ स्थान से पानी लाकर अपना जीवन यापन कर रही हैं। इस समस्या के समाधान हेतु श्रीमति त्यागी जी ने समिति के माध्यम से टांके बनवा कर बरसात होने पर इन टांकों में पानी एकत्रित कर ग्रामीण क्षेत्र की जनता को यह मूलभूत सुविधा उपलब्ध करवाई।

श्रीमति शशि त्यागी जी गाँव के गरीब तब की मसीहा थी। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को शिक्षा का महत्व एवं महिलाओं के मौलिक अधिकारों के बारे में प्रत्येक महिला से व्यक्तिगत रूप से

सम्पर्क कर बच्चों को स्कूल भेजने व उनको चिकित्सा सुविधा के प्रति जागरूक करती। फलस्वरूप ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों, महिलाओं और वृद्धजनों को सरकार की ओर से चल रही कई योजनाओं का लाभ दिलाया तथा ग्राविस द्वारा भी सहायता प्रदान करने में हमेशा अग्रणी रही।

ग्रामीण क्षेत्र की जनता के लिये तिवरी में एक अस्पताल का निर्माण कर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई। इस अस्पताल से आस-पास के क्षेत्र के व्यक्तियों को लाभ मिला।

श्रीमति शशि जी ने खानों में काम करने वाले मजदूरों को सिलिकोसिस की बीमारी पर मजदूरों की पीड़ा को जानकार आवाज़ उठाई। मजदूरों की इस बीमारी के ईलाज हेतु राज्य सरकार तथा मानवाधिकार आयोग तक गुहार लगाकर सिलिकोसिस पीड़ित मजदूरों के मुफ्त ईलाज की सुविधा की तथा अपनी ओर से भी आर्थिक सहायता समय - समय पर उपलब्ध कराई। इससे सिलिकोसिस पीड़ित मजदूरों व उनके परिवारजन को काफी राहत मिली।

श्रीमति शशि जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव सेवा में समर्पित किया। उनकी गाँधीवादी विचारधारा थी। उनका हमेशा खादी की साड़ी का साधारण सा पहनावा था वह उदार व खुले विचारों की थी। कई बार ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं पर अत्याचार होने पर प्रशासन व पुलिस विभाग से सम्पर्क कर उन्हें न्याय दिलाने में काफी मददगार रही। किसी के साथ अन्याय होने पर शशि जी कभी मदद करने में पीछे नहीं रही तथा पीड़ित पक्ष को न्याय दिलाने हेतु सदैव तत्पर रहती।

इस संस्था का नाम “ग्रामीण विकास विज्ञान समिति“ इसलिए रखा गया चूँकि आज से 40 वर्ष पूर्व ग्रामीण क्षेत्र शिक्षा, चिकित्सा व सामाजिक सरोकार से काफी पिछड़ा हुआ था। इनके स्व. पति श्री लक्ष्मीचन्द त्यागी ने इस सम्बन्ध में ग्रामीण क्षेत्र की जनता की समस्याओं को जानकर गरीब जनता के कल्याण हेतु इस संस्था का नाम ग्रामीण विकास विज्ञान समिति रखकर स्थापना की। श्री एल.सी. त्यागी व शशि त्यागी जी इस समिति के दो पहिये थे जो इस समिति को करीब 40 वर्ष से संचालित कर रहे थे। दिनांक 27.7.2005 को श्री एल.सी. त्यागी का गम्भीर बीमारी से स्वर्गवास होने पर समिति से एक पहिया अलग हो गया। इससे श्रीमति त्यागी को गहरा आघात लगा किन्तु वह ग्रामीण जनता की सहायता व सेवा भाव को अपना कर्तव्य समझकर त्यागी जी के स्वर्गवास के पश्चात् भी मानव सेवा में लगी रही।

जन्म व मृत्यु ईश्वर के अधीन हैं। मृत्यु कटु सत्य है। विधि के विधान के आगे किसी की नहीं चलती। इस पुण्य आत्मा को दिपावली के शुभ अवसर का इन्तजार था व दिनांक 14.11.2020 को श्रीमति त्यागी ने इस नश्वर शरीर को त्याग दिया।

इस करुणामयी, मानवसेवी, समाजसेवी व गरीबों की मसीहा को कभी भुलाया नहीं जा सकता। मेरे लिये श्रीमति शशि त्यागी हमेशा प्रेरणा स्रोत व आदरणीया रहीं। श्रीमति शशि त्यागी के एक पुत्र व एक पुत्री है जो दोनों ही चिकित्सक हैं व दोनों मानव सेवा के कार्य करते हैं।

मैं डॉ. प्रकाश त्यागी जो श्रीमति त्यागी जी के पुत्र हैं उनसे आशा करता है कि वह अपने माता - पिता के पद चिन्हों पर चलकर मानव सेवा के लिये ग्राविस के सेवा भाव कार्यों को अपना

कर्तव्य समझकर इस समिति के माध्यम से ग्रामीण जनता के लिये जो कल्याणकारी कार्य व योजनायें संचालित हो रही है, उनको अनवरत जारी रखेंगे ताकि ग्रामीण क्षेत्र के गरीब लोगों को अधिक से अधिक लाभ मिल सकें।

इस आशा के साथ मैं अपने विचारों को विराम देता हूँ।

कल्याण सिंह भारत

श्री कल्याण सिंह शशि जी के मित्र रहे व राजस्थान पुलिस में कार्यरत थे।

- 25 -

श्रंद्धाजलि - शब्द

जब मैं ग्राविस कलराँ केन्द्र पर कार्यरत था सन् 2006 की घटना है कि मैं दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। मुझे अस्पताल में भर्ती करवाया और पूरे इलाज के खर्चे शशि बहिन जी ने दिये। यदि मैं ग्राविस में नहीं होता तो आज मैं इस दुनिया में नहीं रहता। शशि बहिन जी ने मुझे नया जीवनदान दिया।

काना राम, भारत

श्री काना राम लम्बे समय से ग्राविस परिवार का एक हिस्सा हैं।

- 26 -

एक गुरु - शशि जी

1980 के दशक में शशि जी व त्यागी जी ने पश्चिमी राजस्थान में काम शुरू किया व स्वयंसेवी संगठनों के काम की आधारशिला रखी। तब तक बहुत कम संस्थाएं यहाँ काम कर रही थीं। आप दोनों में ने अपना पूरा जीवन महात्मा गाँधी, विनोबा भावे व जयप्रकाश नारायण के सिद्धांतों को बढ़ाने में बिताया।

बहिन जी का सादा जीवन व उनका सबसे मेलजोल कमाल का था। वह पूरी तरह से सामाजिक मुद्दों तथा सामुदायिक विकास के लिए कटिबद्ध थीं। कार्य करते - करते उन्होंने बहुत से युवा साथियों को प्रशिक्षित किया। मैंने खुद 1983 में उनके साथ काम करना आरम्भ किया, जब गगाड़ी में ग्राविस के पहले केन्द्र की स्थापना हुई। 1983 से 1990 के बीच मैंने उनके साथ प्रार्थनाओं, सभाओं, श्रमदान, परियोजनाओं आदि में भाग लिया। स्नेह से वे मुझे गणपत भाई बुलाती थीं। बाद में उन्होंने मुझे नेता जी कहना शुरू किया, मेरी नेतृत्व क्षमता को सम्मानित करते हुए।

जीवन संदेश

राजस्थान में उन्होंने महिलाओं व गरीबों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, पानी व जमीन के विषयों पर निरन्तर काम किया। उनका कुशल नेतृत्व उनको ग्रामीण समुदायों में बहुत लोकप्रिय बनाता था। लोग उन्हें नारी शक्ति के रूप में जानते हैं। मातृ समान शशि जी को मेरी विनम्र श्रद्धांजलि।

गणपत लाल मेहरा, भारत

श्री गणपत लाल मेहरा पूर्व में ग्राविस के साथ काम कर चुके हैं तथा आइडिया के संस्थापक हैं।

- 27 -

सहकर्मियों के लिए प्रेम

मैं शशि जी की स्मृति करता हूँ। एक नेक दिल और सबकी चिंता करने वाली व्यक्ति के रूप में वे याद आती हैं। वह जब भी ग्राविस के केन्द्रों पर जातीं, वहाँ के कार्यकर्ताओं से बहुत उत्साह से मिलती थीं। सभी कार्यकर्ता उनका बहुत सम्मान करते और उनसे बहुत प्रेम रखते थे। उनका ध्यान हमेशा निर्धनों और दलितों पर रहता था। मुझे याद है एक बार उन्होंने एक गरीब ग्रामीण की मदद अपने निजी धन से की जिसको बिजली का झटका लगा था।

वह एक निडर महिला थीं और ईश्वर में आस्था रखती थीं। अपने सहकर्मियों और कार्यकर्ताओं के लिए वह एक प्रेरणास्त्रोत हैं।

गिरजा शंकर गिरी, भारत

श्री गिरजा शंकर गिरी कई वर्षों से ग्राविस परिवार के सदस्य हैं।

- 28 -

शशि जी के जीवन के स्मरण

श्रीमती शशि त्यागी, दूरदर्शी सोच और दयालु हृदय वाली महिला, दुनियाभर के लिए मानवीय और संवेदनशील थीं। वह जरूरतमंद लोगों की सहायता करने वाली एक उदार और स्थिर व्यक्तित्व थीं।

इतनी साहसी कि उन्होंने अपनी बीमारी के सबसे कठिन समय में भी अपनी सेवा की भावना को ऊँचा रखा। उनके सभ्य और सहायक प्रयासों ने कई दिलों को छू लिया। उनके निधन ने न केवल ग्राविस में बल्कि कई जिंदगियों में एक शून्य पैदा कर दिया है जिनकी उन्होंने मदद की और जिनको उन्होंने प्रभावित किया।

हमें निश्चित रूप से उनकी सोच, दर्शन, दृष्टि और अनुग्रह पर गर्व है जो कि ग्राविस के लिए हमेशा विरासत बन के रहेंगे।

गुलाम अली, भारत

डॉ. गुलाम अली एक वरिष्ठ नेत्र चिकित्सक हैं तथा पूर्व में ग्राविस को अपनी सेवाएं दे चुके हैं।

- 29 -

तीस वर्षों से अधिक के संबंध की शशि जी की कुछ यादें

हालांकि ग्राविस के साथ हमारा पहला संपर्क 1988 में भारत में हुआ था, परन्तु हम पहली बार शशि जी से तब मिले जब वह और उनके पति त्यागी जी 1992 में ओलंपिया, वॉशिंगटन राज्य के पास हमारे घर में छह दिनों तक रहे। उस दौरान हम त्यागी दंपति के साथ राज्य के पूर्वी हिस्से के कैस्केड पर्वत के पार रात भर की यात्रा कर शुष्क क्षेत्रों में खेती के कुछ उदाहरण देखने के लिए गए। हालांकि शशि जी उस समय अस्वस्थ महसूस कर रही थीं, लेकिन उन्होंने सभी यात्राओं में सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने और त्यागी जी ने एवरग्रीन स्टेट कॉलेज में एक वर्ग और हमारे स्थानीय सार्वजनिक पुस्तकालय में एक समूह से भी बात की और उन्होंने 'पीपल फॉर प्रोग्रेस इन इंडिया' (पीपीआई) समूह के साथ सिएटल में मुलाकात की।

त्यागी दंपति ने 2001 में फिर से हमसे मुलाकात की, जब हमने अपने घर पर उनसे मिलने के लिए एक समूह की मेजबानी की। साथ ही साथ सिएटल में 'पीपीआई' के साथ फिर से मुलाकात करने गए। सभी आयोजनों में उपस्थित लोग उनके समर्पित कार्य से प्रभावित थे और महिलाओं के उत्थान में उनकी विशेष रुचि थी।

शशि जी के बारे में जो बात मुझे व्यक्तिगत रूप से याद है, वह उनकी उदार प्रकृति है। हमारी सभी बैठकों में भारत और अमेरिका में, उन्होंने हमें थार के ग्रामीणों द्वारा बनाई गई सुंदर शिल्प वस्तुएं दीं। 2002 में शशि जी थार में दो तीर्थ मंदिर स्थलों के दौरे पर हमें लेकर गईं, जो मैं देखना चाहता था। रामदेवरा में विधवा महिलाएं मंदिर के पास एक गहरे कुएं के पास बैठी सहायता मांग रही थीं। हमारे संक्षिप्त कार्यक्रम में सीमित समय होने के बावजूद, उन्होंने महिलाओं के साथ बात करने के साथ-साथ उन्हें कुछ मदद देने के लिए भी समय दिया।

2007 में हमारे घर की यात्रा पर शशि जी कई तरह की शिल्प वस्तुओं को लेकर आईं और हमने दुनिया भर में मेले-ब्यापार वाले शिल्प बेचने वाले एक स्थानीय व्यवसायी से सम्पर्क किया, ताकि थार के गाँव में महिलाओं द्वारा बनाई गई शिल्प वस्तुओं के लिए एक बाजार की व्यवस्था करी जा सके।

हम भारत में उनके काम के लिए प्राप्त राष्ट्रव्यापी मान्यता और पुरस्कारों से बहुत प्रभावित थे। एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिन्होंने बहुत से लोगों के जीवन को सकारात्मक रूप से छुआ है, हम उन्हें बहुत याद करेंगे।

गैरी वर्थिंगटन, सैंड्रा वर्थिंगटन, यू.एस.ए

गैरी वर्थिंगटन एक वकील हैं, लेखक (इंडिया ट्रेजरीज/द मानगढ़ क्रॉनिकल्स) हैं व वयस्क शिक्षाविद और पर्यावरणविद हैं। वर्थिंगटन फाउंडेशन के अपनी पत्नी सैंड्रा के साथ सह-ट्रस्टी है।

- 30 -

एक जन नेता

शशि जी से मेरी मुलाकात ग्राविस कार्यालय में वर्ष 2000 की शुरुआत में हुई थी जो उनके आवास के साथ ही था। घर और दफ्तर में घूमते हुए मुझे अहसास हो रहा था कि पूरे परिवार का माहौल कितना मजबूत है। जब मैं उनसे मिला तो वह घर में माँ से मिलने जैसा था। वह बहुत सहज और सरल थीं और आगंतुकों को तुरन्त घर जैसा महसूस कराने की उनमें एक अद्वितीय क्षमता थी। बैठक में अपने कर्मचारियों के साथ व हमारे साथ उनका व्यवहार दोस्ताना था परन्तु अपने बिन्दु रखते हुए वह स्पष्ट और सुदृढ़ थीं। उनके पास परिपक्वता और ग्राविस के संस्थापक और निदेशक के रूप में उनकी भूमिका को सुचारु रूप से निभाने की क्षमता थी।

भारतीय संस्कृति में माताओं को एक विशेष महत्व व दर्जा प्राप्त है और पूरा परिवार उनके चारों ओर केन्द्रित होता है। माएं स्नेहमयी, भरोसेमंद, सुलभ और विश्वसनीय होती हैं जिनके पास सबको सुनने का समय होता है और बच्चों को महत्वपूर्ण महसूस कराती हैं। ये सभी गुण शशिजी के पास प्रचुर मात्रा में थे और लोगों को आगे बढ़ने और समृद्धि में मदद करने के लिए उन्होंने दूसरों को निःस्वार्थ रूप से अपना समय दिया। उनके पास वह करिश्मा था जिसने लोगों को उनके उदाहरण का अनुसरण करने और उनके तेज की चमक में निखरने दिया। उन्होंने वास्तव में एक नेतृत्वकर्ता के गुणों का प्रदर्शन किया जो कहता है: “इससे पहले कि आप एक नेता हों, सफलता का अर्थ अपने आप को बढ़ाना है। जब आप एक नेता बन जाते हैं, तो सफलता दूसरों को आगे बढ़ाने के बारे में होती है।

शशि जी के काम को उन सभी समुदायों और लोगों के साथ देखा और महसूस किया जा सकता है, जिनके साथ उन्होंने काम किया। वह एक शक्तिशाली नेता थीं जिन्होंने विशेष रूप से महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए काम किया, और यह उनका काम और नेतृत्व है जिसने राजस्थान भर के गाँवों में कई महिलाओं को नेतृत्व के पदों पर बढ़ने के लिए प्रेरित किया। वृद्ध महिलाओं, पुरुषों और उनके परिवारों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए उनके कई योगदान

सराहनीय हैं। वह सरकार, संयुक्त राष्ट्र और सामुदायिक मंचों के साथ राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक विकास की वकालत करने वाली समावेशी मॉडल की एक मजबूत नेता एवं वक्ता थीं। अपने सराहनीय कार्य के लिए उन्हें कई पुरस्कार मिले, फिर भी जब आप उनसे मिलें तो कभी किसी उपलब्धि का जिक्र उनके मुँह से नहीं सुना। उनकी विनम्रता वास्तविक थी और वह गरीबों की सच्ची चैंपियन थीं।

जब भी मैं उनके साथ था, एक उत्साही छात्र की तरह कई चीजें सीखीं, जिन्होंने मुझे अपने जीवन में मदद की है। शशि जी ने सच्चे सामाजिक कार्यों की एक स्थायी विरासत छोड़ी है जो विकास के क्षेत्र में सभी के लिए एक शिक्षा और सीख है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि उन्होंने जो भी काम किये हैं उसका प्रकाश भारत और विदेशों में हजारों लोगों के लाभ के लिए दूर-दूर तक बढ़ेगा और पहुँचेगा।
उच्च सम्मान के साथ।

गॉडफ्रेड पॉल, म्यान्मार

श्री गॉडफ्रेड पॉल एक वरिष्ठ विकास विशेषज्ञ हैं जो हैल्पेज इन्टरनैशनल के साथ काम करते हैं।

- 31 -

यादों में जीवित

आदरणीय शशि बहिन को अधिकतर लोग शशि बहिन ही कहते थे। उनका मधुर स्वभाव और मीठी वाणी हमेशा देखने और सुनने को मिलती थी। वो अधिकतर युवाओं को आगे बढ़ाने और उनका हर तरह से सहयोग के लिए तैयार रहती थी। उन्होंने मुझे भी हमेशा जिम्मेदारी देने की कोशिश की और आगे बढ़ाया। वो हमेशा कहती रहती थीं कि हमने तो बहुत कर लिया, अब आपको ही सामाजिक कार्यों और सर्वोदय को आगे बढ़ाना है। वो हमेशा मुझे अपने सामाजिक कार्य क्षेत्र में साथ लेकर जाती और सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में मुझे तैयार भी करती थीं। हमने “गाँधी विचार आपके द्वार” शांति सद्भावना यात्रा निकाली जिसकी पूरी जिम्मेदारी आपने निभाई। इस यात्रा का शुभारम्भ मैं भाई जी डॉ.एस.एन. सुब्बाराव जी के साथ इंडोनेशिया के इन्द्रा भाई, एन.वाई.पी. के साथीगण और दिल्ली व जोधपुर के साथियों ने भी भाग लिया। भाई जी के कारण मुझे भी यात्रा को सफल बनाने का मौका मिला।

शशि बहिन ने युवाओं के लिए युवा शिविर भी आयोजित किये। ऐसे सराहनीय सामाजिक कार्य किये जिसमें आज भी उनकी झलक मिल ही जाती हैं। उनकी हमेशा एक नसीहत थी कि गौतम जी आप अच्छा लिखते और गाते हैं तो निरन्तरता बनायें रखना। मैं अपने आपसे उम्मीद करता हूँ कि उनका विश्वास बनाए रखूँगा और शशि बहिन हमेशा यादों में जीवित रहेंगी।

गौतम के. गट्स, भारत

श्री गौतम के गट्स राजस्थान के एक सामाजिक कार्यकर्ता व गाँधीवादी चिन्तक हैं।

शशि त्यागी : एक अद्वितीय योद्धा

श्रीमती शशि त्यागी जी जिन्हें मैं शशि बहिन कहता था, एक सरल, आडंबरहीन, मिलनसार, विनम्र और भद्र महिला थीं। मुझे गाँधी शांति प्रतिष्ठान (जीपीएफ) के दिनों से शशि बहिन को जानने का सौभाग्य मिला। गरीबों के लिए काम करने की उनकी अदम्य इच्छा और उनके जीवनसाथी लक्ष्मी चंद त्यागी जी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम उन्हें सुखियों में लाया, जिनसे मैं पहली बार कोलकाता में सम्मानित प्रेम भाई के साथ 1979 में कुछ समय के लिए परिचित हुआ था, जब वह बनवासी सेवा आश्रम में थे। लेकिन मैं शशि बहिन से पहली बार 1984 या 1985 में दिल्ली के गाँधी शांति प्रतिष्ठान में एक बैठक में मिला।

गाँधीवादी सक्रियता में शशि बहिन का योगदान उल्लेखनीय था। वह एक सच्ची गाँधीवादी रचनात्मक कार्यकर्ता थीं। उनके जीवन की अनूठी विशेषता यह थी कि समुदाय के पिछड़े तबकों तक पहुँचने के लिए उन्हें सशक्त बनाने और संकटग्रस्त लोगों को बचाने के लिए पूरी जिजीविषा से जुट जाती थीं, जो मैंने ग्राविस के माध्यम से विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं, राहत कार्यों में देखा है। उनकी ताकत, उनकी सहानुभूति और करुणा ही थी जिसने उन्हें कार्य की गहराई में जाने की पकड़ दी। जब वह सर्व सेवा संघ (एसएसएस) में ट्रस्टी और अन्य भूमिकाओं में थीं, तब उन्होंने बड़ी क्षमता और जिम्मेदारी का निर्वहन किया। उन्हें जो सबसे ज्यादा पसंद था, वह सामुदायिक समूहों की सहायता के लिए प्रयास। वह महिलाओं से संबंधित मुद्दों, स्वास्थ्य, जल संरक्षण और प्रबंधन के बारे में भी संवेदनशील थीं। वह शायद ही अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में कभी विफल रहीं। मुझे नहीं पता कि संकटग्रस्त, वंचित जनता, गरीबों और दलितों, चिंतित लोगों तक पहुँचने के लिए ऊर्जा प्राप्त करने का उनका रहस्य क्या था। मेरा मानना है कि उनका बेटा प्रकाश एक प्रतिबद्ध साथी हैं, जो अपनी माँ के दर्शन की मशाल को आगे ले जाने की क्षमता रखते हैं।

व्यक्तिगत रूप से वह मेरी गतिविधियों के प्रति सबसे स्नेहशील और उत्साहजनक थीं, खासकर जब मैं कोकराझार, असम में शांति के काम में शामिल था। बहुत बार वह मुझसे टेलीफोन करती थीं और मेरे स्वास्थ्य और गतिविधियों के बारे में पूछताछ करती थीं। वह बहुत आशावादी थीं। यह उनका असाधारण गुण था कि उनके आखिरी दिनों में जब वह ठीक से बात भी नहीं कर पा रही थीं और मैं उन्हें ठीक से नहीं सुन पा रहा था, उन्होंने बार-बार उल्लेख किया कि कैसे कार्यक्रमों को सुचारु बनाया जाए। उन्होंने देश भर के कई सर्वोदय कार्यकर्ताओं को प्रेरित किया। वह सर्व सेवा संघ और सर्वोदय आंदोलन के पुनरुद्धार को लेकर बहुत चिंतित रहती थीं। वह सर्व सेवा संघ में चुनौतीपूर्ण स्थिति के बारे में पूरी तरह से अवगत थीं, फिर भी उनका सपना था कि सर्व सेवा संघ निकट भविष्य में एक प्रभावी भूमिका निभाएगा, जो उन्होंने अपने बीमार, कमजोर स्वर के साथ टेलीफोन पर मुझसे साझा किया था। उनके कुछ सर्वोदय सहयोगियों पर उनके मजबूत विश्वास ने उन्हें एक सपना देखने में मदद की। आशा है कि जब वह हमारे साथ नहीं है तो लोग

उनके विश्वास को निराश नहीं करेंगे। जब हम राजस्थान राज्य के सर्वोदय समाज में दो महिला नेताओं के बारे में सोचते हैं, तो तुरन्त हमारे दिमाग में दो नाम आते हैं, एक हैं शशि बहिन और दूसरी हैं आशा बहिन। गाँधीवादी तरीके से महिलाओं के अधिकार के लिए संघर्ष का नेतृत्व करने में इन दोनों ने बहुत योगदान दिया है।

शशि बहिन को उन लोगों में से एक के रूप में याद किया जाएगा, जिन्होंने गरीबों और अनसुने लोगों के लिए संघर्ष किया। मुझे यकीन है कि उनकी विरासत भविष्य में कई युवा कार्यकर्ताओं को प्रेरित करेगी। उनकी अनुपस्थिति निश्चित रूप से गाँधीवादी आंदोलन के लिए एक बड़ा झटका है। उनके निधन पर मैंने एक करीबी दोस्त, वास्तविक दयालु सहयोगी खो दिया है। मैं सर्व सेवा संघ की ओर से व व्यक्तिगत रूप से शशि बहिन को हार्दिक सम्मान देता हूँ।

चंदन पाल, भारत

श्री चंदन पाल एक जाने माने गाँधीवादी चिन्तक हैं तथा सर्व सेवा संघ के वर्तमान अध्यक्ष हैं।

- 33 -

हमारी बहिन जी

शशि जी ऐसे महान लोगों में एक थी, जो सिर्फ दूसरों के लिये जीती थीं। वो एक ऐसी महान आत्मा थीं, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन लोगों की भलाई में लगा दिया। दुनिया में ऐसे ही महान लोगों की जरूरत है जो महानता की सेवा को सबसे बड़ा धर्म समझते हैं। शशि जी मानवता की जीती जागती मिसाल थीं जिनका नाम लेते ही मन में माँ की भावना उमड़ने लगती हैं। कथनी और करनी का योग, उपदेश और आचरण का संगम, जिसका नाम था शशि त्यागी। गरीब और दूर दराज ढाणियों में रहने वालों से इतना प्रेम किसी ने नहीं किया होगा जितना शशि त्यागी ने किया।

शशि जी से मैंने जो कुछ सीखा उसका बयान मैं नहीं कर पाऊँगा क्योंकि मेरे लिए उन्होंने जो कुछ भी किया उसका वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। मैं सदैव ग्राविस को अपना परिवार मानता हूँ और शशि जी के बताए मार्ग पर चलना ही मेरे जीवन का उद्देश्य है। मैं उनकी महान आत्मा को कोटि कोटि नमन करता हूँ।

जगदीश मेघवाल, भारत

श्री जगदीश मेघवाल ग्राविस परिवार का एक हिस्सा हैं।

प्रतिबद्धता और जुनून

शशि जी उन सामाजिक कार्यकर्ताओं की पीढ़ी से थीं जिनके बारे में हमने बहुत कुछ सुना और उनमें से कुछ लोगों से भी मिले। सामाजिक कार्यकर्ताओं की वह पीढ़ी गाँधी जी, विनोबा भावे और उनके जैसे महान लोगों से प्रेरित थीं। मूल रूप से पूरी तरह से समाज के गरीब और हाशिए के तबकों के लिए प्रतिबद्ध, सोच में सरल, साधारण जीवन शैली और बिना किसी व्यक्तिगत लाभ के सेवा करने वाले।

शशि जी से मेरी पहली मुलाकात 1999 में हुई थी। मैं भी स्वैच्छिक संगठनों की दुनिया में एक नया प्रवेशकर्ता था। मैंने सुना था कि स्वैच्छिक क्षेत्र में काम करने वाले लोगों के पास बड़ा अहंकार होता है। लेकिन जब मैं उनसे मिला तो मुझे उनमें कोई अहंकार नहीं दिखा लेकिन हाँ आत्मसम्मान था, बहुत सम्मान और निष्ठा थी गरीबों के लिए, खासकर महिलाओं के लिए।

मैं उनके साथ जोधपुर से उन कुछ गाँवों की यात्रा करने के लिए गया जहाँ ग्राविस काम कर रहा था। यह एक यादगार यात्रा थी और मैंने उस संक्षिप्त एक दिवसीय यात्रा के दौरान वास्तव में उनसे बहुत कुछ सीखा। उनके पास लोगों के साथ तालमेल बनाने का विशेष गुण था। हम जहाँ भी गए, ग्रामीण महिलाएं उन्हें अपने में से एक मान रही थीं। हालांकि हम पहली बार मिल रहे थे, लेकिन बहुत जल्द, वह मेरे साथ एक दोस्त या छोटे भाई की तरह व्यवहार कर रही थीं। मैंने उनसे पूछा कि वह इस क्षेत्र में कैसे पहुँची और वह भी राजस्थान में। अगर मुझे सही से याद है, तो उन्होंने मुझे बताया कि वह मूल रूप से उत्तर प्रदेश की हैं। उन्होंने बहुत ही ईमानदार और सरल उत्तर दिया। उन्होंने बताया कि, “मैंने त्यागी जी से शादी की और उसके साथ मैंने उनके विचारों, उनके काम और उनके जुनून के साथ भी शादी की। मुझे गरीबी या उन समस्याओं के बारे में पहले से जानकारी नहीं थी, जिनका महिलाओं को राजस्थान में सामना करना पड़ता है, विशेषकर पश्चिमी राजस्थान में जहाँ महिलाओं को पानी लाने के लिए मीलों पैदल चलना पड़ता है। मुझे यह काम पसंद आने लगा जो त्यागी जी कर रहे थे।”

मैं अरावली में काम कर रहा था और हम कई बार विभिन्न बैठकों में मिले। जब मैंने राज्य सरकार में काम करना शुरू किया, तब ग्राविस एमपावर परियोजना में हमारे साझेदार थे। इससे मुझे उनके साथ काम करने का एक और अवसर मिला, हालांकि केवल एक सहभागी के रूप में। मैंने उन्हें बहुत सरल और स्पष्ट पाया, अपने दृष्टिकोण में बहुत ईमानदार और सीखने के लिए तत्पर।

2018 में मुझे शशि जी का फोन आया और उन्होंने मुझसे पूछा, “जयपाल जी, आप कहाँ हैं? मैं जयपुर में हूँ और मैं आपसे मिलना चाहती थी।” हम लगभग 3-4 वर्षों से सम्पर्क में नहीं थे और मुझे उनका फोन आने पर सुखद आश्चर्य हुआ। मैंने कहा कि मैं घर पर हूँ और आपसे यहाँ मिलना पसंद करूँगा। मैंने उनसे बैठक के उद्देश्य के बारे में नहीं पूछा। बाद में मैं सोच

रहा था कि शशि जी मुझसे क्यों मिलना चाहती हैं? वह सुबह आयीं और वह उपहार के रूप में कुछ मिठाइयां लायी थीं। वह सुनीता (मेरी पत्नी) और अल्पना (मेरी बेटी) से मिलीं। मैंने उनसे नाश्ते के बारे में पूछा, उन्होंने कहा कि मैंने अपना नाश्ता कर लिया है, लेकिन थोड़ा ले सकती हूँ। हमने पश्चिमी राजस्थान के बारे में, ग्रामीण विकास के बारे में, सरकार के दृष्टिकोण, ग्राविस इत्यादि के बारे में 90 मिनट बातचीत की। फिर उन्होंने कहा, “धन्यवाद जयपाल जी, अब मुझे जाना है। मुझे आपसे मिलकर बहुत अच्छा लगा। मैं वास्तव में यह जानने के लिए उत्सुक था कि वह क्यों मिलना चाहती थीं। मैंने उनसे पूछा। मैंने कहा, “शशि जी, मैं भी आपको देखकर और आपसे बात करके बहुत खुश हूँ, लेकिन इस बैठक का उद्देश्य क्या था?” उन्होंने उत्तर दिया, “क्यों? मैंने तो आपसे मिलने के बारे में ही सोचा था! क्या यह एक अच्छा उद्देश्य नहीं है?” वह इतनी सरल आत्मा थीं। प्रकाश उन जैसी माँ को पाने के लिए धन्य हैं।

जयपालसिंह, भारत

श्री जयपाल सिंह एक वरिष्ठ विकास सलाहकार हैं जो कई संस्थाओं से जुड़े रहे हैं।

- 35 -

प्रार्थना

दीपावली के दूसरे दिन पता चला कि ग्राविस की सचिव सुश्री शशि त्यागी जी का देहान्त हो गया। अत्यन्त दुःख एवं खेद महसूस हुआ। ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे अपने ही परिवार में से एक सदस्य कम हो गया हो तथा स्नेह, अपनापन तथा शिक्षा का स्तम्भ हमेशा - हमेशा के लिये ढह गया हो। हालांकि कई सालों से सम्पर्क नहीं हो पाया था परन्तु ग्राविस के अन्य साथियों की मुलाकात से समाचार मिलते रहते थे। कभी इन्टरनेट के माध्यम से ग्राविस परिवार तथा गतिविधियों की जानकारी मिल जाती थी। मैं सन् 2004 से ग्राविस परिवार से मिला था। पहली मुलाकात श्रीमान लक्ष्मीचन्द जी, बहिन जी तथा एस.के.कश्यप जी से हुई थी। आज तीनों ज्ञानमूर्ति संसार में नहीं रहे, बड़े दुःख की बात है। श्रीमान त्यागी जी के स्वर्गवास के समय में तो मैं ग्राविस में अपनी सेवाएँ दे रहा था। सादर श्रद्धांजलि।

जस्सा राम कडेला, भारत

श्री जस्सा राम कडेला लम्बे समय तक ग्राविस कार्यकर्ता रहे हैं।

जीवन पर गहरा प्रभाव

अपने जीवन के शुरुआती बीस वर्ष की उम्र में फिनिश विश्वविद्यालय के छात्रों के एक समूह के साथ भारत जाना मेरे लिए एक जीवन बदलने वाला अनुभव था। मेरे अंदर जो थोड़ी बहुत सामाजिक विकास के प्रति सक्रियता थी, वह विशेष रूप से ग्राविस कार्यकर्ताओं, लक्ष्मी जी और शशि जी को मिलने से आई। यह देखने के बाद कि शशि जी और ग्राविस के साहसी लोगों ने इस तरह की प्रतिकूलताओं के खिलाफ क्या हासिल किया, मुझे एहसास हुआ कि व्यक्ति वास्तव में चीजों को बदल सकता है और कम से कम एक सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना अवश्य सार्थक है।

बीस साल से अधिक पुरानी मेरी डायरी के अनुसार शशि के बारे में मेरे कुछ प्रारंभिक विचार हैं। “शशि एक बहुत ही करिश्माई और मजबूत इरादों वाली व्यक्ति हैं। रेगिस्तानी गाँवों में लोगों के बीच वह और लक्ष्मी जी बहुत पूजनीय लगते हैं। लगता है कि 54 साल की उम्र में श्री त्यागी की स्फूर्ति कम हो सकती है, लेकिन शशि जी भरपूर ऊर्जा के साथ देश-विदेश की यात्रा करती हैं।

“शशि जी सीधे कंधे के साथ प्रत्यक्ष बात करती हैं लेकिन गर्मजोशी से। एक व्यक्ति के सामाजिक पद या प्रतिष्ठा से प्रभावित हुए बिना वह एक राजनेता या एक बकरी चराने वाले के साथ समान रूप से बात करती थीं।”

बाद में जब मुझे शशि जी के बारे में कुछ बेहतर मालूम हुआ और फिनलैंड में उनसे मिला, तो मैंने उनमें अन्य बातों पर ध्यान दिया। अब जब मैं उनके बारे में याद करता हूँ, तो मेरे दिमाग में सबसे पहले उनकी मुस्कान आती है। उनकी मुस्कान और हंसी, वे वास्तव में संक्रामक थे। उनका प्रभामण्डल ऐसा था कि आप उन्हें डर से नहीं, बल्कि सम्मान से सुनेंगे। हास्य और थोड़ी शरारत की भावना उन के व्यक्तित्व के अन्य पहलू से अधिक प्रिय थे। वह हमारे बच्चों ओली और वप्पू का बहुत ध्यान रखती थीं।

कुल मिलाकर मैं बहुत खुश हूँ कि मैं उनसे मिला, उनको जाना और उन्हें अपना दोस्त कह सकता हूँ। वह उन दुर्लभ लोगों में से एक थीं जो अमिट छाप छोड़ती हैं, भले ही आप सालों और हजारों मील दूर हों।

जुस्सी नूसीआइनेन, फिनलैंड

श्री जुस्सी नूसीआइनेन एक संचार विशेषज्ञ हैं व पूर्व में ग्राविस के स्वयंसेवी रहे हैं।

- 37 -

शशि जी से मुलाकात की यादें

इस नोट को निमंत्रित करने के लिए धन्यवाद और इस समय मैं आपके, आपके परिवार और ग्राविस के बारे में सोच रहा हूँ।

मैंने शशि जी की यादों को शब्दों में लिखने के लिए जोधपुर में बिताई उस गर्मी से अपने नोट्स और निबन्धों को देखने के लिए कुछ समय बिताया। मैं याद करता हूँ उनका स्नेहिल और दयालु व्यवहार, विशेष रूप से एक युवा के लिए जो खासतौर पर गर्मियों की शुरुआत में भारत में अमेरिका से आकर खो सा गया था, जो उसके लिए अविश्वसनीय था। मुझे याद है वह मेरे लिए अनुवाद करती थीं, जब मैं ग्राविस के बारे में, स्थान और लोगों के बारे में सीख रहा था। मुझे याद है मेरा यह पूछना कि उनका बचपन का सपना क्या था - उन्होंने कहा यात्रा करना और मैं यह सोचकर खुश होता हूँ कि वह बचपन के सपने को पूरा करने में कितनी सफल रही थीं। वह एक विशेष व्यक्ति थीं और इसमें कोई शक नहीं कि उन्हें दुनिया याद करेगी।

जसदीप गरचा, अमेरिका

श्री जसदीप गरचा आई.टी. विशेषज्ञ हैं और पूर्व में ग्राविस के स्वयंसेवी रहे हैं।

- 38 -

शशि त्यागी : एक मित्र व सहकर्मी की तरफ से एक श्रद्धांजलि

ग्राविस का गठन 1983 में हुआ था और मैंने अपना काम महिलाओं के साथ सेवा मंदिर, उदयपुर में 1981 में शुरू किया था। मैं जब भी संभव हो राजस्थान में ग्रामीण विकास और महिलाओं पर काम करने वाले अन्य लोगों के साथ मिलने और सहयोग करने की इच्छुक रहती थी। मैं कनाडा में ओम श्रीवास्तव से शादी के ठीक बाद 1970 में राजस्थान आयी थी, जो वयस्क शिक्षा की डिग्री लेकर टोरंटो में अपनी पढ़ाई करके लौटे थे एक कनाडाई पत्नी के साथ जो उनकी “साथी स्टूडेंट” थीं! शशि जी और लक्ष्मी चंद जी के जैसे ही हम भी एक “विकास के क्षेत्र में जुड़े युगल” थे। मैं उन दोनों से शुरुआती दिनों में मिली, तब मुझे लगता है कि वे जोधपुर के पास अफीम की लत के विरुद्ध काम कर रहे थे। इन वर्षों में उनका और हमारा काम बढ़ता गया और हम राजस्थान की सभी घटनाओं या महिलाओं के कार्यक्रमों में मिलते थे और पिछली मुलाकात से वर्तमान समय तक के व्यक्तिगत और कार्य संबंधी समाचार साझा करते थे।

जब हम एकल नारी शक्ति संगठन, राजस्थान के गठन की प्रक्रिया का प्रयास कर रहे थे, तो मैंने ग्राविस परिसर में शशि जी से मुलाकात की और हमने संभावित सहयोग पर चर्चा की। दृष्टिकोण एक महिला संगठन का निर्माण करना था जो कम आय वाली विधवाओं, एकल, तलाकशुदा और

बड़ी उम्र की विवाहित महिलाओं के साथ काम जारी रख सके, भले ही कोई वित्तीय संस्था उनका समर्थन नहीं कर रही हो। इसका मतलब यह होगा कि संगठन की संस्कृति को सरल बनाना होगा - बैठकों के लिए पानी का एक मटका और शायद एक कप चाय। शशि जी और मैंने इस पर सहयोग करने की चर्चा की, लेकिन दुर्भाग्य से इस पर काम नहीं बढ़ पाया।

और कुछ महीने पहले मुझे एक फाउंडेशन से जुड़े एक कनाडाई दोस्त का पत्र मिला जो महिलाओं और बालिकाओं का सहयोग करता है। उन्हें स्कूल जाने वाली बालिकाओं के साथ राजस्थान के थार रेगिस्तान में एक परियोजना के लिए वित्तीय सहायता देने के लिए संपर्क किया गया था। उद्देश्य बालिकाओं के स्कूल छोड़ने के मूल कारण तक पहुँचना और उसका हल निकालना था। एक बड़ा कारण यह है कि बालिकाओं को अपने परिवार के उपयोग के लिए काफी दूर से पानी लाने में बहुत समय लगाना पड़ता है। लिया गया समय (अनुमानित 7 घंटे प्रति दिन) स्कूल में उपस्थिति को रोकता है। थार मरुस्थल में बालिकाओं के साथ काम करने वाली संस्था, बालिकाओं और उनके परिवारों को टांका और खड़ीन बनाकर कृषि आय बढ़ाने, किचन गार्डन विकसित करने, उनकी “पानी लाने” की समस्याओं को हल करने में मदद करता है। बालिकाओं को स्कूल की आवश्यक वस्तुएं और स्कूल जाने के लिए साइकिल मिलती है। मैंने पूछा कि कौन सा स्थानीय एनजीओ इस परियोजना पर काम कर रहा है, और यह ग्राविस था। इस प्रकार हम सभी अपने - अपने तरीके से राजस्थान में महिलाओं और बालिकाओं के लिए प्रभावी रणनीतियों के साथ काम कर रहे हैं।

शशि जी की गाँधीवादी मूल्यों के प्रति गहरी आस्था, काम के लिए उनकी प्रतिबद्धता, उनकी मित्रता को हमेशा याद रखा जाएगा।

जिनी श्रीवास्तव, भारत

सुश्री जिनी श्रीवास्ताव एक जानी मानी सामाजिक कार्यकर्ता हैं व आस्था की संस्थापिका हैं।

- 39 -

अफ्रीका से प्यार भरी यादें

मैं कहाँ से शशि जी के लिए शुरू कर सकती हूँ? भारत आने से पहले भारत शब्द का अर्थ मेरे लिए गंभीर बीमारियाँ और मरणासन्न रूप से बीमार लोगों के लिए सहायता का देश था। ऐसा इसलिए क्योंकि मेरे देश केन्या से गंभीर बीमारियों से ग्रसित लोग इलाज के लिए भारत आते थे। भारत का दूसरा पहलू जिसे मैं जानती थी वह थे केन्या में रह रहे भारत के मूल निवासी। मैं उन्हें अशिष्ट, अभिमानी और स्वार्थी समझती थी। इसलिए जब राजस्थान जाने की बात आयी, मैं भारतीयों के लिए नकारात्मक रूप से सोच रही थी। लेकिन दिल्ली पहुँचने पर मैंने बिल्कुल अलग

लोगो को पाया, जो स्नेही, उदार और मुस्कुराहट के साथ स्वागत कर रहे थे। मैं मंत्रमुग्ध हो गयी। शशि जी और ग्राविस - मैं उनके लिए अपनी पंसद को एक कहावत से व्यक्त कर सकती हूँ - जैसे लोहा, लोहे को तेज करता है, उसी तरह एक व्यक्ति दूसरों को। उन्होंने पूरी तरह मेरी सोच बदल दी, उनके कारण दूसरे महाद्वीप में मैं भाई - बहन बना पायी। इस महिला के लिए मैं सिर्फ यही लिख सकती हूँ - कहाँ है माँ के लिए सीमाएँ ? अफ्रीका में माँ अनाथ बच्चों को भी संभाल कर जीवन बचाती हैं। इसी तरह ग्राविस के लिए शशि जी थीं। वह एक दूरदर्शी महिला थीं जिनके सपनों ने केन्या की डेयरी सदस्यों की मसाई महिलाओं को प्रेरित किया। राजस्थान की यात्रा और उनके दृढ़ निश्चय के कारण कइजाडो, केन्या में बांध का निर्माण हुआ जिसका प्रभाव भौगोलिक सीमाओं से परे है। सोने के से दिल वाली इस महिला ने महिलाओं, बच्चों और जानवरों की पानी की प्यास बुझाई। ग्राविस द्वारा केन्या में किए गए पौधारोपण के बीज पूरी दुनिया में फैल कर नया निर्माण करेंगे और पर्यावरण की रक्षा करेंगे।

जेन कैटहूरे बाइसहारा, केन्या

सुश्री जेन कैटहूरे बाइसहारा केन्या में एक विकास कार्यकर्ता और महिला नेता हैं।

- 40 -

हमारा अनुभव

सन् 2016 में थार मरुस्थल के कई समुदायों और घरों में शशि जी के साथ जाने का अवसर मिला। हमने स्वयं अनुभव किया कि किस तरह से शशि जी ने मरुस्थलीय लोगो के जीवन पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। जिन लोगो के लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित किया उनके बीच उनकी मौजूदगी को शारीरिक और आत्मिक दोनों तरह से महसूस किया जा सकता है। यह समय जो हमने शशि जी के साथ व्यतीत किया, उनकी गंभीरता, बुद्धिमता, गरमजोशी और हास्य ने हमारा जीवन बदल दिया। उनसे मिलने का अनुभव बहुत गहरी छाप छोड़ गया।

जैनी टिपर और डेविड कॉर्क, कनाडा

जैनी टिपर और डेविड कॉर्क औटावा से एक दम्पति हैं और साथ ही नेतृत्व प्रशिक्षक और बैंकर (क्रमशः) हैं। वे पिछले 5 वर्षों से ग्राविस के मित्र हैं।

स्व. श्रीमती शशि त्यागी : स्मरण

सन् 1995 में मुझे स्व. श्री एल.सी. त्यागी जी और स्व. श्रीमती शशि त्यागी जी को जानने का अवसर प्राप्त हुआ। दोनों ही बहुत मेहनती, सौम्य, मृदुभाषी, मानवता की भलाई के लिए समर्पित, महात्मा गाँधी और विनोबा भावे के पदचिन्हों पर चलने वाले थे। दोनों ने अपनी यात्रा माणकलाव, जोधपुर से शुरू की जहाँ उन्होंने नशा, महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों, बाल विवाह और बहुत सी सामाजिक कृपथाओं के विरुद्ध कार्य किया। उन्होंने शहरी जीवन के सभी आरामों को छोड़कर एक सरल और समर्पित जीवन व्यतीत किया। श्रीमती शशि त्यागी जी ने गरीबों और दलितों के उत्थान के लिए कार्य किया। उन्होंने महिलाओं और बच्चों के कुपोषण पर भी काम किया। उनकी रूचि स्वास्थ्य, प्रौढ़ शिक्षा और बालिकाओं की शिक्षा में थी। इसके लिए उन्होंने तिवरी में अस्पताल और कई जगहों पर बालिकाओं की प्राथमिक शिक्षा के लिए विद्यालय बनाने में मदद की।

शशि जी व त्यागी जी पूरे पश्चिमी राजस्थान में घूमे और उस क्षेत्र के लोगो की समस्याओं का अध्ययन किया। उन्होंने जोधपुर में ग्राविस की स्थापना की और उसके कई उपकेन्द्र भी बनाये। इस संगठन और इसके उपकेन्द्रों ने खड़ीनो के निर्माण द्वारा अकाल राहत, पौधारोपण, शुष्क भूमि पर फसल उत्पादन, चारा विकास, कृषि वानिकी, सब्जी का छोटा बाग जैसे विषयों पर काम किया। इन सबने गाँवों में बहुत हद तक गरीबी कम करने और जीवन शैली में सुधार लाने में मदद की।

इन सारे कार्यक्रमों के कारण पश्चिमी राजस्थान के लोगो को बहुत मदद मिली। श्रीमती त्यागी जी ने देश - विदेश घूम - घूम कर लोगों तक यह संदेश पहुँचाया। इसके कारण बहुत सी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय परियोजनाएं शुरू की गईं। श्रीमती त्यागी को बहुत से राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले।

मैं श्रीमती त्यागी को विनम्र श्रद्धाजलि अर्पित करता हूँ और ईश्वर से उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता हूँ।

जे.पी.गुप्ता, भारत

डॉ. जे.पी. गुप्ता एक कृषि वैज्ञानिक हैं जिन्होंने भारत सरकार के लिए काम किया है और ग्राविस बोर्ड के सदस्य हैं।

शशि जी के साथ मेरा दिन

शशि त्यागी जी से मेरी पहली मुलाकात सिएटल में 'पीपल फॉर प्रोग्रेस इन इंडिया' (PPI) की उनकी यात्रा के दौरान हुई और 2001 और 2016 में जोधपुर की यात्राओं में फिर से मिलना हुआ। इन यात्राओं में से आखिरी यात्रा में, शशि जी ने अपनी व्यस्तता से एक दिन का समय निकाला और मुझे बाप क्षेत्र में काम को देखने के लिए ले कर गईं। रास्ते में ओसियाँ के सुरम्य शहर को देखने के लिए हम रुके। हम बाप और कुछ आसपास के गाँवों में ग्राविस के क्षेत्रीय कार्यालय में गए, जहाँ मुझे ग्राविस की जल प्रबन्धन परियोजनाओं द्वारा कृषि उत्पादकता में प्रभावशाली सुधार देखने को मिला। साथ ही साथ पीपल फॉर प्रोग्रेस इन इंडिया द्वारा सहयोग की जा रही परियोजना में घरेलू उपयोग के लिए प्रभावी जल संचयन प्रक्रिया का प्रयोग होते देखा। शशि जी ने इस अवसर का उपयोग ग्रामीणों के साथ बातचीत और अपनी मित्रता को ताजा करने और क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं के साथ मामलों पर चर्चा करने के लिए किया, साथ - साथ जो कुछ भी हम देख रहे थे उसके बारे में लगातार अनुवाद के साथ हमें विस्तार से बताती रहीं। यह सबसे अधिक सुखद और पुरस्कृत दिनों में से एक था जो मैंने भारत में बिताए हैं। शशि जी के त्यागपूर्ण जीवन को याद करते हुए मैं अपनी श्रद्धांजलि देता हूँ।

जेरी फोलैन्ड, यू.एस.ए

श्री जेरी फोलैन्ड एक गणितज्ञ हैं, पी.पी.आई. (यू.एस.ए.) से जुड़े हैं तथा ग्राविस के पुराने मित्र हैं।

गाँधी के दृष्टिकोण में निहित काम

हम 2001 में मिले थे - एल.सी. त्यागी जी और शशि त्यागी जी। यह वैश्वीकरण का समय था। 1999 में सिएटल, वाशिंगटन, संयुक्त राज्य अमेरिका में बड़ा वैश्वीकरण विरोधी प्रदर्शन हुआ था। आईडैक्स के सहयोगी तीन महाद्वीपों में मौजूद थे और इसकी रणनीति के मूल में न्याय की आवश्यकता और सामाजिक विषय थे। दानदाताओं को समाज की आवश्यकता, समुदायों की सामाजिक प्रक्रियाओं और जमीनी हकीकत को नजदीक से समझने के लिए स्थानीय पहुँच जरूरी थी। यह स्पष्ट समझ त्यागी जी, शशि जी और ग्राविस के माध्यम से मिली जिनसे मैंने भारत और दुनिया के लिए गाँधी के अर्थ के बारे में सीखा; उनके दर्शन और सामाजिक व्यवस्था को जाना जिसके लिए उन्होंने अपना पूरा जीवन दिया।

मैंने यह भी जाना कि भारत के कठोर रेगिस्तानी वातावरण में जीवन को बेहतर बनाने के लिए

जीवन संदेश

1983 में गाँधीवादी सिद्धान्त के आधार पर ग्राविस का गठन किया गया था। ग्राविस ने ग्रामवासियों के अधिकारों को मजबूत करने और नीतियों में बदलाव करते हुए पर्यावरण को फिर से बनाने और महिलाओं की कड़ी मेहनत को पहचान देने के साथ आजीविका में सुधार करने के लिए काम किया। मैंने आईडैक्स के सलाहकारों की एक बैठक के दौरान ग्राविस द्वारा दिखाई गई तस्वीरों और प्रस्तुति को संभाल कर रखा है।

शशि की याद में, मैं कहना चाहता हूँ कि जो समय समाप्त नहीं होता है, वह उस प्रकाश का है जो जीवन के बहुत स्रोतों को खोजने के लिए रास्ते पर चलते समय उत्पन्न होता है।

हमारा संबंध और परिचय संभव हो पाया क्योंकि हम दोनों आईडैक्स के सलाहकार थे जिन्होंने हमें मई 2001 में सैन फ्रांसिस्को में एक बैठक के लिए बुलाया था।

जॉर्ज सैन्टियागो एस, मैक्सिको

श्री जॉर्ज सैन्टियागो एस एक मानवाधिकार व विकास कार्यकर्ता हैं व ग्राविस के मित्र हैं।

- 44 -

एक विशेष महिला

मैं पहली बार 2007 में अपनी पत्नी (रेवरेंड जीन बोल्टन-रेनॉल्ड्स) के साथ जोधपुर आया था, जो उस समय वैल्स फॉर इंडिया (अब वाटर हार्वेस्ट) की ट्रस्टी थीं। यह इस यात्रा के दौरान था कि मैं पहली बार शशि जी से मिला था, हालांकि बैठक संक्षिप्त थी पर उन्होंने मुझे मेरी पत्नी के पति के रूप में नहीं, मेरे अपने स्वयं के अस्तित्व को महत्व देते हुए बात की थी। मेरी धर्मपत्नी एक पुजारी हैं।

तब से, जोधपुर और ग्राविस के दौरे विभिन्न परियोजनाओं के तहत लगातार बढ़ते रहे। मुझे शशि जी के साथ बातचीत करने और अपनी नियमित लंबी यात्राओं में अधिक समय बिताने का अवसर मिला। मुझे याद है बातचीत के दौर में एक बार उन्होंने बताया कि वे किस प्रकार काम करने पहली बार थार मरुस्थल आए थे। मैं यह कभी नहीं भूल पाया कि पूरी तन्मयता और समर्पण के साथ उन्होंने और श्री त्यागी जी ने उन जगहों को चुना जहाँ कुछ ही अन्य संस्थाएँ संचालित हैं और काम को इस मुश्किल क्षेत्र में स्थापित करना सबसे चुनौतीपूर्ण था।

उन्होंने मेरी पत्नी और मुझे कई मायनों में प्रेरित किया, हमारे घर लौटने पर नियमित रूप से हमें एहसास होता रहा है कि वास्तव में हमारे पास कितना कुछ है, जिसकी हमें आवश्यकता नहीं है। दोस्तों और सहकर्मियों को हमेशा हमारी यात्रा और उद्देश्य के बारे में सुनने में दिलचस्पी होती और शशि जी ने निश्चित रूप से महिला सशक्तिकरण के महत्व के बारे में मेरी धारणा को मजबूत किया है। इसी प्रेरणा ने हमें 2020 में अपनी पुत्रवधु के साथ लौटने और

थार की ग्रामीण महिलाओं के साथ अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने के लिए प्रेरित किया, जो गगाड़ी गाँव में इकट्ठा हुई थीं। हमारी बहू जो स्वयं महिलाओं के लिए एक प्रेरणादायक वक्ता है ने शशि जी से मुलाकात को अविस्मरणीय पाया। यह शशि जी ही थीं जिन्होंने मुझे असली भारतीय करी पकानी सिखाई जबकि कई पाक कला किताबें मुझे सिखाने में असफल रहीं। सीधे शब्दों में कहें तो शशि जी को जानना एक आनन्द और सौभाग्य रहा है और हम उन्हें बहुत याद करेंगे। भारत और शशि जी के साथ मेरा संबंध 'वैल्स फॉर इंडिया' (अब वाटर हार्वेस्ट) के माध्यम से मेरी पहली पानी यात्रा के समय बना और अब हम सेंट क्लैर और सेंट फ्रांसिस ट्रस्ट की परियोजनाओं में योगदान के द्वारा जुड़े हुए हैं।

डेनिस बैरो, यू.के.

श्री डेनिस बैरो लन्दन परिवहन विभाग में कार्यरत हैं तथा लम्बे समय से ग्राविस के मित्र हैं।

- 45 -

मेरे जीवन की लेखिका

मैं उनके बारे में क्या लिखूँ जिन्होंने स्वयं मेरा पूरा जीवन लिखा। शशि जी एक अद्वितीय महिला थीं जो हमारे जैसे कई लोगो के साथ माँ के जैसा संबंध रखती थीं। उनका हृदय हमेशा गरीब, निराश्रित और बीमार लोगो के साथ रहता था और उन्होंने अपना पूरा जीवन उनकी मदद की।

उनकी सादगी, मानवता और हिम्मत एक उदाहरण है और थार मरुस्थल में वह अम्मा के नाम से जानी जाती थीं। उनका निधन गरीबो के लिए भारी क्षति है। मैं भाग्यशाली हूँ जो उनके दिखाए मार्ग पर चल रहा हूँ और उनका बहुत सम्मान करता हूँ। वह हमेशा मेरे हृदय में रहेंगी।

तेजकरण रतनू, भारत

श्री तेजकरण रतनू करीब 15 वर्षों से ग्राविस परिवार का हिस्सा हैं।

दयालुता और विनम्रता परिवर्तन लाते हैं

“एक दयालु, सौम्य लेकिन प्रकाश की शक्तिशाली ताकत” इन शब्दों में ‘थाउजेंड करेंट्स’ की ग्रासरूट भागीदारी की निदेशक कैथरीन ज़वाला ने शशि त्यागी जी की यादों का वर्णन किया है। अपने पूरे जीवन में शशि जी ने लम्बे समय तक प्रतिबद्धता, विश्वास को बनाने के लिए गहराई से सुनने की क्षमता, रिश्तों के आधार की स्थापना और परिवर्तन के लिए अवसरों को सक्षम व साकार करने के अनुशासन की मिसाल दी। शशि जी की प्रभावशाली विरासत के साथ उनके ये मूल्य आज भी ‘थाउजेंड करेंट्स’ में याद किए जाते हैं।

शशि जी 20 से अधिक वर्षों तक ‘थाउजेंड करेंट्स’ के परिवार का एक अभिन्न अंग रही हैं, जिसकी शुरुआत 1999 में ग्राविस की साझेदारी से हुई थी। वह ‘थाउजेंड करेंट्स’ के बोर्ड में रहीं, कई महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में भाग लिया और प्रस्तुतिकरण किया, और 2015 में ‘थाउजेंड करेंट्स’ की अकादमी में एक शिक्षक थीं। अकादमी के प्रतिभागी जिनमें परोपकारी, नींव से जुड़े कर्मचारी और सामाजिक उद्यमी शामिल थे, सभी उनकी जीवन यात्रा से प्रेरित थे और उनसे प्राप्त सीखों को अपने साथ अपने संगठन में ले कर गए।

कई वर्तमान ‘थाउजेंड करेंट्स’ स्टाफ के सदस्य अकादमी से उन्हें याद करते हैं जब उन्होंने एक विश्वविद्यालय में हमारे बैठक स्थान में खाना पकाने और साफ करने की सामूहिक प्रथा की पेशकश की, हमें एक सुंदर सबक सिखाया कि कैसे विनम्रता और एक-दूसरे के प्रति दयालुता को अपनाया जाए। विश्वविद्यालय की कठोर संस्थागत नीतियों ने उनके दृष्टिकोण को चुनौती दी और उनकी पहल को एक दायित्व के रूप में देखा। इस क्षण में हम सक्षम थे यह देखने में कि सामूहिक भलाई और कृतज्ञता की भावना को व्यवहार में लाने का क्या अर्थ है।

‘थाउजेंड करेंट्स’ के साथ उनके लम्बे संबंध के कारण हम अक्सर उनके शक्तिशाली नेतृत्व के बारे में कहानियां सुनते थे; ग्रामीण समुदायों में धीरज और गहराई से उनकी समस्याओं को सुनना, समुदाय-संचालित विकास के लिए उनकी दीर्घकालिक प्रतिबद्धता और कैसे उन्होंने समुदाय के निर्माण में महिलाओं की आवश्यक भूमिकाओं को देखा, यह सब देखा और सीखा।

हमने सुना कि कैसे वह एक बार गुस्साई पुरुष भीड़ के सामने खड़ी थीं, जो जाति विशेष के एक आयोजन का विरोध करते हैं, और भीड़ को उनके सामूहिक भविष्य के बारे में सोचने और सभी के लिए भलाई करने के लिए कहती हैं। थार रेगिस्तान में महिलाओं की स्थिति और कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने दृढ़ता से और उदाहरण के साथ नेतृत्व किया, ग्रामीणों को दिखाते हुए कि एक महिला खड़ी हो सकती है और स्वयं के लिए बोल सकती है। आज कई स्थानीय लोग अपने समुदायों में परिवर्तन की ज्योति के रूप में उनके प्रयासों का हवाला देते हैं।

“शशि जी ‘थाउजेंड करेंट्स’ के महानतम शिक्षकों में से एक थीं जो एक संगठन के रूप में हमारे विकास और परिवर्तन की अभिन्न अंग रही हैं। मैं उनकी शोषित वर्ग के प्रति जीवनपर्यन्त एकजुटता; विनम्रता, अनुशासन और समरसता पर आधारित उनका नेतृत्व,

सत्यनिष्ठा और मानवता के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता से हमेशा मार्गदर्शन पाती रहूँगी”। ‘थाउजेंड करेंट्स’ की कार्यकारी निदेशक सोलोमे लेमा ने अपने भाव व्यक्त किये।

शशि जी थार रेगिस्तान के लोगों और कई अन्य के लिए एक प्रेरणा बनी रही हैं जो उनकी बहादुरी से प्रेरित हैं। वह ‘थाउजेंड करेंट्स’ के कई वर्तमान और पूर्व कर्मचारियों और बोर्ड के सदस्यों के लिए एक संरक्षक और शिक्षक बनी हुई हैं, जिनमें से प्रत्येक ने उनके साथ हर वार्तालाप से अपने अंदर परिवर्तन लाया है। जैसे-जैसे वह इस जीवन से दूर चली गई हैं, हम उनकी निस्वार्थ सेवा और एकजुटता, उनकी विनम्रता और उनकी अमिट भावना के प्रति उनकी आजीवन प्रतिबद्धता को याद करते हैं। हम उनकी शिक्षाओं और उस ज्ञान के लिए आभारी हैं जो उन्होंने हम सभी को प्रदान किया है, और उसकी विरासत से हमारा पोषण होता रहेगा।

शशि जी का ‘थाउजेंड करेंट्स’ के साथ संबंध:

शशि जी 20 से अधिक वर्षों तक ‘थाउजेंड करेंट्स’ का एक अभिन्न अंग रही हैं, जिसकी शुरुआत 1999 में ग्राविस की साझेदारी से हुई थी। वह बोर्ड की सदस्य, 2005 में अकादमी की संकाय सदस्य और ग्राविस की जमीनी स्तर की नेता और ‘थाउजेंड करेंट्स’ की जीवनपर्यन्त साथी थीं।

थाउजेंड करेंट्स टीम, यू.एस.ए.

थाउजेंड करेंट्स एक कैलिफोर्निया में स्थित गैर लाभकारी संस्था है तथा पिछले 30 वर्षों से ग्राविस का सहयोगी रहा है।

- 47 -

शशि जी को नमन

आज मैं अपने आप को बहुत ही गौरवान्वित और सौभाग्यशाली मानता हूँ कि महान मानवतावादी, गाँधी विचारक, सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती शशि त्यागी जी के बारे में दो शब्द लिखने का अवसर प्राप्त हुआ है। उन्होंने इस थार मरुस्थल को अपनी ज्योति से प्रकाशित किया। उन्होंने पानी, बालिका शिक्षा, कृषि, पशुपालन, महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य, वृद्धजन और समाज में शोषित वंचित वर्ग के लिए काम किया और बखूबी अपनी अंतिम सांस तक काम करती रहीं। ऐसी महान पुण्य आत्मा को मैं बार - बार प्रणाम करता हूँ। मुझे याद है जब मैं बीमार था व मुझे डेंगू हुआ था, मेरा हाल वह अक्सर पूछ करती थीं।

जीवन संदेश

लॉकडाउन में अस्वस्थ होने बावजूद गरीबों को राशन वितरण करवाने के लिए हमेशा फोन करती थीं। संस्था के काम के बारे में भी पूछतीं और अस्पताल में जब भर्ती कराता तो लिफ्ट में जाते और आते समय काम के बारे में पूछ लेती थीं। ऐसी थी शशि बहिन जी।

दिग्विजय सिंह, भारत

श्री दिग्विजय सिंह ग्राविस में लेखाकार हैं।

- 48 -

स्मृति में शब्द

शशि जी के आकस्मिक निधन की सूचना गाँधी मार्ग पत्रिका से मिली। मेरे परिवार का उनसे बड़ा लम्बा संबंध रहा है। मेरी शादी के बाद मैं व मेरी पत्नी बनवासी सेवा आश्रम गए थे। जहाँ प्रेमभाई, त्यागी जी, मैं, शशि जी वे मेरी पत्नी अंजलि सब मिलकर काम करते थे। मैं और मेरी पत्नी अंजलि हमेशा त्यागी दम्पति से सम्पर्क में रहे, उनके राजस्थान आने के बाद भी। जब लक्ष्मी भाई किडनी रोग से ग्रसित थे तो शशि जी ने अपनी एक किडनी उन्हें दी थी। त्यागी जी को बचाया ना जा सका और शशि जी एक किडनी के साथ लम्बे समय तक जीवित रहीं। शशि जी एक महान व्यक्तित्व की स्वामी थीं। वे अक्सर सेवाग्राम आश्रम, वर्धा आती थीं। उनके शरीर ने हमसे 14 नवम्बर, 2020 को विदा ली और अपनी यादों को छोड़ गई। अश्रुपूरित नेत्रों से हम उन्हें श्रद्धांजलि व्यक्त करते हैं।

दिनकर चौधरी, भारत

श्री दिनकर चौधरी एक सामाजिक कार्यकर्ता व गाँधीवादी चिन्तक हैं तथा महाराष्ट्र में रहते हैं।

- 49 -

शशि जीजी को श्रद्धांजलि

शशि जीजी हमारे परिवार की सदस्य 1971 में बनी जब उनके इकलौते भाई स्व. श्याम नारायण त्यागी जी की शादी मेरी बड़ी बहन श्रीमती राजेश्वरी त्यागी से हुई। स्व. श्याम जीजी का निधन अक्टूबर 2019 में हुआ। शशि जी के साथ मेरा निजी संबंध 1973 में आरम्भ हुआ जब जीजा जी मुझे आगे की पढ़ाई के लिए मेरठ ले गए। मैंने आठवीं कक्षा में दाखिला लिया था, तब से आज तक मुझे उनका प्यार और स्नेह मिलता रहा। शशि जी मेरा और मेरे परिवार का पहले दिन से ही साथ देती रहीं हैं। उन्होंने मुझे जीवन के इस सफर में छोटे भाई

की तरह प्यार किया, स्कूल से कॉलेज, डॉक्टरेट उसके बाद 1987 में भारतीय वन सेवा में मेरा चुनाव, प्रशिक्षण, शादी और मेरी लम्बी सरकारी नौकरी, सब में आपका साथ मिला। शशि जीजी एक प्रेरणास्त्रोत रहीं और हमेशा अपना आशीर्वाद देती रहीं।

स्व. लक्ष्मी जीजा जी और शशि जीजी - उनकी सरलता और समाज सेवा के प्रति उनका समर्पण देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ। जब वह मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश में सर्वोदय विचारधारा के साथ काम कर रहे थे तब मैं उनसे पहली बार 1973 में मेरठ में हमारे जीजा जी के घर पर मिला। मुझे अभी भी याद है - एल.सी. जीजा जी का खादी कुरता पायजामा और शशि जीजी की खादी की साड़ी। आभा और प्रकाश भी खादी के बने कपड़े ही पहनते थे। एल.सी. जीजा जी 70 के दशक में कृषि विज्ञान में स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त करने के बाद समाज सेवा के लिए सर्वोदय से जुड़े, और यह समाज सेवा के प्रति उनके विचारों और गहरे समर्पण को दर्शाता है। आभा और प्रकाश दोनों ही हमारे सामने बड़े हुए और उन्होंने प्रगति की। मैं दो बार जोधपुर गया, एक बार 1983 - 84 में और उसके बाद 1988 में जब मेरा भारतीय वन सेवा में प्रशिक्षण चल रहा था, इन यात्राओं के दौरान मैं स्व. एल.सी. जीजा जी और शशि जीजी के साथ रहा। मुझे याद है 1983 - 84 में शशि जीजी ने मुझे राजस्थान सरकार के शिक्षा सचिव श्री अनिल बोर्डिया जी से मिलवाया था। शशि जीजी मेरे पास 1994 - 95 में आर्यी तब मैं पूना में वन सहायक संरक्षक के पद पर कार्यरत था, व दूसरी बार 2010 में जब मैं भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय, दिल्ली में कार्यरत था। शशि जीजी अपनी उपलब्धियों के लिए कोई पुरस्कार या प्रचार नहीं चाहती थीं, फिर भी उनके काम को बहुत से संगठनों ने स्वीकारा और सराहा। हमें यह जानकर बहुत सदमा लगा कि शशि जीजी रक्त कैंसर से पीड़ित हैं। उनकी बीमारी के दौरान हम उनसे बात नहीं कर पाए पर हम लगातार प्रकाश से उनकी सेहत के बारे में पूछते रहते थे। किस्मत ने हमारा साथ नहीं दिया और शशि जीजी का 14 नवम्बर, 2020 को निधन हो गया। प्रकाश और आभा ने उनकी बहुत देखभाल की और अच्छी से अच्छी चिकित्सा सेवाएँ उपलब्ध करवायीं। हम आशा करते हैं कि प्रकाश और आभा शशि जीजी और स्व.एल.सी. जीजा जी की समाज सेवा की परम्परा को आगे बढ़ायेंगे और बहुत नाम कमायेंगे। हम अपने हृदय से संवेदना व्यक्त करते हुए स्व. एल.सी. जीजा जी और स्व. शशि जीजी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वो परिवार को इस क्षति को सहने की शक्ति दें।

दिनेश कुमार त्यागी, भारत

डॉ. दिनेश कुमार त्यागी शशि जी के सम्बन्धी हैं और भारत सरकार को भारतीय वन सेवा में अपनी सेवाएं दे चुके हैं।

निर्भीक, निडर एवं साहसी : शशि बहिन जी

शशि बहिन जी से कब मेरे संबंध आत्मिक एवं भावनात्मक तौर से जुड़ गये मुझे स्वयं याद नहीं हैं। आज उनका समय पूर्व चले जाना न सिर्फ मेरे जीवन में रिक्तता लाया है अपितु मुझे लगता है कि मेरी मार्गदर्शिका हमें बीच राह में छोड़ कर चली गयी हैं। उनका चले जाना मेरे लिए अविश्वसनीय है पर मुझे उनकी एक बात बार-बार याद आती है, वो कहा करती थीं “व्यक्ति को अपना रास्ता, स्वयं प्रशस्त करना चाहिए।” उनके यह वाक्य आज भी मेरे कानों में सुनाई देते हैं। जिससे मुझे ऐसा आभास होता है कि वो आज भी हमारे साथ हैं।

कलराँ शरीफ में आयोजित सर्वोदय सम्मेलन 2006 में जब मैं उनसे मिला तो मैं देखकर चकित हो गया कि उनके नेतृत्व में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित इस विशाल कार्यक्रम को किस प्रकार व्यवस्थित तरीके से आयोजित किया गया। सम्मेलन के दौरान दिन में पश्चिमी राजस्थान में जीवन की चुनौतियों के बारे में चर्चा की गई थी। बहिन जी ने बताया कि कई बार यहाँ जब तेज आंधियाँ चलती है तो लोग अपने चुल्हों को बन्द कर देते हैं और इसके रुकने का इंतजार करते हैं। यह अंधड़ कुछ मिनटों से लेकर कई घंटों तक चल सकता है। यह वक्तव्य उस समय एक साधारण सा वाक्य था। दुर्भाग्यवश उसी रात एक अंधड़ उस क्षेत्र में आ गया। इसके कारण टेन्ट उखड़ रहे थे, कुर्सीया उड़ रही थीं, सम्मेलन की पूरी व्यवस्थायें अस्त व्यस्त हो रही थीं। देश के अन्य भागों एवं विदेशों से आये लोगों को लग रहा था कि अब क्या होगा? ऐसी विषम परिस्थिति में जब लोग डर रहे थे, लेकिन शशि जी अपनी टीम के साथ प्रबन्ध करने में जुटी हुई थी और जब वो अंधड़ शांत हुआ तो कुछ ही घंटों के अन्दर ही व्यवस्थायें जैसी की तैसी पुनः स्थापित कर दी गई थी। उस दिन न सिर्फ मुझे बल्कि वहाँ आये हजारों सहभागियों को यह विश्वास हो गया कि कितनी विषम परिस्थितियों में इन्होंने यहाँ कार्य किया।

1970 के दशक में जब उन्होंने यहाँ कार्य करना प्रारम्भ किया था उस समय न सिर्फ भौगोलिक परिस्थितियाँ अपितु सामाजिक परिस्थितियाँ भी प्रतिकूल थीं। इस क्षेत्र में जातिवाद, सामन्तवाद, पर्दा प्रथा, अशिक्षा, रुढ़ियाँ व्याप्त थी। गरीबों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए न सिर्फ सवणों से संघर्ष किया बल्कि विरोध स्वरूप हमला भी सहन करना पड़ा। इस दौरान ग्राविस केन्द्र गगाड़ी पर हमला किया गया लेकिन उन्होंने गाँधीवादी तरीकों से इस समस्या को सुलझाया एवं उन लोगों को स्वयं से आत्मबोध करवाया। यह घटना लिखने में बहुत साधारण घटना है जबकि उस समय निर्भीक होकर डटा रहना एक अदम्य साहस का परिचय था और यह साहस त्यागी दम्पति ने दिखाया।

मैं इसे अहोभाग्य मानता हूँ कि जब भी बहिन जी जयपुर आती थीं, मेरे लिए अवश्य समय निकालती थीं। इसके अलावा समय-समय पर वो मुझे अपने कार्यक्षेत्र में बुलातीं, गाँधी विचारों एवं नशामुक्त समाज की स्थापना के लिए समाज को प्रेरित करने के लिए चर्चाएं आयोजित

करती। कई बार जब वो अपने सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहती तो मैं उन्हें देखता रह जाता और उनमें मुझे कस्तुरबा की छवि नजर आती।

बहिन जी की छवि आज भी मेरे मस्तिष्क पटल पर एक अमिट छाप छोड़े हुये है। उनका कहना था कि नशे की प्रवृत्ति ने गरीबों को और गरीब बना दिया है। नशामुक्त समाज के लिए राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर भी उन्होंने आवाज उठाई। उनका मानना था कि शराब के कारण महिलाओं को उत्पीड़ित किया जाता है।

उनका समय से पूर्व चला जाना समाज के लिए अपूरणीय क्षति हैं। उनकी परिकल्पना एवं गाँधी विचारों को आगे ले जाने में हर सम्भव प्रयास करने की आवश्यकता है।

धर्मवीर कटेवा, भारत

श्री धर्मवीर कटेवा एक जाने माने सामाजिक कार्यकर्ता व गाँधीवादी चिन्तक हैं।

- 51 -

शशि जी: नम्रता और शांति का एक अनुकरणीय जीवन। दलित, ग्रामीण समुदायों के सशक्तिकरण के लिए समर्पित

कई वर्षों पहले राजस्थान के थार मरुस्थल में दलित ग्रामीण समुदायों के लिए काम करते ग्राविस का मुझे अनुभव हुआ और कई वर्षों पहले मैं ग्राविस के दूरदर्शी संस्थापकों स्व. त्यागी जी और स्व. शशि जी से मिला। उनका नाम मैंने ग्राविस के कई प्रकाशनों और हैल्पेज इन्टरनैशनल की एशिया की सभाओं में सुन रखा था।

बाद में मेरे राजस्थान दौरे के वक्त मुझे त्यागी जी और शशि जी को पास से जानने का मौका मिला। उनके घर में, ग्राविस कार्यालय में और जब वह कार्यकर्ताओं के साथ क्षेत्रीय, निर्धन समुदायों की सहायता कर रहे होते थे, उनकी कार्यशैली को समझने का अवसर प्राप्त हुआ। शशि जी की स्थायी याद के रूप में मुझे याद है शशि जी की विनम्रता और शांति कुछ अलग ही थी। ग्रामीण समुदाय उनकी दृढ़ निर्णय क्षमता तथा परिणाम के लिए काम करने की भावना का बहुत सम्मान करते थे।

कई बार हम देखते हैं कि किसी के सफलता के पीछे, उसके व्यक्तित्व, मूल्यों और व्यवहार की भूमिका होती है, न की सिर्फ तकनीकी जानकारी और कौशल की। मैं और मेरे हैल्पेज सहकर्मियों ने शशि जी में ये सारे गुण देखे। ग्राविस की कार्यकारिणी की बैठक में जब मुझे आमंत्रित किया गया, तब मैं यह देख कर दंग रह गया कि शशि जी कितनी आसानी से उच्च शिक्षित विशेषज्ञों से बात कर रही हैं। उनकी नम्रता तब देखने लायक होती जब वह अपने ग्रामीण क्षेत्र में परियोजना

अधिकारी और स्थानीय समुदाय के सदस्यों के साथ बात करती थीं। सर्वोदय पृष्ठभूमि से आने के कारण उनका सबको साथ लेकर प्रयास करना बहुत प्रेरित करने वाला होता था। शशि जी की उपलब्धियाँ और योगदान, जो उन्होंने लोगों की भलाई के लिए किया, ग्राविस के वर्ष दर वर्ष इतिहास में अच्छे से दर्ज है। उनको जमनालाल बजाज फाउंडेशन ने जमनालाल बजाज पुरस्कार से सन् 2017 में सराहा।

मैं त्यागी परिवार के सरल गाँधीवादी जीवन से बहुत प्रेरित था। उन्होंने अपना जीवन थार मरूस्थल के गरीब परिवारों के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। शशि जी का इसमें महत्वपूर्ण योगदान रहा, इतना कि मैंने अपनी पत्नी निर्मली से यह सब प्रसन्नता के साथ साझा किया। हमारे पास ग्राविस से जुड़ी अनंत यादें हैं, खासकर वह जब त्यागी जी और शशि जी ने अपने घर पर, घर के बने राजस्थानी व्यंजनों से हमारा स्वागत किया था।

ग्राविस और स्थानीय समुदायों में उनकी विरासत जीवित रहे, ऐसी मेरी कामना है।

धरमाप्रिय वेसुमपेरूमा, ऑस्ट्रेलिया

डॉ. धरमाप्रिय वेसुमपेरूमा एक भूतपूर्व विश्वविद्यालय व्याख्याता हैं, कार्यकारी प्रबंधक — श्रीलंका फाउंडेशन इंस्टीट्यूट, प्रबंधक — एशिया ट्रेनिंग सेन्टर ऑन एजिंग, हैल्थ जे इन्टरनैशनल एशिया पैसिफिक के क्षेत्रीय प्रमुख रह चुके हैं। वर्तमान में सोशल प्रोटेक्शन सलाहकार, डिपार्टमेंट ऑफ सोशल वेलफेयर, म्यांमार हैं।

- 52 -

शशि बहिन के साथ मेरा रिश्ता

गाँधीवादी श्रीमति शशि बहिन का सामाजिक जीवन मेरी जानकारी में लगभग 50 साल के ऊपर रहा। उनका सौभाग्य था कि उनको जीवन साथी के रूप में गाँधीवादी दार्शनिक, विचारक व नीति मर्मज्ञ, सामाजिक जीवन से ओतप्रोत स्व. श्री लक्ष्मीचन्द त्यागी जी का साथ मिला जिससे उनकी जीवन यात्रा नित नये परवान चढ़ी। लगभग 3 साल शशि बहिन और त्यागी जी के साथ काम करने का अवसर मुझे मिला था। मैंने उनको हमेशा एक कुशल व अनुभवी समाज सेविका के रूप में देखा। इसका पैमाना इस बात से लगाता हूँ मैं, कि जहाँ भी अव्यवस्था होती व निराशा का माहौल होता वहाँ उनका पहुँचना तय था। देखते ही देखते उनके जुझारुपन से सभी कुछ सुचारु रूप से व्यवस्थित एवं दुरुस्थ हो जाता था। सभी कार्यकर्ताओं में एक नई ऊर्जा का संचार होता था।

वो एक कुशल नेतृत्व की सादगी भरी पहचान थीं। देश ही नहीं विदेशों में भी उनकी बड़ी सकारात्मक छवि थी। जैसा सोचती उसको वैसा ही अपने जीवन में उन्होंने साकार रूप दिया।

ऐसी प्रगतिशील विचारक महिला आज हमारे बीच नहीं है। उनकी सामाजिक जीवन में कमी भावी पीढ़ी को हमेशा अखरती रहेगी।

नरेन्द्र सिंह, भारत

श्री नरेन्द्र सिंह एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं व पूर्व में ग्राविस को अपनी सेवाएं दे चुके हैं।

- 53 -

शशित्यागी – एक सच्ची गांधीवादी प्रेरणा

“हर एक की मृत्यु मुझे सूना (खाली) कर देती है” – जॉन डोने

हम, शशि जी के मित्र इस कमी को बहुत शिद्दत से महसूस करते हैं।

मैरी और मैं, ‘वैल्स फॉर इण्डिया’ के संस्थापक के रूप में, (अब ‘वॉटर हार्वेस्ट’) 1995 में पहली बार शशि जी और त्यागी जी से मिले। हमारे बीच तुरन्त एक संबंध जुड़ गया। हम उनकी गहरी गाँधीवादी आध्यात्मिकता और उनकी जीवन शैली की सादगी से बहुत प्रभावित थे।

उनके साथ यह हमारे लिए एक जीवन यात्रा की नयी शुरुआत थी। यह हमें थार रेगिस्तान में रेत के रास्ते पर ले गया। यह हमें पानी के लिए हताश समुदायों वाले अलग-थलग गाँवों में ले गया। फिर 2005 में दुखद रूप से त्यागी जी की मृत्यु हो गई। शशि जी के साथ यात्रा जारी रही, और हमारे विचारों में त्यागी जी हमेशा करीब थे। उल्लेखनीय रूप से, शशि जी नेतृत्व की भूमिका में कदम रखने में सक्षम थीं और उन्होंने बहुत साहस के साथ ऐसा किया। शशि जी के साथ हमने महिलाओं, विधवाओं, स्वयं सहायता समूहों, उनके लिए उनकी गहरी करुणा और उनके परस्पर सम्मान और प्रेम को देखा। यह आश्चर्यजनक था कि वह उन्हें कितनी अच्छी तरह जानती थीं और महिलाएं कितनी गर्मजोशी के साथ उनका स्वागत करती थीं और उन्हें सुनती थीं। शरद ऋतु 1999 में हमने 3 सप्ताह एक साथ बिताए; हमने भीषण सूखे को देखा और ‘बाप’ क्षेत्र में काम करने के लिए, भोजन का भण्डारण करने के लिए, और पाबूपुरा में दूसरा भण्डारण गृह का निर्माण करने का निश्चय किया। हमने ग्राविस टीम की व्यापक दृष्टि देखी, केन्द्रों पर उनकी सुबह की प्रार्थना और कैसे त्यागी जी और शशि जी ने सबसे गरीब समुदायों के उत्थान के लिए एक साथ काम किया, इसका अनुभव किया।

अब हम स्वास्थ्य कारणों से अक्सर भारत की यात्रा करने में सक्षम नहीं हैं, लेकिन प्रत्येक दिन हमारे मन, हमारी प्रार्थना रेगिस्तान में यात्रा करते हैं, जीवन को रुपांतरित होते देखते हुए, पानी के नए स्रोतों और स्कूल जाने के लिए उत्सुक बच्चों को देखते हैं।

हम जानते हैं कि शशि जी की स्मृति हमारे मन और दिलों में जीवित रहेगी, साथ ही उन लोगों

जीवन संदेश

के मन और दिलों में भी जो गाँधी की आत्मा को जीवित रखना चाहते हैं। यह ग्राविस टीम और उन सभी को प्रेरित करता रहेगा जो गरीबों - विशेषकर थार रेगिस्तान के लोगों के उत्थान के लिए काम करते हैं।

हम निकोलस और मैरी, शशि जी और त्यागी जी की मृत्यु से खालीपन महसूस करते हैं, लेकिन हम शशि जी और त्यागी जी के अनूठे जीवन से उत्पन्न आशा और खुशी के प्रभाव को साथ लेकर जी रहे हैं।

डॉ. निकोलस ग्रे और प्रोफेसर मैरी ग्रे, यू.के.

डॉ. निकोलस ग्रे की पृष्ठभूमि विज्ञान है, और उन्होंने पारिस्थितिकी को साझा करने और सम्मान देने हेतु न्याय, शांति और जीवन शैली के लिए एक गहरी प्रतिबद्धता विकसित की है।

डॉ. मैरी ग्रे एक प्रोफेसर हैं, जिन्होंने अपना जीवन गरीबी और न्याय के मुद्दों की राहत में बिताया है। विशेष रूप से महिलाओं और पर्यावरण से संबंधित मुद्दों पर राहत कार्यों में उनकी रुचि है।

उन्होंने एक साथ 'वैल्स फॉर इण्डिया' की 1987 में स्थापना की - अब 'वॉटर हार्वेस्ट' - और एक आध्यात्मिकता के लिए जीवन भर की प्रतिबद्धता को बनाए रखा, जो दुनिया के महान धर्मों को गांधीवादी मूल्यों के साथ देखता है, जो पर्यावरणीय आपदा से पृथ्वी के बचाव के लिए आवश्यक है और सभी के लिए महत्वपूर्ण हैं।

शशि जी का निधन 14 नवम्बर 2020 - दिवाली, प्रकाश पर्व पर हुआ था। वह एक चमकता सितारा थीं।

निकोलस ग्रे और मैरी ग्रे, यू.के.

डॉ. निकोलस ग्रे और प्रोफेसर मैरी ग्रे एक ब्रिटिश दम्पति हैं व उन्होंने डॉक्टरेट प्राप्त कर कार्य किया। सेवानिवृत्ति के बाद आप दोनो ने अपना जीवन समाज सेवा को दिया।

सादा जीवन, उच्च विचार

वरिष्ठ सर्वोदयी, गाँधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता आदरणीय शशि जी त्यागी से मेरी पहली मुलाकात सन् 2014, 2 अक्टूबर को गाँधी भवन में हुई थी। युवा कवि तथा सामाजिक कार्यकर्ता गौतम के.गट्स जी ने मुझे उनसे पहचान करवाई। उनको जब मैंने बताया कि मैं असम के कस्तुरबा गाँधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट से हूँ तो शशि जी बहुत खुश हुईं। वे असम में हमारी संस्था में कई बार आ चुकी है और ये बात उन्होंने मुझे बतायीं। लेकिन वहां ग्रामीण इलाके में सेवारत रहने के कारण उनसे मेरी मुलाकात नहीं हो पायी थी।

उसके बाद गाँधी भवन के कार्यक्रमों में कई बार उनसे मेरा मिलना हुआ। वे बहुत कम बोलती थीं। हमेशा चेहरे पर एक मुस्कान देखने को मिलती थी। “सिम्पल लिविंग, हार्ड थिंकिंग” – ये बात शशि जी में मुझे देखने को मिली। जब मैं मिल्कमैन कॉलोनी में उनकी संस्था में गयी तब उन्होंने काफी देर तक मेरे साथ बैठकर बातचीत की। उनकी संस्था के अलग-अलग केन्द्रों में चल रहे कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। उस दिन मुझे पता चला कि ये गाँधी-विचार पर आधारित “ग्राविस” नाम की संस्था जल-संरक्षण, स्वावलम्बन, शिक्षा, चिकित्सा आदि अनेक दिशाओं में देश विदेश तथा राजस्थान प्रदेश के अलग-अलग जिलों में जरूरतमंदों के बीच कार्य कर रही हैं।

2015 में राजस्थान, खीमेल में सर्व सेवा संघ के अधिवेशन में मुझे 3 दिन उनके साथ रहने का मौका मिला। ग्राविस में भी मेरा कई बार आना हुआ। उनको मैंने हमेशा खादी का परिधान पहनते हुए देखा। वे हमेशा विनम्रता से बात करती थी और सामने वाले की बातों को भी ध्यान से सुनती थीं। उन्होंने मुझे अपने संस्था के साथ जोड़कर काम करने का भी आग्रह किया लेकिन मैंने कहा कि हमने स्माइल पीस फाउन्डेशन की स्थापना की है और इसके माध्यम से हमने सामाजिक कार्य शुरू किया हैं। इस बात पर शशि जी बहुत खुश हुईं और शुभकामनाएं भी दीं। उन्होंने कहा कि हम हमेशा एक साथ मिलकर समाज के लिए काम करेंगे।

आखिरी बार अभी मार्च में गाँधी भवन में उनसे मेरी मुलाकात हुई। शशि जी बहुत कमजोर दिख रही थी। मैंने पूछा तो उन्होंने मुस्कुराते हुए बताया कि मन में ताकत बहुत है लेकिन शरीर कभी कभी साथ नहीं देना चाहता है। यह उनसे आखिरी मुलाकात होगी ये मैंने कभी नहीं नहीं सोचा था। अब यकीन नहीं होता कि शशि जी हमारे बीच नहीं रही। लेकिन उनके आदर्श और प्रेरणा हमेशा हमारे साथ रहेंगे। हम सभी की ओर से सादर नमन एवं भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

निरुहजारिका, भारत

सुश्री निरुहजारिका आसाम की एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

पुरानी यादें

शशि जी सर्वोदय और गाँधीवादी विचारधारा को मानती थीं जिसकी झलक उनके व्यक्तित्व और काम में दिखती थी। मैं उनसे पहली बार गाँधी शांति प्रतिष्ठान में मिली, जहाँ उन्होंने अपने वक्तव्य में महिलाओं के विषयों और अमीर व गरीब के बीच बढ़ते अंतराल के लिए चिंता जतायी। हमारे समाज में व्याप्त गरीबी और असमानता के लिए वह बहुत चिंतित रहती थीं। उन्हें 2017 जमनालाल बजाज पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया जो उनके काम और विचारधारा के प्रति सम्मान था।

उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज सेवा में समर्पित कर दिया और उन क्षेत्रों में कार्य किया जहाँ सबसे ज्यादा जरूरत थी। हम आशा करते हैं कि उनका परिवार इस सेवा कार्य को आगे बढ़ायेगा और उनके बेटे प्रकाश जी उनकी परम्पराओं को आगे ले जायेंगे। शशि जी ने अपने जीवन में महात्मा गाँधी की विचारधारा का पालन किया। वह दूसरों की गलतियाँ निकालने में विश्वास नहीं रखती थी और उनके शब्द उनके विचारों को व्यक्त करते थे।

हम अक्सर मिलते और बातें किया करते थे। मुझे खेद है कि मैं कभी उनके साथ उन गाँवों में नहीं जा पायी जहाँ ग्राविस के कार्यक्रम है। शशि जी के जीवन से हमें अच्छा कार्य करने और दूसरों के लिए जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है।

पद्मजा शर्मा, भारत

डॉ. पद्मजा शर्मा जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर में प्रोफेसर हैं और लम्बे समय से शशि जी की मित्र रही हैं।

- 56 -

एक प्यारी माँ की तरह

जैसा कि मैंने लिखा है उनकी सादगी मेरी प्रेरणा। मैं जब विद्यार्थी जीवन में था तब सौभाग्यवश मेरा जुड़ाव गाँधी विचारधारा से जुड़े महानुभावों से हुआ जिसमें प्रमुख थे श्रद्धेय लक्ष्मी चन्द त्यागी, शशि बहिन जी व स्वामी बद्री प्रसाद जी आदि। यह ऐसी विभूतीया थी जिनके साथ रहना हमेशा गर्व का विषय रहा है। और यह अवसर ईश्वर ने मुझे प्रदान किया।

शशि बहिन जी और त्यागी जी का आगमन हमारे क्षेत्र में समय समय पर होता रहता था और उनका सादगी भरा जीवन देखकर मैं उनसे जुड़ता गया। मैंने देखा कि बहिन जी ने अपने जीवन में हमेशा छोटे से छोटे कार्यकर्ताओं को भी इतना सम्मान दिया जिसकी वह अपेक्षा भी नहीं कर सकता था और जो व्यक्ति एक बार उनके सम्पर्क में आ जाता तो उसका हमेशा के लिये उनसे जुड़ाव हो जाता था।

मेरे जीवन से जुड़ी दो घटनाओं को मैं साझा करना चाहता हूँ, जब मेरा शशि बहिन जी से सम्पर्क हुये कुछ ही समय हुआ था। मेरी माताजी बीमार थी जिनका स्वर्गवास हो चुका है जब वह अस्पताल में थी तब मैंने देखा कि अचानक बहिन जी उनसे मिलने के लिए आयीं और सेहत के बारे में पूछा। साथ ही मुझे हर प्रकार की मदद का आश्वासन भी दिया। कहने का तात्पर्य यही है कि उनके जीवन में कोई भी छोटा या बड़ा नहीं था वह हमेशा सभी को समान भाव से आदर सत्कार व सम्मान दिया करती थीं।

मैं एक छोटा सा कार्यकर्ता हूँ और मेरे पास एक बार फोन आया कि पवन जी आपको मिठाई खिलानी होगी। जब मैंने इसका कारण जानना चाहा तो उनके शब्द थे कि आपको ग्राविस की साधारण सभा में सम्मिलित किया गया है। यह मेरी कल्पना के परे बात थी कि उन्होंने मुझे इस योग्य समझा।

ऐसी महान विभूति को मेरा कोटि कोटि अभिवादन।

पवन भार्गव, भारत

श्री पवन भार्गव एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं व ग्राविस के मित्र हैं।

- 57 -

बचपन से लेकर आज तक की यादें

शशि बुआ जी के साथ मेरी बहुत सी यादें हैं क्योंकि मैं अपनी ज्यादातर गर्मियों की छुट्टियाँ बुआ जी, प्रकाश और आभा दीदी के साथ बिताता था। मैं दो यादों को साझा करना चाहूँगा जिनका उनका मुझ पर गहरा प्रभाव हुआ।

1998 की गर्मी की छुट्टियों में हम बुआ जी के घर गगाड़ी, राजस्थान गए। उन्होंने और फूफा जी ने हमें राजस्थान दिखाने की योजना बनाई। हम बहुत उत्साहित थे कि इतनी सारे ऐतिहासिक और पर्यटक स्थल जैसे कि माउंट आबू और खबसूरत सूरपगला देखने को मिलेंगे। लेकिन बुआ जी ने हमें ग्रामीण राजस्थान और वहाँ के लोगो की दैनिक जीवन में हो रही समस्याओं को भी दिखाने की योजना बनाई थी। हम पहले थोड़ा निराश हुए पर धीरे - धीरे वह हमारे लिए रोचक होता गया। हम एक गाँव गए और बिना किसी पूर्व निर्धारित योजना के वहाँ रात भर रुके और अगली सुबह मुझे स्नान करने को कहा गया। मुझे बहुत थोड़ा पानी दिया गया जो सिर्फ मुँह धोने के लिए ही काफी था और जब मैंने कंघी मांगी तो मुझे कहा गया कि कंघी नहीं है। मैं इस स्थिति को देखकर झुंझला गया और तब बुआ जी ने मुझे बताया कि पानी की कमी के कारण राजस्थान में कई लोगो का जीवन ऐसे ही है। उन्होंने मुझे कहा कि हमारे पास जो कुछ भी है हमें उसकी सराहना करनी चाहिए और जिनके पास नहीं है उनके साथ बांटना चाहिए। इस घटना के बाद मुझे ये अहसास हुआ कि हम भाग्यशाली हैं जिन्हें बिना ज्यादा कुछ किए इतनी सारी सुविधाएं प्राप्त हैं जो बहुत लोगो के पास नहीं हैं। मेरे पास जो भी था मैं उसका सम्मान करने लगा और तभी से हमेशा अपने माता - पिता का धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने मेरे आरामदायक जीवन को सुनिश्चित करने के लिए कड़ी मेहनत की।

दूसरी याद 1991 की है। बारहवीं कक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के बाद मैं इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश लेने के लिए प्रवेश परीक्षाएँ दे रहा था मगर सफल नहीं हुआ। मैं इंजीनियरिंग

कॉलेज में प्रवेश लेने के लिए सरल रास्ता ढूँढ़ने लगा। बुआ जी हमारे घर मेरठ आयीं और एक इंजीनियरिंग कॉलेज (HBTI, कानपुर) ले गयीं जहाँ मैं प्रवेश पाना चाहता था। वह वहाँ एक प्रोफेसर को जानती थीं। करीब 9 घंटे के सफर में बुआ जी ने इस बारे में कोई बात नहीं की। हम वहाँ प्रोफेसर से मिले (जो आचार्य जी के नाम से जाने जाते थे), उन्होंने आचार्य जी को बताया कि मैं इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिले की कोशिश कर रहा हूँ और क्या वो मेरे अंतिम प्रयास के अंको को देखकर कुछ सलाह दे सकते हैं। अभ्यर्थियों को अंक नहीं बताए जाते थे सिर्फ रैंक बताया जाता था अगर वो उर्तीण हो जाते थे। इसलिए यह मूल्यांकन कर पाना कठिन था कि आप कहाँ खड़े हैं और किस विषय पर आपको ज्यादा ध्यान देना है। वह कुछ समय के लिए बाहर गए और लौट कर कहा मैं सिर्फ 3 अंको से असफल हुआ हूँ और मुझमें और अच्छा करने की क्षमता है। लौटते समय बुआ जी ने ट्रेन में मुझसे पूछा कि मैं इस मुलाकात के बारे में क्या सोचता हूँ। मैंने ज्यादा कुछ नहीं कहा, उन्होंने मुझसे ये वादा करने को कहा कि मैं एक बार फिर से पूरी मेहनत से कोशिश करूँगा और दाखिला मिलने या न मिलने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा, पर प्रयास गंभीर होना चाहिए। इससे मुझे याद आया कि मेरे दादा जी कहा करते थे कि भगवान उन्हीं की मदद करते हैं जो अपनी मदद खुद करते हैं।

मैंने उस साल पूरी प्रतिबद्धता के साथ मेहनत की और तकरीबन सभी प्रवेश परीक्षाएं पास की। अंततः मैंने HBTI, कानपुर का चयन किया और जब मैं वहाँ गया तो पता चला कि किसी भी अभ्यर्थी के अंकों का पता करना संभव नहीं है। मुझ आश्चर्य हुआ कि बुआ जी ने ये सारा नाटक रचा मुझे सही रास्ते पर लाने के लिए। हर चीज़ के लिए आपका बहुत - बहुत धन्यवाद।

प्रताप नारायण त्यागी, यू.के.

श्री प्रताप नारायण त्यागी लंदन में एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं और शशि जी के भतीजे हैं।

जीवन के मूल्य

मुझे ग्राविस के बारे में सन् 2000 में पता चला जब यू.एस.ए. में मेरे एक मित्र (स्व.डॉ. महाराज कॉल) ने आई.एफ.ए. एक स्वैच्छिक संगठन जिसे कैलिफोर्निया में प्रवासी भारतीय चलाते हैं, को ग्राविस को सहयोग करने के लिए सिफारिश की। उसके बाद जल्द ही, मैं अपनी पत्नी सुरेखा के साथ जोधपुर गया। श्री एल.सी.त्यागी जी के शहर से बाहर होने पर उनकी पत्नी श्रीमती शशि त्यागी जी ने हमारा अभिनन्दन किया। इसी के साथ हमारा संबंध शुरू हुआ जो इतने वर्षों तक चला। हम दूसरी बार लम्बे समय के लिए जोधपुर आए और शशि जी दो बार हमारे यहाँ अमेरिका में आयीं, आखिरी बार कुछ सालों पहले ही आयीं थीं। इन वर्षों के दौरान हमने पाया कि ग्राविस ने हमारी सहायता का बहुत प्रभावी और उद्देश्यपूर्ण प्रयोग किया

है, खासकर जन विकास और प्राकृतिक संरक्षण के लिए। हमने भी राजस्थान के गरीब ग्रामीणों के बारे में बहुत सी बातें जानी जिसमें खान, स्वास्थ्य और गरीबी से जुड़े मुद्दे थे।

शशि जी एक निष्ठावान गाँधीवादी थीं जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन दलितों के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। उनके शांत और अपनेपन वाले आचरण के पीछे दलितों पर हो रहे शोषण की बहुत पीड़ा थी। उन्हें पता था कि किस तरह व्यवस्था काम करती है और बदलाव लाने वाली कई कोशिशों का वह एक हिस्सा थीं। वह बहुत सारे गाँधीवादी संगठनों और अभियानों का हिस्सा थीं। हम भाग्यशाली थे कि कुछ वर्षों तक वे इंडियन कम्यूनिटी एक्टीविस्ट नेटवर्क से जुड़ी रहीं। गाँधीवादी मूल्यों के द्वारा उन्होंने ग्राविस को सेवा, निर्माण और संघर्ष का स्वर्णिम उदाहरण बनाया।

कुछ महीने पहले उनके निधन की खबर सुनकर हम बहुत दुखी हुए। पिछली जुलाई को ही हमने उनका जन्मदिन अप्रत्यक्ष रूप से मनाया था और तब हमें बिल्कुल आभास नहीं था कि हम उन्हें इतना जल्दी खो देंगे।

सुरेखा, मैं और आई.एफ.ए. के हमारे मित्र उनके साथ बिताए समय को संजोकर रखते हैं। उन्हें हमेशा मानवता की सेवा और खासतौर पर राजस्थान में दलितों की सेवा के लिए याद किया जाएगा।

पृथ्वीराज शर्मा, यू.एस.ए.

डॉ. पृथ्वीराज शर्मा कैलिफ़ोर्निया से एक फ़िजिशियन हैं और इंडियन फ्रैंड्स एसोसिएशन के मुख्य सचिव हैं।

एक फरिश्ता जिनसे मैं मिली

मेरे बचपन के दिनों में एक बहुत ही विनम्र और मृदुभाषी दंपति, अक्सर शाम को मेरे पिता के साथ घर आते थे। एक दिन मेरे पिता ने मुझे और मेरी छोटी बहन को उनसे मिलवाया और उस महिला से कहा, “ये मेरी बेटियाँ हैं। कृपया इन्हें जीवन में शिक्षा और सादगी के महत्व से अवगत कराएं।” महिला ने हमें गले लगाया और हमें समझाया कि शिक्षा और कड़ी मेहनत की जीवन को बेहतर बनाने में बड़ी भूमिका है। मैं और मेरी बहन बहुत प्रभावित हुए और उनसे वादा किया कि हम अपने माता-पिता की बात मानेंगे और अपने जीवन में कड़ी मेहनत करेंगे। यह महिला एक महान सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती शशि त्यागी जी थीं। उनकी सादगी व ऊर्जावान और करिश्माई व्यक्तित्व ने मुझे और मेरी बहन को हमेशा प्रेरित किया। श्रीमती त्यागी जी एक दयालु, मेहनती और समर्पित व्यक्ति थीं। अपने पूरे जीवन में उन्होंने महिलाओं के सशक्तिकरण और दरिद्र लोगों के उत्थान के लिए निरन्तर काम किया। वह परोपकारी थीं और कम भाग्यशाली लोगों की मदद करने के लिए उदार एवं तत्पर रहती थीं। उनकी शक्ति चरम प्रतिकूल स्थितियों में भी हार न मानने की क्षमता में निहित थी। उन्हें न केवल उच्च सम्मान प्राप्त था, बल्कि उनकी प्रतिबद्धता की प्रशंसा एवं सराहना उनसे हर मिलने वाला करता था। वह एक फरिश्ता थीं, एक सच्ची आदर्श जिन्होंने मुझे हमेशा प्रेरित किया और मेरे जीवन के कठिन समय में मजबूत संबल की तरह मेरा साथ दिया। वह मेरे लिए किसी माँ से कम नहीं थीं जो मेरे दिल में हमेशा के लिए रहेंगी। अम्मा, आपकी बहुत याद आएगी।

फराह खान, भारत

सुश्री फराह खान एक प्राध्यापिका हैं जो लम्बे समय से ग्राविस की मित्र हैं।

महान व्यक्तित्व

शशि जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन महिला अधिकार कार्यकर्ता के रूप में काम किया। उनके जीवन से मुझे मानवता की प्रेरणा मिलती है। जिस तरह से वह लोगो से जुड़ीं, उनकी आवाज सुनी और सच्चे दिल से उनकी सहायता की, इससे मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। उनके जीवन में गरीब, दलित और वृद्धजनों के लिए एक खास जगह थी। मैं आशा करती हूँ कि बिना किसी भेदभाव से मानवता के लिए काम करने वालों को उनके जीवन से प्रेरणा मिलेगी। उनका निधन एक अपूरणीय क्षति है और मैं उनको श्रद्धाजलि अर्पित करती हूँ।

फादिल्लाह हानुम, इंडोनेशिया

सुश्री फादिल्लाह हानुम एक विकास कार्यकर्ता हैं जो हैल्पेज इन्टरनैशनल के साथ काम करती थीं और ग्राविस की मित्र हैं।

शशि जी - कड़ी मेहनत व ईमानदारी की छाया

छलाणी परिवार का परिचय श्रीमान लक्ष्मी चंद जी त्यागी से वर्षों पहले हुआ। मेरे पिताजी श्री भैरूदास जी छलाणी के साथ उनका मिलना होता रहता था, बातचीत होती रहती थी। दियातरा भी आना - जाना होता था। सामाजिक उत्थान, खादी के विकास के लिए चिन्तन होता रहता था। मुझे भी उसमें रूचि थी, इसलिए बैठकों में उनसे मिलना होता रहता था। मैं श्री त्यागी जी के आदर्शों की व्याख्या शब्दों में नहीं कर सकता हूँ। ऐसे विरले लोग बहुत कम दिखाई देते हैं, उसी कारण शशि दीदी से भी परिचय हुआ। उनके साथ भी वैचारिक आदान प्रदान होता रहता था। मैं उनके सरल एवं सहज व्यक्तित्व से अभिभूत सा हो गया था। एकदम सामान्य महिला की तरह उनका रहन सहन था। हर स्थिति में अपने आपको ढाल लेती थीं। शहरी परिवेश में रहते हुये भी ग्रामीण जीवन शैली से लगाव था। महिला सशक्तिकरण एवं महिलाओं के अधिकारों के लिये जुटी रहती थीं। छोटे से छोटे गाँव में जाकर उनकी समस्याओं को सुनती थीं एवं सुलझाने का प्रयास करती थीं। महिलाओं को स्वावलम्बी बनाने के लिये अनेक प्रकार के कार्य करती थीं।

कर्मठता के साथ स्वावलम्बी स्वभाव की थीं। काम पहले था, नाम एवं यश की इच्छा नहीं थी। जीवन भर खादी पहनी और खादी को बढ़ावा दिया। कहना होगा कि सादगी की देवी थीं। खानपान भी एकदम सामान्य था। कर्मठ कार्यकर्ता थीं, जो काम अपने हाथ में लेती थीं उसको निःस्वार्थ भाव से पूरा करती थीं।

उनका जीवन गाँधीजी के आदर्शों के प्रति समर्पित था। उनके विचारों को जीवन में उतारा और उनके आदर्शों को जन - जन तक पहुँचाने के लिए गोष्ठियाँ, बैठकों का आयोजन करती रहती थीं। गांधीजी के विचारों को प्रकट करने के लिये शशि दीदी को लोग आमंत्रित करते रहते थे।

समाज को आप अपना पूरा समय देती थीं। दीदी बहुत सी संस्थाओं से जुड़ी हुई थीं। श्री त्यागी जी द्वारा शुरू किया हुआ कार्य उन्होंने पूरा करने का प्रण लिया। अस्वस्थ रहते हुये भी सक्रिय काम में लगी रहती थीं। मैंने उनके मुख से कभी नहीं सुना कि मैं अस्वस्थ हूँ, आ नहीं सकती, इतनी दृढ़ आत्मशक्ति वाली थीं। ऐसा व्यक्तित्व देखने को कम मिलता है जो अपने कार्यकर्ताओं को अपने परिवार की तरह रखती थीं।

उनके असमय जाने से समाज को व हम सबको भारी क्षति हुई है, जो पूरी नहीं की जा सकती है। भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें। हम उनके काम में सहयोगी बन सकें, भगवान से ऐसी प्रार्थना है। उनको शत शत नमन। उनके द्वारा गाँधी विचार युवा वाहिनी का संगठन बनाया गया। हम उसे सहयोग देकर बढ़ाते रहेंगे।

फूसराज छलाणी, भारत

श्री फूसराज छलाणी एक व्यवसायी व गाँधीवादी विचारक हैं व पिछले 20 वर्षों से ग्राविस व त्यागी परिवार से जुड़े हैं।

शशि त्यागी - एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व

14 नवम्बर, 2020 को शशि जी के निधन की खबर सुन मुझे गहरा सदमा लगा और बहुत दुख हुआ। ग्राविस की सह संस्थापक और सचिव शशि त्यागी जी के बारे में मैं सिर्फ इतना जानती थी कि उन्होंने अपने संगठन ग्राविस के लिए एक शक्तिशाली नेता के रूप में अपना जीवन समर्पित कर दिया और भारत के थार मरुस्थल में वृद्धजनों और महिलाओं के कठिन जीवन को सुधारने में उनकी भूमिका एक उच्च उदाहरण है। मैं उनके बेटे डॉ. प्रकाश त्यागी को भी जानती हूँ, जो ग्राविस की कार्यकारी प्रबंधक और ग्राविस अस्पताल के संस्थापक - प्रबंधक हैं, जिनसे मैं हैल्पेज इन्टरनैशनल की कुछ सभाओं में मिली। मैंने पाया कि डॉ. प्रकाश के पास उनकी प्रिय माँ की अद्भुत वसीयत है - प्रेम व त्याग की। मेरे दिल से पूछें तो श्रीमती शशि त्यागी जी एक महान, स्नेही और सफल भारतीय माँ का प्रतीक हैं न सिर्फ अपने बच्चों के लिए बल्कि ग्राविस के हर युवा कर्मचारी के लिए भी।

मुझे अभी भी याद है, मैं श्रीमती शशि त्यागी से कुछ समय के लिए कुछ अवसरों पर मिली थी। पहली बार जब मैं हैल्पेज इन्टरनैशनल का प्रतिनिधित्व कर ग्राविस आयी थी और सन 2006 में भारत में थार मरुस्थल में सामुदायिक विकास के कार्यक्रमों में भाग लिया। ग्राविस की नेता के रूप में श्रीमती शशि त्यागी जी ने उत्साह से हमारा स्वागत किया। उनकी मुस्कुराहट और खुला दिल तब से आज तक मेरे दिमाग में है। ग्राविस के कार्यक्रम जिनसे मैं प्रभावित हुई वह थे - जल संचयन, वृद्धजनों के लिए स्वास्थ्य सेवाएं, बच्चों की शिक्षा, महिलाओं के लिए बराबरी का अधिकार, क्षमता निर्माण और गरीबी निवारण कार्यक्रम जिन्हें हजारों सामुदायिक संगठन चला रहे थे और मुझे ये महसूस हुआ कि उन्होंने अपनी बुद्धिमता, नेतृत्व और मार्गदर्शन से ग्राविस को सशक्त बनाया और एक माँ की तरह आगे बढ़ाया। मैं यह समझती हूँ और सराहना करती हूँ कि उनके योगदान से ग्राविस इतना सफल हुआ।

दूसरी बार मैं उनसे वियतनाम महिला संगठन में जून 2012 में मिली। उस समय तक मैं वियतनाम वूमेन्स यूनिन से सेवानिवृत्त हो चुकी थी और एचआईवी/एड्स से बचाव के लिए कार्य कर रही थी। भाग्यवश, वियतनाम वूमेन्स यूनिन में श्रीमती शशि त्यागी के साथ हो रही सभा में मेरे सहकर्मियों ने मुझे आमंत्रित किया। ये बताने की जरूरत नहीं कि मैं उनको देखकर कितनी खुश थी, और इस बार वियतनाम में मेरा हृदय पुलकित हो उठा क्योंकि मैं फिर से उन्हें सुन पा रही थी उनकी मुस्कुराहट को देख पा रही थी और उनके उत्साह को महसूस कर पा रही थी। उनकी वियतनाम यात्रा जिसमें वृद्ध महिलाओं को सहयोग करने के लिए वियतनाम वूमेन्स यूनिन का स्थानीय दौरा शामिल था। वियतनाम वूमेन्स यूनिन के कार्यकर्ताओं के साथ उन्होंने अपने अनुभव साझा किए।

मैं श्रीमती शशि त्यागी जी को जानकर, समझकर गौरवान्वित महसूस करती हूँ। एक महिला नेता, भारत की एक माँ - एक महान व्यक्तित्व, बौद्धिक और विनम्र, नेक और सरल शशि जी यह सब

थी। मैं आशा करती हूँ कि श्रीमती शशि त्यागी जी की आत्मा को शांति मिले और ग्राविस में उनके उत्तराधिकारी हमेशा उनसे प्यार करें और उनके भावों और विचारों का पालन करें।

फैम थी होई जिआंग, वियतनाम

सुश्री फैम थी होई जिआंग भूतपूर्व अध्यक्ष इन्टरनैशनल रिलेशनस डिपार्टमेंट व वियतनाम वूमेन्स यूनियन की मुखिया (1997 – 2012), हैल्पेज इन्टरनैशनल की भूतपूर्व बोर्ड सदस्य (2008 – 2016) और जानी मानी महिला अधिकार कार्यकर्ता हैं।

- 63 -

एक प्रेरणा स्रोत

शशि बहिन जी के साथ काम करने का जो सम्मान मुझे मिला, वह मैं कभी नहीं भूल सकता। वह बहुत ही निडर थीं और उन्होंने अपना पूरा जीवन मानवता के लिये समर्पित किया। मुझे याद है जब मैं उनके साथ सर्वोदय सम्मेलन में गया था, उन्होंने बहुत ही प्रेरणादायी भाषण दिया था। उन्होंने हमेशा, गरीब, दलित, महिलाओं और बालिकाओं के लिए काम किया।

वह अपने सहकर्मियों के परिवारों से भी गहरा जुड़ाव रखती थीं, हर सुख - दुख के मौके पर सबका साथ देती थीं। मैं उच्च शिक्षित नहीं हूँ फिर भी उन्होंने मुझे हमेशा महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किए, जो मैं कभी नहीं भूल सकता।

बाबूलाल लखानी, भारत

श्री बाबूलाल लखानी ग्राविस परिवार के 30 साल से सदस्य रहे हैं।

- 64 -

शशि बहिन जी : स्वयंसेवी संगठनों की एक निडर मार्गदर्शिका

शशि बहिन जी के बारे में लिखना मेरे लिए सम्मान और सौभाग्य की बात है। मैं 1990 के दशक की शुरुआत में त्यागी दम्पति (माननीय श्री एल.सी. त्यागी जी और श्रीमती शशि जी) से पहली बार मिला। इस अविश्वसनीय जोड़ी के अपने विशिष्ट व्यक्तित्व थे। मेरे हर जोधपुर में मिल्कमैन कॉलोनी में उनके घर के दौरे पर वे एक प्यार और स्वागत करते वाले मेजबान के रूप में दिखे। वे गगाड़ी गाँव में जो उनका पहला केन्द्र भी है वर्षों रहने के बाद बस इस घर में रहने आए। मुझे प्यार, देखभाल और स्नेह से परिपूर्ण रखा। मेरी सुबह की यात्राओं में उन्होंने घर पर पकाया हुआ सादा नाश्ता साझा किया, और सर्दियों के समय में मुझसे पूछा गया कि

जीवन संदेश

क्या मेरा कमरा पर्याप्त गरम है। वे जानते थे कि मैं अहमदाबाद से आ रहा हूँ जहाँ मौसम इतना ठंडा नहीं है।

शशि बहिन जी गाँधीवादी-सर्वोदयी संगठनों सहित स्वैच्छिक संगठनों की एक आदर्श, ईमानदार, स्पष्ट और निडर मशाल वाहक थीं। उनका घर चर्चा, कार्यक्रमों और गतिविधियों को चाक-चौबंद करने का एक केन्द्र बिन्दु हुआ करता था। बहिन जी हमेशा क्षेत्र के मुख्य मूल्यों की सुरक्षा के बारे में सोचती थीं, विशेष रूप से गरीबों और हाशिए पर रहने वाले लोगों की सहायता और सरल जीवन के प्रति प्रतिबद्धता के मुद्दों पर। उन्होंने जातिगत भेदभाव और अत्याचार के खिलाफ निडर होकर काम किया। बहुतों को यह पता नहीं होगा कि गंगाड़ी परिसर पर एक बार सवर्ण जाति समूहों द्वारा हमला किया गया था।

जब यह योजना बनाई गई कि उन्नति पश्चिमी राजस्थान में एक संस्था के रूप में काम करेगा, तो मुझे उनका अधिकतम समर्थन प्राप्त हुआ। शशि बहिन जी ने जमीन और लोगों के बारे में जानने के लिए मुझे गाँवों में घूमने और समय बिताने के लिए कहा। उन्होंने मुझे सभी गाँधीवादी संगठनों और बड़ी संख्या में ऐसे संगठनों से परिचित कराया, जिन्हें उन्होंने ग्रामीण विकास विज्ञान समिति के तहत प्रोत्साहित किया और बढ़ावा दिया था, जिसे बाद में ग्राविस के नाम से जाना गया। उन्नति में उनकी सलाह के बाद आज भी हम विभिन्न मुद्दों को समझने के लिए पदयात्राएं जारी रखे हुए हैं। अभी हाल ही में हमारी एक टेलिफोनिक बातचीत में उन्होंने गाँधीवादी मूल्यों पर युवाओं को उन्मुख करने की आवश्यकता के बारे में बात की और वर्धा में चलाए जा रहे पाठ्यक्रम का विवरण दिया।

शशि बहिन मेरी पत्नी मिराई चटर्जी को जानती थीं जो सार्वजनिक स्वास्थ्य सलाहकार हैं और राजस्थान स्वैच्छिक स्वास्थ्य संघ (वीएचएआई के एक राज्य अध्याय) के साथ जुड़ी थीं। ग्राविस का वर्तमान स्वास्थ्य कार्यक्रम, जिसका विस्तार और नेतृत्व डॉ. प्रकाश त्यागी द्वारा किया गया है, के मूल में शशि बहिन जी का दृष्टिकोण निहित है। मेरी यात्राओं के दौरान जब वह मिराई और हमारे बच्चों के बारे में बात करती थीं तो बातचीत प्रजनन स्वास्थ्य पर वापस चली जाती थी कि थार रेगिस्तान क्षेत्र के गाँवों में सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं, पोषण, सुरक्षित पानी और स्वच्छता को कैसे मजबूत किया जाए।

त्यागी दम्पति, उनकी गाँधीवादी सिद्धांतों के लिए प्रतिबद्धता और धरातल पर किए काम के लिए मेरे मन में बहुत सम्मान है। दोनों ने सीधे तौर पर बनवासी सेवा आश्रम में जयप्रकाश नारायण और विकास भाई के साथ काम किया और उन सभी सकारात्मक मूल्यों को आत्मसात किया, जिसने उन्हें स्वैच्छिक क्षेत्र के गाँधीवादी-सर्वोदयी और उभरते हुए स्थानीय संगठनों दोनों के बीच विशिष्ट और सम्मानित नेताओं के तौर पर स्थापित किया। बहिन जी को हमेशा याद किया जाएगा।

बिनॉय आचार्य, भारत

श्री बिनॉय आचार्य एक जाने माने विकास विशेषज्ञ हैं व त्यागी परिवार के मित्र हैं।

जीवन बदलने वाली मित्रता

मेरे माता- पिता वेरोनिका और पीटर सैडन ने पहली बार 1990 के दशक में 'वैल्स फॉर इंडिया' के लिए मैरी और निकोलस ग्रे द्वारा बनाई गई संस्था के प्रतिनिधियों के रूप में भारत की यात्रा की। यह 1992 में मेरे भाई डोमिनिक की असमय मृत्यु के बाद था, क्योंकि उन्होंने उसकी याद में एक कुआं बनाने में आर्थिक सहायता देने का फैसला किया था।

उन्होंने आने वाले वर्षों में कई बार भारत की यात्रा की, और वे बहुत प्रभावित हुए। विशेष रूप से लोगों से जिनसे वे मिले थे और जो परियोजनाएं उन्होंने देखीं। इन यात्राओं के दौरान उनकी मुलाकात शशि जी और उनके पति लक्ष्मी चंद त्यागी जी से हुई, जो एक लम्बे समय तक चलने वाली जीवन पर्यन्त दोस्ती की शुरुआत थी। खासकर मेरी माँ और शशि जी के बीच काफी निकटता रही। शशि की अंतिम लंदन यात्रा अक्टूबर 2018 में थी, 2019 में मेरी माँ की मृत्यु से पहले।

शशि जी और वेरोनिका के बीच एक बड़ा पारस्परिक सम्मान था, क्योंकि वे दोनों मजबूत महिलाएं थीं, दूसरों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए कड़ी मेहनत करती थीं। मुझे पता है कि मेरे माता-पिता शशि से मिलने और उनके साथ समय बिताने में कितने खुश होते थे, खासकर तब जब वे खुद भारत की यात्रा करने में स्वास्थ्य के कारण असमर्थ थे, और शशि ने कई मौकों पर लंदन में उनसे मुलाकात की।

मुझे बहुत संतोष होता है कि इन चार लोगों ने इतने दूर होने के बावजूद अपने दृष्टिकोण, सिद्धांतों, मूल्यों और मानवता से जुड़े कामों को साझा किया। अब ये चारों इस दुनिया में नहीं हैं। निश्चित रूप से मुझे पता है कि वेरोनिका और पीटर के लिए शशि और लक्ष्मी के साथ उनकी दोस्ती जीवन को नया रूप देने वाली थी।

बैट्रीस सैडन, यू.के.

डॉ. बैट्रीस सैडन लंदन में एक कैंसर विशेषज्ञ हैं व पिछले 20 वर्षों से ग्राविस से जुड़ी हैं।

हमारी शशि बहिन जी

शशि जी सरल व्यक्तित्व, त्याग की प्रतिमूर्ति और महिला सशक्तिकरण के लिए काम करने वाली महिला थीं, जिनको कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। मैं उनसे स्व. श्री सोहनलाल मोदी के साथ सन् 2000 में पहली बार मिली। शशि जी ने मुझे एक संगठन बनाने के लिए प्रेरित किया। पिछले कुछ वर्षों में गरीब, ग्रामीणों के लिए काम करते हुए मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा। मैं उनसे

उसी प्रकार जुड़ी थी जिस तरह एक माँ और बेटी। उनके अंतिम दिनों में मैं अस्पताल में फ्रैक्चर के कारण भर्ती थी और उनसे नहीं मिल पायी। उनके साथ बिताया गया समय मेरे जीवन का कभी न भूलने वाला हिस्सा है। मैं हमारी प्रिय बहिन जी को श्रद्धाजलि अर्पित करती हूँ।

बेगी सुखानी, भारत

श्रीमती बेगी सुखानी एक महिला अधिकार कार्यकर्ता हैं तथा क्षेत्रीय ग्रामोत्थान समिति की संस्थापिका हैं।

- 67 -

शशि जी - हमारी माँ

“अहिंसा में आपको पूरे जोश के साथ विश्वास करना चाहिए, अगर आप चाहते हैं कि अच्छा समाज बने, आपको अहिंसा में उत्साह बना के रखना चाहिए।” - विनोबा भावे

शशि जी निडरता, दयालुता और प्रेम से प्रभावित करती थीं। वह बिना थके महिलाओं के अधिकारों के लिए काम करती थीं जिससे महिलाएँ अपना भाग्य खुद लिख सकें और अपने परिवार, गाँव, शहर और समाज में अपनी अलग पहचान बना सकें। शशि जी ग्राविस के लिए एक इंजन जैसी थीं जो लगातार त्यागी जी के व्यावहारिक, ग्रामीण सामाजिक कार्य की परियोजनाओं में महिलाओं से जुड़े सामाजिक मुद्दों को उठाती थी और बाद में सामाजिक कार्यों के लिए प्रेरित करती रहीं।

शशि जी और त्यागी जी दोनों विनोबा भावे के भूदान और ग्रामदान आंदोलन व सर्वोदय से प्रेरित थे, जो भारत के बहुत से गाँधीवादी समाज सुधारकों और गैर सरकारी सामाजिक संगठनों का स्रोत बना। इन संस्थाओं ने हमेशा ग्रामीणों की मदद की, उन्हें शिक्षित और सशक्त किया, जिससे वह समस्याओं का निवारण कर सकें और सच्चाई की राह पर चलें। इन कार्यों से प्रेरित होकर सरकार ने भी ग्रामीणों के लिए काम बढ़ाया। दोनों त्यागी जी और शशि जी ने अपना जीवन थार मरुस्थल के ग्रामीण समुदायों की मदद करने के लिए, उनके उत्थान और जिस पर्यावरण में वह रहते थे, उसके लिए समर्पित कर दिया। उनकी सफलता आज हमारे सामने प्रत्यक्ष है, और यह एक दूसरे की मदद करने के लिए सत्य और मानवता में विश्वास करने का परिणाम है।

मुझे पहली बार ग्रामीण विकास विज्ञान समिति (अब ग्राविस) और उनके गाँधीवादी, सामाजिक कार्यों के बारे में सन् 1994 में पता लगा, तब मैं सिएटल में वाशिंगटन विश्वविद्यालय का छात्र था। मुझे विश्वविद्यालय में एक पत्रिका मिली जो पीपल फॉर प्रोग्रेस इन इंडिया (पी.पी.आई.) के मित्र वहाँ छोड़ गए थे। उन्हें ऐसे स्वयं सेवकों की आवश्यकता थी जो मरुस्थलीय कृषि और गाँधीवादी ग्रामीण सामाजिक कार्य परियोजनाओं के बारे में लिखना चाहते हों। पी.पी.आई. से

गैरी वर्थिंगटन के साथ मेरा मिलना हुआ और फिर मैं अपनी नौकरी छोड़कर और विश्वविद्यालय से समय निकालकर नौ महीने के लिए ग्राविस, जोधपुर आया।

मैं पहली बार शशि जी से सन् 1994 में दिवाली के दिन उनके घर पर मिला। मैं त्यागी जी के घर पर एक महीने से रह रहा था और उस समय शशि जी यूरोप में महिला अधिकारों के लिए सम्मेलन कर रही थीं। उस दिन त्यागी जी और बहुत से कर्मचारी किसी गाँव के कार्य क्षेत्र में गए थे और अचानक दोपहर में शशि जी आ गयीं। मुझे आज भी याद है उनकी चमकती आँखें, मुस्कुराहट और सांवना देने वाली हंसी। वह अपनी लम्बी यात्रा से थक गई थीं पर हमने साथ बैठकर चाय पी और बिस्कुट खाया। उनकी दयालुता और उत्साह ने मुझे एक छोटा बच्चा होने का अहसास कराया और तभी से मैं उन्हें अपनी भारतीय माँ मानने लगा।

मैं कई अवसरों पर त्यागी जी से मिलने भारत आया। आखिरी बार 2005 में मैं त्यागी जी से मिलने अस्पताल गया उनकी मृत्यु से ठीक पहले, अहमदाबाद में। पिछले कुछ वर्षों में मैं भाग्यशाली रहा कि शशि जी, त्यागी जी और प्रकाश जी अपने सम्मेलनों से विराम लेकर सिएटल हमारे घर आए और स्थानीय संगठनों में गए। ये वो समय था जब शशि जी अपने काम से विराम लेकर बहुत खुश होती थीं और पूरी तरह से आराम करना चाहती थीं। हम एक साथ खाना बनाते और जीवन पर पकड़ मजबूत करते, ऐसा लगता जैसे वो हमारे पड़ोस में रहती हों। मुझे लिखने में कठिनाई हो रही है क्योंकि मेरे लिए शशि जी अभी भी जिंदा सी हैं। मैं आज जब उनके बारे में सोचता हूँ, उनकी आँखों की चमक देखता हूँ तो उनकी मुस्कान और हंसी को सुन सकता हूँ। मैं उनकी आवाज सुनता हूँ, मुझे याद दिलाती है कि पानी मत व्यर्थ करो। मैं उन्हें देखता हूँ कि किस तरह वह उंगलियों के बीच में चावल को दबा कर बताती हैं कि वह पक गए। मुझे अपनी रसोई में जीरे की महक आती है, मुझे याद है कि किस तरह वह मुझे घर जाते समय मेरे सामान के साथ राजस्थानी जीरा और गुड़ देती थीं। मैं सोच रहा था कि अगले साल दिवाली पर एक दिया उनके लिए जलाऊँगा, पर अब मुझे अहसास हुआ कि जो दिया उन्होंने जलाया है वह हम सब के अंदर हमारे जीवन को रोशन करता रहेगा। प्यारी शशि जी - आपका प्रेम और जीवन हमारे अंदर सदैव प्रज्वलित रहेगा। आपकी बहुत याद आएगी, अम्मा।

बेन फॉल्क, यू.एस.ए.

श्री बेन फॉल्क एक कोशिका वैज्ञानिक हैं जो लॉस एंजेलिस में काम करते हैं और ग्राविस के भूतपूर्व स्वयंसेवी हैं।

एक प्रभावशाली व्यक्तित्व

जब मैं पहली बार ग्राविस से एक विदेशी अनुसंधानकर्ता के रूप में जुड़ा, तो संस्था से बड़ा प्रभावित हुआ। साहसिक प्रेरणा से भरी एक वास्तविक कहानी जैसा प्रतीत हुआ। गाँधीवादी आदर्शों और सबके विकास के उद्देश्य की एक सर्वव्यापी समझ से प्रेरित शशि जी और लक्ष्मी चंद त्यागी जी ग्रामीण थार रेगिस्तान में गरीब और हाशिए पर रहने वाले समुदायों को सशक्त बनाने के लिए राजस्थान आए और अपने प्रयासों को धरातल पर उतारा।

व्यक्तिगत रूप से शशि जी से मिलना एक बड़ा सम्मान था। उनके दृढ़ और प्रभावशाली व्यक्तित्व के अंतर्भाव में करुणा स्पष्ट दिखती थी। हमारे मिलने के कुछ समय बाद मैं उनके साथ जैसलमेर में एक सम्मेलन में गया। जब हम बलुआ पथर, सेवण घास और खेजड़ी के पेड़ों के परिदृश्य से गुजरे तो उन्होंने मुझे थार के स्थानों और लोगों की कहानियाँ सुनाईं। उनके ज्ञान में जीवन भर की सेवा और नेतृत्व झलकता था।

शशि जी की उपलब्धियों और समर्पण को उच्च श्रेणी में रखते हुए मैंने ग्राविस के साथ अपना शोध पूरा किया, जिसमें गाँवों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर अध्ययन किया गया था। नवम्बर 2020 में उनके निधन के बारे में जानकर मुझे गहरा दुःख हुआ। उनके निधन के एक महीने से भी कम समय के बाद एक दुःखद संयोग से, मेरे अपने पिता भी ल्यूकेमिया के ही एक दुर्लभ प्रकार से गुजर गए। पिछले चार दशकों में ग्राविस के साथ शशि जी के काम ने कई लोगों को हानिकारक बीमारियों और अन्य आकस्मिक घटनाओं से जीवन बचाया है, लेकिन उनके अच्छे कामों के बावजूद उन्हें बीमारी से बचाने का कोई रास्ता नहीं था। इसी तरह मेरे पिता एक जैविक वैज्ञानिक थे जिन्होंने अपना जीवन मानवता के लिए कैंसर को बेहतर ढंग से समझने में मदद करने में बिताया, लेकिन अंत में उसी बीमारी ने उनके उपचार के विज्ञान को पीछे छोड़ दिया। यह जीवन की महान विडंबनाओं में से एक है, कोई व्यक्ति अपने पूरे दिल और आत्मा को एक उद्देश्य में समर्पित करे और उस श्रम के लाभों को देखे या प्राप्त किए बिना इस संसार से चला जाए। मानव प्रगति की परिधि अक्सर एक व्यक्ति या एक पूरी पीढ़ी की क्षमता से अधिक होती है, फिर भी यह परिवर्तन के लिए प्रयास करना बंद करने का कारण नहीं है। बल्कि यह वास्तविकता और भी कठिन प्रयास करने का एक कारण है। यह एक ऐसा सबक है जो मैंने शशि जी से सीखा है, मैं इसे हमेशा अपने साथ रखूंगा।

बेन सॉल्टॉफ, यू.एस.ए

श्री बेन सॉल्टॉफ येल विश्वविद्यालय में पर्यावरण नवाचार प्रबंधक हैं व पूर्व में ग्राविस के साथ कार्य कर चुके हैं।

शशि त्यागी: सरल मधुर स्वभाव

शशि त्यागी जी का जोधपुर में ग्रामीण विकास विज्ञान समिति में महिलाओं के साथ कार्य का लम्बा सफर रहा। त्यागी जी के देहावसान के बाद पूर्ण रूप से ग्राविस के कार्यों को आपने आगे बढ़ाया। आस्था एवं ग्रामीण विकास विज्ञान समिति का सम्पर्क 30 वर्षों से भी अधिक का रहा। जब ग्रामीण विकास विज्ञान समिति ने खान मजदूरों के मुद्दों पर खान मजदूर सुरक्षा अभियान का कार्य शुरू किया तब बहुत सारी बैठकों में शशि जी व त्यागी जी के साथ कार्य का अनुभव हुआ। ग्राविस ने पहली बार सिलिकोसिस की बीमारी का मुद्दा उठाया था, जिस पर आगे बहुत सारा काम हो पाया।

आस्था की शुरुआत के समय हम अकाल संघर्ष समिति के माध्यम से राजस्थान स्तर के नेटवर्क में जुड़े। अकाल उस समय का प्रमुख मुद्दा था जब हमने सरकार के समक्ष बेहतर अकाल प्रबंधन एवं पानी रोकने जैसे कार्यों को प्रमुखता से करवाने पर जोर दिया। हमने फेमिन कोड की मांग की थी। अकाल के अनुभवों को लेकर 2004-05 में नरेगा की माँग प्रखर रूप से सामने आयी। नरेगा जैसा कानून बनाने में राजस्थान की स्वैच्छिक संस्थाओं एवं संगठनों की भूमिका महत्वपूर्ण रही। शशि जी के साथ सभी कार्यकर्ता सहज, सरल रूप से चर्चाएं कर सकते थे। मेरे जोधपुर प्रवास के दौरान एक-दो बार त्यागी जी व शशि जी के साथ उनके घर पर राजस्थान के मुद्दों एवं सामाजिक कार्यों को लेकर महत्वपूर्ण चर्चाएं हुईं। शशि जी का डॉ. जिनी श्रीवास्तव के साथ भी आत्मीय सम्बन्ध रहा है व आस्था व ग्राविस के अनुभवों को परस्पर साझा करने में हम वार्षिक प्रतिवेदन साझा करते थे। शशि जी का सामाजिक कार्यों में त्याग, लगाव एवं कटिबद्धता सामाजिक क्षेत्र के कार्यकर्ताओं, खास तौर पर महिलाओं के लिये प्रेरणास्त्रोत रहे हैं। वे बहुत बड़ी बातें सरल शब्दों में कह देती थीं।

उनके सामाजिक कार्यों में योगदान से आने वाली पीढ़ी प्रेरणा लेगी।

भँवर सिंह चंदाणा, भारत

श्री भँवर सिंह चंदाणा एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं तथा आस्था के प्रमुख हैं।

निर्धनों की हितैषी

मैं बड़ी ढाणी गाँव से हूँ तथा ग्राविस से 2000 से जुड़ा हूँ। हमारे गाँव में शशि जी द्वारा करवाए गए कार्य उनकी निष्ठा की एक अनूठी मिसाल हैं। बिना थके हारे, उन्होंने ग्रामीणों के लिए आजीवन काम किया। उन्होंने हमारी महिलाओं और बालिकाओं को सशक्त किया क्योंकि वे महिला सशक्तिकरण में गहरी आस्था रखती थीं। वह एक सच्ची लौह - महिला थीं व हम उन्हें नम आँखों से याद करते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि देते हैं।

भाई खान, भारत

श्री भाई खान एक ग्राम विकास समिति सदस्य हैं व थार मरुस्थल से हैं।

सादा जीवन उच्च विचार

मेरी शशि बहिन जी से प्रथम मुलाकात 23 अक्टूबर 1991 को हुई, तब से लेकर उनके अंतिम समय तक उनके सानिध्य में कार्य करने का सौभाग्य मिला। आपका पूरा जीवन ग्राविस व सर्वोदय जगत को ऊँचाईयों तक ले जाने का रहा। विशेषकर थार मरुस्थल के जिले जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर व बीकानेर के ग्रामीण इलाकों में रहने वाले गरीब, वंचित, शोषित वर्गों का उत्थान करने का काम आपने किया जो अनुकरणीय व प्रशंसनीय हैं।

शशि बहिन जी का 14 नवम्बर 2020 को असामयिक निधन ग्राविस परिवार व सर्वोदय जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। लेकिन विधि के विधान के आगे हम सब नतमस्तक हैं। परम पिता परमेश्वर से यही प्रार्थना करते हैं कि अमर आत्मा को श्री चरणों में शरण दें। शशि जी अब हमारे बीच भौतिक शरीर से तो नहीं हैं, लेकिन आप द्वारा दी गई सीख, मार्गदर्शन व विचार हम सब के साथ रहेंगे। उनका अनुसरण करते हुये हम आगे बढ़ेंगे।

भूराराम देवासी, भारत

श्री भूराराम देवासी ग्राविस परिवार के एक वरिष्ठ कार्यकर्ता हैं।

स्मरण शब्द

14 नवम्बर 2020 को शशि जी के निधन की खबर सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। 20 वर्षों से जो मेरा उनसे जुड़ाव था उसको कुछ शब्दों में वर्णित करना संभव नहीं है। उनके जाने से मैं हमेशा खालीपन सा महसूस करूँगा। वह मेरी मार्गदर्शक थीं।

मुझे दिल्ली का एक किस्सा याद है जब हमें रेलवे स्टेशन जाना था और हमारे पास काफी समय बचा था। मैंने उनसे टैक्सी बुलाने के लिए पूछा लेकिन उन्होंने एक बूढ़े रिक्शेवाले को सड़क पे रोका। वह हमें धीरे - धीरे स्टेशन ले गया और शशि जी ने उसे जितने उसने माँगे थे, उससे ज्यादा पैसे दिए। बाद में उन्होंने मुझे कहा कि हमने अपना अतिरिक्त समय उपयोग कर एक जरूरतमंद परिवार की मदद की। यह तो बस एक उदाहरण था उनके जीवन की महानता का, उन्हें जरूरतमंदों की मदद कर बहुत खुशी मिलती थी।

महिलोष बागोरिया, भारत

श्री महिलोष बागोरिया हैडकॉन के लिए कार्य करते हैं और लम्बे से ग्राविस से जुड़े हैं।

इन्द्रधनुष की तरह

शशि जी के साथ बिताए गए यादगार पल, स्वर्णिम और ज्ञान से सुसज्जित थे। मैं पहली बार शशि जी से सन् 2005 में कार्यवश मिला। मेरी उनसे शुरूआती मुलाकातों ने मुझे 'गाँधीवादी विचारधारा' से अवगत कराया, जिसको उन्होंने ग्रहण किया था और दूसरों के साथ उसे साझा करने का एक भी मौका नहीं छोड़ती थीं। शशि जी हर किसी की योग्यता पर विश्वास करती थीं और उनकी सतर्क नजरें सबकी छुपी हुई प्रतिभा को देख लेती थी। उन्होंने युवा वर्ग को नए विचारों से प्रोत्साहित किया और उनको गाँधीवादी परिप्रेक्ष्य में विकसित किया। जब मैं ग्राविस से जुड़ा, तो अपने दायित्व को लेकर अनिश्चित था लेकिन शशि जी को मेरी योग्यता पर विश्वास था और उन्होंने मुझे कलराँ केन्द्र की जिम्मेदारी सौंपी। वहाँ जो परियोजना लागू की गयी वह तकनीकी रूप से जटिल और विस्तृत थी पर त्यागी जी और शशि जी ने मुझ में जो अपना विश्वास दिखाया, उसने मुझे इस कार्य को पूरा करने की शक्ति दी। उन्होंने मुझे वियतनाम में हैल्पेज इन्टरनैशनल की एशिया पैसिफिक गोष्ठी में ग्राविस का प्रतिनिधित्व और कलराँ केन्द्र में 'अखिल भारतीय सर्वोदय सम्मेलन' का आयोजन करने का अवसर भी प्रदान किया।

जीवन संदेश

वे उम्र या पद में हर छोटे - बड़े सदस्य को महत्त्व देती थीं। वह सामुहिक शक्ति में विश्वास करती थीं और बड़े ही धैर्य के साथ संगठन के मुद्दों पर सभी सदस्यों के साथ चर्चा करती और सभी के विचारों का आकलन करती थीं।

शशि जी के लिए ग्राविस में काम करने वाला हर व्यक्ति सर्वोदय परिवार का हिस्सा था और हर परिवार की भलाई उनके लिए सर्वोपरि थी। वह हर परिवार की कुशल मंगल पूछती और बड़ी बहन की तरह मदद करतीं।

मैंने उनकी उदारता को निजी तौर पर तब महसूस किया जब मैं और मेरा परिवार एक विकट कठिनाई का सामना कर रहे थे। हमारे संघर्ष के क्षणों में उन्होंने समय निकाल कर हमारी हालत के बारे में निरन्तर पूछा। उन्होंने हमें भावनात्मक सहारा दिया और समय पर हमारी मदद कर हमारे परिवार पर आयी विपदा को टाल दिया।

उस समय पर उनके द्वारा की गई मदद हमारे लिए 'आशा की किरण' लेकर आयी, जिसने हमारे पथ को रोशन किया। मेरे ग्राविस से चले जाने के बाद भी वह मेरे और मेरे परिवार का हाल पूछती रहतीं। ग्राविस छोड़ने के बाद भी हमारे बीच एक खास रिश्ता था, हम कई विषयों पर चर्चा करते और वो मेरा मार्गदर्शन करती। इंद्रधनुष के चमकीले रंगों की तरह उन्होंने मेरा जीवन एक वरिष्ठ मार्गदर्शक, गुरु और बड़ी बहन बन कर रोशन किया। मैं बहुत किस्मत वाला हूँ जो उनसे मिला और उनकी दयालुता मुझे छू पायी।

महिपालसिंह, भारत

श्री महिपाल सिंह ग्राविस परिवार के भूतपूर्व सदस्य और करीबी साथी रहे हैं।

- 74 -

एक विशेष व्यक्तित्व

आदरणीय शशि बहिन जी के विराट व्यक्तित्व को समझना मेरे जैसे अल्पज्ञ व्यक्ति के लिए उतना ही मुश्किल है जितना किसी शिशु का अपनी माता की ममता और पीड़ा को समझना। वे अत्यन्त विशाल हृदय की थी समुद्र की तरह। 20 वर्षों के लम्बे कार्य खण्ड में मैंने उनको करीब से देखा। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की छाप उनके द्वारा किये हुये जनकल्याण के विभिन्न कार्यों में दिखती हैं व उसके लिए लिखने की आवश्यकता नहीं है। पश्चिमी राजस्थान के दुरस्थ इलाकों में मैं जिस कर्मठता और निरन्तरता के साथ डटकर कठिनाईयों का सामना करते हुये उन्होंने जन साधारण के लिए जो कुछ किया वो मील का पत्थर हैं। आगे का रास्ता वे हमारे लिए छोड़ गई हैं। जिसे उनके पद चिन्हों पर चलते हुये हमें तय करना है।

मैंने उनको एक मार्गदर्शक और गुरु के रूप में देखा। दूसरों के अवगुणों को भुलते हुये क्षमा का

दान देते हुये गाँधी जी के सच्चे अनुयायी की तरह मातृ शक्ति और विलक्षण नेतृत्व प्रतिभा का परिचय देते हुये आशावादी अहिंसात्मक रूप रख कई समस्याओं का समाधान खोजा - यह उनकी विशिष्ट शैली थी। उन्होंने असफलताओं में जीवन के यथार्थ को देखा व डटकर मुकाबला किया और कर्मपथ पर बढती रही - औरो के लिए उदाहरण बनते हुये।

उनके देहावसान से जो रिक्तता उत्पन्न हुई है उसको भरना कठिन है। उनके द्वारा सौंपे हुये कार्य को निरन्तर आगे ले जाना ही उनको सच्ची श्रद्धांजली होगी।

उनको शत्रु शत्रु नमन ।

महेन्द्रराजपुरोहित, भारत

श्री महेन्द्र राजपुरोहित पिछले 20 वर्षों से ग्राविस के सहयोगी रहे हैं।

- 75 -

शशि जी की प्यार भरी दुनिया

शशि जी और त्यागी जी उल्लेखनीय शिक्षक थे, बेबाक और शांत स्वभाव के, बांध लेने वाली स्नेहिल मुस्कान और दृढ़ प्रतिबद्धता के साथ। सभी बाधाओं के खिलाफ उन्होंने विशाल थार रेगिस्तान में गाँधीवादी सिद्धांतों के आधार पर सामाजिक कार्यकर्ताओं का एक स्थायी समूह बनाया; वे कठोर जलवायु, धन की राजनीति और गहन सामाजिक बाधाओं से अप्रभावित रहकर काम करते रहे। मैंने उनसे पहली बार 1988 में मुलाकात की, 'ग्रामीण विकास विज्ञान समिति' शुरू करने के कुछ ही समय बाद जो कि बाद में 'ग्राविस' के नाम से जाना गया। एक पारस्परिक मित्र द्वारा परिचय कराने के बाद मैंने जोधपुर के बाहर एक दूर - दराज के गाँव जेलू - गगाड़ी में छोटे से नए परिसर में उनके साथ रहकर कुछ सप्ताह बिताए, जहाँ त्यागी दंपति ने मुझे आपसी सौहार्द और न्याय की दुनिया से परिचित कराया। गांधी दर्शन और इतिहास, सामाजिक काम, कृषि विज्ञान, जल विज्ञान, पशुचारण और बुनाई, सार्वजनिक स्वास्थ्य, प्राथमिक विद्यालय शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य नैदानिक कार्य और जाति और विकास की अस्थिर दुनिया - सब उनसे सीखा। विकास की दुनिया बहुआयामी और धर्मार्थ है, लेकिन गलत धारणाओं, पदानुक्रमों और ऐतिहासिक पूर्वाग्रहों से भी ग्रस्त है। शशि जी ने मुझे सिखाया कि इन कमियों के माध्यम से अपने दृढ़ संकल्प और सिद्धांतों के साथ कैसे सोचा जाए। उन्होंने मुझे अपने कैरियर के बारे में एक शोध एजेंडा विकसित करने में मदद की, जो इन मरुस्थलीय समुदायों में पाई जाने वाली जरूरतों और मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है।

मैंने इस अद्भुत जोड़े को उन अनगिनत सार्वजनिक और अर्ध - निजी बैठकों में भाग लेते देखा, जिसमें वे अनेक लोगों से घिरे होते थे, उनके पास सभी जटिल नैतिक सवालों के त्वरित और आसान उत्तर थे। कई बार असहमति उभरती थी जो लोगों के धैर्य को कम कर देगी, खासकर जब वरिष्ठ अधिकारी हावी होते और सामाजिक चर्चा को गलत दिशा में साबित

करते। मुझे हमेशा यह समझ में आया कि त्यागी जी और शशि जी शतरंज खेल रहे थे जबकि बाकी सभी लोग ताश खेल रहे थे। वे तब तक इंतजार करते जब तक स्पीकर एक ठहराव पर नहीं पहुँच जाते, एक विराम और फिर शशि जी कमरे में उत्पन्न तनाव को मजाक या कहानी के साथ तोड़तीं और किसी तरह से समाधान का रास्ता खोजतीं। बाद में घर वापस आकर, शाम के दृश्य में शशि जी बैठी हैं और त्यागी जी आरामकुर्सी पर अधलेटे हैं, पृष्ठभूमि में बजती हुई सुरीली गजलों के साथ हम याद करते चर्चा के सार्थक बिंदुओं को और दिन की सफलता पर संतोष करते। शशि जी ऐसे शांत और हास्यपूर्ण व्यवहार के साथ एक भरे कमरे में लोगों का सहज नेतृत्व कर सकती थीं, यहाँ तक कि सभी पृष्ठभूमि की महिलाओं और बालिकाओं के लिए समानता और न्याय की माँग को उठाते हुए भी।

उनके काम के दिन लम्बे होते थे – विशाल रेगिस्तान क्षेत्र के गाँवों और ग्राविस केन्द्रों पर जाना, विवादों को निपटाना और अपने कर्मचारियों को सहायता प्रदान करना। शशि जी के लिए कोई भी महत्वहीन नहीं था, उन्होंने सभी का अभिवादन किया जैसे कि वे पृथ्वी पर सबसे ज्यादा मायने रखते हों। पीड़ित विधवाओं, बीमार सड़कों पर रहने वाले अनाथ, कम चारे के साथ चारा काटने वाले, पानी की कमी वाले किसान, हर कोई शशिजी के लिए बराबर और महत्वपूर्ण था, किसी को भुलाया नहीं गया। सभी को एक सी थाली में खाना खिलाया गया, सभी को पूरी तरह सुना गया, धैर्य, हास्य और प्रेम के साथ। मैंने रेगिस्तान की राजनीति और पानी के कैचमेंट बनाने के बारे में जितना सीखा, उतना ही मैंने प्यार, उदारता और समानता के बारे में सीखा। उन्होंने एक बार मजाक में जेलू-गगाड़ी में मेरे पहले नाश्ते पर चपाती के साथ तली हुई बड़ी हरी मिर्च के साथ स्थानीय व्यंजनों को परोसकर मेरी 'कैलिफोर्निया स्पिरिट' का टेस्ट लिया जिसे मैं बमुश्किल पास कर पाया। उन्होंने मुझे सिखाया कि कैसे रेत से बर्तन साफ करना है, 16 घंटे का कार्य दिवस कैसे पूरा करना है, रविवार की दोपहर को जोधपुर की मिठाईयों का आनन्द कैसे लेना है। उनके कसे हुये कार्यक्रम में वे और त्यागी जी दूरस्थ गाँवों में परिसर का मजबूत नेटवर्क बना रहे थे, स्थानीय स्नातक शिक्षित युवाओं को प्रशिक्षण दे रहे थे, साथ ही गाँवों के गहरे झगड़ों और समस्याओं में मध्यस्थता कर गंभीर सामाजिक एवं पारिस्थितिकीय समस्याओं का समाधान निकालते हुए, जातिगत असमानता पर काबू पाते हुए उनका दिन बहुत लम्बा खिंच जाता था परन्तु फिर भी वे जरूरतमंद हर व्यक्ति और मेरे लिए भी उदारता से समय देती थी।

शहर में एक रविवार की सुबह ग्रामीण क्षेत्र में एक लंबे दिन के लिए बाहर निकलने से पहले हम विभिन्न दुकानों से जरूरी सामानों की आपूर्ति ले रहे थे, हमने देखा कि एक बहुत ही कम उम्र का लड़का एक बंद दुकान की दहलीज पर सो रहा था। जब हमने पास में जाकर देखा, वह अर्ध होश में था, और घायल। हम उसे जीप में उठाकर स्थानीय अस्पताल ले गए। बाद के प्रत्येक दिन के अंत में शशि जी ने उसकी देखभाल की, उसे भोजन और दवाई दी और मुझे उसके पुनर्वास की सूचना दी, अंततः उसके लिए एक घर में रहने की व्यवस्था की। दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों और राष्ट्रीय आपातकालीन बैठकों में निमंत्रण के बीच भी शशि जी का दिल पीड़ित लोगों के साथ रहता था और उनके लिए प्रतिबद्धता सर्वोपरि थी।

इन सबसे ऊपर शशि जी ने मुझे सिखाया कि जीवन और समाज के सभी पहलुओं को कैसे

प्यार किया जाए, हालांकि वे कठोर और असहनीय हो सकते हैं। त्यागी दंपति दोनों प्यार करने वाले और देखभाल करने वाले माता-पिता थे, सुंदर संस्कार जो उन्होंने अपने अद्भुत बच्चों को दिये। मैं अपने काम और जीवन में सामाजिक न्याय और प्यार के लिए उनकी गहरी प्रतिबद्धता को सम्मिलित करने की कोशिश करता हूँ। वे राजस्थान में, भारत भर में और दुनिया भर में इतने सारे लोगों के शिक्षक के रूप में रहेंगे।

पहली गर्मियों में त्यागी परिवार के साथ रहने के बाद, मैं ग्राविस के सहयोग से समुदाय अनुसंधान की परियोजना को आगे बढ़ाने के लिए कई बार लौटा। यह शोध था - “भारत के रेगिस्तान में जल संकट और मिर्च की खेती : पारिस्थितिकीय संकट और प्रकृति के निजीकरण को समझने की ओर एक सिद्धान्त”। त्यागी दंपति सामाजिक और पारिस्थितिक न्याय के लिए प्रयास करने वाले नेता थे और उन्होंने अपने जीवनकाल में मेरे सहित कई लोगों को प्रभावित किया।

माइकल गोल्डमैन, यू.एस.ए.

डॉ. माइकल गोल्डमैन मिनेसोटा – टिवन सिटी विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र व वैश्विक अध्ययन के प्रोफेसर हैं, व ग्राविस के लम्बे समय से मित्र हैं।

- 76 -

उनके दोस्ताना रवैये को याद करते हुए

मैं शशि जी से सिर्फ एक बार मिला, जब वह हैल्पेज इन्टरनैशनल की कार्यशाला में हिस्सा लेने सियाम रीप, कम्बोडिया आयी थीं। वहाँ पर पाकिस्तानी, भारतीय, बांग्लादेशी और दक्षिण एशिया के और देशों के प्रतिनिधि भी शामिल थे।

शशि जी ने वृद्धजनों, महिलाओं, बालिकाओं और समाज के गरीब वर्ग के साथ ग्राविस के काम के बारे में बहुत प्रबलता से बात की। उनकी प्रतिबद्धता और समर्पण बहुत प्रेरणादायी थे। सम्मेलन में जब हम मिले तो बीच में कई बार हमारी बात होती थी। उसके बाद ही मैं उनके बेटे प्रकाश से मिला और हम अच्छे मित्र बन गए।

हर बार जब भी हम किसी अवसर पर मिले, उनके दोस्ताना अंदाज को देखकर मैंने यह महसूस किया कि अगर पाकिस्तानी और भारतीय किसी मुद्दे पर बात करें तो दोनों की सहमति हो सकती है। यह मैंने अपने दूसरे भारतीय सहकर्मियों के साथ भी महसूस किया है।

मैं हमेशा श्रीमती त्यागी को अपने निजी अनुभवों में याद रखूँगा। मैं उन महान हस्ती को श्रद्धाजलि अर्पित करता हूँ।

मुहम्मद शफी बोइखान, पाकिस्तान

डॉ. मुहम्मद शफी बोइखान एक फिजिशियन और पाकिस्तान मेडिकोज इन्टरनेशनल के संस्थापक हैं।

“शशि जी मुझे प्रेरित करती है”

तैंतालीस साल की उम्र में, मुझे लगता है कि एक लम्बा जीवन जी चुकी हूँ। एक फिनिश महिला जिसके लिए सिर्फ जिन्दा रहना ही जीवन का उद्देश्य नहीं है, थार में मेरी पहली मुलाकात और ग्राविस के साथ संबंध ने मुझे मेरे अस्तित्व के बारे में गहन जानकारी दी। पूर्व के जीवन में, मैं सिर्फ एक अंग्रेजी छात्रा थी जो ताम्पेरे विश्वविद्यालय, फिनलैंड में थी और सामाजिक चेतना में अनुभवहीन थी। दरअसल, ग्राविस के साथ मेरा संबंध है और ताम्पेरे विश्वविद्यालय के तत्कालीन छात्र संघ तामी के साथ ग्राविस का संबंध की एक अपनी कहानी है।

“शशि जी ने मुझे उनके काम, उनके जीवन और उनके अथक परिश्रम से प्रेरित किया। मैं उनका सम्मान करती हूँ और उनकी प्रशंसा करती हूँ और मैं उन्हें एक इंसान के रूप में पसंद करती हूँ।” यह मैंने 2006 में ग्राविस की ताम्पेरे की यात्रा के बाद अपनी पत्रिका में लिखा था। मुझे उद्धरण चिह्नों में “अथक” लिखना चाहिए था क्योंकि उनके और ग्राविस के साथ सिर्फ एक सप्ताह बिताने के बाद मुझे लगता था कि वह भी थकावट का अनुभव करती थीं, लेकिन बिना रुके अपने काम और सर्वोदय के लिए समर्पित थीं। “अथक” मेरे लिए अलौकिक के रूप में प्रकट हुआ होगा क्योंकि मैं एक लम्बे समय से अवसादग्रस्तता के प्रकरण से उबर रही थी। मैं खोज रही थी, पहचान और अर्थ के लिए, प्यार के लिए, वास्तव में - वह प्यार जो हमारी सच्ची पहचान है। और शशि जी ने मुझे उनसे प्यार करने का, उनके साथ ग्राविस की सेवा करने का मौका दिया।

मैं 2000 - 2001 में ग्राविस - तामी सहयोग में शामिल हुई, और कुछ साल बाद 2004 में मैं 1990 के दशक से थार में ग्राविस जाने वाले छात्रों के समूह में से एक थी। फिनलैंड में और भारत में मुलाकात के वर्षों के दौरान, शशि जी ने मुझे अक्सर महसूस कराया कि मैं उनके लिए विशेष थी। निश्चित रूप से मेरी ग्राविस की यात्रा - मेरी भारत की पहली यात्रा - मेरे पति विले सहित छह अन्य छात्रों के साथ न केवल मेरे लिए बल्कि इसमें शामिल किसी के लिए भी यादगार रही होगी। इसने मुझे उस लड़की के रूप में पहचान दिलाई जो ऊँट से गिर गई थी, हालांकि यह एक संयोग ही था।

मैं एक तेज बुखार से बीमार हो गयी, और आज तक शशि जी की मेरी सबसे मजबूत याद मेरे बिस्तर के पास उनकी उपस्थिति की स्मृति है, जिसमें मैं लेटी हूँ, अर्ध-चेतन, कलराँ केंद्र में - उनकी आवाज की कोमलता और उनकी साड़ी। उन्होंने मेरी इतनी प्यारी देखभाल की। शशि माँ, मेरी भारतीय माँ, इस प्रकार मैं उनके बारे में अक्सर सोचती हूँ। पूरे त्यागी और ग्राविस परिवार ने मेरा ख्याल रखा। जब हम 2005 में भारत और थार में पति-पत्नी के रूप में लौटे तो विले और मुझे स्नेहपूर्वक ढोला और मारु की ऊँट की सवारी करते हुए कपड़े पर बनी तस्वीर भेंट की और अपनी गर्मजोशी दिखाई। इस बार हम ग्राविस अस्पताल भी गए।

2005 के बाद से ग्राविस - तामी सहभागिता का केन्द्र स्वास्थ्य था। जो कुछ भी था, इसकी अदृश्य ताकत ने मुझे पेशेवर कार्यालय कर्मचारी से स्वास्थ्य के क्षेत्र में जाने का रास्ता दिखाया। अपने वर्तमान जीवन में मैं ताम्पेरे यूनिवर्सिटी अस्पताल में रेडियोग्राफर के रूप में काम करती हूँ। मुझे लोगों के साथ उपस्थित रहने में, सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल में, लोगों के साथ काम करने में जीवन के गहरे अर्थ मिलते हैं।

मैं आखिरी बार शशि जी से 2016 की शरद ऋतु में फिनलैंड में मिली थी। यह मेरी एक प्रिय इच्छा थी कि मैं उनसे एक बार फिर भारत में मिलूँ। भले ही वह अब शरीर में मौजूद नहीं हैं, लेकिन वे हमेशा मेरे साथ आत्मा में हैं, हम सब के प्यार के रूप में। जितना भी निष्ठा, समर्पण और सेवा का भाव मेरे अंदर है, मैंने सब शशि जी और ग्राविस से सीखा है।

मारी करीनेन, फिनलैंड

सुश्री मारी करीनेन फिनलैंड में रेडियोग्राफर हैं व ग्राविस की मित्र हैं।

- 78 -

शशित्यागी : उनका जीवन, उनका संदेश

उनकी जीवन यात्रा, मानव जाति और प्रकृति की बेहतरी के लिए उनके अमूल्य महत्वपूर्ण योगदान के कीर्तिमान के साथ बीती। यह स्वर्गीय श्रीमती शशि त्यागी जी को हमारी श्रद्धांजलि है। हजारों ग्रामीण महिलाओं, बालिकाओं और युवाओं के चेहरे पर मुस्कान लाने के लिए उनके प्रति हमारे मन में गहरा सम्मान और आभार है।

श्रीमती त्यागी गाँधीवादी समाज का एक प्रतिष्ठित नाम हैं, जिन्होंने निःस्वार्थ भाव से अपना पूरा जीवन विकट परिस्थितियों और धारा के विपरीत जाकर अंतिम सांस तक सामाजिक कल्याण के कार्यों में समर्पित किया। हमें वह दिन याद है जब हमने श्रीमती त्यागी के साथ राजस्थान में समय बिताया था, जिसके दौरान उन्होंने व्यक्त किया था कि उनका जीवन और कार्य संघर्ष कई चुनौतियों से भरा रहा, जो कि कई मायनों में प्रेरणादायक है।

श्रीमती त्यागी ने थार मरुस्थलीय क्षेत्र की महिलाओं की पीड़ा और दुर्दशा को महसूस करने और उनकी चिंताओं को समझने के लिए चिलचिलाती रेगिस्तानी गर्मी में सैकड़ों मील की दूरी पैदल तय की और महिलाओं की समस्याओं के ठोस, स्पष्ट और स्थायी समाधान के लिए आजीवन प्रयास किया। उन्होंने ग्रामीण समुदाय के लोगों के कठिन जीवन को बदलने में मदद की, विशेष रूप से इन महिलाओं की समस्याओं को दूर करने और बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए। श्रीमती त्यागी के प्रयास वास्तव में मर्मस्पर्शी और प्रेरणादायक हैं। एक प्रिय मित्र, विनम्र और भावुक इंसान, अनुकरणीय श्रीमती शशि त्यागी एक प्रकाश स्तंभ थीं जो कई युवा हृदयों को मार्गदर्शित और प्रकाशमान करती रहेंगी। हम आने वाले वर्षों में उसकी विरासत के लिए आशान्वित रहेंगे।

जीवन संदेश

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

‘जमनालाल बजाज फाउंडेशन’ ने चार दशकों में हमारे देश में सामाजिक, आर्थिक क्षेत्र के विकास के क्षेत्रों में एक गाँधीवादी प्रतिष्ठान के रूप में अपार सम्मान प्राप्त किया है। फाउंडेशन श्री जमनालाल बजाज के आदर्शों की सेवा करने का प्रयास करता है और भारत और विदेशों में गाँधीवादी रचनात्मक गतिविधियों को बढ़ावा देता है। श्री जमनालाल बजाज को महात्मा गाँधी, ने अपने पाँचवें बेटे के रूप में अपनाया था और महात्मा गाँधी के सिद्धांतों के रूप में अब तक हम गाँधीवादी रचनात्मक आंदोलन का समर्थन करते हैं।

मीनल बजाज, भारत

सुश्री मीनल बजाज, जमनालाल बजाज फाउंडेशन, मुम्बई की निदेशिका हैं।

- 79 -

शशि बहिन को याद करते हुए

जीवन में कुछ ऐसे लोग मिलते हैं, जिनका साथ आपको अपार खुशी का अहसास देता है। शशि बहिन एक ऐसी ही व्यक्ति थीं।

उनके गहरे समर्पण से किए गए सामाजिक कार्य ही उनकी पहचान नहीं थे, अपितु वह एक दुर्लभ इंसान के रूप में थी - सरल, स्नेहिल, प्रतिष्ठित, निस्वार्थ, दूसरों की जरूरतों और दुखों के प्रति संवेदनशील, विशेष रूप से महिलाओं और पीड़ित लोगों के लिए।

पहली बार जब मैं शशि जी से मिली थी, तब वह त्यागी जी के साथ थी, यह स्वास्थ्य कार्य के संदर्भ में राजस्थान में था। जब मैं दिल्ली से वहाँ गयी थी और तब मैं वीहाई में थी जहाँ मैंने 28 साल काम किया।

त्यागी जी और शशि बहिन दोनों दयालु और आत्मीय सहकर्मी थे, और जीवनसाथी होने के साथ-साथ एक दूसरे के पूरक थे। वे मेरी दिवंगत माँ की तरह जीवन में गाँधीवादी सिद्धांत के अनुयायी थे, और यह मेरे लिए एक अतिरिक्त कारण था दिल और दिमाग में उनके साथ सहज समझ, स्वीकृति, प्रशंसा और सम्मान के संबंध निर्माण का।

मुझे जोधपुर में जेलू-गगाड़ी की पहली यात्रा याद है। मेरे लिए जोधपुर अभी भी त्यागी जी, शशि जी और जेलू-गगाड़ी में उनके कार्यक्रमों से जुड़ा हुआ था और रहेगा। बहुत बाद में एक बार एक कनिष्ठ सहयोगी ने जोधपुर में उम्मेद भवन के बारे में उल्लेख किया था। परन्तु आज भी मेरे दिमाग में जोधपुर मुख्य रूप से शशि जी के साथ जुड़ा हुआ है, क्योंकि इसमें उनकी सभी यादें हैं। इन यादों में उनके घर में उनकी 2 प्यारी पोतियों को आसपास खेलते देख कर आत्मीय तृप्ति को साझा करना शामिल है।

शशि जी से मैंने विशेष रूप से पारम्परिक जल संचयन और संरक्षण कार्य के बारे में सीखा,

जिसमें वे और उनके सहकर्मी सिद्धांत के रूप में नहीं बल्कि अभ्यास के रूप में शामिल और कार्यरत थे। यह उस समय था जब बहुत कम संगठन रचनात्मक और सकारात्मक पारम्परिक ज्ञान, प्रणालियों और परम्पराओं को उचित महत्व देते हुए अपने समुदाय की जरूरतों पर प्रतिक्रिया देने को प्राथमिकता दे रहे थे। कई समृद्ध अनुभव थे, जिनमें गांव की महिलाओं के साथ मिलना, बातचीत करना, समय बिताना, जिनके साथ उन्होंने लैंगिक मुद्दों पर काम करने, भेदभाव, हिंसा और उपेक्षा के खिलाफ काम करने के लिए स्वयं सहायता समूहों का गठन किया था, उनकी बात सुनना और शशि जी की अंतर्दृष्टि को देखना बड़ा ही कीमती अनुभव था।

शशि बहिन की बहुत सारी यादें हैं। ऐसी एक स्मृति, जब मैं सिर्फ उनसे पूछ रही थी कि क्या मीरा बाई के भजन मेवाड़ी भाषा में उपलब्ध हैं। वह कहीं से ढूंढ कर लाई और मुझे मेवाड़ी भाषा में मीरा बाई के भजनों की कई कैसेट्स दीं। वास्तव में उन्होंने याद रखा, यह मेरे दिल को छूने वाला था और मेरे लिए एक बहुत ही सुंदर खोज थी जिसमें मीराबाई के भजनों को मुस्लिम गायकों ने खूबसूरती से गाया था।

उन्होंने और ग्राविस ने कई अलग-अलग गतिविधियों और कार्यक्रमों का आयोजन किया और हर बार उनके और टीम के साथ जुड़ने में मुझे खुशी होती थी। खनन से जुड़े मुद्दे और स्वास्थ्य के खतरे, उन गहरी खानों को दिखाते हुए, ताकि यह अंदाजा लगाया जा सके कि इसमें क्या खतरा शामिल है। मुझे याद है कि इससे जुड़े विभिन्न पहलुओं को संबोधित करने के लिए खनन के मुद्दों पर आयोजित बैठकों में भाग लेना। पहले से ही बहुत गरीब श्रमिकों को कम भुगतान और अतिरिक्त श्रम, कम वेतन पाने के अलावा किसी भी कानून और नियमों का पालन नहीं किया जाता था। श्रमिकों की सुरक्षा और संरक्षण का अभाव था, मुख्य रूप से ठेके पर मजदूरी, पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं को भी बाल श्रम सहित, उचित रिकॉर्ड के बिना देनदारी से बचने के लिए रखा गया था।

सिलिकोसिस, न्यूमोकोनिओसिस, खराब चिकित्सा देखभाल, गलत निदान, जल्दी मृत्यु के कारण व्यावसायिक स्वास्थ्य के खतरे गंभीर थे और अपर्याप्त रूप से संबोधित किए जाते थे। दुखद पहलू यह था कि उम्र के 40 के दशक के मध्य में ही मजदूरों की असमय मौतों के कारण वे उनकी विधवाओं और छोटे बच्चों को पीछे छोड़ जाते थे, जो खुद के लिए आजीविका चलाने में असमर्थ थे और कोई सामाजिक संरक्षण भी नहीं था।

शशि बहिन के साथ मेरी जो साझा सोच और चिंताएं थीं, उनमें से एक महिला और बाल स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं थीं, महिलाओं का स्वास्थ्य, उनके प्रजनन संबंधी स्वास्थ्य और अधिकार, और लिंग संबंधी चिंताएं उनके दिल और मेरे करीब थीं। जयपुर में 'राजस्थान में रेगिस्तानी क्षेत्र में एजिंग' पर उनके और ग्राविस द्वारा आयोजित एक बैठक के लिए हम आखिरी बार एक साथ थे। मैं एक शाम पहले आयी थी और कार्यक्रम के एक दिन बाद गई, उद्देश्य बस उनके साथ रहना था। हम सभी कई फोन कॉल और काम से संबंधित लोगों की बैठक के बीच भी कुछ खुशियों को एक साथ बिता सकते हैं। शशि जी का दिमाग पूरी तरह इस सोच में रहता था कि क्या काम किया जाना चाहिए।

शशि बहिन अपने अनुभव के बारे में बताती हैं जब उन्होंने थार क्षेत्र में अपना गाँव का काम शुरू किया था, एक युवा माँ की गर्भावस्था और डिलीवरी के दौरान उपेक्षा के बारे में और कैसे जब वह गंभीर रूप से बीमार लगभग मर रही थी, तब भी उसे खर्च के कारण अस्पताल नहीं ले जाया गया था। शायद एक बहू के जीवन को खर्च के लायक नहीं माना जा रहा था। इस घटना ने शशि जी को विद्रोह करने पर मजबूर कर दिया था और उन्हें महिलाओं के लिए जो कुछ भी हो सकता था करने के लिए प्रेरित किया था।

यह तथ्य कि शशि जी ने त्यागी जी को अपनी किडनी दान की थी, एक प्रेरणादायक कार्य था, लेकिन अधिक प्रेरणादायक उनका महान शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कार्य और योगदान था, जो उसके बाद भी पूरी ऊर्जा और उत्साह के साथ बना रहा, जो अन्य युवाओं को प्रेरित करेगा।

मुझे याद है कि मैंने कई रंगीन हाथ से बने बैग खरीदे थे जो महिलाओं के समूह ने बनाए थे जिनके साथ ग्राविस काम कर रही थी। वे मेरे जन्मदिन और दोस्तों के लिए उपहार बन गए, जो मैंने उन्हें प्यार से उपहार में दिए, क्योंकि प्रत्येक बैग प्रिय शशि बहन और गाँव की महिलाओं के श्रम और प्रयास की स्मृति के साथ जुड़ा था। मेरा दृढ़ता से मानना है कि इस तरह की प्रत्येक वस्तु का एक इतिहास और उससे जुड़ा एक भूगोल है और वास्तविक मूल्य इसमें निहित है कि कौन इसे बनाता है और कैसे, और इसके पीछे क्या उद्देश्य है।

शशि बहिन और ग्राविस की महिलाएं 'महिला अन्न स्वराज' के साथ भी जुड़ी हुई थीं, मुझे याद है उनकी सहभागिता जब महिला बाल विकास मंत्रालय ने भारत की महिला किसानों के लिए 'नवदान्या' के साथ दिल्ली हाट में आयोजन किया था। मेरी छोटी बहन डॉ. वंदना शिवा द्वारा आयोजित 'महिला अन्न स्वराज कार्यक्रम' के लिए रामगढ़, देहरादून, उत्तराखण्ड में बीज विद्यापीठ, बीज संरक्षण फार्म में राजस्थान से भी महिलाएं आई थीं।

मुझे प्रकाश से पता चला कि शशि बहिन पिछले साल से अस्वस्थ थीं, जब मैंने शशि बहिन को जन्मदिन की शुभकामनाएं देने के लिए फोन करके बात करने की कोशिश की, उनकी आवाज बहुत कमजोर और धीमी थी, जो उनके सामान्य स्वर के विपरीत थी। प्रकाश से यह पूछने पर कि शशि बहिन के साथ क्या हुआ है, उसने दर्दनाक खबर साझा की कि शशि बहिन को एक्यूट मायलोइड ल्यूकेमिया (एएमएल) था। वह इलाज करवा रही थीं, लेकिन भूख मर गई थी।

यह कोविड का समय था। मुझे पछतावा हो रहा है कि मैं उनसे नहीं मिल पाई - प्रकाश, आभा और उनके परिवारों से नहीं मिल सकी, जिन बच्चों के लिए यह इतना कठिन दौर रहा होगा। मैं केवल उन्हें अपना प्यार, प्रार्थना और अमरनाथ रामदाना भेज सकती थी, क्योंकि यह पौष्टिक और हल्का है, और वह ठीक से नहीं खा पा रही थीं। शशि बहिन के निधन की दुखद खबर प्रकाश की ओर से एक संदेश के रूप में आई और मैंने इसे अत्यन्त दुख के साथ प्राप्त किया। सांतवना यह थी कि जिस तरह औरों के जीवन के लिए वह जीती थीं, वह निश्चय ही अब त्यागी जी के साथ एक खुशहाल, दयालु और अधिक शांतिपूर्ण दुनिया में होंगी।

वह प्रकाश और आभा, उनके परिवार, नातिन और पोतियों, बड़े ग्राविस परिवार और अपने सभी दोस्तों और शुभचिन्तकों को, जो उनसे प्यार करते थे और शशि जी का सम्मान करते थे कि वह कौन थीं और वह अपने जीवन में क्या थीं, को अपना आशीर्वाद भेजती रहेंगी। उनकी बहुत याद आती है।

मीरा शिवा, भारत

डॉ. मीरा शिवा एक जानी मानी चिकित्सक व जन स्वास्थ्य विशेषज्ञ हैं व शशि जी की मित्र रही हैं।

- 80 -

एक दृढ़ महिला नेता

महाभारत-काल और बौद्धिकाल से जैसे मातृ - सत्तात्मकता का अन्त सा होता जा रहा हो, और मध्यकाल से पुरुष - सत्तात्मकता का वर्चस्व चला आ रहा है। उसके बावजूद भी 'माँ' का वर्चस्व महत्वपूर्ण है।

आज भी पुरुष - सत्ता नारियों पर दबाव बनाये हुये है और समान और सामाजिक मानसिकता रुढ़ियों से कम नहीं है। नारियों पर रुढ़ियों, अन्धविश्वास व शोषण-प्रताड़नाओं का तमाशा सा बन रहा है। एक तरफ कहते है कि स्त्री-पुरुष गाड़ी के दो पहिये हैं, उसके बाद भी उसको आर्थिक, सामाजिक और अपने व्यक्तित्व की स्वतंत्रता नहीं दी गई, किन्तु एक परिवार मेरे सम्पर्क में आया जो एक उदाहरण है।

कुछ वर्षों पहले बीकानेर 'सर्वोदय' सम्मेलन में मेरा परिचय श्री सवाई सिंह जी ने श्री लक्ष्मीचन्द जी त्यागी से करवाया। उसके बाद हम प्रत्येक सर्वोदय सम्मेलन में मिलते रहे, चर्चायें होती रही, चाहे खिमेला का हो, केरल का हो, अकबरपुर का हो या अन्य। हमारी घनिष्टता बढ़ती रही। उन्होंने मुझे 'समग्र सेवा-संघ' का उपाध्यक्ष भी बनाया।

सन् 2005 में श्री त्यागी जी किड़नी अस्पताल, अहमदाबाद में इलाज के लिये गये थे, तब श्रीमती शशि जी का फोन आया कि आप अहमदाबाद आ सकती हो? त्यागी जी किड़नी अस्पताल में इलाज के लिये भर्ती है।

मैं तुरन्त जयपुर से बस द्वारा रवाना हो गई और वहाँ पहुँची। वहीं उनके साथ मेरा पूर्ण पारिवारिक परिचय हुआ। तब उन्हें महसूस हुआ कि यह राष्ट्र आन्दोलन के परिवार से है, तो हमारे विचारों और कार्यों में इनका सहयोग अच्छा रहेगा। अतः मुझे 'ग्राविस' में सदस्य बनाना उचित रहेगा, ऐसा विचार उन्होंने शशि जी के सामने रखा। मैं श्रीमति शशि जी के साथ उस समय से जुड़ गई। मेरी पहली सदस्यता शुल्क त्यागी जी ने जमा करवाई, जिसकी मैंने बाद में भरपाई की।

बहिन शशि जी मानवीय गुणों से ओत-प्रोत थीं। समय-समय पर मैंने उनके साथ, मकराना खान

जीवन संदेश

मजदूरों के परिवार से बात करने, फलौदी व आसपास के गाँवों में तिंवरी, बाप व अन्य स्थानों का भ्रमण उनके साथ किया। बारिश का पानी साल भर सुरक्षित रखना आदि पर भी चर्चा होती। तिंवरी अस्पताल को देखा और मेरे प्रस्ताव का आदर भी किया। ग्रामीण महिलाओं का सम्मेलन किया, उसमें बुलाया, उनके बीच में बैठ कर उनको स्वास्थ्य-सफाई के विषय में पूर्ण जानकारी व सफाई से रहने से शारीरिक बल बना रहता है, यह उनके ही व्यवहार के अनुसार समझाया। बच्चों के प्रति दायित्व क्या हो? जैसे शिक्षा, शिष्टाचार आदि में स्वयं बच्चों व महिलाओं के स्वास्थ्य परीक्षण के काम में भी ध्यान रखना उन्हें गृहकार्य के अलावा अन्य कार्य करना यह भी आपका कर्तव्य है। ऐसी भावना उनमें उत्पन्न हो, कोशिश व प्रयत्न किया। मुझे उनके साथ बात करने के लिये बिठाकर स्वयं अन्य बच्चों व महिलाओं का स्वास्थ्य परीक्षण करवाने चली गई। क्योंकि किसी डॉक्टर को आमंत्रित कर रखा था। बारी-बारी से सबको बुला कर परीक्षण करवाया। मैं तो महिलाओं की कुछ घरेलू परेशानियाँ ही सुलझाती रही ओर बातें करती रहीं। जब वे बात करती तो ऐसा प्रतीत होता था, जैसे सबको अपना बना रही हैं। उनमें सहानुभूति, सहनशीलता, क्षमा-याचना, सादगी का भरपूर समोश था। जिसे बखान करना मेरे सामर्थ्य के बाहर है।

श्रीमति शशि जी ही ने मेरा परिचय अपनी पुत्री श्रीमती डॉ. आभा से करवाया और 'हैडकॉन' से भी जुड़वाया, उनमें मानव प्रकृति को समझने की पूर्ण क्षमता थी। ऐसी नारी ही आत्मनिर्भर बनकर अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व बना पाती है, जो देश-विदेश में सम्मान के योग्य है। उनमें से एक थी श्रीमति शशि त्यागी जी।

श्रीमति शशि जी जैसी नारी ही शत-प्रतिशत शिक्षित-नारी समाज की कल्पना कर सकती हैं।

किसी विचारशील व्यक्ति की कल्पना की कुछ पंक्तियाँ लिख कर अपने लेखन को विराम देती हूँ।

क्षमा सात्विक गुण व क्षमा-शीलता से ओतप्रोत प्रिय बहिन शशि जी को मेरी हार्दिक श्रद्धाजंलि। “वह नहीं बोलती उनका कार्य बोलता है। इसलिये वह कर्मशील थीं।”

संतों का ही निधन दिवाली के दिन होता है।

मृदुला सामवेदी, भारत

सुश्री मृदुला सामवेदी एक महिला अधिकार कार्यकर्ता व गाँधीवादी चिन्तक हैं और शशि जी की मित्र रहीं।

निःस्वार्थ कार्य

1980 के दशक में विनोबा भावे के सर्वोदय विचार से प्रेरित होकर विकास की यात्रा बिना रुके, थके पश्चिमी राजस्थान के मरुस्थल क्षेत्र को कर्मस्थली बना ग्रामीण विकास विज्ञान समिति का गठन करने में श्री लक्ष्मी चन्द त्यागी जी की सारथी बनकर श्रीमति शशि त्यागी जी ने भौतिक

सुख त्याग कर विकास वैरागी के रूप में गरीबों, वंचितों, दलितों के अनवरत विकास, कल्याण, उत्थान की राह पर आजीवन स्वयं को समर्पित कर दिया। वो व्यक्तित्व, महादेवी की संज्ञा से विभूषित हुई व अनेकों प्रमाणों, अथक परिश्रम, प्रयासों के माध्यम से सिद्ध कर दिया।

विगत 26 वर्षों से श्रीमति शशि त्यागी जी का स्नेह, मार्गदर्शन, सानिध्य माँ के रूप में मुझे सदैव मिला। स्वैच्छिक क्षेत्र में पश्चिमी राजस्थान में आपकी अग्रणी भूमिका रही है, आपको जमनालाल बजाज पुरस्कार से भी नवाजा गया है। देश विदेश में विकास को सूक्ष्मता के साथ परखने, क्रियान्वित करने में आपने विशेषज्ञता हासिल की थी। आप सदैव अच्छे संस्कार का जिक्र किया करती थी, निश्छल मन, भाव से कर्मशील बना, हम सब के लिए चिरस्मरणीय अपनेपन, आत्मीयता का उपहार दिया, जो सदैव उनकी अमरता को प्रतीकात्मक स्वर व प्रेरणा देता रहेगा।

महेश पनपालिया, भारत

श्री महेश पनपालिया एक सामाजिक कार्यकर्ता व धारा संस्थान के संस्थापक हैं।

- 82 -

मेरे अनुभव

शशि त्यागी जी एक महान महिला थीं। ग्रामीण राजस्थान में गरीबों की मदद करने में उनके काम ने लोगों को जीवंत राहत दी। यह सफलता विचारशीलता, दया और महान विनम्रता के साथ हासिल की गयी थी। गाँवों में महिलाओं के लिए शशि जी का काम अद्वितीय है। मुझे याद है मैं उन्हें देख रहा था एक पशु चिकित्सक शिविर में महिलाओं से बात करते हुए। यह स्पष्ट था कि उनकी स्थिति के साथ उन्हें बहुत संवेदना थी और वे उन्हें हर सहायता प्रदान करने पर आमादा थीं जिसकी उन्हें ग्राविस के माध्यम से आवश्यकता थी। मैंने पहली बार शशि जी से 2007 में मुलाकात की थी, जब मेरी दिवंगत पत्नी अन्ना और मैं 'वैल्स फॉर इंडिया' के साथ एक 'पानी यात्रा' पर राजस्थान आए थे। ग्राविस के स्वागत से मैं बहुत प्रभावित हुआ और शशि जी ने हमें उनके सौम्य तरीके से काम के बारे में बताया। 2007 के बाद से मैंने कई बार राजस्थान का दौरा किया है और शशि जी के नेतृत्व में विशेष रूप से जैसलमेर क्षेत्र में ग्राविस के काम से बहुत प्रभावित हुआ।

मैक्स विल्सन, यू.के.

श्री मैक्स विल्सन ग्राविस के मित्र हैं व वाटर हार्वेस्ट से जुड़े हुए हैं।

शशि त्यागी - एक गाँधीवादी प्रणेता

बर्मिंघम विश्वविद्यालय 1993 - सुश्री शशि त्यागी, एक साधारण खादी की साड़ी पहने, एक ठंडी सुबह में प्रोफेसरों और शिक्षाविदों के सामने मंच पर बोल रही थीं कि किस प्रकार समग्र विकास से स्थायी जीवन और जीवन शैली एक अहिंसक दुनिया बनाने की कुंजी है। मैं दर्शकों में था और गाँधीवादी मूल्यों के सरल प्रतिपादन से मंत्रमुग्ध था। मैं आक्सफेम का प्रतिनिधित्व कर रहा था और वर्ष 1987 में जेलू-गगाड़ी की अपनी पहली यात्रा को याद कर रहा था, जब एक बड़ा भीषण अकाल ग्रामीणों के पशुओं, गायों और बकरियों को मार रहा था, चारे की भारी कमी और पानी के कारण।

याद है, मैं जोधपुर-जैसलमेर की पक्की रोड़ को ओसियां (एक छोटा शहर) से कुछ किलोमीटर दूर छोड़ देता हूँ और फिर एक धूल भरे रास्ते पर चलता हूँ जहाँ बीच-बीच में, कांटेदार पेड़ों और खेजड़ी के पेड़ों की झाड़ियाँ हैं। कुछ किलोमीटर बाद हम कुछ झोपड़ियों के पास पहुँचते हैं; 'भुंगास' (रेगिस्तान में एक सूखी घास की छत के साथ छोटी मिट्टी की झोपड़ी) और यहाँ एक झोपड़े में शशि त्यागी जी और एल.सी त्यागी जी साधारण खादी के वस्त्र पहने मिले और हमारा स्वागत किया। वहाँ चारपाइयों पर हमें मीठी चाय दी गई और हमने उस काम के बारे में सुना जो वे ग्रेट इंडियन डेजर्ट में कर रहे थे - सूखा राहत कार्य। काम था रेगिस्तान में 'खड़ीनों' का निर्माण, जो वर्षा के पानी को रोकने के लिए तीन तरफ से बनाए गए तटबंध थे और अगर बारिश होती तो आप बाजरा (मोती बाजरा) उगा सकते थे। कुछ गाँवों में वे 'नाड़ियाँ' गहरी कर रहे थे ताकि अगर बारिश हो तो पानी को रोका जा सके। यहाँ शशि त्यागी राजस्थानी महिलाओं के साथ काम कर रही थीं, जो सभी धूँध में थीं और वह उनसे सशक्तिकरण और समानता की बात कर रही थीं। यह लगभग गाँधी और कस्तूरबा की तरह ही था, जो कि कड़े रेगिस्तान में जहाँ जीवन कम पानी, बहुत गर्म जलवायु और बिना चारे या भोजन की कमी के साथ जूझते हुए चल रहा है। वहाँ ये विकास को वास्तविकता में बदलने की कोशिश कर रहे थे। आज उनका काम पश्चिमी राजस्थान में सुखद बदलाव और विकास की लहर लाया है और सभी के देखने योग्य है।

कई मायनों में शशि जी हम सभी और भारत के कई युवा कार्यकर्ताओं के लिए एक सच्ची प्रेरणा थीं। मैं निम्नलिखित कविता के साथ अपना संदेश पूरा करूँगा :

“आप हम सभी के लिए बहुत मायने रखती हैं

आप विशेष थीं और यह कोई झूठ नहीं है

आप रोशन करती हैं सबसे अंधेरे दिन

और सबसे धुंधले आसमान को”

मैथ्यू चेरियन, भारत

श्री मैथ्यू चेरियन एक जाने माने विकास विशेषज्ञ हैं और हैल्पेज इंडिया के मुख्य कार्यकारी रहे हैं।

एक विशिष्ट नायिका

यद्यपि मैं आपसे व्यक्तिगत रूप से नहीं मिली थी, फिर भी मैं आपको आपके जीवनकाल के अद्भुत कामों के माध्यम से जानती थी। इसमें मेरे सबसे प्रिय दोस्त और कॉमरेड डॉ. प्रकाश त्यागी और उनके प्यारे परिवार के साथ-साथ ग्राविस समुदाय, लोगों के जीवन में खुशियां और विकास की दृष्टि से बनाई गई परियोजनाएं और कार्यक्रम जिनके क्रियान्वयन में आपने अपना पूरा जीवन दिया, इसकी भूमिका है।

मैंने एक निःस्वार्थ, गतिशील, उदार, स्नेहिल, प्रतिबद्ध, बुद्धिमान दूरदर्शी नेता के रूप में मेरे दिमाग में आपकी एक छवि बनाई। एक मजबूत महिला, जिसने सभी बाधाओं के विपरीत जाकर सामाजिक अन्याय, लैंगिक अन्याय के खिलाफ और मानव की मुक्ति के लिए लड़ाई लड़ी। मैंने एक नेता को देखा, जिसकी सक्रियता सामान्य लोगों, युवा, बूढ़े, महिलाओं और पुरुषों के संघर्ष से प्रेरित थी। मैंने एक ऐसे नेता को देखा, जिसकी शक्ति की समझ और अन्याय के खिलाफ लड़ने की ताकत को एक संगठन ने न सिर्फ सीखा बल्कि जुनून, सहानुभूति और उस समझ में आत्मसात कर लिया, जिसे उन्होंने संगठन में लाया था। दृढ़ विश्वास की एक महिला, एक प्यार करने वाली माँ और दादी न केवल आपके परिवार के लिए बल्कि आपके द्वारा लाभान्वित कई परिवारों और समुदायों के लिए भी।

प्रिय शशि जी - मैं जानती हूँ कि यह यात्रा हमेशा आसान नहीं थी। मैं समझती हूँ कि इसमें कई उतार-चढ़ाव, बहुत सारे आंसू, टूटे हुए दिल और बिखरे परिवार थे, लेकिन मैं गरीबों के संघर्षों को विभिन्न स्तरों पर ले जाने के लिए आपकी भावना की प्रशंसा करती हूँ। विकास की प्रक्रिया पर भरोसा रखते हुए, लोगों को सशक्त बनाना, लचीलापन पैदा करना, दबे-कुचले लोगों के आंसुओं को थामने के लिए अपने हाथों को बढ़ाना, प्यासे को ताजा साफ पानी देने के लिए रेगिस्तान में गहरी खुदाई करना, भूखे को खाना खिलाने के लिए सूखी धरती को पानी देना, भूखों को भोजन देना और जरूरतमंद बीमारों को आराम पहुँचाने का आपका हौसला अवर्णनीय है।

मेरी विशिष्ट नायिका - मैं आपको सलाम करती हूँ। मैंने इस बात पर विचार किया है कि आपने दुनिया के कुछ अन्तर्विरोधी अन्याय को कैसे संबोधित किया, कैसे आप उस शक्ति के पुनरुत्पादन से बचने में कामयाब रहे जो संघर्ष को चुनौती दे रही थी, और आखिरकार दुनिया के लिए आपकी दृष्टि क्या थी, और कैसे आपने अपने दैनिक अभ्यास में इसका अनुसरण किया। आपकी विरासत जीवित रहेगी, आपकी दृष्टि और सोच एशिया से अफ्रीका तक, दुनिया भर में लोगों को प्रेरित करेगी और प्रसारित होती रहेगी।

मैं मैरी ताल, एक कैमरुन में जन्मी कार्यकर्ता, 'संपूर्ण विश्व महिला संघ' एक दक्षिण अफ्रीकी एनजीओ की संस्थापक एवं मुख्य कार्यकारी हूँ जो केपटाउन दक्षिण अफ्रीका में विस्थापित, शरण चाहने वालों और शरणार्थी महिलाओं को व्यापक सेवाएं प्रदान करती है।

जीवन संदेश

शशि जी, जैसा कि आप मानती हैं कि “जब तक महिलाएं जंजीरों में जकड़ी, प्रताड़ित और शोषित हैं, तब तक मैं स्वयं कभी भी पूरी तरह से मुक्त और स्वस्थ होने का दावा नहीं कर सकती, क्योंकि प्रत्येक महिला का दर्द मेरा भी है” (एक पुस्तक का अंश)।

मैरी ताल, दक्षिण अफ्रीका/कैमेरून

सुश्री मैरी ताल एक मानवाधिकार व महिला कार्यकर्ता व ग्राविस की मित्र हैं।

- 85 -

अद्भुत शशि जी

गौरवपूर्ण छरहरे शरीर पर खादी की साड़ी के साथ ब्लाउज के स्थान पर लम्बी कुर्ती। जोश और उमंग भरी तेज चाल। समाज के उभ्युदय का पथ प्रशस्त करने की सद्प्रेरणामयी सोच। पिछड़े और अभावग्रस्त जनसमुदाय के हित में सकारात्मक भाव से संलग्न। अपने उद्देश्य की पथबाधाओं से जुझने का अदम्य साहस। अपनी सम्पूर्ण कर्तव्यनिष्ठा एवं समग्र समर्पण के साथ आदरणीय त्यागी जी की सच्चे अर्थों में अर्द्धांगिनी।

अपनी सन्तानों आभा जी एवं प्रकाश जी के साथ - साथ संपर्कित मानवता को मातृत्व स्नेह से अभिसिंचित करने वाली एवं महिला सशक्तिकरण की दिशा में जागरूकता की तेजोमयी मशाल प्रज्वलित करने वाली शशि दीदी सामान्य नारियों से परे एक विशिष्ट व्यक्तित्व की स्वामिनी थी।

आदरणीय त्यागी जी के साथ ग्रामीण अंचलो में स्थापित की गई समाज संस्थाओं में अनवरत संघर्ष के साथ अथक परिश्रम करते हुए आपने जीवन को सार्थक एवं धन्य बना लिया। ग्राविस अस्पताल एवं अन्य अनेक छोटी बड़ी संस्थाएँ, जो निरन्तर ग्रामीणजनों की मदद एवं जंगल में मंगल कर रही हैं - शशि दीदी की यशोगाथा गाती हुई उन्हें अपने जर्ने - जर्ने से अमरता प्रदान कर रही है। आपने विज्ञानों के इस प्रेरक संदेश को पूर्णरूपेण अपने जीवन में उतारा है।

बन्धु जी के प्रति शशि दीदी का विशेष आदरभाव रहा है। पारस्परिक आस्था एवं विश्वास का यह सफर एक लम्बे अन्तराल तक चला। मुझे याद है एक बार कोई चर्चा करते - करते शशि दीदी ने कहा- “बन्धु जी संसार में संघर्षों का कहीं अन्त नहीं है।” बन्धु जी ने तुरन्त उत्तर दिया - हाँ बहिन जी संसार तो संघर्षों से ही बना है परन्तु आप जैसे संघर्षशील दिग्गज भी तो मोर्चा संभालने के लिए हैं ही।

शशि दीदी एक सारगर्भित मुस्कान के साथ हंसने लगी।

त्यागी जी के परलोकगमन के पश्चात एक बार शशि दीदी बन्धु जी के साथ कहीं जा रही थी। साथ में मैं भी थी। उस यात्रा में त्यागी जी का स्मरण करके दीदी बहुत दुःखी हुई। मैंने उन्हें

जयशंकर प्रसाद जी के अजातशत्रु नाटक की कुछ पंक्तियाँ सुनाई। उन्होंने कहा - मंजु जी, इस पद्य को लिख कर मेरे पर्स में डाल दो। मैं इसे पढ़ा करूँगी। वास्तव में इन पंक्तियों का मनन करने से वैयक्तिक संबंधों की संकीर्णता के बंधन ढीले होते हैं, बड़ा विस्तार आता है और मैंने लिख दिया।

आज जब हम शशि दीदी का स्मरण उनके द्वारा किये गये समाज कल्याण के कृत्यों के परिप्रेक्ष्य में करते हैं तो यही सिद्ध होता है कि वे आज भी जीवन्त हैं।

मंजूलता मिश्रा, भारत

डॉ. मंजूलता मिश्रा एक प्राध्यापिका हैं व ग्राविस की मित्र हैं।

- 86 -

शशि जी त्यागी - थार रेगिस्तान में लम्बी पैदल यात्रा से लेकर ऊँचाईयों तक

सभी के अनुसार शशि जी एक असाधारण महिला थीं और उन सभी के लिए एक प्रेरणा थीं, जो उनसे मिलते, जानते या साथ काम करते थे। उनके बेटे के रूप में प्रकाश ने लिखा - “शशि जी के पास बहुत कम संपत्ति थी और फिर भी उनके चरित्र और उदाहरण की समृद्धि ने निकट और दूर के लोगों से गहरा प्यार और प्रशंसा प्राप्त की”। मैं भी दूसरों की तरह उनके साथ काम करने के माध्यम से प्रभावित थी और उनकी ऊर्जा, सक्रियता और उदारता में गांधीवादी सिद्धांतों का विशाल उदाहरण दिखता था। उस पीढ़ी की एक भारतीय महिला का वर्णन शब्दों में करना पर्याप्त नहीं है जिसने इतनी महान दृष्टि, साहस, दृढ़ संकल्प, मानवता और प्यार से इतना बड़ा काम पूरा किया। और किस तरह से हर पीढ़ी के अनगिनत महिलाओं और पुरुषों को प्रभावित किया इसकी गिनती नहीं की जा सकती।

मुझे शशि जी से मिलने और ‘थाउजेंड करंट्स’ में पिछले प्रोग्राम डायरेक्टर के रूप में ग्राविस के काम को सहयोग करने का सम्मान मिला। उनकी प्रतिष्ठा सर्वमान्य थी। शशि जी और उनके पति एल.सी. त्यागी जी की कहानियाँ मेरे कार्यस्थल के प्रत्येक नए सदस्य तक पहुँच जाती थीं। सबसे उल्लेखनीय में से एक कहानी उनके साहस और नेतृत्व के बारे में है जब उन्होंने ग्रामीणों की एक गुस्साई भीड़ का सामना किया था, जिसने उन्हें और उनके पति द्वारा पिछड़ी जाति के लोगों को संगठित करने के रोष के फलस्वरूप उनके निवास स्थान को जला दिया था। उनके असरदार भावुक शब्दों ने भीड़ को शांत किया और वह न्याय का एक मजबूत संदेश सब तक पहुंचाने में सक्षम हुई। साहस और परस्पर जुड़ाव के छोटे बीज से वे अपने काम को स्थानीय परम्पराओं और उभरते मूल्यों के आधार पर एक मजबूत नींव में विकसित करने में सक्षम हुए, जो थार रेगिस्तान में कई समुदायों और क्षेत्रों में काम करता है।

दशकों तक शशि जी का ‘थाउजेंड करंट्स’ पर एक व्यापक प्रभाव रहा, एक ऐसा संगठन जो

जीवन संदेश

अनुदान पाने और अनुदान देने वाले के बीच एकजुटता के आधार पर साझेदारी के लिए एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है और जो पारम्परिक प्रथाओं को स्थानांतरित करता है। शशि जी 1990 के दशक के अंत में (तब आईडैक्स) 'थाउजेंड करेंट्स' के बोर्ड की सदस्य बन गई और संगठन की नीतियों और योजनाओं को आकार देने में उनका एक मजबूत प्रभाव था। उनका काम वहां के संस्थागत संरचना और स्मृति में निहित एक आंतरिक विरासत को छोड़ता है और उस दिन से आज तक दोनों संगठनों के बीच दीर्घकालिक संबंध कायम हैं।

मैं 2013 में ग्राविस की यात्रा के दौरान पहली बार व्यक्तिगत रूप से शशि जी से मिली। ग्राविस भारत और नेपाल में 'थाउजेंड करेंट्स' के साथी समूहों के लिए 'साउथ एशियन एग्रोइकोलॉजी लर्निंग एक्सचेंज' की मेजबानी कर रहा था। ऐसी प्रेरक नेता से मिलने पर मैं पहले थोड़ा हिचकिचाई। हालांकि उन्होंने मुझे सहजता से रखा, उनका व्यवहार सौम्य और दयालु था - और वह सब उनमें था जिसकी मुझे उम्मीद थी। मुझे स्वयं यह देखने को मिला कि ग्राविस ने अपनी आधारशिला पर कितना काम किया था और संगठन कितनी दूर तक आया था। विभिन्न समूह के लोगों के लिए कार्यक्रम और दूरगामी उपलब्धियां उल्लेख करने के लिए बहुत सारी बातें हैं, जिनकी गिनती संभव नहीं है। ग्राविस के साथ काम करने वाली महिलाओं के समूहों के साथ बैठक करते हुए मैं देख सकती थी कि शशि जी की लगन और देखभाल से ग्राविस ने साक्षरता, स्वास्थ्य और आजीविका के क्षेत्रों में महिलाओं और लड़कियों के साथ दूरगामी उपलब्धियों को प्राप्त किया।

मुझे महिला सशक्तिकरण और अधिकारों के साथ उनके काम के बारे में विस्तार से शशि जी के साथ बात करने की खुशी थी। 1980 के दशक की शुरुआत में उन्होंने बताया, कई मोर्चों पर महिलाओं की स्थिति बेहद खराब थी और प्रगति करने के लिए उन्हें पांच से छह साल तक बहुत संघर्ष करना पड़ा। यहां तक कि महिलाओं और पुरुषों के साथ बैठने, पर्दे के मुद्दों से निपटने और बैठकों के लिए उनके घूँघट को हटाने के लिए बहुत प्रयास किए गए। उन शुरुआती दिनों में त्यागी परिवार पर परिवारों को नष्ट करने और स्थानीय संस्कृति को नुकसान पहुंचाने का आरोप लगाया गया था। हालांकि लगातार काम और गहरे विश्वास-निर्माण के साथ वे दशकों में दृष्टया प्रगति करने में सक्षम हो सके थे। अब महिलाएं बैठकों में भाग ले सकती हैं और बोल सकती हैं, और अक्सर 50 प्रतिशत महिला नेतृत्व का प्रतिनिधित्व होता है। कई महिलाओं के आय-उत्पादक समूह हैं और महिलाओं को अपने परिवारों के स्वास्थ्य और कल्याण संबंधित निर्णय लेने का अधिकार है। शशि जी द्वारा मैंने देखा महिला सशक्तिकरण और अधिकारों में इस उन्नति को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया गया। महिलाएं अब अलग-थलग नहीं हैं और बड़ी प्रगति कर रही हैं - सभी विकास कर सकते हैं, परिवारों या स्थानीय संस्कृति को आगे बढ़ाते हुए।

2013 में एग्रोइकोलॉजी एक्सचेंज के आखिरी दिन शशि जी ने हमें एक सुंदर कार्य की पहल के साथ आश्चर्यचकित किया। प्रत्येक संगठन नई मित्रता, मेलमिलाप, गहन ज्ञान और ज्ञान के

आदान-प्रदान के स्मरण के लिए गगाड़ी उद्यान में एक वृक्षारोपण करेगा। जब भी मैं उस दिन को परिलक्षित करती हूँ, मुझे लगता है कि शशि जी ने जो भी बीज बोए हैं वो थार रेगिस्तान में दशकों से विकसित और पल्लवित हुए हैं।

हम शशि जी जैसे दिग्गजों के कंधों पर खड़े हैं, जो हमारे सामने आए और बड़े धैर्य और दृढ़ संकल्प के साथ हमारा मार्ग प्रशस्त किया। शशि जी के पास अपार बल, दूरदर्शिता और भाग्य के साथ-साथ मानवता की गहराई है जिसकी हम सभी आकांक्षा कर सकते हैं।

महिलाओं के लिए शशि जी ने अथाह तरीकों से मार्ग प्रशस्त किया। फिर भी उनका काम अभी पूरा नहीं हुआ, क्योंकि उन्होंने हमेशा अपने बेटे प्रकाश को याद दिलाया, जब तक कि जरूरतमंद एक भी व्यक्ति बचा है, तुम्हारा काम अभी पूरा नहीं हुआ है। शशि जी और उनकी विरासत की यादें लम्बे समय तक जीवित रहेंगी - क्योंकि वे वास्तव में अमर हैं।

मैं इस अपार क्षति के लिए शशि जी के बच्चों, नाती-पोतियों, ग्राविस कर्मचारियों और थार रेगिस्तान समुदायों के प्रति अपनी गहरी सहानुभूति भेजती हूँ।

येशिका वीरासेकेरा, श्रीलंका/यू.एस.ए.

विकास सलाहकार येशिका वीरासेकेरा ने एशिया और अफ्रीका में सामाजिक न्याय के लिए 30 से अधिक वर्षों तक काम किया है।

- 87 -

अविस्मरणीय यादें

यह जानकर बहुत दुःख हुआ कि शशि त्यागी जी का निधन सन 2020 के अंत में हुआ। मैं शशि जी से 2005 में मिली जब मैं हैल्पेज इंटरनैशनल सुनामी कार्यक्रम की प्रबंधक थी। प्रबंधक होने के कारण मैं भारत में हैल्पेज के साथ काम करने आयी और 2004 में तमिलनाडू और केरल में आए सुनामी के कार्यक्रमों को क्रियान्वित किया। इसी संदर्भ में हमने पूरे भारत में हैल्पेज की सभाएं रखी। शशि जी हमेशा भारत में महिलाओं की भूमिका, एक छोटी बच्ची से वृद्ध होने तक झेल रही कठिनाईयों के बारे में बात करती। मुझे याद है कि उन्होंने मुझे कन्याओं की भ्रूण हत्या के बारे में बताया था और आंकड़े दिखाए कि कितनी तेजी से यह राजस्थान में हो रहा है और शायद भारत के अन्य राज्यों में भी। मैं गरीब महिलाओं के लिए शशि जी के समर्पण को देखकर बहुत प्रभावित हुई और उनसे प्रेरणा ली। इसलिए जब मैं कुडालोर, तमिलनाडू एक सुनामी कार्यक्रम में गयी और बुजुर्ग लोगो से बात की जो नई नावों के मालिक बने थे, कि यहाँ इतनी कम महिलाएं क्यों है। उनका जवाब था कि जिस तरह से 80 - 90 साल के वृद्ध मछली नहीं पकड़ते उसी तरह महिलाएं भी नहीं पकड़ती। तब मैंने इस परियोजना पर हस्ताक्षर करते वक्त ये शर्त रखी की आधी नावों की मालिक महिलाएं होंगी।

जीवन संदेश

बाद में मुझे प्रमाण - पत्र देने में बहुत खुशी हुई क्योंकि 6 लोगो के समूह में तीन पुरुष और तीन महिलाएं थी। वह महिलाएं मालिकाना हिस्सा पाकर बहुत खुश थीं क्योंकि उनका पूरा जीवन सुरक्षित हो गया था यह इसलिए क्योंकि हर बार मछली पकड़ने पर 50 प्रतिशत मछलियों को और 50 प्रतिशत नाव के मालिकों को मिलता है।

शशि जी की विरासत दूर - दूर तक फैली है। उनकी प्रेरणा से तमिलनाडू और केरल की महिलाएं पहली बार नाव की मालिक बनीं।

दिसम्बर 2012 में जब मैं हैल्पेज इन्टरनैशनल की दक्षिण एशिया की अंतरिम क्षेत्रीय निदेशक थी, शशि जी से आखिरी बार जोधपुर में वृद्धजनों के लिये आयोजित एक सभा में मिली। वह उस समय भी महिलाओं के अधिकारों के लिए कार्य कर रही थीं और मैं ऐसा मानती हूँ कि पूरा जीवन करती रहीं। मेरे पास उनसे जुड़ी अविस्मरणीय यादें हैं और मैं यह प्रार्थना करती हूँ कि भगवान उनकी आत्मा को शांति दे।

योलान्डा वैल्लिंग, नीदरलैंड्स

सुश्री योलान्डा वैल्लिंग ऑक्सफोर्ड एच.आर. कन्सल्टेन्ट्स में सह निदेशक हैं और कई वर्षों से ग्राविस की मित्र रही हैं।

- 88 -

शशि जी और मेरा लम्बा साथ

सरकारी वैज्ञानिक शोध संस्थान, जोधपुर में मेरे कार्यकाल के शुरूआती सालों में क्षेत्र के काम के लिए मुझे बहुत घूमना पड़ता था और मेरे दूसरे सहकर्मियों से अलग मुझे ये भूमिका पसंद थी क्योंकि इसमें मुझे मेरे क्षेत्र की विशेषज्ञता के लिए बहुत सी जानकारी मिलती थी, जैसे की मिट्टी और भूदृश्य के विकास का इतिहास।

जब मैं रेगिस्तान में जाता कैसे भी करके किसानों के साथ बात करता और उनसे सीखता की वह क्या कर रहे हैं और किस तरह से वह अपने जीवन - यापन के लिए इतनी विपरीत परिस्थितियों में कमी और सूखे का प्रबंधन करते हैं। यह सब करने में मुझे बहुत आनंद आता है। नई जानकारी के अलावा किसानों से बात करने पर मुझे धैर्य और कार्य क्षेत्र में आई कठिनाईयों का सामना कैसे करते हैं ये सीखने को मिला। मेरे कार्यकाल के इसी दौर में 80 के दशक के मध्य में मुझे एक अचरज में डालने वाला निमंत्रण स्व. श्री एल.सी.त्यागी की ओर से मिला जो ग्राविस के संस्थापक थे और युवा और संघर्ष कर रहे सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए एक छोटा सा सम्मेलन कर रहे थे। मुझे कभी यह समझ नहीं आया की इतने सारे विशेषज्ञों में मैं ही क्यों आमंत्रित किया गया। लेकिन मुझे उस सभा में बहुत आनंद आया क्योंकि यहाँ से

मुझे स्वयंसेवी संगठन और उसमें कार्य कर रहे युवा लोगो के बारे में पता चला जो गरीब और जरूरतमंदों की मदद कर रहे थे। मेरे पास इस काम की जानकारी बहुत कम थी लेकिन मरुस्थल और उसके लोगो के बारे में जानकर बहुत आनंद आया। मेरे व्यवसायिक जीवन में इस परिचय ने मेरी आर्थिक और पर्यावरण से सुविधाहीन मरुस्थल के लोगो के लिए कुछ करने की इच्छा को और बढ़ाया। त्यागी जी ने मुझसे सम्पर्क बनाये रखा और शुरूआत में मेरा किरदार एक कार्यक्रम विकास सलाहकार के रूप में अनियमित सा था। बीतते समय के साथ संस्थान प्रबंधन से, तकनीकी शिक्षा और ग्राविस में प्रशिक्षण के लिए आए विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करना भी मैंने किया। मैं जानता था कि मेरा निर्णय और सलाह जो मैं देता था सही थे लेकिन ग्राविस का मुझ पर विश्वास बहुत आनंदित करता था। इसके अलावा जो मुझे और अच्छा करने की प्रेरणा देता था वो है, त्यागी जी व शशि जी का गरीबों के प्रति समर्पण, उनकी सरलता और उनके विचारों की सच्चाई और काम की नैतिकता। दोनों उच्च शिक्षित होने के बाद भी मामूली रूप से जीवन - यापन करते थे।

शशि जी के जीवनसाथी और ग्राविस के सह संस्थापक श्री एल.सी.त्यागी जी का निधन खराब स्वास्थ्य के कारण सन् 2005 में हुआ। और इस कारण से ग्राविस का सारा बोझ शशि बहन जी के कंधों पर आ गया। इसके अलावा उन पर पहले से ही सर्वोदय आंदोलन की प्रसिद्ध नेता होने का भार था और गाँधी जी और विनोबा भावे जी के विचारों और सिद्धांतों को आगे ले जाने का जिम्मा भी था। अगर शशि जी इतनी भारी जिम्मेदारियाँ इतने कुशल और अद्वितीय तरीके से निभा पाईं तो मैं यह मानता हूँ कि वह पूरी तरीके से उनकी प्रतिबद्धता और हिम्मत का नतीजा है। कई बार उन्हें अपने काम के सिलसिले में बड़े सरकारी अफसरों के साथ सभाएं करनी होतीं लेकिन यह देखकर बहुत अच्छा लगता की वह अपनी बात को निडरता से कहतीं। अपने व्यस्त जीवन के बावजूद वे अपने सहयोगियों को, ग्राविस के कर्मचारियों को और ग्रामीण समुदाय के लोगो को नैतिक समर्थन देतीं। अपने कार्यकाल के दौरान, जैसा इस कार्य क्षेत्र में कई लोगों के साथ होता है कि उन्हें लोगो से अनुचित टिप्पणियाँ सुननी पड़ती थीं। लेकिन बहुत कम लोग इस बात को महसूस कर पाते हैं कि एक अव्यवस्थित समाज और बहुआयामी कार्यक्रमों को चलाने के लिए किसी व्यक्ति को बहुत सी परिस्थितियों से जूझना पड़ता है, जिन पर उनका बस नहीं होता। मैंने शशि बहन जी को कभी निराश नहीं देखा। जीवन के कार्यकाल में कई बार पुरस्कार भी मिलते हैं। बहन जी को अपने कार्यकाल में बहुत से पुरस्कार और पहचान मिली। जिसमें से एक जमनालाल बजाज पुरस्कार भी रहा। मुम्बई में पुरस्कार समारोह से लौटने के बाद मैं उनको बधाई देने पहुँचा लेकिन यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया कि यह दिन भी उनके लिए सामान्य दिन जैसा ही था। मुझे ऐसा लगता था जैसे उनके कठिन जीवन ने सफलता और विफलता को एक सा कर दिया है। उनका ज्यादातर जीवन एक माँ के रूप में छोटे और बड़े सामाजिक कार्यकर्ताओं को आगे बढ़ाने में एक छोटी सी इमारत में व्यतीत हुआ। जब आरामदायक साधन उपलब्ध हो सकते थे उनको एक छोटे से कमरे में रहने में आराम मिलता था।

जीवन संदेश

मुझे इसमें तनिक भी संशय नहीं है कि उनकी विरासत ग्राविस को प्रेरित और मार्गदर्शित करती रहेगी।

आर.पी.धीर (फैलो और माननीय सदस्य, इंडियन सोसायटी ऑफ सोशल साइंस) भूतपूर्व प्राध्यापक, वैज्ञानिक और निदेशक – केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर, प्रमुख – रिजनल रिमोट सेसिंग सेंटर, डिपार्टमेंट ऑफ स्पेस, भारत सरकार, प्रबंधक – आई.एन.आर.आई.एम.टी (हैदराबाद)

आर.पी.धीर, भारत

डॉ. आर.पी.धीर एक प्रख्यात वैज्ञानिक, ग्राविस बोर्ड के अध्यक्ष, भूतपूर्व –निदेशक केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर हैं और त्यागी परिवार के करीबी मित्र रहे हैं।

- 89 -

अमर शशि जी

एक व्यक्ति जिसने अपना सब कुछ दूसरे के लिए समर्पित कर दिया, एक प्रेरणास्त्रोत बन जाता है। ऐसे व्यक्ति अमर हो जाते हैं। दुनिया में ऐसे बहुत कम लोग होते हैं जो इस प्रकार का जीवन व्यतीत करते हैं और शशि जी उनमें से एक हैं।

मैंने उनके जीवन के कई पहलू देखे जैसे कि महिलाओं और छोटे किसानों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता, उनकी सरलता और कड़ी मेहनत और ग्रामीण मरीजों के लिए उनकी चिंता। ग्राविस के लिए एक डॉक्टर के रूप में कार्य करते हुए मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा। 14 नवम्बर, 2020 को अपनी अंतिम सांस तक उन्होंने अपने जीवन का हर क्षण समाज को समर्पित किया। मुझे और मेरे परिवार को उनके द्वारा दिए गए प्रेम और सहारे का, मैं सदैव ऋणी रहूँगा और उनके रास्ते पर दृढ़ता से चलूँगा।

आर.एस. चतुर्वेदी, भारत

डॉ. आर. एस. चतुर्वेदी एक फिजिशियन हैं, ग्राविस अस्पताल के प्रबंधक हैं और लम्बे समय से शशि जी के साथी रहे हैं।

शशि त्यागी जी - एक दूरदर्शी और समर्पित सामाजिक कार्यकर्ता

ऐसी बहुत सी बातें हैं जिनके लिए शशि जी को याद किया जाएगा, पर जो हम कभी नहीं भूलेंगे वो है गरीब समुदाय को सशक्त करने की उनकी प्रतिबद्धता। शशि जी के पास वांछित समुदाय के प्रति दया का एक अनूठा तत्व था। हर जगह सामुदायिक विकास से जुड़े लोगों के लिए शशि जी एक निःस्वार्थ मानवता का प्रतीक थीं। गरीबों के अधिकारों के लिए वह एक सच्ची मानक थीं। वह एक ऐसी महिला थीं जिनके अंदर हजारों वांछित परिवारों के जीवन को रोशन करने की प्राकृतिक क्षमता थी।

मैं पहली बार शशि जी से तब मिला जब एक सामुदायिक विकास परियोजना 'विकल्प' जोधपुर जिले में शुरू की गयी। जब मैं गगाड़ी में सन् 2009 में उनसे मिला, मैं ग्राविस के बारे में ज्यादा नहीं जानता था। मुझे पता चला कि वह एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं, जिन्हें सर्वोदय में प्रशिक्षण प्राप्त है। अपने पति श्री लक्ष्मी चन्द त्यागी जी के साथ वह सन् 1980 में जोधपुर आयी। अपने पति के साथ उन्होंने इस क्षेत्र के आर्थिक और सामाजिक वंचितों के लिए अपने आप को समर्पित करने का निश्चय किया। वह लम्बी पदयात्रा कर क्षेत्रीय समुदायों का सर्वेक्षण करते। कठोर मरुस्थलीय क्षेत्र में अत्यन्त गरीबी, अशिक्षा और जातियों में भेदभाव देख कर उन्हें अहसास हुआ कि लम्बे समय तक उन्हें स्थायी समुदायों के साथ खुद को जोड़ना होगा। शशि जी ने अपने पति के साथ मिलकर सन् 1983 में ग्राविस की स्थापना की, एक ऐसा मंच जो गाँवों के लोगो को एक साथ जोड़ता है। उनके द्वारा शुरू किए ग्राविस ने थार मरुस्थल के हजारों परिवारों को संगठित कर सामुदायिक विकास के माध्यम से सशक्त किया। ग्राविस सामुदायिक विकास के कार्यक्रमों को समुदाय की आवश्यकताओं के अनुसार करता है जैसे - स्वास्थ्य सेवाएं, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, संगठित कृषि विकास, समुदाय आधारित संगठन, शिक्षा और भी बहुत कुछ।

शशि जी ने लम्बे अंतराल तक प्रतिबद्धता में अनुशासन दिखाया और जरूरतमंद समुदाय को सशक्त करने के लिए एक मंच बनाया।

वह चली गई हैं। यह एक अहसास है - डॉ. प्रकाश और उनके परिवार के लिए, ग्राविस, समुदाय आधारित संगठन, स्थायी समुदाय और हर जगह विकास से जुड़े लोगो के लिए अकेला रह जाने का। हम सब इसको महसूस कर रहे हैं और नहीं जानते की कब इससे उबरेंगे किन्तु इस अहसास के साथ उनके साथ काम करने का गर्व भी है।

मैं यह मानता हूँ कि उनको द्वारा की गई पहल को आगे बढ़ाना चाहिए और समाज के वंचित वर्ग के लिए काम करते रहना चाहिए।

जीवन संदेश

शशि जी के साथ मेरा संबंध —

सन् 2008 में जोधपुर जिले में सुजलोन फाउंडेशन के सहयोग से एक सामुदायिक विकास आधारित परियोजना 'विकल्प' ग्राविस के द्वारा लागू की गयी। मैं सुजलोन फाउंडेशन के सी.एस.आर. प्रभाग में सह प्रबंधक के पद पर कार्यरत था और मेरी जिम्मेदारी परियोजनाओं के कार्य को संयोजित करने की थी।

रणवीर सिंह, भारत

डॉ. रणवीर सिंह वरिष्ठ विकास सलाहकार हैं। ग्राविस के पुराने मित्र हैं और बहुत सारे संगठनों के साथ काम कर चुके हैं।

- 91 -

शशि त्यागी: मेरी त्यागी दीदी

मेरी प्यारी दीदी (शशि त्यागी) के लिए कुछ शब्द लिखना बहुत कठिन है। उनको खोने की क्षति अपूरणीय है जो मेरे लिए बड़ी बहिन से भी बढ़कर थीं। मैं उनको 1977-78 से जानता हूँ जब वह और प्रिय भईया स्व. श्री लक्ष्मी चंद त्यागी बनवासी सेवा आश्रम, जिला सोनभद्र, उ. प्र. में आदिवासी लोगों के सशक्तिकरण के लिए काम कर रहे थे।

जिस समय मैं उत्तर प्रदेश वौलेन्टरी हेल्थ एसोसिएशन में कार्यकारी निदेशक था, हम अकसर वीहाई में खोज परियोजना के संदर्भ में मिला करते थे। वह अकसर मुझे बाल अधिकार और शिक्षा की गोष्ठियों में विशेषज्ञ के रूप में बुलाती थी।

उनके बारें में मुझे जो याद आता है वह है अधिकारों में उनकी रुचि, सत्यता में विश्वास के साथ दृढ़ता से खड़े रहना और दलितों के लिए प्रतिबद्धता। वह एक महान विचारक और गाँधीवादी विचारों, सर्वोदय के भावों की अनुयायी थीं। वह अपनी हर विवेचना में अहिंसा का प्रचार करती थीं।

उनके अचानक चले जाने पर, सर्वोदय जगत उन्हें हमेशा याद करेगा। आज की वर्तमान स्थिति में जब सामाजिक राजनीतिक पर्यावरण में दीदी जैसे लोगों की जरूरत अहिंसा, गाँधीवादी रचनात्मक विचारों और सामाजिक सद्भाव का प्रचार करने के लिए है, यह अपूरणीय क्षति कभी पूरी नहीं की जा सकेगी।

वह मेरे लिए बड़ी बहन से भी ज्यादा थी और मेरी बेटी की अभिभावक जैसी रहीं। उन्होंने जोधपुर में मेरी बेटी डॉ. किरण राय की शादी में सहायता करवायी। इसके अलावा, वह अकसर मेरी बेटी के घर उसकी कुशलक्षेम पूछने जाती थीं। मेरी बेटी ने भी बुआ के रूप में अपना अभिभावक खो दिया है।

मैं 73 वर्ष की आयु में उनको अपनी बड़ी बहन के रूप में याद करता हूँ जो हमेशा मुझ पर स्नेह रखती थीं, प्यार से डाँटती भी मेरी सेहत के लिए और मेरी पत्नी का ध्यान रखने को कहती थीं। शायद ये नुकसान कभी पूरा नहीं किया जा सकता।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि दीदी के जीवन से जुड़ी अच्छी यादें, समय के साथ इस दुख और दर्द को कम कर सकें और आगे काम करने की प्रेरणा दें। मुझे खासकर याद है - गरीबों और दलितों के प्रति उनका समर्पण।

मेरी प्रार्थनाएँ और साथ हमेशा आपके साथ हैं।

रमाकांत राय, भारत

श्री रमाकांत राय नेशनल कोइलिशन फॉर ऐजुकेशन के राष्ट्रीय संयोजक हैं और शशि जी के लम्बे समय से सहयोगी रहे हैं।

- 92 -

यादों का सफर

श्रीमती शशि त्यागी के पंचतत्व का शरीर पूर्णता को प्राप्त हुआ। इस समाचार ने झकझोर दिया। कुछ दिन पहले तो लंबी बातचीत हुई थी। कुछ कार्यक्रम भी तय किए गए। सब कुछ अधर में ही रह गया।

वे देश - भर में सभी साथियों से संपर्क, संवाद, समन्वय बनाकर रखने का सतत प्रयास जारी रखती थी। शांत, हसमुख, गंभीर स्वभाव व कुछ कर गुजरने की तमन्ना। युवा साथियों को जोड़ने का प्रयास। प्रयोगात्मक कार्यक्रमों में रुचि।

आदरणीय श्री लक्ष्मी चंद त्यागी एवं श्रीमती शशि बहिन त्यागी - इस युगल ने युवाओं के प्रशिक्षण, समग्र ग्राम विकास, रचनात्मक निर्माण के लिए शिक्षण, प्रशिक्षण, खेतीबाड़ी, बागवानी, गृह उद्योग, जल, जंगल, जमीन के मसलें, महिला बाल उत्थान, किसान, श्रमिकों के मुद्दे, स्वास्थ्य स्वावलम्बन, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्राथमिकता देते हुए लोगों की भागीदारी सुनिश्चित की। जन जागरण अभियान के तहत जन जन तक संदेश पहुँचाने का अथक प्रयास जारी रखा।

बा बापू 150 के मौके पर भी अनेक कार्यक्रम आयोजित किए। स्वास्थ्य पूरी तरह ठीक नहीं होते हुए भी दो - दो यात्राओं का सफलतापूर्वक आयोजन करना, उनमें शामिल रहना, भागीदारी करना उनके दृढ़ निश्चय, सकल्प, समर्पण, निष्ठा, जीवटता को दर्शाता है। शहरी, ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में उनकी पकड़ रही।

जीवन संदेश

लगभग पांच दशक पूर्व उनसे जो संपर्क संवाद बना वो उनके जाने के बाद आज भी ताजगी भरा महसूस हो रहा है। लगता ही नहीं कि अब मिलना नहीं होगा।

बनवासी सेवा आश्रम, गोविन्दपुर, सुचेता कृपलानी शिक्षा निकेतन, माणकलाव, ग्रामीण विकास विज्ञान समिति (ग्राविस) जोधपुर, राजस्थान समग्र सेवा संघ, जयपुर आदि में जहाँ भी रहें – उनकी सक्रियता, सामूहिकता, सामंजस्य, सौहार्द, साझापन, समझदारी, संकल्प, समर्पण, सहयोग स्पष्टता से दृढ़तापूर्वक सामने नजर आता था।

एक 25 वर्ष पुरानी घटना आँखों के सामने घूम रही हैं। गाँधी 125 पर आयोजित राष्ट्रीय गाँधी स्मृति यात्रा का राजस्थान के सभी जिलों के कार्यक्रम के आयोजन का पूरा जिम्मा राजस्थान समग्र सेवा संघ ने संभालकर जो सहयोग सहकार किया, उसे मैं कभी भूल नहीं सकता। यह बड़ी चुनौती सामने थी। चुनौती शब्द का प्रयोग इसलिए करना पड़ रहा है कि राजस्थान के एक प्रमुख सर्वोदय नेता उस यात्रा के पक्ष में नहीं थे। इसके बावजूद भाई सवाई सिंह एवं त्यागी जी व शशि जी ने बड़ी हिम्मत से चुनौती संभाली और सारी व्यवस्था बहुत ही सुंदर बढ़िया ढंग से संभाली। उस यात्रा का नेतृत्व मेरे कंधों पर था।

उनके सपने, अधूरे पड़े काम चलते रहें। उनको पूरा करना ही उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी। हम मिलाकर यह प्रयास कर सकते हैं, करना चाहिए, करना होगा। ग्राविस परिवार की इसमें अहम भूमिका रहेगी। लक्ष्मी – शशि जोड़ी (त्यागी युगल) को जानने समझने पहचानने वाले साथी भी अपना – अपना यथा संभव योगदान करेंगे, ऐसी आशा है।

आदरणीय लक्ष्मी भाई – शशि बहिन की स्मृति को सादर जय जगत। ऐसी जोड़ियाँ तथा परिवार कम ही नजर आते हैं, जिन्होंने अपना पूरा जीवन सामाजिक कार्य, गाँधी सर्वोदय, ग्राम सेवा को समर्पित कर दिया।

रमेश चंद शर्मा, भारत

श्री रमेश चंद शर्मा एक जाने – माने गाँधीवादी चिन्तक हैं व लम्बे समय से ग्राविस व शशि जी से परिचित हैं।

- 93 -

सभी के लिए स्नेह

मुझे याद है शशि जी से मेरी पहली मुलाकात ग्राविस कार्यालय में अगस्त 2004 में हुयी थी। मैं थोड़ा घबराया हुआ था लेकिन वह मुझसे बहुत ही गरमजोशी और प्रेम से मिली। तभी से मैं ग्राविस के साथ काम कर रहा हूँ और शशि जी से प्रेरित होता रहा हूँ। उनके जैसी सरलता, हिम्मत और दयालुता कुछ ही लोगो में होती है।

उनका परिवार बहुत बड़ा था क्योंकि वह जिसे भी जानती थीं उसके सुख और दुःख में उसके साथ रहती थीं। वह अपने सहकर्मियों, ग्रामीणों और गरीबों का सम्मान बहुत करती थीं। उनकी यादें हमेशा बनी रहेंगी।

रमेश परिहार, भारत

श्री रमेश परिहार 15 वर्षों से ग्राविस परिवार का हिस्सा हैं।

- 94 -

बालिकाओं के लिए समर्पित

श्रीमती शशि त्यागी के निधन की खबर सुनकर मुझे बहुत दुःख हुआ। डॉ. प्रकाश त्यागी, आभा और वसुंधरा, पूरा ग्राविस परिवार और वो समुदाय जिनके साथ वह तीन दशकों से जुड़ी रही, आज भी मेरे विचारों और प्रार्थनाओं में हैं। वह सिर्फ डॉ. प्रकाश और डॉ. आभा की नहीं बल्कि पूरे ग्राविस परिवार और उनके सहयोगी संस्थाओं की माँ जैसी थीं। श्रीमती शशि त्यागी के निधन पर मेरी सच्ची श्रद्धांजली। वह एक विशिष्ट महिला थी, और बहुत लोग उन्हें याद करेंगे। ग्राविस की हर ईंट मुझे उनकी सादगी और बेजुबान ग्रामीण किसानों के प्रति सहानुभूति की याद दिलाती हैं। मैं जानता हूँ कि यह हर किसी के लिए बुरा समय है और मैं आशा करता हूँ कि अपने शब्दों से मैं इसे आसान बना पाऊँ।

मैं इस अवसर के माध्यम से श्रीमती शशि त्यागी जिन्हें लोग सप्रेम शशि जी बुलाते हैं, के साथ बिताए कुछ अच्छे पलों को याद करूंगा। करीब दो दशक पहले 1997 में राजस्थान में मेरे कार्यकाल के दौरान हमारा सफर शुरू हुआ, उस समय मैं बड़े पैमाने पर स्वास्थ्य और पोषण कार्यक्रम को संभाल रहा था। फलौदी क्षेत्र में महिलाओं और बच्चों के लिए छोटे स्तर पर शुरू किया गया काम जल्द ही बाप क्षेत्र तक पहुँच गया। आज राष्ट्रीय बेटी दिवस पर मुझे लगा कि उनको याद करना सबसे अच्छी श्रद्धांजली होगी, और मैंने अपने विचारों को लिखा। वैसे तो यादें बहुत पुरानी हैं किन्तु कुछ अभी भी मेरे मस्तिष्क में हैं। उनकी रूचि और दृढ़ता के कारण ही हम फलौदी के ग्राविस कार्यालय में इंदिरा गाँधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी की शुरुआत महिला सशक्तिकरण के लिए कर पाए। उनका ध्यान हमेशा महिलाओं पर केन्द्रित रहता और सामुदायिक संगठनों में महिलाओं के प्रतिनिधित्व पर जोर देती।

स्थानीय भोजन के प्रचार की जरूरत और रोगनिरोधक गोलियों की जगह पारंपरिक खाने के विकल्प को उजागर करने में शशि जी कभी हिचकिचाती नहीं थीं। अब सरकार के लिए यह आयुष है। मैं हमेशा उनकी दूरदर्शिता को सराहता था। मेरे लिए यह कहना गलत नहीं होगा कि तीन दशक पहले उन्होंने किशोर स्वास्थ्य में अहम भूमिका निभायी और स्थानीय लोगों द्वारा कम दामों में बनाए गए सेनेटरी पैड्स का प्रचार किया, छोटी - छोटी बीमारियों को ठीक करने के लिए स्थानीय लोगों को प्रशिक्षण दिया। मुझे गगाड़ी से मिल्कमैन कॉलोनी के कार्यालय और फलौदी और बाप के स्थायी कार्यालयों में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। ये सभी जगहें उनकी दूरदर्शिता की प्रतीक हैं। उनके प्रेरणादायी विचारों ने मुझे अपनी क्षमता अनुसार उनसे जुड़े रहने के लिए प्रेरित किया।

शशि जी के प्रयासों से ग्राविस ने उच्च शिक्षा के लिए एक गर्ल्स हॉस्टल शुरू किया और युवा लड़कियों को साइकिल दीं जिससे वह एक जगह से दूसरी जगह जा सकें और आत्म निर्भर बन सकें। बेटियों में विश्वास करने का यह एक और उदाहरण है, बेटियाँ ही हमारे समाज को बदलने के लिए एक महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं। जब मैं उनके बारे में सोचता हूँ तो मेरे दिमाग में सर्वोदय विचारधारा का 'सहभाजन' और गाँधीवादी विचारधारा - 'सादा जीवन', ग्रामीण कृषकों के लिए प्यार और सहानुभूति और बेटियों के लिए कार्य करने की दृढ़निश्चिता दिमाग में आता है। सबसे अविस्मरणीय बात यह कि श्री एल.सी.त्यागी उन्हें हमेशा शशि जी कह कर बुलाते थे, अपने पति से भी उन्हें सम्मान मिला। यह उनके व्यक्तित्व के कई उदाहरणों में से एक था।

उनके द्वारा खाली की गई जगह कभी नहीं भर सकती, मगर इस सफर को जारी रखना होगा। आगे बढ़ने का सबसे अच्छा तरीका ग्राविस के कार्यक्षेत्र में हर बेटी को आगे बढ़ाना होगा।

मैं डॉ. प्रकाश की सराहना करता हूँ कि उन्होंने शशि जी के अनुभवों का सारांश एकत्रित करने का यह अनोखा तरीका ढूँढा। ये दस्तावेज आने वाली पीढ़ियों के लिए एक जीवंत प्रेरणा होगा और शोधकर्ताओं के लिए एक संसाधन। अंत में मैं डॉ. प्रकाश को यह अवसर देने के लिए धन्यवाद देता हूँ और समापन करने से पहले मैं एक सुझाव देना चाहूँगा शशि जी के नाम पर बेटियों के लिए एक पुरस्कार का नाम रखा जाये। यह पुरस्कार हर वर्ष 24 जनवरी को राष्ट्रीय बालिका दिवस पर दिया जाये।

जैसा कि मैंने पहले कहा कि श्री एल. सी. त्यागी और श्रीमति शशि त्यागी से मैं 1997 में यू. एस.ए. आई.डी. के एक कार्यक्रम को लागू करने के लिये मिला। बाद में यू.एस.ए.आई.डी. के पोषण अधिकारी के रूप में मिला। ग्राविस के साथ मेरा संबंध केयर और सीआरएस कार्यक्रमों के तहत 2008 तक रहा।

रमेश बाबू वी, भारत

श्री रमेश बाबू वी वर्ल्ड बैंक में एक तकनीकी सलाहकार है और पूर्व में केयर, यू.एस.ए.आई.डी. और सी.डी.सी. के साथ कार्यरत थे।

मेरी गुरु माँ: जिन्होंने स्वयंसेवकों का निर्माण किया

वर्ष 1982 में श्री लक्ष्मी चंद त्यागी और शशि त्यागी ने उत्तर, पूर्व, दक्षिण और पश्चिम भारत से चुने गए सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए 6 महीने की अवधि का प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया। गाँधीवादी दर्शन (उनके विचार और सपने) और रचनात्मक कार्यों में उनके ज्ञान और कौशल को बढ़ाना इसका प्रमुख उद्देश्य था। अनुभवी गाँधीवादी कार्यकर्ताओं, विचारकों और नेताओं को प्रशिक्षुओं के साथ अपने अनुभव साझा करने के लिए भारत के विभिन्न हिस्सों से आमंत्रित किया जाता था। इसके अलावा, प्रशिक्षु विभिन्न राज्यों में स्थित गाँधीवादी संस्थाओं के कार्य स्थलों का दौरा करते थे। मैं और मेरी पत्नी मधुमिता, प्रशिक्षण कार्यक्रम के पहले बैच में शामिल हुये। विभिन्न दिनों में विशेषज्ञ वक्ताओं द्वारा साझा किए गए विषयों पर चर्चा करने के लिए शशि बहिन जी अपने आवास पर बुलाती थीं। एक बार विषय 'गाँधीवादी रचनात्मक कार्य' था व उस चर्चा के दौरान मैंने मजाक में टिप्पणी की कि 'जैक ऑफ ऑल ट्रेड' मास्टर ऑफ नन' अर्थात् 'हरफरमौला', पर हर फन अधूरा। मेरी बात सुनकर शशि जी ने सकारात्मक रूप से जवाब दिया "सामाजिक कार्यकर्ताओं को लोगों की बुनियादी जरूरतों या ग्रामीणों से संबंधित सभी विषयों पर ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए और इनमें से किसी एक या दो विषयों पर दक्षता प्राप्त कर सकते हैं। गाँधी जी ने अहिंसा, सच्चाई, न्याय के हथियार के साथ स्वतंत्रता आंदोलन में महारत हासिल की थी, इसलिए आपको अपनी क्षमता के अनुसार संबंधित विषयों पर और एक या दो विषय की महारत हासिल करने के लिए ज्ञान प्राप्त करना होगा।" तब से मैंने अपने कार्यक्षेत्र के गाँवों की बुनियादी जरूरतों से संबंधित ज्ञान हासिल करने की पूरी कोशिश की। प्राकृतिक खेती में प्रशिक्षक, स्वास्थ्य कार्यकर्ता, शिक्षक और भूमि अधिकारों और वन अधिकारों में कार्यकर्ता के रूप में मैंने काम किया।

मुझे उनके और त्यागी जी के साथ काम करने के वे दिन याद आ रहे हैं। मेरे पहले कार्य सत्र में मैंने गाँधीवादी रचनात्मक कार्यों के लिए युवा प्रशिक्षण को समन्वित करने के लिए कुछ समय बिताया। मेरे दूसरे कार्य सत्र में (ग्राविस में वापसी), मैं बुजुर्ग व्यक्तियों के लिए गतिविधियों की देखरेख कर रहा था। मैंने त्यागी जी के माध्यम से अपने स्वयं के घर पर उपेक्षित बुजुर्ग व्यक्ति के पुनर्वास की मूल्यवान अवधारणा सीखी कि आर्थिक रूप से कमजोर बेटे - बहू या परिजनो को आवश्यक सहायता दे कर बुजुर्गों की उनके अपने घर में बेहतर देखभाल के लिए काम किया जाए।

मैं सौभाग्यशाली था ओडिशा में हमारे साथ शशि बहिन जी ने 15 अगस्त 2019 को फेनी (चक्रवात) प्रभावित क्षेत्र में अपनी अंतिम यात्रा के दौरान 300 परिवारों को अपनी सहायता प्रदान की। उनका यह दौरा मेरे लिए काफी खास था। उन्होंने मेरी स्वास्थ्य की स्थिति को देखकर कहा "रवि भाई आगे की चिंता न करें, अब हमें अपने ज्ञान को अपने बच्चों के साथ साझा करना होगा और उन्हें नेटवर्क, भाईचारे का निर्माण करके इसे आगे ले जाना होगा।"

जीवन संदेश

वह हमेशा सहयोग, नेटवर्किंग, चीजों को एक साथ करने, भागीदारी के बारे में बात करती थीं। उनके शब्द हमेशा स्वयं सेवा की अवधारणा, सम्मान, मानवता की सेवा, प्रयास, मित्रता और शांति की प्रेरणा देते हैं। उन्होंने अपनी अंतिम सांस तक मानवता और समाज में योगदान दिया। मैं विश्वास करता हूँ शशि बहिन जी हमेशा हमारे आसपास रहेंगी और उनसे प्राप्त प्रेरणा के रूप में बहुत कुछ करना है।

रवि कमल, भारत

श्री रवि कमल ओडिशा के एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं व लम्बे समय से ग्राविस व शशि जी को जानते हैं।

- 96 -

माँ शशि त्यागी को श्रद्धाजलि

मैं ग्राविस परिवार के सदस्यों, मित्रों, शशि जी के सहकर्मियों और उन समुदायों जिनके लिए उन्होंने काम किया, के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त करता हूँ। श्रीमती शशि त्यागी दशकों से लगातार राजस्थान के कठोर मरुस्थलीय क्षेत्र में काम करती रहीं।

मैं उनसे निजी तौर पर कुछ साल पहले एक बार चेन्नई में फियान की एक सभा में मिला, वह एक यादगार पल था। बाद में मुझे राजस्थान में गरीबों और दलितों के लिए उनके द्वारा किए गए कार्यों के बारे में पता चला। इससे मुझे मेरे काम के प्रति पुनः समर्पित और पुनः प्रतिबद्ध होने की प्रेरणा मिली। मुझे विश्वास है श्रीमती शशि त्यागी द्वारा छोड़ी गयी विरासत को याद किया जाएगा और वे अगली पीढ़ी के लिए पूजनीय होंगी। यह मेरे लिए सम्मान की बात है कि मैं गरीबों के लिए उनके द्वारा किए गए कार्यों के बारे में सीधे रूप से जानता हूँ और माँ समान श्रीमती शशि त्यागी को श्रद्धाजलि अर्पित करता हूँ।

रविकुमार, भारत

श्री रवि कुमार एक भोजन अधिकार कार्यकर्ता हैं और फूड फर्स्ट इंफॉर्मेशन एण्ड एक्शन नेटवर्क से जुड़े हैं।

- 97 -

मेरी यादें

मैं एक वाहन चालक के रूप में उनके साथ 12 वर्ष तक रहा। सारा अनुभव बयान नहीं कर पाऊँगा लेकिन कुछ शब्द मैं लिख रहा हूँ। आज तो बहुत सुनने देखने को मिलता है - हिन्दू - मुस्लिम, धर्म, अराजकता आदि। मैंने 12 वर्षों में शशि जी के मुँह से धर्म की बुराई कभी नहीं सुनी। सर्व धर्म को समान मानने वाली योद्धा माँ के क्या वर्णन करूँ, लिख नहीं सकता। उन्होंने जैसे डॉ. प्रकाश जी, जो उनके बेटे हैं, वैसे ही मेरे को भी प्रेम दिया। मैं उनको और उनके परिवार को कभी भूल नहीं पाऊँगा और हमेशा उनका ऋणी रहूँगा।

रहीम खान, भारत

श्री रहीम खान ग्राविस को अपनी सेवाएं 12 वर्ष तक दे चुके हैं।

- 98 -

बलिदानी जीवन - शशित्यागी

ये बात सन् 1993 की है जब मैंने इसी वर्ष सामाजिक क्षेत्र में वॉलेन्टियर के रूप में शुरुआत की थी और ग्रामीण विकास विज्ञान समिति, जोधपुर से सम्पर्क हुआ तथा ग्राविस द्वारा संचालित युथ फैलोशिप के लिये मेरा चयन हुआ। हम सभी चयनित फैलो प्रथम प्रशिक्षण के लिये जेलू - गगाड़ी जोधपुर पहुँचे। यह मेरा पहला अनुभव था इस प्रकार के प्रशिक्षण का और रेगिस्तानी सुनसान क्षेत्र में रुकने का। सभी प्रशिक्षणार्थी रुकने की जगह को लेकर बैचन थे।

प्रशिक्षण के प्रथम दिन उदघाटन कार्यक्रम में आदरणीय शशि बहिन जी से मिलने और उन्हें सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। शशि बहिन ने ग्राविस और उनके जीवन की यात्रा के बारे में हमें बताया। हम सब प्रशिक्षणार्थी यह सुनकर स्तब्ध थे कि कैसे शशि बहिन और त्यागी जी ने संघर्ष करके ग्राविस का निर्माण किया और व्यक्तिगत जीवन की तमाम तकलीफों को सहन करते हुये भी उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन वंचित वर्ग की सेवा को समर्पित किया।

शशि बहिन जी की वंचित वर्ग के लिये कार्य करने की प्रेरणा और त्याग ने मुझे इतना प्रभावित किया कि इसके बाद स्वैच्छिक जगत में मैंने अपना कार्य प्रारम्भ करने का निश्चय किया। मैं सौभाग्यशाली रहा कि मुझे शशि बहिन जी का समय - समय पर मार्गदर्शन मिलता रहा।

सन् 2017 में पुनः शशि जी के सानिध्य में तीन दिन रुकने का अवसर मिला। राजस्थान महिला कल्याण मंडल संस्था (चाचियावास), अजमेर प्रति वर्ष संस्था कार्यकर्ताओं के विकास एवं भ्रमण के लिए अमृत (Annual Meet, Retreat & Training) का आयोजन करती हैं। 23 से 25 दिसम्बर, 2017 तक यह अमृत हमने जेलू - गगाड़ी में रखा। मैंने पूर्व में ही

जीवन संदेश

शशि बहिन जी से आग्रह किया था कि वो एक दिन हमें मार्गदर्शन देने अवश्य आयेगी, परन्तु अचानक इन दिनों शशि बहिन का स्वास्थ्य खराब हो गया उन्होंने पहले अपनी असमर्थता जताई कि वो इस कार्यक्रम में शामिल नहीं हो पायेगी। पर हमने दोपहर में देखा कि शशि बहिन की तबीयत ठीक न होते हुये भी हमारे बीच आयी और कहा कि आप सब इतनी दूर से आये हैं, यदि मैं आपसे नहीं मिलती तो मुझे अच्छा नहीं लगता। ये उनका हम सब के प्रति स्नेह था और स्वैच्छिक जगत के प्रति निष्ठा थी कि स्वास्थ्य खराब होने के बावजूद उन्होंने हमें मार्गदर्शन दिया और संस्था के सर्वश्रेष्ठ कार्यकर्ताओं को अपने हाथों से शॉल और पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

शशि बहिन जी कि कार्य के प्रति निष्ठा और व्यक्तिगत जीवन में जो सादगी थी वो हमेशा याद रहेगी। भले ही शशि बहिन जी शारीरिक रूप से हमारे बीच में ना हो पर हमारे दिलों में उनकी प्रेरणा और त्यागमय जीवन सदैव जीवंत रहेगा।

राकेश कुमार कौशिक, भारत

श्री राकेश कुमार कौशिक एक विकास विशेषज्ञ हैं तथा राजस्थान महिला कल्याण मण्डल के प्रमुख हैं।

- 99 -

एक 42 साल पुराना, आध्यत्मिक संघ

स्पष्ट वक्ता, स्वाभिमानी और सच में त्याग की प्रतिमूर्ति थीं शशि बहिन त्यागी। करीब 42 साल पूर्व पहली बार जोधपुर के बख्तावरमल बाग गली स्थित छगन बहन गोलेछा के घर में उनसे मुलाकात हुई थी। खुद खादी का कुर्ता - पायजामा व शशि बहन खादी की साड़ी में थी। साथ में पुत्र प्रकाश व पुत्री आभा। छगन बहन ने ही परिचय कराया। यह पहली मुलाकात धीरे - धीरे रचनात्मक कार्य - कलापों, विचारों, विश्वास व सकारात्मक सोच से, संस्थागत व पारिवारिक मित्रता में बदल गई।

असल में उस समय मैं संपूर्ण क्रांति के लिए प्रतिबुद्ध युवा संगठन छात्र युवा वाहिनी में दिन रात लगा रहता था। हर पल हर क्षण संपूर्ण क्रांति के सपने ही संजोए रहता। हर युवा विशेष कर युवतियों को जोड़ने की कोशिश करता। इसी मकसद को लेकर राजस्थान के बीकानेर में संघर्ष वाहिनी के सदस्यों का एक प्रशिक्षण शिविर भी रखा। प्रवास के दौरान जोधपुर में मुझे रुकने का अवसर मिला था। भारत के प्रसिद्ध सर्वोदय विचारक चिंतक दादा धीरेन्द्र भाई मजूमदार के दर्शन किए व वार्तालाप किया। इसके साक्षी त्यागी दम्पति भी थे।

त्यागी दंपति ने माणकलाव गाँव में संस्था का कार्य प्रारंभ किया। ग्रामीण क्षेत्रों में दबे शोषित व गरीब परिवारों के साथ कार्यकर्ताओं, समूहों के विभिन्न प्रशिक्षण प्रारंभ किए। महिला, युवाओं

को प्रशिक्षण देने के आयोजन भी किए। छोटे- छोटे समूहों को प्रोत्साहन भी देने लगे। जोधपुर जिले के अलावा संभाग के अन्य जिलों में भी संस्था ने अपने केंद्र स्थापित किए। सूखा- आपदाओं में लोगों को रोजगार देने, आर्थिक संबल प्रदान करने के कार्य भी खूब किए। संस्था ने पानी बचाओ का अनुपम कार्यक्रम भी राज्य और देश के प्रमुख समाजसेवियों के साथ मिलकर किया, जिसमें श्री अनुपम मिश्र, श्री सिद्धराज ढड्डा, अरुण जी, राजेन्द्र सिंह जी आदि समाजचिंतकों ने मरुस्थल क्षेत्र में जल यात्रा का आयोजन, पदयात्रा के रूप में किया। इसमें श्री बद्री प्रसाद स्वामी, श्री भगवान दास माहेश्वरी आदि भी शामिल हुए थे। पानी बचाओ के मुद्दे को गाँव - गाँव समझाया गया। आम लोगों में जागरूकता का अभियान चलाना आज भी याद हैं। जेलू - गगाड़ी संस्था के केंद्र पर जो कार्यक्रम होते थे, उसमें भी मेरा जाना रहता था।

गरीब व जरूरतमंदों की मदद का सिलसिला क्या चला, संस्था को स्थानीय उच्च वर्ग का आक्रोश भी झेलना पड़ा। तोड़-फोड़ का नुकसान भी उठाना पड़ा क्योंकि निम्न वर्ग के लोग जागरूक हो रहे थे। नशे का चलन भी इस क्षेत्र में अधिक था। लोग चाहकर भी नशा छोड़ नहीं पा रहे थे। संस्था ने प्रशिक्षित चिकित्सकों के दल से अफीम मुक्ति कार्यक्रम भी चलाया। जगह - जगह शिविर लगाते और निःशुल्क शिविर मेरे संयोजन में आयोजित हुए।

जेलू - गगाड़ी में सर्वोदय सम्मेलन, सर्वोदय प्रशिक्षण आदि कार्यक्रम के दौरान मैं सर्वोदय के चिंतक विचारक श्री सिद्धराज ढड्डा जी, जैसलमेर के सर्वोदय नेता भगवान दास जी माहेश्वरी, नागौर के प्रसिद्ध सर्वोदयी बद्री प्रसाद जी स्वामी, जयपुर के जवाहर लाल जी जैन, पूर्ण चंद जी जैन सहित अन्य राज्यों के सर्वोदय नेता, कार्यकर्ता व युवाओं के संपर्क में आया। ग्राविस की बदौलत ही मुझे उनसे मिलने, सीखने, नई जानकारीयाँ प्राप्त करने का अवसर मिला।

27 जुलाई 2005 को भाई लक्ष्मीचंद जी त्यागी दिव्य ज्योति में लीन हो गए। अचानक सभी जिम्मेदारियाँ, संस्था में बड़ी होने के कारण श्रीमति शशि बहिन त्यागी के जिम्मे आ गई। अपने वर्षों के अनुभव से, हिम्मत से, उन्होंने कार्य को संभाला। बड़े वज्रपात के बाद भी परिपक्व हुई शशि बहिन ने त्यागी जी के संस्था के रचनात्मक कार्यों का, सर्वोदयी विचार, आदर्शों को अपनाते हुए उन्हें गति दी और निरंतर जारी रखा। अपने संपर्क, सहयोग, विश्वास, अपनेपन से सभी का उन्हें सहयोग मिला। सर्वोदय परीक्षाओं को प्रतिवर्ष संपूर्ण जिले में विशेषकर ग्रामीण अंचलों में उन्होंने जारी रखा। शशि बहिन ने अपनी संस्था के माध्यम से पाली जिले में टी.बी रोग की परियोजना शुरू की, बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए पाली शहर की गरीब बस्तियों में भी उन्होंने मदद की।

कुछ दिनों की ही बात लगती है जब लॉकडाउन में उड़ीसा के मजदूरों को सोजत हाईवे पर दयनीय स्थिति में भूखमरी की स्थिति में मदद की। मेरी उस संबंध में उनसे बात हुई। मुझसे जानकारी ली, प्लान साझा कर उनकी मदद की। उसी दरमियान लॉकडाउन में मेरे कहने पर बाली उपखंड के आदिवासी क्षेत्र में राशन के पैकेट रामपुरा ग्राम पंचायत में जोधपुर से वहाँ भेजे, एक बार नहीं बल्कि दो तीन बार। शशि बहिन का अपनापन, आत्मीयता, विश्वास मेरे प्रति जीवनपर्यन्त बना रहा। छोटी - बड़ी बात, समस्याएं, अन्य संस्थाओं, सर्वोदय संस्थाओं, साथियों, स्वास्थ्य आदि की समस्याओं, कार्यकलापों व व्यवहारों की समीक्षा, हम लोग करते रहते।

जीवन संदेश

14 नवम्बर 2020 को उनकी जीवन ज्योत भले ही बुझ गई लेकिन उनके रचनात्मक कार्य, महिला सशक्तिकरण के कार्य, नशे के खिलाफ मुहिम, महिला उत्पीड़न के खिलाफ उनका जीवन संघर्ष याद रहेगा। सर्वोदय समर्पित, गाँधी, विनोबा, जे.पी. अनुयायी हमारे संपूर्ण क्रांति के साथी को श्रद्धांजली, नमन। सदैव देश के युवाओं- युवतियों के प्रेरणा स्रोत व मार्गदर्शक बने रहेंगे। जय जगत, संपूर्ण क्रांति अब नारा है, भावी इतिहास हमारा है।

राजकमल पारीक, भारत

डॉ. राजकमल पारीक एक चिकित्सक हैं व सोशल सर्विस सोसायटी के संस्थापक हैं।

- 100 -

उम्मीद का प्रकाश

मैं वन प्रौस्पर इंटरनैशनल - एक कैनेडियन गैर लाभकारी संस्था का प्रतिनिधित्व करता हूँ। यह संस्था बालिकाओं की शिक्षा और महिला सशक्तिकरण पर कार्य करती है। वन प्रौस्पर इंटरनैशनल ग्राविस के साथ 2013 से भारत के थार मरुस्थल में महिलाओं और बालिकाओं को सशक्त बनाने का कार्य कर रही है।

मैं अपने आप को भाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे ग्राविस के साथ भारत के थार मरुस्थल में महिलाओं और बालिकाओं के जीवन में सुधार लाने का अवसर मिला। मैं ग्राविस को धन्यवाद देता हूँ कि उनके कारण थार मरुस्थल के गरीब परिवारों की बालिकाएं कई घंटों पैदल चल कर पानी लाने की जगह विद्यालय जाने लगी हैं। इसके साथ ही बालिकाएं और उनका परिवार अब साफ पानी पीते हैं और पोषित भोजन खाते हैं। बालिकाओं की माँ भी बहुत खुश हैं और उन्हें विश्वास है कि उनकी बालिकाओं का भविष्य उज्ज्वल है, इस सब के लिए ग्राविस को धन्यवाद।

शशि जी ने ग्राविस के प्रतिनिधि होते हुए अपना जीवन थार मरुस्थल के समुदायों के सशक्तिकरण को समर्पित कर दिया। उन्होंने दलित महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों में संगठित और सशक्त किया जिससे वह परिवार और ग्रामीण समितियों में अपनी आवाज उठा सकें।

उस क्षेत्र में जहाँ खाने और पानी की कमी थी और जहाँ महिलाओं और बालिकाओं का काम पानी लाना था; शशि जी वहाँ उम्मीद की एक किरण थीं। शशि जी की कोशिश को धन्यवाद, आज उनके कारण हजारों परिवारों को स्वच्छ पानी, पोषित भोजन और खुशहाली मिली। शशि जी को बहुत याद किया जाएगा।

राजू अग्रवाल, कनाड़ा

श्री राजू अग्रवाल ओटावा के एक व्यवसायी हैं एवं वन प्रोस्पर इंटरनेशनल के संस्थापक और कार्यकारी निदेशक हैं। ग्राविस के लंबे समय से सहयोगी रहे हैं।

- 101 -

शशि जी का मार्गदर्शक स्वभाव

अति सम्मानीय शशि जी एक प्रबुद्ध व्यक्ति थीं, जो लोगो को बहुत स्नेह करती थीं और उनका बहुत ध्यान रखती थीं। प्रेम, सहानुभूति, न्याय, समानता, अहिंसा और साथ से उन्होंने सशक्तिकरण और विकास के लिए काम किया। मैं, मेरी पत्नी और मेरा परिवार उनके जीवन से बहुत प्रभावित रहा हैं और उनके आदर्शों पर जीवन व्यतीत करने के लिए प्रतिबद्ध है।

मुझे उनके साथ कई अवसरों पर साथ जाने का मौका मिला - जैसे 2017 में जमनालाल बजाज पुरुस्कार जिसकी अध्यक्षता श्री अरूण जेटली और श्री राहुल बजाज ने की थी और इसी प्रकार एक यूरोप दौरे पर भी मैं उनके साथ था। शशि जी और त्यागी जी ने अपने सहकर्मियों को हमेशा अपना एक परिवार माना। हम हमेशा उनको याद करेंगे और उनके दिखाए मार्ग पर चलेंगे।

राजेन्द्र कुमार और चन्द्रावती, भारत

श्री राजेन्द्र कुमार एवं श्रीमती चन्द्रावती एक दम्पति हैं जो शशि जी और ग्राविस के 35 वर्षों के साथी हैं।

- 102 -

हमारी प्रिय शशि बहिन

मैं शशि बहिन से प्रथम बार कब मिली, यह मुझे याद नहीं है। शायद किसी राष्ट्र स्तरीय मीटिंग में मिली हूँगी वे कई राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं में सदस्य थीं, परन्तु यह याद है कि पहली बार से ही वे मुझे बहुत सरल स्वभाव की लगी, बिना लुकाव - छियाव के अपने भावों की सरल अभिव्यक्ति उनकी विशेषता थी।

उनकी और मेरी मित्रता बहुत लम्बी नहीं रही व दो एक दशक के बाद ही वह समाप्त हो गई। क्योंकि उनके असमय निधन ने उस कर्मठ किन्तु सरल महिला को हमसे छीन लिया। उनका पूरा जीवन कर्मठता और समर्पित सेवा का उदाहरण रहा था। इसकी एक झलक मुझे देखने को तब मिली जब उनके आमंत्रण पर मैं उनके सेवा क्षेत्र राजस्थान के गाँवों में उनके साथ लोगों के बीच गई। मैंने जो सबसे महत्वपूर्ण बात देखी, वह भी शशि बहिन की ग्रामीण महिला पुरुषों व बच्चों के बीच उपस्थिति, वे इतनी सहज थीं और महिला पुरुष यहाँ तक कि बच्चे भी उनके साथ इतने सहज थे मानो वे रोज ही साथ रहते होंगे। ग्रामजनों से ऐसा सम्बन्ध जोड़ना रचनात्मक काम का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। ग्राविस के द्वारा राजस्थान के सूखे गाँवों में खेती के लिए भी पानी जुटाना और मनुष्यों व पशुओं के लिए भी पीने का पानी जुटाना, वर्षा की एक - एक बूंद का संचय करने की तकनीक का विस्तृत फैलाव मैंने देखा था। साथ ही महिलाओं

जीवन संदेश

को दुग्ध सहकारी समितियाँ चलाने का कौशल, दूध का हिसाब रखना, दूध की गुणवत्ता पर नियंत्रण करना तथा उसके विक्रय पर नजर रखना - सारा काम राजस्थान की घूँघट धारी महिलायें पूरे आत्म विश्वास से कर रही थीं। इन सब प्रवृत्तियों के भौतिक स्वरूप को गढ़ते हुए शशि बहिन ने उन में गरीब से गरीब तथा अमीरी की ओर चढ़ रहे बड़े किसानों, सभी से वह सरल आत्मीयता जोड़ी थी, उसे मैं देख पाई थी।

उस दिन ही उन्होंने सुना एक मुस्लिम युवा महिला के पति का बिजली का करन्ट लग जाने से निधन हो गया था। सुनते ही शशि बहिन उस युवा महिला से मिलने को आतुर हो गई, 'बेचारी जोहरा अपने गाँव व बिरादरी में जागृति लाने वाली वह पहली महिला रही है, उसने अपने घर से बदलाव लाना शुरू किया। इस समय जोहरा को हमारी मदद चाहिए, उससे आज ही मिलना जरूरी है। भले ही इसके कारण संस्था में पहुँचने में शाम को दो घंटों की देरी हो जायेगी'। हम जोहरा के घर गये, उसके चारों ओर बैठी महिलायें जोर से रो उठीं, जोहरा रोई व उस ने बातें भी की व परिवार व गाँव की जागृति के लिए काम करते रहने का दम भी दिखाया शशि बहिन को देखते ही उसे यह दृढ़ता आ गई थी।

उसी यात्रा के समय मैं एक दिन दूसरी दिशा के गाँवों में गई थी। छोटे - छोटे मिट्टी के घर, उनके चारों ओर मिट्टी की दीवारों की ही चार दीवारी तथा भारी लहंगो व चोली पहने लम्बे घूँघटों वाली महिलायें तथा बड़ी पगड़ी और लम्बी धोती वाले पुरुष हमें एक लिपे-पुते साफ घर में ले गये जहाँ हमको महिलाओं के साथ बैठने का मौका मिला था। इन गाँवों में दूर - दूर तक हरियाली न थी, हवा चल रही थी उसमें धूल नहीं रेत के कण उड़ रहे थे। मुझे अधिक याद नहीं कि वहाँ और क्या क्या था और हमने किस विषय की बातें की थी, पर ऐसी कठिन स्थिति वाले गाँव में भी शशि बहिन का सेवा कार्य चलता था और वहाँ भी उनकी लोगों से आत्मीयता जुड़ी थी।

शशि बहिन के शरीर को एक विचित्र सी बीमारी ने हमारे साथ से छीन लिया पर उनकी याद को तो कोई नहीं छीन सकता। स्मृतियों के ये आधे सुमन उनको श्रद्धांजलि स्वरूप अर्पित है।

राधा भट्ट, भारत

सुश्री राधा भट्ट एक जानी मानी गाँधीवादी चिन्तक हैं व गाँधी शांति प्रतिष्ठान की पूर्व अध्यक्ष हैं।

- 103 -

स्थायी यादें

शशि जी जिन्हें लोग प्यार से बहिन जी बुलाते थे, उन्होंने सेवा, समर्पण और सरलता का जीवन व्यतीत किया। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन ग्रामीणों, बच्चों और सामाजिक कार्यों को अर्पित किया। मैंने अपने जीवन के कई वर्ष तक उनके साथ काम किया।

पिछले साल दिवाली पर उनके निधन की खबर सुन मेरा हृदय भर आया। बहिन जी गंगाजल की तरह अमर हैं और हमारे हृदय में समर्पण और ममता की मूर्त बन के रहेंगी।

राम अकबाल सिंह, भारत

श्री राम अकबाल सिंह एक अध्यापक, समाज सेवक और ग्राविस के भूतपूर्व सदस्य हैं।

- 104 -

सम्मान व श्रद्धाजलि

शशि जी को लोग प्यार से बहिन जी बुलाते थे। गाँधीवादी विचारधारा से प्रेरित शशि जी ग्रामीण क्षेत्रों के गरीब परिवारों के लिए कार्य करती थी। वह एक महान महिला थीं, जिन्होंने महिला सशक्तिकरण की चुनौती पर काम किया। बहिन जी एक सामाजिक और उत्साहवर्धक व्यक्ति थी। 'सादा जीवन उच्च विचार' के मार्ग पर चलकर उन्होंने अपना जीवन यापन किया। अपने जीवन के अंतिम दिनों में भी स्वास्थ्य की चिंता किए बिना वह मेरे साथ बहीखातों और अन्य विषयों पर चर्चा करती थीं।

14 नवम्बर, 2020 को उन्होंने आखिरी सांस ली। उनके दिखाए मार्ग पर चलना हमारे लिए आवश्यक है। अपने सम्पूर्ण जीवन में उन्होंने सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध काम किया। मैं उनको सच्ची श्रद्धाजलि अर्पित करता हूँ।

राम अवतार सिंह, भारत

श्री राम अवतार सिंह 30 वर्षों से ग्राविस परिवार का हिस्सा हैं।

स्मारिका

शशि बहिन से मेरा पहला परिचय 1991 मार्च के महीने में हुआ था जब मैं वायुसेना की नौकरी छोड़कर आया था और राजस्थान वॉलैन्ट्री हेल्थ एसोसिएशन में नया - नया शामिल हुआ था। उसके बाद मिलने की प्रक्रिया सतत चलती रही। जब भी जोधपुर आना हुआ, खाना शशि बहिन के पास ही होता था चाहे वो डालडा बिल्डिंग में रहते थे या बाद में मिल्कमैन कॉलोनी में। उनकी सबसे बड़ी विशेषता जिसने मुझे हमेशा प्रभावित किया वह थी उनकी एकदम सही निर्णय लेने की क्षमता।

खोज परियोजना के आकलन के लिए मुझे गगाड़ी जाना था। मेरे लिये यह एक धर्मसंकट था क्योंकि एक और मुझे तटस्थ रहकर अपनी रिपोर्ट तैयार करनी थी वहीं दूसरी और त्यागी जी राजस्थान वॉलैन्ट्री हेल्थ एसोसिएशन के अध्यक्ष थे। मेरी इस समस्या का जिक्र जब मैंने शशि जी से किया तो उन्होंने बड़े आराम से इसका समाधान कर दिया। उन्होंने मुझे कहा कि आप इस बात को दिमाग से निकाल दो कि त्यागी जी आपकी संस्था के अध्यक्ष हैं। आपको जो परियोजना की प्रगति और काम दिखे आप वही स्पष्ट लिखो। हम इस पर बड़े खुश होंगे। हमारी कमियां जरूर बताना ताकि हम उसमें सुधार कर सकें।

1997 में जोधपुर में मलेरिया को लेकर एक दो दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम ग्राविस के कार्यकर्ताओं के लिए रखा गया था। मैं उसमें संदर्भ व्यक्ति के रूप में भाग ले रहा था। समस्या यह थी कि अगले दिन तूफान आने वाला था और सभी चिंतित थे। हमने लगभग यह तय कर लिया था कि इसे स्थगित कर देंगे। शशि जी ने तुरंत सलाह दी कि आप जल्दी शुरू करें, भोजन का अवकाश बहुत छोटा करें और जल्दी खत्म कर दे ताकि सब रात तक अपने घर पहुँच जायें। हालांकि मैंने वॉलैन्ट्री हेल्थ एसोसिएशन 2001 में छोड़ दिया था किन्तु इसकी सदस्य संस्थाओं से जुड़े बहुत ही कम व्यक्तियों से मेरा सम्पर्क बना रहा। शशि जी उनमें प्रमुख थीं।

त्यागी जी के देहावसान के बाद जब मेरा पहली बार शशि जी से मिलना हुआ तो मुझे समझ नहीं आ रहा था कि अपनी संवेदनाएं किस प्रकार प्रकट करूँ किन्तु इतने सहज ढंग से बातचीत हुई कि सारी झिझक जाती रही। जब भी वे जयपुर आती तो हमेशा फोन करती थीं व उनसे मिलना अवश्य होता था। हमेशा मेरे परिवार के बारे में पूछती रहती थीं।

ऐसे व्यक्तित्व चाहे शारीरिक रूप से हमारे साथ आज नहीं हों किन्तु उनके द्वारा किये गये कार्य और उनका मिलनसार व्यक्तित्व हमेशा हमारे मस्तिष्क में आजीवन बना रहेगा।

रामबाबु भट्ट, भारत

श्री रामबाबु भट्ट एक विकास विशेषज्ञ हैं जो कई संस्थाओं से जुड़े हैं।

हमारे दिलों में

जैसा नाम, वैसा काम - शशि त्यागी। जन्म स्थली उत्तर प्रदेश, गृह नगर का सबकुछ त्याग कर पश्चिमी राजस्थान में सेवा भावना का मार्ग अपनाया। दूर - दूर के गाँव - गाँव, ढाणी - ढाणी तक पैदल चलकर एक ही जिज्ञासा कि निर्धन कौन है? क्यों है?

जाति कोई भी हो। बस निर्धन परिवार से मिलना मूल मंत्र था। तत्पश्चात् चिन्तन निर्धनता निवारण का। जब तक निवारण न हो जाय तब तक आराम कहाँ ? ऐसी दृढ़ संकल्प वाली साहसी शशि त्यागी।

गाँधी, विनोबा व जयप्रकाश के विचार से प्रेरित उनके सदमार्ग पर चलकर अपने, सहयोगियों को भी चलना सिखाया। प्रातःकालीन सर्व धर्म प्रार्थना, राम धुन (भजन) एकादश व्रत स्वाध्याय और फिर श्रमदान सभी सहभागियों ने अपनाया - प्रेरक शशि त्यागी।

14 नवम्बर सन् 2020 को अन्धकार पर प्रकाश विजय पर्व मनाना था तब अपने आप को तिमिर में लीन हुई शशि त्यागी, और एक अनन्त ज्योति छोड़ गई।

राम स्वार्थ प्रसाद, भारत

श्री राम स्वार्थ प्रसाद पिछले 25 वर्षों से अधिक समय से ग्राविस के साथ कार्यरत हैं।

नारीत्व का प्रतीक: साहस, करुणा और अनुशासन का एक उदाहरण

मेरे लिए सम्मान की बात हैं एक ऐसी महिला के बारे में लिखना जो बेजोड़ हिम्मत और करुणा के साथ पिछड़े एवं निर्धन समाज के लिए काम करती थीं। मैं उनसे पहली बार तब मिला जब मैं 2008 में ग्राविस में सम्मिलित हुआ। सूती खादी साड़ी पहने और चेहरे पर मुस्कान लिए एक महिला ध्यान और सम्मान आकर्षिक करने के लिए यह काफी था। मैंने पहली बार उनको समुदायिक भोजन स्थल में देखा और हमारा परिचय हुआ। वहाँ चर्चा होने के बाद मैंने उन्हें जानना शुरू किया। कई बार हम एक साथ स्थानीय दौरे पर गए और यह बहुत आश्चर्य की बात थी कि वह हर व्यक्ति और उनके परिवार के सदस्यों को अच्छे से जानती थीं। ग्रामीण समुदाय के प्रति उनका प्यार अतुलनीय है जिसे उनके जाने के बाद भी लोग याद करते हैं। वह शारीरिक रूप से हमारे बीच नहीं है लेकिन हम सामुदायिक विकास के लिए जो भी करते हैं उसमें उनके होने का अहसास हमें प्रति पल होता है।

जीवन संदेश

वो हमारे लिए ग्राविस की सचिव से कहीं ज्यादा थीं। कई बार, कई जगह व्यवसायिक अनुशासन और निजी संवेदना एक साथ देखने को मिलती थी। संगठन के कार्यों के बारे में बात करते समय वह कभी भी मेरा और मेरे परिवार की कुशलक्षेम पूछना नहीं भूलती थीं। वह हमेशा मेरी बेटियों के बारे में बात करतीं। मुझे बहुत अच्छा लगता जब वह मेरे स्वास्थ्य के बारे में पूछतीं। कई बार उनके स्वास्थ्य के कारण उन्हें आराम करना पड़ता, लेकिन फोन पर वो हमेशा उपलब्ध रहतीं। मैं भाग्यशाली हूँ कि खराब स्वास्थ्य होते हुए भी उन्होंने कभी मुझसे मिलने से मना नहीं किया। उनका हिम्मत बाँटना अकथनीय हैं। मैं उनके साथ कई बार क्षेत्रीय और राष्ट्रीय सभाओं में गया। मैंने देखा कि वह अपने मजबूत विचार प्रशासन, संस्थाओं और दानदाताओं के सामने रखती थीं। एन.जी.ओ. में काम करते हुए मैंने सीखा कि हमें भलाई करने के लिए कई प्रकार से काम करना होगा। वह हमेशा इस बात पर जोर देती की हम सब प्रतिभागी हैं, केवल प्राप्तकर्ता नहीं। उनका मानना था कि हम जो काम करते हैं वह सिर्फ एक परियोजना पर नहीं बल्कि समुदाय पर उन मूल्यों को लागू करना है। हम संगठित मूल्यों का प्रतिरूप हैं और इसके किसी भी स्थिति में इसके साथ समझौता नहीं किया जा सकता।

जब भी मैं किसी हिम्मती और दयालू महिला के बारे में चिंतन करता हूँ, उनका नाम सबसे पहले आता है। उन्होंने हर उम्र की महिला को अपने अधिकारों और अपने मूल्यों पर भरोसा रखने की प्रेरणा दी। नारीत्व के प्रतीक का वह सच्चा उदाहरण हैं। ऐसे व्यक्तित्व का शब्दों में व्याख्यान करना बहुत मुश्किल है। मैं ऐसे उत्तम व्यक्ति की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता हूँ। वो अपना आशीर्वाद हम पर बनाए रखें।

राहुलमिश्र, भारत

श्री राहुल मिश्र 2008 से ग्राविस में कार्यक्रम समन्वयक हैं।

एक प्रेरक आत्मा

हमारी सबसे पहली और अनंत याद यही है कि - वास्तव में वह एक प्रेरक आत्मा थीं। हम बहुत भाग्यशाली थे कि हमें शशि जी के साथ थार मरुस्थल में सफर करते समय व्यतीत करने का अवसर मिला। ग्राविस में बिताए गए उस समय की यह एक जीवंत याद है। अपने सफर के दौरान हमने कई विषयों पर बात की और उनकी जो बात हमें सबसे ज्यादा पंसद आयी, वह थी उनकी लगन और उनका विश्वास। वह एक स्वार्थहीन व्यक्ति थीं और मुझे अच्छे से याद है कि वह अपनी हिम्मत, मेहनत और आस्था से मरुस्थलीय समुदायों में बहुत गहरा और सार्थक बदलाव लायीं।

शशि जी का धन्यवाद कि उन्होंने अपनी बुद्धिमता, ज्ञान और अनुभव हमें प्रदान किए। हम जानते हैं कि वह एक चिरस्थायी परंपरा छोड़ गयी है जिसके बिना ग्राविस एक असाधारण संगठन नहीं बन पाता, जो ग्राविस आज है।

रीना चौहान और मीनेश पटनी, यू.के.

श्रीमती रीना चौहान और श्री मीनेश पटनी यू.के. से एक दम्पति हैं और लम्बे समय से ग्राविस के मित्र रहे हैं।

“आगे का रास्ता - उनके सपने को जीना और वह हमारे साथ हैं”

“बेटा, मैं बहुत खुश हूँ कि आप अपने पिता के काम को आगे बढ़ा रही हो और आगे भी समाज में योगदान देने की योजना बना रही हो। मैं खुश हूँ, ऐसी युवा अवस्था में जब अधिकांश युवा कॉरपोरेट सेक्टर के प्रति आकर्षित हो रहे हैं, आपने सामाजिक सेवा क्षेत्रों को, विशेष रूप से अपने पिता के सपनों को अपने पंख देने के लिए चुना है।” माँ जी ने मार्च 2020 की एक सुहानी शाम को मुझे यह कहा और यह आखिरी बार था जब मैंने उनसे लगभग 45 मिनट बात की थी। उनके हर शब्द में मैंने उन्हें सहयोग, एकजुटता, विश्वास, सहानुभूति और स्वैच्छिक स्वयंसेवा के बारे में बोलते हुए पाया।

अगर मैं पीछे मुड़कर देखूँ तो मैं अपने रिश्ते के प्रारम्भ की सही तिथि नहीं दे सकती, क्योंकि मैं वह भाग्यशाली व्यक्ति हूँ, जिसके माता-पिता को उन्होंने युवा अवस्था के दौरान प्रशिक्षित किया था। मैं कह सकती हूँ कि मैं उन्हें जन्म से जानती थी, उन्होंने मुझे बढ़ते हुए देखा और मुझे राजस्थान के एक प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान में पढ़ाने का विशेष रूप से ध्यान रखा। मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे उनका मार्गदर्शन, प्रेम, दया और मातृत्व से पूर्ण सुरक्षा मिली। यह सच है कि मैंने अपनी माँ को बहुत कम उम्र में खो दिया, मैं तब 4 साल की थी। लेकिन उन्होंने

जीवन संदेश

मेरी माँ की एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में यात्रा की कहानियों को गर्व से साझा करके उन सभी यादों को जीवित रखा और वह मेरी माँ का उदाहरण देती थीं कि वह कितनी ऊर्जावान थीं, उनका व्यक्तित्व कितना जीवंत था। वह सब मुझे बताने के पीछे मतलब था ताकि मैं अपनी माँ को खोने के बारे में दुखी होने के बजाय अपनी माँ की तरह ऊर्जावान बनूँ। मुझे प्रेरित करने का ये उनका अनोखा तरीका था।

साल बीतते गये - मैंने उन सभी सीखों, शिक्षा और आशीवादों के साथ आगे बढ़ने का अपना रास्ता निकाला। भगवान का मास्टर प्लान कोई नहीं बदल सकता। मेरे मिशन, दृष्टिकोण ने भी एक आकार लिया और उस सपने की कल्पना करना शुरू कर दिया जो मेरे पिता ने देखना शुरू किया था, जो अब वे मेरे द्वारा ही जी सकते थे। दुःख की बात यह है कि इन सभी परिवर्तनों के बीच, उनकी स्वास्थ्य स्थिति ने अचानक मुझे तोड़ दिया। इस समय भी “माँ जी” ने बहुत दूर राजस्थान से मुझे अपने शब्दों के साथ बांध कर रखा, हिम्मत दी और केवल एक वाक्य ‘सब कुछ ठीक हो जायेगा’ से आशा बंधाई। कहा कि अपनी भावना को संभालो, उन सपनों को पूरा करो और पापा के साथ एक अच्छा समय बिताओ।

वह हमेशा मार्गदर्शन करती हैं और बताती हैं कि हम सभी जरूरतों को सामग्री या आर्थिक मदद प्रदान नहीं कर सकते। जो हम सबको दे सकते हैं वो है, उनके संघर्ष के पीछे की पीड़ा, दुःख, कहानी सुनने का समय और उन्हें उचित सलाह दे सकते हैं। उनका मार्गदर्शन करें, मार्ग प्रशस्त करें और उन्हें सही रास्ता दिखाएं ताकि वे अपने प्रयासों को सही दिशा में लगा सकें। इस प्रकार के समर्थन से किए गए प्रयास लंबे समय तक बने रहेंगे और दूर तक जाएंगे। उन्होंने और बाबूजी (श्री लक्ष्मी चंद त्यागी जी) ने इस तरह के प्रेरक विचारों के साथ मेरे जीवन की नींव रखी और अब इसे आगे बढ़ाने की मेरी बारी है। मैं रचनात्मक कार्यों के लिए उनके विचारों के साथ काम करना जारी रखती हूँ और उनके सपने को हर तरह से जीने की खाहिश रखती हूँ, चाहे मैं कितनी भी दूर जाऊँ। “गाँधी युवा वाहिनी” के माध्यम से नेटवर्क बनाने की कोशिश मैं प्रयासरत हूँ।

वह यहीं हैं, और हमेशा हमारे साथ रहेंगी।

रुचि मित्रा, भारत

सुश्री रुचि मित्रा शेड नामक संस्था का उड़ीसा में नेतृत्व करती हैं और बचपन से शशि जी को जानती हैं।

लखनऊ का संबंध

शशि जी से मेरी पहली मुलाकात सन् 2003 में 'वैल्स फॉर इंडिया' (अब वॉटर हार्वेस्ट) के राजस्थान में ग्राविस संस्थान के दौरे के समय हुई। उसके बाद सेंट क्लेर और सेट फ्रांसिस ट्रस्ट के ट्रस्टी के तौर पर कई बार मैं ग्राविस गई, पर यहाँ मैं व्यक्तिगत स्तर पर अपनी भावनाएं व्यक्त कर रही हूँ।

मैं एक एंग्लो इंडियन हूँ और हमेशा से थी। परन्तु पिछले 16 वर्षों के जीवन में मैं इस तथ्य को अधिक आत्मविश्वास से कह पाई हूँ। इसका श्रेय मैं अपने जीवन की दो महत्वपूर्ण महिलाओं को देती हूँ - 'वैल्स फॉर इंडिया' की सहसंस्थापक, प्रोफेसर मैरी ग्रे और ग्राविस की सहसंस्थापक शशि जी।

मुझे शशि जी से पता चला कि उनका जन्म लखनऊ में हुआ था, जहाँ मेरी माँ भी पैदा हुई थीं और 1944 तक रहीं। उन्होंने मेरे पिता, एक अंग्रेजी सेना के अधिकारी से शादी की, जो बर्मा अभियान में थे। वे दोनों 1945 में इंग्लैंड गए जहाँ मैं पैदा हुई थी। लेकिन मुझे कभी नहीं बताया गया कि मैं एंग्लो इंडियन हूँ, हालांकि मैं हमेशा जानती थी कि मैं ज्यादातर अंग्रेज लोगों की तरह नहीं दिखती थी।

बाद की कई यात्राओं में शशि जी ने मुझे मेरी पहचान को समझने में मदद की - उन्होंने लखनऊ में अपने जीवन के बारे में बात की और वहाँ मेरी माँ के लिए कैसा जीवन रहा होगा। उन्होंने उस जटिल व्यक्ति को समझने में मेरी मदद की जो मेरी माँ बनीं और क्यों? उन्होंने मुझे थोड़ा और प्यार करना सीखने में मदद की।

उस समय जिस प्यार और देखभाल के साथ उन्होंने मेरी मदद की मैं उससे बहुत अभिभूत थी। भले ही उनका काम अंतहीन था पर उन्होंने हमेशा मेरे साथ बैठने का समय निकाला और मेरा ख्याल रखा। समर्पण, जिसके साथ उन्होंने खुद को रेगिस्तान के लोगों के लिए अथक परिश्रम करने का वचन दिया था और विशेष रूप से महिलाओं और लड़कियों के सशक्तिकरण के लिए भाव उनके भीतर गहराई से आया। यह भाव सहज दिखाई दिया लेकिन वह गहराई उनके काम के प्रति प्रतिबद्धता के माध्यम से बनी थी और गाँधी के दर्शन से जो उनके जीवन और चरित्र को आकार देने में मदद करता है। मैं इंग्लैंड में पुजारी बनने वाली पहली महिलाओं में से एक थी - मुझे इस बात का थोड़ा अनुभव है कि एक महिला के रूप में शक्तिहीन होने और पूर्ण रूप से इंग्लिश नहीं होने का क्या मतलब है। हमने अलग - अलग विश्वासों को साझा किया, हो सकता है, लेकिन हमने बहुत समान दर्शन साझा किए हैं। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि हमने एक - दूसरे के प्रति स्नेह और स्वीकृति साझा की।

मैं शशि जी से मिलने के लिए बहुत भाग्यशाली हूँ - ग्राविस के काम का समर्थन करना एक छोटा सा तरीका है जिसके लिए मैं उन्हें उनके द्वारा दिए गए उपहारों के लिए धन्यवाद दे सकती हूँ, जो अपने जीवन काल में उन्होंने कई लोगों को दिया - समानता और आत्म - मूल्य

जीवन संदेश

का उपहार। एक ऐसी दुनिया में जो अभी भी अपने से भिन्न लोगों के लिए असमान और असम्मानजनक है - हम भी इन अनमोल उपहारों को बांटते रहने की प्रतिज्ञा कर सकते हैं। मेरे धर्म व विश्वास में हम कहते हैं : उन पर प्रकाश निरन्तर चमकता रहे; वह चिर शांति में आराम करें और उनकी महिमा में वृद्धि हो।

रेवरेंड जीन बोल्टन-रेनॉल्ड्स, यू.के.

सुश्री रेवरेंड जीन बोल्टन-रेनॉल्ड्स एक पुजारी व सामाजिक कार्यकर्ता हैं तथा वेल्स फॉर इंडिया, वाटर हार्वेस्ट व ग्राविस से जुड़ी रहीं।

- 111 -

निरन्तर मार्गदर्शन

बहिन जी के साथ एक लम्बे समय की कुछ पलों की याद आपको बताना चाहता हूँ। बहिन जी से मेरी पहली मुलाकात वर्ष 1970 में उत्तराखण्ड के वरिष्ठ सर्वोदय नेता स्व. मानसिंह रावत जी के निवास स्थान हल्दूखाता में हुई। तक से लेकर 14 नवम्बर 2020 तक उनके साथ रहा। मुलाकात में जब उन्होंने अपना परिचय दिया तो उन्हें मैं अपना गुरु मानने लगा। उस समय गरीबी के कारण मेरी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। मेरी शादी में बहिन जी ने आर्थिक सहायता के अलावा एक माँ का रोल भी निभाया क्योंकि मेरी माँ बचपन में ही मर चुकी थीं। बहिन जी व श्री त्यागी जी उत्तराखण्ड की विकास योजना बनाने के लिए आये थे। उन्होंने अपना कार्यालय डालनवाला, देहरादून में बनाया था। उस समय बहिन जी ने योजना कार्य में सहयोग के साथ - साथ हमारे लिए खाना भी बनाया। विकास योजना का कार्य पूर्ण होने के बाद बहिन जी ने बनवासी सेवा आश्रम गोविन्दपुर, उत्तर प्रदेश को छोड़कर राजस्थान को अपना कार्यक्षेत्र चुना। सम्पन्नता तथा अनुकूल परिस्थिति छोड़कर विपरीत जलवायु व सूखा क्षेत्र में अपनी कर्म भूमि को स्वीकार किया।

वर्ष 1979 में मैं व बहिन जी सुचेता कृपलानी शिक्षा निकेतन, माणकलाव राजस्थान में काम करने आ गये। प्रारम्भ के समय क्षेत्र में अकाल, अशिक्षा व अफीम की लत जैसी बहुत सी समस्याएँ थी। यहाँ आने पर अपना न तो कोई घर था और न ही कोई साधन। कई वर्षों तक मैं उनके साथ पैदल चला व क्षेत्र की जानकारी ली। बहिन जी की समझ बनी कि बालिकाओं की शिक्षा व कृषि के विकास पर विशेष ध्यान देना होगा। इसी सोच के साथ ग्राविस को जन्म दिया। उन्हीं आवश्यकताओं पर पूरा जीवन बिताया।

रोशन लाल कुकरेती, भारत

श्री रोशन लाल कुकरेती एक वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता हैं व ग्राविस व त्यागी परिवार से 40 वर्ष से जुड़े हैं।

- 112 -

चिरस्थायी यादें

जोधपुर में आपसे और आप के पति स्व. श्री एल.सी. त्यागी जी से हम अपनी पहली मुलाकात को कभी नहीं भुला पायेंगे। यह बात सन् 2000 की है। मैं और मेरी स्वर्गवासी पत्नी सुरेन जयपुर से ट्रेन से आए, हम रेलवे स्टेशन से सीधा ग्राविस जोधपुर पहुँचे। हमारा स्वागत करने के बाद हमें बहुत ही स्वादिष्ट शाकाहारी भोजन परोसा गया। इतनी स्वभाविक और शाश्वत मित्रता हमारी पहली भेंट 2000 से 2019 तक रही। मुझे, सुरेन और घिसलेन को आप कम से कम सात बार खुद स्टेशन लेने आयीं। आपने हमें ग्राविस की प्रभावशाली उपलब्धियाँ बतायीं।

आपके साथ बिताए गए समय की बहुत सी यादें हैं - पहली मुलाकात से रामपुरा गाँव के ग्राविस कार्यालय में शाम को चाय पीते हुए बात करना, महिलाओं के सम्मेलन में हिस्सा लेना, अहमदाबाद के आश्रम में गाँधी सभा के लिए जाना।

आपकी मौजूदगी बहुत खास थी। आप जब भी किसी गाँव (या स्कूल, अस्पताल, बाढ़ राहत क्षेत्र) में जातीं, लोगों के चेहरे पर चमक आ जाती थी और वो मुस्कुराहट के साथ आप का स्वागत करते थे।

शशि जी - हमें प्रेरणा देने के लिए आपका धन्यवाद। आपकी कमी हमारे लिए बहुत कष्टदायी है।

रॉबर्ट और घिसलेन एफ सैन्डबर्ग, स्वीडन

श्री रॉबर्ट और सुश्री घिसलेन स्टॉकहोम, स्वीडन से एक दम्पति हैं और पिछले 20 वर्षों से ग्राविस और शशि जी के मित्र हैं।

- 113 -

पुरानी यादें

मैं ग्राविस को सन् 1995 से जानती हूँ और शशि जी ने मुझे ग्राविस के साथ काम करने और ग्रामीण महिलाओं की सेवा करने का अवसर प्रदान किया। शशि जी मेरी मार्गदर्शक थीं और उन्होंने मुझे सम्मान और स्वतंत्रता से जीना सिखाया। मैं अपने जीवन में उनकी भूमिका को हमेशा याद रखूँगी और उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करती हूँ।

लीला बाई, भारत

सुश्री लीला बाई ग्राविस परिवार का हिस्सा हैं और ग्राविस की बोर्ड सदस्य हैं।

श्रीमती शशि त्यागी - एक विशेष प्रकाश जो हमारे साथ रहेगा

मैंने हमेशा ऐसे नेताओं की प्रशंसा की है जो बुद्धिमान हों। उन बुद्धिमान पुरुषों और महिलाओं की नहीं जिन्होंने केवल किताबों से अपनी बुद्धिमत्ता सीखी है, बल्कि विशेष रूप से वे जिन्होंने इसे अपने आसपास के समाज में दूसरों के साथ रहकर जीवन से और प्रकृति से सीखा है। वे एक विशेष आभा या प्रकाश से घिरे होते हैं जो दूसरों को उनके पास खींचता है। वह आभा जिसे आप खरीद, सीख या समझा नहीं सकते। वह आभा जो दुर्लभ है क्योंकि वह उनके अंदर से उत्पन्न होती है।

इस प्रकार का प्रकाश शशि जी के साथ था। वह एक मजबूत और समझदार महिला थीं, वह जहाँ भी गयीं, उन्होंने सभी का ध्यान आकर्षित किया - उन्होंने लोगों को एक साथ जोड़ा। उन्होंने लोगों की उत्पत्ति, सामाजिक वर्ग, जाति या धर्म की परवाह किए बिना उनका स्वागत किया, उनकी बात सुनी और उनके हित अनुसार काम किया। यही कारण है कि वह कई लोगों के बीच सम्मान, प्रशंसा और प्यार प्राप्त करती थीं।

मैं 2004 में पहली बार शशि जी से मिली थी, मैं फिनलैंड में 'यूनिवर्सिटी ऑफ ताम्पेरे' विश्वविद्यालय के छात्र संघ के छह अन्य छात्रों के साथ भारत में ग्राविस आई थी। यह पहली बार था जब मैंने यूरोप से बाहर यात्रा की थी। मेरे लिए भारत में सब कुछ नया और रोमांचक था, लेकिन बहुत अलग भी। त्यागी परिवार - लक्ष्मी चंद जी, शशि जी, प्रकाश जी और वसुंधरा जी - और पूरी ग्राविस टीम ने हमारा गर्मजोशी से स्वागत किया। शशि जी, एल.सी जी और टीम ने हमारे लिए अपना घर खोल दिया, अपना समय दिया, हमारी देखभाल की और राजस्थान के थार के गाँवों में रहने वाले लोगों और इस दूरस्थ, शुष्क रेगिस्तानी क्षेत्र की जलवायु के कारण रोजाना आने वाली चुनौतियों के बारे में अधिक जानने के लिए हमें उनके साथ यात्रा करने की अनुमति दी। उन्होंने हमें अपनी आँखों को खोलने में मदद की कि हमारे पास कितना कुछ है और जीवन में आखिरकार क्या महत्वपूर्ण है। उन्होंने हमें जीवन के बारे में बहुत कुछ सिखाया जो शायद हमने पहले कभी नहीं सीखा था।

2007 में, मैं ग्राविस के लिए एक स्वयंसेवक के रूप में भारत लौटी और अपने शोध के लिए कुछ महीने राजस्थान की महिलाओं से जानकारी इकट्ठा करने में बिताए। काश्वी और प्रीशा को प्यार करने वाली दादी के रूप में मुझे शशि जी का दूसरा पहलू देखकर खुशी हुई। दूसरी बार एक नई दादी के रूप में अपनी जिम्मेदारियों के बावजूद उनके पास अभी भी यात्रा करने और दूसरों को समय समर्पित करने की ऊर्जा थी। मैं हमेशा उस दिन को याद करूँगी, जिस दिन उन्होंने मेरे पति को गाँधीजी के जन्मदिन को मनाने के लिए उन्हें विशेष मेहमान के रूप में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया था। एक यादगार जन्मदिन जिसमें थार के विभिन्न गाँवों के लोग एक साथ इस प्रबुद्ध महिला के भाषण को सुनने के लिए आए थे। उनके चारों ओर

एक विशेष आभा थी व उनका भाषण सैंकड़ों लोगों की आत्माओं को छू गया। हमने स्वाभाविक रूप से अपने जीवन में उनके नक्शेकदम पर चलने की कोशिश की, लेकिन हम पूरी तरह से में ऐसा करने में असमर्थ थे।

मैं अब दो बेटियों की माँ हूँ और मैंने अक्सर उन्हें संस्कार देने के साथ भारत में रहने के बारे में बताया है, क्योंकि इन सभी वर्षों के बाद मेरे दिल का एक हिस्सा अभी भी त्यागी परिवार और ग्राविस के साथ है। मैं अपने बच्चों में उसी तरह के विनम्र, देखभाल करने वाले, निःस्वार्थ, लेकिन मजबूत और साहसी रवैये से गुजरने की हिम्मत देने की इच्छा रखती हूँ जो मैंने शशि जी में देखा था जब मैं पहली बार उनसे पंद्रह साल पहले मिली थी। वो दूसरों की सहायता में अपना समय देने और जरूरत पर उनका साथ देने में हमेशा तत्पर थीं। जब भी बाहर ठंड होती है मैं अपने कंधों पर शशि जी से प्राप्त कंबल डाल देती हूँ। मैं अभी भी उनके कुछ प्रकाश को महसूस कर सकती हूँ। शशि त्यागी - आपको एक प्रेरणा देने वाली महिला होने के लिए धन्यवाद, और आप सदा बनी रहेंगी! आपकी आत्मा को शांति मिले - आपकी आत्मा को शांति मिले!

लौरा पॉलस, बेल्जियम

सुश्री लौरा पॉलस बेल्जियम के ब्रसेल्स में गैर सरकारी और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के लिए काम करने वाली एक सलाहकार हैं और ग्राविस की पुरानी मित्र हैं।

- 115 -

मेरा आभार

सबसे पहले मैं शशि जी और त्यागी जी को श्रद्धाजलि अर्पित करता हूँ। मैंने उनके साथ जीवन के कई पल बिताए और मैं आज जो कुछ भी हूँ शशि जी और त्यागी जी की वजह से हूँ। मेरी उनसे मुलाकात मेरे नानाजी डॉ. हठीला जी ने करवायी। वह उनके करीबी मित्र थे। सन् 1996 में मैंने ग्राविस के साथ काम करना शुरू किया और आज भी कर रहा हूँ।

ग्राविस में कार्य कर रहे हर व्यक्ति को परिवार का सदस्य माना जाता है। शशि जी ग्राविस में कार्य कर रहे हर परिवार का विशेष ध्यान रखती थीं। कठिन समय में वह हर किसी का साथ देती थीं। शशि जी एक प्रभावपूर्ण शिक्षक थीं और जातियों की समानता में विश्वास करती थीं।

शशि जी के प्रति मेरी भावनाओं को कुछ शब्दों में व्यक्त करना बहुत कठिन है। 14 नवम्बर 2020 को दिवाली के दिन वह हमें छोड़ गयीं। मैं और मेरी पत्नी बहुत दुःखी हुए और हमने अपने घर में उस दिन दिवाली होते हुए भी रोशनी नहीं कि क्योंकि हमें ऐसा लगा जैसे हमारी अपनी माँ चली गयी हो।

मैं अपने जीवन में शशि जी और त्यागी जी द्वारा किए गये योगदान के लिए उनका आभारी हूँ और उनको सच्ची श्रद्धाजलि देता हूँ।

वरुण शर्मा, भारत

श्री वरुण शर्मा ग्राविस के साथ 1996 से वित्त अधिकारी के रूप में कार्य कर रहे हैं।

- 116 -

हमेशा के लिए बदल दिया

मुझे मेरे पति की माँ और पिता जीन बाल्टन-रेनॉल्ड्स और डेनिस बैरो द्वारा 2020 में भारत आमंत्रित किया गया था। वे नियमित रूप से सेंट क्लेर और सेंट फ्रांसिस ट्रस्ट के साथ अपने काम के हिस्से के रूप में राजस्थान आते रहते थे और उनकी पिछली यात्रा पर शशि जी उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के लिए ग्राविस केन्द्र में से एक कार्यक्रम आयोजित करने की योजना के बारे में बता रही थी, जहाँ सैकड़ों महिलाएं और उनकी बेटियाँ एक साथ महिला विकास और सशक्तिकरण की ओर अपनी यात्रा का जश्न मनाएंगी। समानता के लिए प्रयास एक ऐसा विषय है जिसके बारे में मैं हमेशा से उत्साहित रही हूँ और इसलिए मैं इस कार्यक्रम में शामिल होने का अवसर पाकर रोमांचित थी।

मैं पहले कभी भारत नहीं गयी थी, पहुँचते ही मैं इसकी जीवंतता से अभिभूत हो गई, और इसके स्नेही, अद्भुत लोगों द्वारा और भी अधिक। मैंने जीन और डेनिस से शशि जी के बारे में बहुत कुछ सुना था, लेकिन उनसे प्रत्यक्ष मिलने के लिए मैंने कुछ भी तैयार नहीं किया था। जैसे ही हम मिले, मैं उनके खुलेपन और विनम्रता से प्रभावित हो गयी। भाषा की बाधा के बावजूद उनसे बात करना बेहद आसान था।

केन्द्र की यात्रा पर शशि जी ने मुझे वहाँ होने वाले अविश्वसनीय काम के बारे में बताया, उनके परिवार को इसे बनाने के लिए कई सालों का प्यार और मेहनत लगे। उनकी कहानी अभूतपूर्व थी, उन्होंने सौम्यता व जूनून के साथ बात की जिसे मैंने पहले कभी अनुभव नहीं किया था और शायद फिर कभी नहीं होगा। इससे पहले कि हम दिन के उत्सव की शुरुआत करें मुझे केन्द्र के दौरे पर ले जाया गया, कुछ शिक्षकों से मुलाकात की और उन कक्षाओं को देखा जहाँ लड़कियों ने कम्प्यूटर कौशल, सिलाई, मसालों को तैयार करना और पढ़ना लिखना कैसे सीखा। दीवारों को प्रेरणादायक भारतीय महिलाओं की तस्वीरों जैसे कि अंतरिक्ष यात्री और इंजीनियर, ओलंपिक खिलाड़ी, पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और केन्द्र की कई महिला नायकों से सजाया गया था। केन्द्र की संचालक महिलाएं छात्रों के साथ काम करने में अपना समय बिताती हैं, लगातार अथक बैठकों के साथ स्थानीय गाँवों में अभिभावकों को अपनी लड़कियों को शिक्षा की पेशकश करने की अनुमति देने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। उनकी उपलब्धियों को देखना बहुत ही अवर्णनीय था।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 198 पुरुषों और महिलाओं ने उस उत्सव में भाग लिया और उनकी ऊर्जा और जोश चमत्कारी थे। फिर भी जब शशि जी बोलने के लिए उठीं तो सब चुप हो कर उन्हें सुनने लगे। उपस्थित लोगों के अन्दर मैं उनके लिए प्यार और सम्मान को महसूस कर सकती थी। उन्होंने हम सभी को याद दिलाया कि हम वहाँ क्यों एकत्रित हुए थे, कभी-कभी बीच में महिलाओं ने ताली बजाने और खुश होने के द्वारा सम्मान दिखाया। तब मैं और जीन प्रत्येक ने मंच पर बारी-बारी से हमारे कैरियर के बारे में बात की, हमारी जीवन यात्रा और प्रेरणा के कुछ शब्द साझा किए। जीन और मैं दोनों ऐसे वातावरण में काम करते हैं जहाँ महिलाओं का प्रतिनिधित्व कम किया जाता है, और हमारी दोनों कहानियों में एक ही भावना है – कि दयालुता और देखभाल करना कमजोरी का संकेत नहीं है, बल्कि महान शक्ति का संकेत है। यह एक ऐसी शक्ति है जिसे मैंने शशि जी में सबसे ज्यादा स्पष्ट रूप में देखा।

अब छात्रों की प्रस्तुत करने की बारी थी, और उन्होंने कुछ विशेष प्रस्तुत किया। 11 से 17 साल की लड़कियों ने गाने, नृत्य और भाषण द्वारा मांग की कि उन्हें स्वतंत्रता और शिक्षा की अनुमति दी जाए और उनके परिवारों को सशक्तिकरण की यात्रा में उनका समर्थन करने के लिए अनुरोध किया जाए। जब हम दूर चले गए और मैंने देखा कि कौशल केन्द्र नजरों से ओझल हो गया, तो मैं भावना से भर गयी। मैं शशि जी और उनके परिवार की वर्षों की कड़ी मेहनत, दर्द और प्यार देखकर पूरी तरह विस्मय में थी, जो उन्होंने भारत भर में हजारों लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए दिया था।

मैं अपने इस अनुभव से हमेशा के लिए बदल गयी और इसका एक बड़ा हिस्सा शशि जी की वजह से था। मैं अभी भी नियमित रूप से सुंदर नीला दुपट्टा पहनती हूँ जो उन्होंने मेरे जाने से ठीक पहले मुझे उपहार में दिया था। भले ही मैं उनसे केवल संक्षिप्त रूप से मिली थी, वह हमेशा मेरे लिए एक रोल मॉडल और प्रेरणा बनी रहेंगी।

विकी रेनॉल्ड्स, यू.के.

सुश्री विकी रेनॉल्ड्स एक डिजिटल टेक्नोलॉजी विशेषज्ञ हैं तथा ग्राविस की मित्र हैं।

स्नेह भरी यादें

शशि जी मेरी चाची थीं और मेरे पास उनके जीवन से जुड़ी अनगिनत यादें और प्रेरणास्त्रोत हैं। मैं करीब 5 वर्ष का था जब चाची जी मुझे बनवासी सेवा आश्रम लेकर आयीं। यहाँ मैं बड़ा हुआ और जीवन के मुख्य सिद्धान्त सीखे। 1980 के आरम्भ में मैं एक युवा के रूप में ग्राविस से जुड़ा।

मैंने उनके शुरूआती दिनों का संघर्ष देखा और चाची जी और चाचा जी से सरलता और नैतिक मूल्य सीखे थे। उनकी वजह से आज मैं सक्षम हो पाया। चाची जी के कारण मुझे ईमानदारी, सच्चाई और अनुशासन का महत्त्व समझ में आया। मैंने स्वास्थ्य और सामाजिक कार्यों के कई प्रशिक्षण लिये। चाची जी के नेतृत्व में ग्राविस ने गरीबों और जरूरतमंदों के लिए बहुत काम किया है। चाची जी मेरे लिए माता की तरह थीं और उनकी यादें हमेशा मेरे हृदय में रहेंगी।

विनोद कुमार, भारत

श्री विनोद कुमार 35 वर्षों से ग्राविस परिवार का हिस्सा है।

- 118 -

शशि जी – मेरी चाची और शिक्षक

आदरणीय शशि बहिन जी (हमारी चाची जी) की मेरे जीवन सफर में बचपन से लेकर आज तक अनेकों मधुर स्मृतियाँ हैं। सोचना शुरू करते ही प्रेम से स्निध्य आवाज व प्रसन्नता, आत्मविश्वास से भरपूर उनका चेहरा, खादी के सफेद कॉलर वाले ब्लाउज व साड़ी में गौरव से तनकर खड़ी देह्यष्टी सजीव होते ही आंखें स्वतः ही नमी से धुंधला जाती हैं।

वो मेरी बचपन की शिक्षिका के साथ साथ पड़ोसी भी रह चुकी हैं। शिक्षिका के रूप में उनकी खासियत रही कि वो हर बच्चा चाहे वो धुलधुसरित फटे कपड़ों में नाक बहता हुआ क्यों ना स्कूल आता हो, सभी के साथ अनुशासित परन्तु एक जैसा स्नेह भरा व्यवहार करती थी। बच्चों को खेल खिलाने, सुई धागा पिरोने से लेकर कहानियाँ सुनाकर उनके सर्वांगीण विकास कराने में रुचि रखती थी, और हर बच्चे को उसके नाम व अभिभावक के नाम से याद रखती थी।

मेरे बचपन की बात हैं कि मैं जब किसी से रुठ जाती तो अपनी बास्केट में थोड़ा सामान भर कर कहती कि अब मैं जंगल में रहूँगी, तब उस रुठी हुई बालिका को ढूँढने माँ कहीं नहीं जाती क्योंकि सबको पता होता कि उस नादान बालिका का बनवास अपनी प्रिय चाची के हाथ का खाना खाकर व उनकी रसभरी सजीव लगने वाली कहानियाँ सुनकर ही खत्म होगा। उनकी कहानियों में बच्चों में नैतिक गुणों का विकास करने की सीख होती थी।

बाद में उत्तर प्रदेश से निकलकर चाची जी व त्यागी चाचा जी ने राजस्थान के थार जिले को अपनी कर्मस्थली बनाया और आजीवन वहाँ रहकर वहाँ के पिछड़े – मजदूर किसान वर्ग की समस्याओं व उनके परिवारों के लिए काम किया। वहाँ पानी की समस्या को लेकर उन्होंने बड़ा काम किया।

चाची जी व त्यागी जी की जोड़ी एक – दूसरे की पूरक थी। दोनों ने ही समाज के उत्थान के लिए मन बना लिया और एक आरामदायक जिंदगी जो वो मेरठ या दिल्ली में रहकर जी सकते

थे, उसे छोड़ अपने उद्देश्य की पूर्ति में पूरा जीवन लगा डाला। चाचा जी की किडनी (गुर्दा) बदलने की नौबत आयी तो चाची जी ने अपनी एक किडनी हंसते - हंसते दे दी और आजीवन एक किडनी के साथ भी उनकी यात्रायें जारी रहीं। मेरी माँ के बीमार होने पर दौड़कर बनारस पहुँच गयीं। चेहरे पर वही पूर्व परिचित प्रसन्नता, थकान कहीं लेश मात्रा भी नहीं।

चाची जी हंसमुख, सबको स्नेह व अपनेपन से जोड़ने वाली तथा हर समय जोड़े रखने की चेष्टा करने वाली, अपने बड़े व गुरुजनों के साथ कहीं मीटिंग - कॉन्फ्रेंस में मिलना हो जाये तो उनकी देखभाल यहाँ तक की खाने पीने में कुछ कमी ना हो, इसकी निगरानी का भार भी स्वयं उठा लेने वाली व्यक्ति थी। ये सब उन्हें सहज था। जो मन पर अपनी अमिट छाप छोड़ गया। हम नयी पीढ़ी को इसमें से सीखने व समझने योग्य बात है, वो ये है कि बौद्धिक कुशलता व चातुर्य होना एक बात है परन्तु अन्तिम व्यक्ति से लेकर विभिन्न कमिटियों का एक्टिव मेम्बर होते हुए भी सबको उनके नामों से याद रखना व व्यक्तिगत संपर्क बनाये रखना - दूसरी बात व यह एक अनूठी विशिष्टता, जो उनमें थी। साल 2017 में “जमनालाल बजाज पुरुस्कार” से सम्मानित हुयीं। और एक बात वे साहस के साथ यात्रा से न थकने वाले व्यक्तित्व की धनी थी और हर जगह अपना परिवार बना लेती थी।

हां, अंतिम कुछ सालों में वो पेट की बीमारी से पीड़ित थी परन्तु बातचीत में थकान को झलकने नहीं देती थीं। वही मधुर आवाज अंत तक सुनायी देती रही। अंतिम समय में कोविड-19 महामारी के कारण लॉकडाउन में हम अपनी चाची जी से मिल ना सके, ना उनकी सेवा में भाग ले सकें। इस बात का सदैव दुख रहेगा।

कुछ लोग जो दुनिया से कूचकर जाते हैं वो अपने पीछे ऐसी रिक्ततायें बना जाते हैं जो कभी पूरी नहीं होती और उनकी कमी सदा महसूस होती रहती हैं।

उनकी पावन स्मृति को मेरी भाव पूर्ण श्रद्धांजलि ।

विभा प्रेम, भारत

डॉ. विभा प्रेम स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं तथा शशि जी को बचपन से जानती हैं।

महान प्रेरणा

सन् 2012 की बात है, मैं, मेरी पत्नी डॉ. क्लेयर ग्लेडेनिंग व हमारी पारिवारिक सदस्य डॉ. मैडेलीन फ्लोरिस जोधपुर में ग्राविस का काम देखने पहुँचे थे। डॉ. मैडेलीन फ्लोरिस बायोमास के क्षेत्र में दक्षिण व लैटिन अमेरिकी क्षेत्र के कई देशों में सीधे समाज के पास जाकर वैज्ञानिक व तकनीकी शोधों के व्यावहारिक प्रयोगों व संभावनाओं पर कई वर्षों तक काम कर चुकी थीं। कृषि से संबंधित वैज्ञानिक शोधों की विशिष्ट अंतर्राष्ट्रीय जनरल में संपादन का कार्य करती थीं। जब मैंने उनको बताया कि जोधपुर में समाज से जुड़ कर कार्य हो रहे हैं, तो उनकी इच्छा थी कि जल-प्रबंधन के कार्यों को देखा जाए।

इसी यात्रा में शशि त्यागी जी से लंबी चर्चाएं करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हम लोग छत पर टहलते हुए विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर चर्चाएं करते थे। व्यवहार में सौम्यता, विनम्रता व सामाजिक मुद्दों की गहरी समझ। मैं अपने जीवन में भारत में बहुत सामाजिक लोगों से मिला हूँ, लंबी चर्चाएं हुई हैं लेकिन सामाजिक मुद्दों पर जमीनी पकड़ व इतनी समझ कम ही लोगों में मिलती है। शशि जी को मैं उन विरले लोगों में रखता हूँ।

शशि जी का मानना था कि बच्चों की उचित देखभाल, स्वास्थ्य व शिक्षा इत्यादि समाज के विकास के सबसे मूल तत्व होते हैं। शायद यही विचार बेहतर व दूरदर्शी सामाजिक मॉडलों की स्थापना कर पाने में सक्षम रहा।

मुझे ग्राविस संस्था की कुछ बालवाड़ियों को देखने का सौभाग्य मिला था। बालवाड़ियों का घरेलू वातावरण देखकर आश्चर्य हुआ था, इन बालवाड़ियों में महिलाएं अपने शिशुओं को छोड़कर मजदूरी करने के लिए निश्चितता से जा पाती थीं, क्योंकि उन्हें विश्वास रहता था कि उनके बच्चों की देखभाल बहुत अच्छे तरीके से होगी।

ग्राविस संस्था के प्रोत्साहन व सहयोग से रेगिस्तान व पथरीले इलाके के गांवों में शिक्षण केन्द्र स्थापित हुए। एक गाँव में ग्राविस के सहयोग से युवाओं ने स्थानीय संसाधनों के द्वारा एक विद्यालय शुरू किया। देशभर में होने वाले शिक्षा के प्रयोगों की जानकारी प्राप्त करके उन प्रयोगों को इस विद्यालय में लागू करने का प्रयास किया जा रहा है। ऐसे ही पग-पग करके यह विद्यालय खड़ा हुआ। जब यह विद्यालय सुचारु रूप से संचालित होने लगा तो ग्रामीणों ने इस विद्यालय को सरकार को सौंप दिया।

इस विद्यालय के बच्चों का आत्मविश्वास, सफाई, स्वअनुशासन से मैं बहुत ही अधिक प्रभावित हुआ था। विद्यालय में प्रवेश करते ही बच्चों के जूते-चप्पल करीने से पंक्तिबद्ध रखे मिलते हैं। कक्षा के अंदर बच्चे करीने से बैठते हैं और अपने सामान को व्यवस्थित तरीके से रखते हैं। बच्चे व उनके कपड़े साफ-सुथरे होते हैं। शिक्षकों के न होने पर भी बच्चे बिना शोर-शराबा किए हुए शांति से अध्ययन कर रहे होते हैं। बच्चे संगीत, कला व खेलकूद आदि भी सीखते हैं।

गरीब परिवारों के इस विद्यालय के बच्चों का स्वअनुशासन महंगे शहरी आधुनिक विद्यालयों के बच्चों से बहुत ही बेहतर है जबकि इस विद्यालय में सुविधा के नाम पर केवल तीन-चार कमरे हैं, बिना दरवाजे की चारदीवारी है और प्रवेश द्वार पर बांस लगा रहता है।

यह अद्वितीय बात है कि एक पिछड़े गाँव के लोग अपने दम पर अपने बच्चों के लिए विद्यालय शुरू करते हैं। गलती करके सीखते हुए, गिर कर खड़े होते हुए, धीरे धीरे संसाधनों का इंतजाम करते हुए विद्यालय को आदर्श बनाते हैं और फिर निर्विकार भाव से विद्यालय सरकार को सौंप देते हैं।

इतनी सुक्ष्म व दूरदर्शी सोच व समझ के वाहक होने का ही परिणाम रहा कि शशि जी ने सामाजिक प्रतिबद्धता को अपने परिवार की परंपरा में आगे बढ़ाया। उच्च शिक्षा प्राप्त अपने पुत्र को भी सामाजिक प्रतिबद्धता के लिए प्रेरित किया। समाज को एक बेहतर मानव-संसाधन दिया, विचार प्रवाह दिया।

डॉ. प्रकाश त्यागी राजस्थान के रेगिस्तान के इलाकों में जहाँ आम लोगों को स्वास्थ्य सुविधायें उपलब्ध नहीं थी, लोगों के पास रोजमर्रा की जरूरत तक के लिए भी पानी उपलब्ध नहीं था, आर्थिक विकास के अवसर उपलब्ध नहीं थे, ऐसे क्षेत्रों में पारंपरिक तकनीकों को सहेजने का प्रयास करते हुए जल-प्रबंधन का काम करते आ रहे हैं। लोगों के आर्थिक विकास के लिए कृषि, पशु-प्रबंधन व स्व रोजगार के लिए काम करते आ रहे हैं। गाँव - गाँव में हर एक घर तक पहुंच कर लोगों की स्वास्थ्य सेवा करते आ रहे हैं। सुविधा संपन्न अस्पताल की स्थापना की है, आपातकाल स्थितियों के लिए एंबुलेंस की व्यवस्था है। जल प्रबंधन व ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकल्प खड़े किए हैं।

प्रकाश त्यागी चाहते तो दुनिया के किसी भी विकसित देश में अपना कैरियर बना सकते थे। लेकिन उन्होंने अपने माता-पिता के पद चिन्हों पर चलकर सामाजिक प्रतिबद्धता व सार्थकता को जीवन की दिशा चुना। ऐसे गंभीर, साहसी व प्रतिबद्ध निर्णय को ले पाने में प्रेरणा स्रोत प्रकाश त्यागी के मात पिता रहे। ऐसे माता पिता को मेरा नमन। शशि त्यागी को मेरा नमन।

विवेक सामाजिक यायावर, आस्ट्रेलिया

श्री विवेक सामाजिक यायावर एक इंजीनियर व पत्रकार हैं तथा लम्बे समय से ग्राविस के मित्र रहे हैं।

प्रेरणा स्रोत

एक माँ का हृदय इतना बड़ा होता है कि वो उसमें पूरे विश्व नहीं बल्कि पूरे ब्रह्माण्ड को समा सकती है। मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि मुझे दो माँओं का प्यार मिला - मेरी अपनी माँ व शशि जी। लेकिन जैसा की इतिहास कहता है, मैं कृष्ण नहीं बन पाया। शशि जी से मिले प्रेम और मार्गदर्शन का मैं हमेशा आभारी रहूँगा।

पहली बार मैं उनसे डॉ. सुब्बाराव जी की एक सभा में मिला। उनके शब्द मेरे कानों में गूँजते है - “विशाल अपने दिमाग से सारी नकारात्मकता निकाल दो और आशावादी बनो”। मुझे उनके साथ में खुशी मिलती थी। जब उन्हें पता चला कि मैं बागपत से हूँ तो उन्होंने झट से कहा मेरा भी उस क्षेत्र से संबंध है। जब भी वो दिल्ली आतीं मुझे फोन करतीं और मिलने के लिए कहतीं। फिर किसी से परिचय करवातीं तो ऐसे करवातीं जैसे वो मेरी माँ हो। हमेशा मुझसे कहतीं मुझमें अच्छा काम करने की बहुत क्षमता है। यह संयोग है मेरी दोनो माताओं का नाम शशि है।

एक बार उन्होंने मुझसे कहा वो मुझे अपने साथ अमेरिका की यात्रा पर ले जायेंगी। दुर्भाग्यवश ऐसा ना हो सका। जब भी विदेश से लौटती मेरी लिए कुछ ना कुछ ले आतीं। मैं कहता इसका मूल्य कैसे चुकाऊँगा तो वह हंस देती थी। एक बार हम जयपुर में थे, राजस्थान के मुख्यमंत्री की किसी सभा में भाग लेने के लिए। रहने की व्यवस्था पांच सितारा होटल में की गई थी, पर वो मुझे अपने साथ अपनी बेटी के घर ले गई रहने के लिए, मानो मैं परिवार का सदस्य हूँ।

उनकी स्मृति में शब्द कम पड़ जायेंगे। उनके कामो की परम्परा को आगे बढ़ाना ही सच्ची श्रद्धांजलि होगा।

विशाल जैन, भारत

श्री विशाल जैन एक पत्रकार व सामाजिक कार्यकर्ता हैं व शशि जी को लम्बे समय से जानते हैं।

उत्साहवर्धक व मार्गदर्शक

शशि जी से मेरा परिचय वर्ष 2009 में ग्राविस में आने के पश्चात हुआ और उनके द्वारा ही मेरा ग्राविस में चयन हुआ। उनके साथ रहने से मुझे प्रतीत हुआ कि कितनी सरल स्वभाव, बहुमुखी प्रतीभा की धनी एवं दुःखी व गरीबों की वे मसीहा थीं। इसके अलावा शशि जी हमेशा मेरे कार्य के प्रति मेरा मार्गदर्शन करती थीं। आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती थीं।

वर्ष 2014 में मेरे पति को अस्पताल में भर्ती करवाना पड़ा। मैं बहुत दुःखी हुई एवं ग्राविस छोड़ने का मानस बना लिया था लेकिन शशि जी ने मेरा बहुत धैर्य बढ़ाया, कहा ऐसे काम नहीं छोड़ते हैं। ईश्वर पर भरोसा रखो, वह सब अच्छा करेगा। इस तरह मैंने ग्राविस में आगे कार्य किया जो आज उन्हीं का सहयोग व प्रोत्साहन है।

वीणा माथुर, भारत

सुश्री वीणा माथुर पिछले 10 वर्षों से ग्राविस के साथ काम कर रही हैं।

सिएटल से ग्राविस की यात्रा पर शशि जी की प्रिय यादें

मेरे पति और मैं 'पीपल फॉर प्रोग्रेस इन इंडिया (PPI)' सिएटल में स्वयंसेवक हैं, जिनका ग्राविस के साथ एक लंबा संबंध रहा है। हम पहली बार शशि जी से उनकी सिएटल यात्रा के दौरान 2006 में मिले थे। हमने पीपीआई के लिए स्वेच्छा से शुरुआत की थी और थार के रेगिस्तान में जल संसाधनों पर ग्राविस के काम से प्रेरित थे। इन वर्षों में हमने पीपीआई समर्थित परियोजनाओं के माध्यम से ग्राविस के काम के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त की। शशि जी की हमारी सबसे प्रिय यादें फरवरी 2016 से हैं जब हम ग्राविस गए और शशि जी हमें थार रेगिस्तान में उनके काम को दिखाने के लिए ग्राविस केन्द्रों के बहु-दिवसीय दौरे पर ले गईं।

इस यात्रा में हम महाराष्ट्र के दो पी.पी.आई. समर्थित गैर सरकारी संगठनों के सदस्यों के साथ थे, जो ग्राविस के काम के बारे में जानने में रुचि रखते थे। यह हम सभी के लिए शशि जी के साथ हमारे मार्गदर्शक के रूप में सीखने का एक उल्लेखनीय अवसर था। हमने थार रेगिस्तान में दूर-दराज के गाँवों में ग्राविस के जमीनी काम का अनुभव किया। हमने देखा कि कैसे वर्षा जल इकट्ठा करने वाले टांकों (भूमिगत टैंकों) ने परिवारों के लिए पीने का पानी मुहैया कराया, खड़ीन (अर्धचन्द्राकार रूप से खेतों में तटबंधों) ने खेती के लिए मिट्टी की नमी में सुधार करने में मदद की और नाड़ियों (तालाबों) ने पूरे गाँवों के लिए पानी उपलब्ध कराया। हमने स्वच्छ पेयजल के लिए

जीवन संदेश

जैव-रेत फिल्टर के निर्माण, स्थापना और उपयोग को भी देखा - एक पहल जिसे पीपीआई ने विकसित करने और बढ़ाने में मदद की। शशि जी हमें कई अन्य स्कूलों और खान मजदूरों के बच्चों के लिए एक प्राथमिक स्कूल में ले गईं। वह विशेष रूप से उन बालिकाओं पर गर्व करती थीं जो आठवीं कक्षा तक पढ़ पाईं। एक खेत में जाने के दौरान हम जोधपुर में पढ़ रही एक युवती से मिले, जो अपने परिवार के साथ रबी रोपण में मदद करने के लिए वापस आई थी। अपनी दो-दिवसीय यात्रा में हमने ग्राम विकास समितियों (वी.डी.सी.) की कई बैठकों में भी भाग लिया और देखा कि ग्रामीणों द्वारा ग्राविस क्षेत्र के कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शन में निर्णय कैसे सहयोगात्मक रूप से किए जाते हैं। वीडिजी ग्राविस के समुदाय में काम करने के तरीके की एक अनूठी पहल है और हमने महसूस किया कि वीडिजी को साथ जोड़ने से ही ग्राविस का काम इतना प्रभावी और स्थायी है।

अपनी पूरी यात्रा के दौरान हम शशि जी के ग्रामीणों के साथ गहरे संबंधों, उनकी गर्मजोशी और विनम्रता से प्रभावित हुए, जिसके कारण वे उनसे जुड़े थे। उनकी सरल जीवन-शैली, कड़ी मेहनत के लिए उनकी क्षमता और उनका तप बहुत प्रेरणादायक था। उन्होंने युवा महिलाओं को घूंघट छोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया, जो राजस्थान में विवाहित महिलाओं के चेहरे को ढंकती हैं, जबकि गाँवों में परम्पराओं की गहरी जड़ें हैं। हमने अपनी यात्रा के दौरान शशि जी के साथ कई हल्के-फुल्के पल भी साझा किए क्योंकि हम सभी एक केन्द्र में एक साथ रहते थे। हमारे प्रवास की आखिरी रात शशि जी ने स्थानीय लंगा कलाकारों की एक मंडली को आमंत्रित किया जिन्होंने हमारे साथ अपने अद्भुत पारम्परिक संगीत और नृत्य को साझा किया।

हमें शशि जी के निधन से गहरा दुख हुआ है लेकिन यह जान कर आश्वस्त हैं कि ग्राविस अच्छे हाथों में है और शशि जी और एल.सी. त्यागी जी द्वारा शुरु किया गया काम न केवल जारी है, बल्कि वर्षों से विस्तार कर रहा है। हम प्रकाश और परिवार और ग्राविस समुदाय को अपनी शुभकामनाएं भेजते हैं।

वंदना दाते और सतीश थट्टे, यू.एस.ए.

सुश्री वंदना दाते और श्री सतीश थट्टे पी.पी.आई., यू.एस.ए. से जुड़े हैं तथा ग्राविस के मित्र हैं।

अम्मा को नमन

वह एक जीवंत आत्मा थीं, जहाँ भी जातीं हर जगह को रोशन कर देतीं। वह हमेशा खुश रहतीं और चाहे जैसी भी समस्या हो मदद करने के लिए हमेशा तत्पर रहती थीं। अम्मा से हमेशा मेरी बातचीत शांतिपूर्वक, निष्कर्ष तक पहुँचाने वाली और सार्थक होती थी। उनके साथ मेरी अंतिम बातचीत अभी तक मेरे कानों में गूँजती है, फिर अचानक याद आता है और यह विश्वास करना कठिन हो जाता है कि वह हमारे बीच नहीं रही। जिस समय मैं बहुत कठिन समय व्यतीत कर रही थी, उसी समय उनका निधन हो गया।

उनके परिवार से उनके निधन की खबर सुनना एक आपदा जैसा था। मुझे हमेशा ये सकारात्मक अहसास होता है कि वह हमारे आसपास हैं और हमारी रक्षा कर रही हैं। इस विश्वास के साथ जीना आसान है। मैं भाग्यशाली हूँ कि मैं उन्हें पिछले दो दशकों से जानती हूँ। मेरा उनके साथ प्यार, सम्मान और सहानुभूति का खास रिश्ता था। वह परिवार का हिस्सा थीं, अम्मा मेरी बहन की सास थीं। उनका निधन पूरे परिवार के लिए एक अपार क्षति है। वह मेरे जीवन में एक उदार व्यक्ति थीं जिनको खो देना मेरे लिए एक गहरा सदमा है। उनकी खुबियों को शब्दों में वर्णित कर पाना बहुत मुश्किल है। उनका ख्याल आते ही एक ही शब्द मेरे दिमाग में आता है, - 'एक दाता'। वह प्यार, स्नेह और सहयोग की दाता थीं। मेरे पास आज भी उनकी हाथों से बनायी ऊनी टोपी है। उन्हें याद करके मेरी आँखें आज भी नम हो जाती हैं, और यही यादें जीवन की सच्ची पूँजी हैं। अपनी बातों में वह हमेशा यात्रा के लिए प्यार, अपने अनुभव और विश्व के अलग - अलग हिस्सों से एकत्रित कहानियाँ साँझा करती थीं। वह एक उत्कृष्ट व सम्मानित महिला थीं जिनको जीवन जीने व मदद करने का का जुनून था। मेरी अंतिम यादें उनके लिए एक सरल, मेहनती और कठिन समय में हिम्मत न हारने वाले व्यक्ति की हैं। अम्मा के बारे में लिखना और खो देने का दुःख व्यक्त करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है।

इन सब के अतिरिक्त अम्मा - आपका धन्यवाद हर उस चीज के लिए जो आपने दी, आपका समय और सौहार्द। आपको नमन करते हुए आपका सम्मान करती हूँ। आप हमेशा याद आयेंगी।

वंदना सिंह, यू.एस.ए

सुश्री वंदना सिंह कैलिफोर्निया में रहती हैं और कार्य करती हैं और वह शशि जी की सम्बन्धी हैं।

जारी रखने के लिए एक विरासत

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्रीमती शशि त्यागी की स्मृति में पुस्तक प्रकाशनीय हैं।

विगत तीन दशकों से अधिक गाँधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र, जोधपुर से उनका सक्रिय जुड़ाव रहा। श्रीमती शशि बहिन जी त्यागी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर इस पुस्तक हेतु मुझे भी कुछ लिखने का अवसर दिया है। जब से मैंने शशि जी को देखा, उनके सम्पर्क में आया तो लगा कि एक कार्यकर्ता ही नहीं बल्कि गाँधी के सपनों का भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में ही बसता है। इस सपने को साकार करने में उन्होंने उल्लेखनीय भूमिका निभाई। मुझे तो अपने युवाकाल में ऐसा महसूस हुआ कि उन्होंने बापू के कथनी व करनी में समानता के सिद्धांत का ही अंतिम सांस तक आचरण किया। मुझे वे दिन आज भी याद आते हैं जब मेरे पिता स्वर्गीय नेमिचंद जैन 'भावुक' जी के सोजती गेट स्थित गाँधी अध्ययन केंद्र पर प्रायः कार्यक्रमों में आती थीं व उनसे निरंतर मार्गदर्शन प्राप्त करती थीं। यहाँ तक कि घर पर मेरी माताजी के साथ बैठकर सदैव कहती हम तो गाँधी परिवार के ही सदस्य हैं।

ग्राविस के अधिकांश कार्यक्रमों में आमंत्रित करतीं और सदैव कहतीं ग्रामीण युवाओं को गाँधी के रचनात्मक कार्यक्रमों हेतु प्रेरित करें। मैं भी मना नहीं कर पाता और अपनी बात, गाँधी - सर्वोदय की बात के माध्यम से जो भी कहता, शशि दीदी का कहना यही होता कि मैं युवाओं को समाज व देश के प्रति उनके दायित्वों को समझाने में सक्षम हूँ। युवा प्रभावित होते हैं। ग्राविस के द्वारा चलाए गए कार्यक्रमों की सूची बहुत लम्बी है। देश - विदेश के मेहमानों ने ग्राविस के कार्यक्रमों में भागीदारी निभाई एवं सराहना की। मेरे मन में सदैव यही कामना रहती है कि विचारों व कर्म से जुड़ा रहूँ जिससे दीदी की स्मृतियाँ सदैव बनी रही।

दीदी का गाँधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र से जुड़े रहने का एहसास हमें उनकी याद दिलाता रहेगा। ग्राविस के सभी लोगों के साथ मिल-जुल कर उनके कार्यों को विराम नहीं लगने देंगे, सतत् जारी रखते हुए उसे और आगे बढ़ायेंगे।

शरद जैन, भारत

श्री शरद जैन एक गाँधीवादी चिन्तक हैं तथा गाँधी शांति प्रतिष्ठान, जोधपुर के प्रमुख हैं।

शशि जी की स्मृतियाँ

मैं शशि जी से पहली बार 1990 की शुरूआत में सिएटल में एक मित्र के घर पर मिला और तुरन्त ही राजस्थान में गरीब ग्रामीणों के प्रति उनके समर्पण को देख कर उनसे प्रभावित हो गया। हमारी पहली परियोजना ग्राविस के साथ 1989-94 के बीच चमड़े के कार्य का प्रशिक्षण और विपणन को लेकर थी। उसके बाद हमने ग्राविस के साथ बहुत सारी परियोजनाओं पर साथ काम किया जैसे कि - पत्थर खान मजदूरों का पुनर्वास, जल संरक्षण, ग्रामीण महिलाओं के लिए कौशल प्रशिक्षण और बच्चों के स्वास्थ्य की देखभाल। हमारा नया प्रयोग रहा - कृषि में सुधार, वर्षा जल के संचयन के लिए टांका बनाना और जैविक - जल फिल्टर।

इस दौरान शशि जी हमारे बहुत करीब रहीं और अपनी उपस्थिति से हमें लाभान्वित किया। सन् 2015 में मैं अपनी पत्नी के साथ जोधपुर उनसे मिलने आया था। वह उसी समय एक गाँव से लम्बी यात्रा कर आयी थीं फिर भी हमें तुरन्त वहाँ वापस ले जाने की इच्छुक थीं। उनकी कर्मशक्ति और उत्साह की हम सब प्रशंसा करते हैं। हम निश्चित ही उनकी दिव्य उपस्थिति को याद करते रहेंगे।

शिमोगा श्रीनाथ, यू.एस.ए.

श्री शिमोगा श्रीनाथ पीपुल फॉर प्रोग्रेस इन इंडिया के समर्थक हैं और ग्राविस के लम्बे समय से मित्र रहे हैं।

एक दिन का प्रभाव

दशकों से शशि जी को जानने वालों की कहानियों को सुनकर मुझे अपनी ईर्ष्या पर नियंत्रण करना पड़ता था - वह भावना जो शशि जी के मूल्यों के प्रतिकूल थी। इसके बजाए, उनके जीवन के अंतिम वर्षों में उनको जानना मैं अपना सौभाग्य मानती हूँ और विशेष रूप से एक अद्भुत, जादुई और हाँ, जीवन बदलने वाला दिन मैंने उनके साथ बिताया।

मैं संयुक्त राज्य अमेरिका में 'डाईनिंग फॉर वीमेन' नामक एक संगठन से जुड़ी हूँ जिसने ग्रामीण स्वास्थ्य, गाँवों में प्रजनन स्वास्थ्य, शिक्षा, फार्मसी सेवाओं, घरेलू उद्यानों का समर्थन व सहयोग करने के लिए ग्राविस को अनुदान दिया। 2018 के अंत में ईमेल के माध्यम से प्रकाश से मेरा परिचय हुआ, जब हम अनुदान का समर्थन करने के लिए कुछ धन एकत्रित कर रहे थे। अगले महीने जब मैं जोधपुर में थी तो मैं प्रकाश के पास पहुँची, प्रकाश का समय लेने के बारे में चिंतित थी, और ग्राविस के काम के बारे में और जानना चाहती थी। न केवल ग्राविस ने

जीवन संदेश

मेरे साथ बहुत समय बिताया, बल्कि उन्होंने मुझे एक गाँव में स्वास्थ्य शिक्षा कक्षाओं को देखने के लिए आमंत्रित किया। और शशि जी ने मुझे स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम देखने और ग्राविस की पहली परियोजनाओं में से एक का दौरा करने और मेरे साथ दिन बिताने के लिए अपने बहुमूल्य समय का उपहार दिया।

उस दिन का हर पल मेरे लिए उतना ही अनमोल है जितना रेगिस्तान में पानी की एक बूंद। मैंने गांधीवादी सिद्धांतों के बारे में कई बातें सीखीं, कैसे एक गहन रुढ़िवादी गाँव में मासिक धर्म और प्रजनन स्वास्थ्य के बारे में पढ़ाया जा सकता है। उन कई तरीकों के बारे में सुना जो ग्राविस ने रेगिस्तान को जीवन के लिए अनुकूल बनाने में अपनाया।

लेकिन उस दिन हमने जो कुछ भी किया उससे परे, मुझे कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि जिसे शब्दों में बयान करना कठिन है। इसका वर्णन करने की कोशिश में मैंने अपने सबसे प्यारे दोस्तों और परिवार को बताया कि यह सबसे करीबी क्षण था जब मैंने महसूस किया कि मैं एक संत की उपस्थिति में थी।

यह अनुभूति एक ऐसे सार को महसूस कर रही थी जिनका पूरा अस्तित्व स्वयं के लिए नहीं दूसरों के भले के लिए था। वह पूरी तरह से सहज थी, जो समझती थीं उन उपलब्धियों को जिन्हें ग्राविस ने पूरा किया है। लेकिन कभी भी अपने स्वयं के योगदान को दिखाने और बढ़ावा देने के लिए आवेग महसूस नहीं किया। यह उन सभी की आँखों में दिख रहा था जो उन्हें जानते थे और बहुत सम्मान से देखते थे - और उनका प्यार भी देख रहे थे। दिन के दौरान उन्होंने अपनी कहानी साझा की और उनकी विनम्रता के बावजूद मैंने उनकी बहादुरी, निस्वार्थता और मिशन के प्रति गहरे समर्पण के बारे में बहुत कुछ सीखा और महसूस किया। मैंने जो भी सीखा उसे याद रखने की बहुत कोशिश करती हूँ और उस पर अमल करने का प्रयास करती हूँ।

जब एक स्थानीय सरकारी स्कूल में बच्चों के सामने मुझे विशिष्ट अतिथि की तरह आवागमन मिली क्योंकि बच्चे पहले कभी एक पश्चिमी व्यक्ति से नहीं मिले थे तो मुझे झिझक महसूस हुई। अचानक, मैं स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम के शुभारंभ की सभी तस्वीरों में थी। शशि जी को मुझसे ज्यादा महत्त्व दिया जाना चाहिए था, लेकिन मुझे विश्वास है कि उन्होंने ऐसा कभी नहीं सोचा, वो सहज और सरल थीं। मेरे लिविंग रूम की दीवार पर ग्राविस प्रोजेक्ट में महिलाओं द्वारा तैयार कागज से बनी मसाले की चक्की की रंगीन मूर्ति लगी है जिससे शशि जी की दैनिक याद आती है। इसकी सुंदरता इसके अर्थ में है और यह गाँव का प्रतिनिधित्व करती है। यह सुंदर है क्योंकि यह मुझे शशि जी की याद दिलाती है। पिछली बार सर्दी में जोधपुर की यात्रा में फिर शशि जी से मिलने का अवसर मिला। उस मुलाकात में कभी नहीं सोचा था कि यह आखिरी बार होगा। मुझे अभी भी पूरी तरह से समझ नहीं आ रहा है कि यह कैसे संभव हो सकता है कि वह ग्राविस का मार्गदर्शन करने के लिए अब नहीं रहीं। कुछ नुकसान, आपकी आत्मा को समझने में अधिक समय लेते हैं। मैं यहूदी हूँ और किसी प्रिय की मृत्यु पर हम

कहते हैं, “उसकी याद एक आशीर्वाद हो सकती है।” मुझे पता है कि शशि जी की स्मृति और उनकी विरासत वास्तव में एक महान आशीर्वाद है।

मेरे बारे में: मैं वाशिंगटन, डी.सी. से कुछ ब्लॉक दूर रहती हूँ और एक वकील हूँ जिसने अपना अधिकांश जीवन नागरिक अधिकारों और स्वास्थ्य देखभाल नीति पर काम करने में बिताया है। आज, मैं महिलाओं और बालिकाओं को सशक्त करने की मांग करने वाले संगठनों पर ध्यान केन्द्रित करती हूँ और ‘सांभली यू.एस.ए.’ की अध्यक्ष हूँ।

शीरीन आरेन्ट, यू.एस.ए.

सुश्री शीरीन आरेन्ट वाशिंगटन डी.सी. की एक वकील हैं तथा शशि जी व ग्राविस की मित्र हैं।

- 127 -

लोकतंत्र का आधार

आप एक अद्भुत प्रतिबद्ध दम्पति थे, श्री लक्ष्मी चन्द जी और श्रीमती शशि त्यागी जी। कुछ समय के लिए उन्हें रेनकूट के जंगलो में बने श्री प्रेम भाई और डॉ. रागिनी प्रेम के आश्रम में उनका साथ मिला। वहाँ के स्थानीय निवासी आदिवासी थे जिनकी अपनी संस्कृति थी। वहाँ का वातावरण आधुनिक सभ्यता से प्रभावित नहीं हुआ था।

रेनकूट, उ.प्र. के बनवासी सेवा आश्रम से त्यागी दंपति एक और अविकसित क्षेत्र माणकलाव और गगाड़ी गए, जहाँ आदिवासियों के लिए काम करते हुए उन्होंने ग्राविस को शुरू करने की योजना बनाई। ग्राविस, बनवासी सेवा आश्रम और हजारों संस्थाएँ महात्मा गाँधी से प्रेरित हैं और इन सभी संस्थाओं का हमारे देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। महात्मा गाँधी ने हमें बहुत से मूल्यवान उपहार दिए – आज़ादी, स्वाभिमान, कार्य संस्कृति, रचनात्मक कार्यक्रम आदि।

सर्वोपरि, गाँधी जी ने भारत माता को समर्पित, निःस्वार्थी कार्यकर्ताओं की एक सेना प्रदान की। बहुत से गाँधी आश्रमों, विद्यापीठों और शिविरों से कार्यकर्ता आए, इसके साथ ही बहुत सी ब्रिटिश जेलों को प्रशिक्षण केन्द्र बनाया गया। हमें यह याद रखना चाहिए कि जब भारत आज़ाद हुआ उसी समय 100 से भी ज्यादा छोटे – बड़े देश आज़ाद हुए। आज भी एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमरिका के ये देश याद करते हैं कि किस तरह महात्मा गाँधी ने बिना बंदूक और पैसों के आज़ादी दिलायी थी, और इससे अन्य देशों को खुद को आज़ाद कराने की प्रेरणा मिली। लेकिन, एक विपदा साथ आयी। आज़ाद होने के बाद बहुत से देश तानाशाहों के हाथों में चले गए, ज्यादातर सैन्य तानाशाह। भारत इस त्रासदी से कैसे बचा ? गाँधी द्वारा प्रशिक्षित लोगो द्वारा आज़ादी का वातावरण पूरे देश में फैल गया।

जीवन संदेश

ग्राविस इसी संदर्भ में एक विशेष संस्था है। उन्होंने निःस्वार्थ सेवा को आगे बढ़ाया और कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करते रहे। ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए भारत को अच्छे स्वैच्छिक संगठनों की जरूरत है। श्री एल.सी.त्यागी जी के जाने के बाद श्रीमती शशि त्यागी जी ने ग्राविस का नेतृत्व किया। अब डॉ. प्रकाश त्यागी ने पद संभाला है। ग्राविस के मूल्य हमेशा समाज को प्रेरित करते रहेंगे।

श्रीमती शशि त्यागी जी बहुत मेहनती थीं। अंतिम समय तक बीमार होने और कमजोर होने के बाद भी शशि बहिन ने न केवल अपना काम जारी रखा, बल्कि दूसरे देशों में अपने मित्रों से मिलने और कार्यक्रमों में हिस्सा लेने जाती रहीं। बहिन जी की एक खास बात जो मुझे पसंद थी वह यह कि जहाँ परोपकारी किसी को भी दान देते हैं, शशि बहिन जरूरतमंदों को ढूंढकर उनकी मदद करती थीं। भगवान करें उनके मूल्यों का विस्तार हो।

सलेम एन.सुब्बाराव, भारत

डॉ.सलेम एन.सुब्बाराव जाने माने गाँधीवादी विचारक हैं जिन्हें विश्व ख्याति प्राप्त है और राष्ट्रीय युवा परियोजना के संस्थापक हैं।

समर्पण एवं बलिदान का जीवन

शशि जी को याद करते ही कही बातें यादगार बनकर सामने आ जाती हैं जिन्हें चाहकर भी भुलाया नहीं जा सकता। मेरा पहला परिचय शशि जी से कोई 35 - 36 वर्ष पूर्व हुआ जब वे उत्तर प्रदेश के गाँवों में सेवा का कार्य करने के बाद माणकलाव गाँव आये जहाँ उन्होंने अपना केन्द्र खोला। स्व. लक्ष्मी चन्द त्यागी और शशि जी के मार्गदर्शन में कार्य प्रारम्भ हुआ। गाँव के पिछड़ों के लिये कई कार्यक्रम हाथ में लिये गये। इन कार्यों में पर्यावरण, जल सुरक्षा व संरक्षण खेती आदि विषयों से जुड़े विभिन्न मुद्दे शामिल थे। मेरा पहला परिचय स्व. त्यागी जी व शशि जी से पर्यावरण संरक्षण के एक कार्यक्रम में माणकलाव के केन्द्र पर हुआ। मुझे दोनों की सोच, समझ और पर्यावरण के कारकों पर पकड़ ने आकर्षित किया क्योंकि मैं उस समय पर्यावरण के कई आयामों पर गंभीरता से कार्य में लगा था। इसके बाद तो मिलने का और चिन्तन करने का सिलसिला चल निकला जिसमें शशि जी की पूरी भूमिका रहती थी। माणकलाव में रहते पर्यावरण, पानी व गाँव के विभिन्न पहलुओं पर बैठके, सेमिनार, वर्कशॉप, आयोजित होते रहते थे और उसमें मुझे भाग लेने का प्रायः अवसर मिलता था। शशि जी इन सभी में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेती थी और कई कार्यक्रमों की वो अगवाई करती थीं।

मैं प्रायः सोचता कि शशि जी को इन मुद्दों की बारीकीयों का कैसे पता है जो इतनी निश्चितता व निडरता के साथ सामने रखती थीं। इसका एक बड़ा कारण उनकी पृष्ठभूमि रही। एक तो वो उत्तर प्रदेश में कई वर्षों तक सेवा का कार्य करके आई थीं व दूसरा वे स्वयं उच्च शिक्षित थीं जिसका पूरा उपयोग उन्होंने माणकलाव केन्द्र पर किया। बहुत जल्द माणकलाव केन्द्र को ठोस धरातल मिला जिसमें शशि जी का बड़ा योगदान रहा।

समय के साथ कार्य बढ़ता गया। अब तो मेरे संबंध दोनों से प्रगाढ़ हो गये चूँकि माणकलाव जोधपुर शहर से दूर था व आवागमन के साधन सीमित थे। इस कारण कई बैठके 109, नेहरू पार्क, मेरे निवास स्थान पर आयोजित होती थीं। इससे गाँवों में कार्य करने की बारीकीयों से रुबरु हुआ और उनको पर्यावरण की दृष्टि से देखा। मैं कई बार शशि जी के साथ गाँवों में भी गया और समस्याओं को करीब से देखा और समझ बढ़ाई। भविष्य में विभिन्न क्षेत्रों में कार्य विस्तार के कारण केन्द्र को माणकलाव से जेलू- गगाड़ी ले जाया गया जहाँ नए केन्द्र की स्थापना हुई जिसमें शशि जी का बड़ा योगदान रहा। यह केन्द्र आज भी ग्राविस के सभी केन्द्रों में अग्रणी है व सभी सुविधाओं वाला है।

जेलू - गगाड़ी में शशि जी में ग्राविस के सचिव के रूप में एक नई ऊर्जा का समावेश हुआ और वे माणकलाव से भी ज्यादा सक्रिय हो गईं। चूँकि जेलू - गगाड़ी का कार्यक्षेत्र काफी बढ़ गया। शशि जी में एक आत्मविश्वास पहले से अधिक निखर कर आया। वे एक कर्मठ कार्यकर्ता की तरह सामने आयीं। उन्हें ज्यादा गाँवों में कार्य करने का अवसर मिला। वे तपे हुए सोने की

तरह निडर और दिलेरी से कार्य में लग गई। लक्ष्मी भाई के कार्यों में हाथ बंटाने के साथ गाँवों में लोगों से सीधा संवाद करने लगी और पिछड़े तबके के लिये प्राणवायु की तरह काम किया। वे महिलाओं में विशेष पहचान बना चुकी थीं और उनके साथ अपनेपन का रिश्ता बनाया। महिलाओं में शशि जी के प्रति विशेष प्रेम व लगाव हो गया जिसका लाभ गाँवों में विभिन्न परियोजनाओं को आगे बढ़ाने में बहुत सहायक हुआ। अब शशि जी अधिक मंझी हुई साधक बनी क्योंकि अब तक के कार्यों से उन्होंने गाँवों में एक मजबूत पकड़ और पहचान बना ली थी।

गगाड़ी और आसपास के गाँवों में उच्च जाति के लोग पिछड़ों को पहुँच रहे लाभ से जलने लगे और उनकी साजिशों के कारण उनके द्वारा जेलू - गगाड़ी के केन्द्र पर हमला किया गया। जो एक दुःखद पहलू की तरह सामने आया पर त्यागी जी व शशि जी ने हिम्मत से काम लिया व उनके चाहने वालों ने उस समय संस्था को भरपूर सहायता व विश्वास दिलाया कि ऐसी घटना की पुनरावृत्ति नहीं होगी। केन्द्र को पुनर्जीवन मिला और कुछ ही समय में केन्द्र के अस्तित्व को पुराने स्वरूप में ले आये - बल्कि यूँ कहें की पहले से ज्यादा गतिशील।

शशि जी के दोनो बच्चे बड़े हो रहे थे, उन्हें तकनीकी शिक्षा में जाना था (वे दोनो मेडिकल डिग्रीधारी हैं)। दोनों बच्चे पढ़ने व मेडिकल की तैयारी के लिये कुछ समय हमारे यहाँ रहे और शशि जी का इस समय आना जाना बना रहा।

शशि जी के पुत्र डॉ. प्रकाश त्यागी को सेवा क्षेत्र की समझ, पकड़ व बारिकीयां त्यागी जी व शशि जी की प्रेरणा से ही मिलीं जिससे वे आज संस्था का सफल संचालन कर रहे हैं।

शशि जी की खासियत थी की वे सेवा के कार्यों में हर वक्त तत्पर रहती थीं, औरो के कामों में रुचि लेना उनके स्वभाव में था। वे प्रायः आगे बढ़कर दुसरो की समस्याओं को सुलझाने में लग जाती थी, जो उनके चरित्र की खूबी थी। हर मौसम में काम कर लेना व एक तरफ दानदाता के साथ व दूसरी तरफ गाँव के पिछड़े तबके की महिलाओं के साथ समन्वय बिठाने की कला उनमें थी। वे विदेशों में भी बैठकों में अकेली भाग लेती थीं। इसका बड़ा कारण उनकी निडरता के साथ उनमें गाँवों की समस्याओं को धरातल पर समझना और उन पर मजबूत पकड़ रखना रहा।

शशि जी के चरित्र में स्पष्टवादिता अटूट थी वे किसी भी बात को बिना लाग लपेटे के साफ - साफ रखती थी।

लक्ष्मी भाई की मृत्यु के बाद न तो वे स्कीं न वे कमजोर पड़ीं बल्कि और जोरशोर से वे संस्था के कार्यों में लग गई। ग्राविस के सचिव के रूप में कार्यों को एक निष्ठावान कार्यकर्ता की तरह आगे बढ़ाया। उनको सभी क्षेत्रों में भरपूर समर्थन व सहयोग मिला क्योंकि उनकी कार्यशैली ही व्यक्तिपरक थी। ऐसा ही देखने को मिला उनके चरित्र में जब वे बीमार पड़ीं और कैंसर से पीड़ित होते हुए भी ग्राविस के कार्यों में हिम्मत के साथ जुटी रहीं। यही कारण है कि 35 वर्ष पूर्व जो पौधा लक्ष्मी भाई व शशि जी ने रोपा था आज वो वटवृक्ष का रूप ले चुका है।

पक्की गाँधीवादी व सर्वोदयी विचारों से ओतप्रोत शशि जी ने पश्चिमी राजस्थान के रेगिस्तान जैसे कठिन भौगोलिक क्षेत्रों के सैकड़ों गाँवों में सेवा के ठोस कार्य किये। इन कार्यों के उपलक्ष में शशि जी को 2017 में प्रतिष्ठित जमनालाल बजाज पुरस्कार से सम्मानित किया गया जो हम सभी व ग्राविस के लिये गौरव का विषय है।

शशि जी की एक और बात खूब याद आती है। वे दौरा करने में कभी हिचकती नहीं थी। वे हर परिस्थिति में दौरा कर लेती थीं। सरकारी कार्यालयों में अफसरों के साथ बैठके व संवाद बेझिझक करती थीं, उनमें अपने पक्ष को मजबूती से रखने की एक खूबी थी।

ये एक सुखद पहलु है कि जिस वटवृक्ष को शशि जी ने सींचा है इस वटवृक्ष को उनके पुत्र प्रकाश आगे बढ़ाने में पूरी निष्ठा से लगे हैं। प्रकाश को मेरी शुभकामनाएं व शशि जी को भावभीनी श्रद्धांजली।

सुरेन्द्र एम. मोहनोत, भारत

डॉ. सुरेन्द्र एम. मोहनोत एमेरिटस प्रोफेसर व मरुधर विज्ञान संस्थान के संस्थापक हैं, व ग्राविस व त्यागी परिवार के मित्र हैं।

- 129 -

एक कर्मठ महिला : शशि त्यागी की याद में

सिद्धान्तवादी, साहसी, प्रतिबद्ध और बुद्धिमान किन्तु सबका ध्यान रखने वाली और दूरदर्शी। हास्यपूर्ण, खुले विचारों वाली और अथक। समझौता न करने वाली, खासकर तब जब कुछ गलत हो रहा हो, तब भी व्यवहारिक और समाधान के लिए सक्षम। इस तरह मैं शशि त्यागी जी को याद करती हूँ- मेरी भारतीय माँ, मैं उनकी एक युवा मित्र, उम्र के लिहाज़ से उनकी बेटी, फिनलैंड में मैंने जन्म लिया और रहती हूँ। मैं यह महसूस करती हूँ कि शशि जी से मेरा रिश्ता सगे संबंधियों जैसा था, शायद इसलिए कि उनके बच्चों आभा और प्रकाश से भी मेरी दोस्ती थी। शशि जी से पहली बार 1993 में मिलने के बाद मुझे 1996 में अपने सामाजिक कार्य की इंटरनशिप के लिए कुछ महीनों के लिए भारत आने का अवसर मिला। इस दौरान मैं ज्यादातर शशि जी और त्यागी जी के साथ उनके घर पर रही। बाद में कुछ अंतराल के बाद ही हमारा सम्पर्क हो पाता था, लेकिन निकटता की भावना और समझदारी हमेशा रही। मैं अपने जीवन में उनके होने का आभार व्यक्त करती हूँ।

उनकी एक खास याद यह है कि शशि जी हर जगह जीवंत रूप से उपस्थित रहती थीं - सड़क पर हों या सभाओं में, खास दस्तावेज या जानकारी ले रहीं हो या चल रही परियोजनाओं की प्रगति का परीक्षण कर रहीं हों। दूसरों की तरह मुझे भी उनके खाने, चुटकले, स्नेह और यहाँ तक की डांट भी खाने का विशेषाधिकार प्राप्त हुआ। शशि जी दूसरों के प्रति विचारशील थीं।

जीवन संदेश

बुजुर्ग दोस्तों के लिए अच्छी गुणवत्ता का शब्द रखती, करीबी लोगों के बच्चों के स्वेटर बनाती, बुढ़े और दुर्बल मित्रों के लिए कपड़े धोती। वह हर किसी के खुद काम करने और सफाई जैसे गाँधीवादी मूल्यों का पालन करती रहीं। अनुसरण करने के लिए वह एक प्रेरणास्त्रोत थीं और रहेंगी। मेरा ऐसा मानना है कि इस तरह की यादों से परिपूर्ण मैं 1990 में शशि जी के साथ हुई बातचीत के आधार पर त्यागी जी और गाँधीवादी कार्यों की शुरूआत की कुछ यादें साझा करूँगी।

जब शशि जी और त्यागी जी के परिवार वाले उनके लिए एक योग्य जीवन साथी ढूँढ रहे थे, शशि जी ने त्यागी जी से शादी से पहले मिलने से इनकार कर दिया था। बावजूद इसके कि त्यागी जी एक बार बात करना चाहते थे, शशि जी कि रूचि लड़की दिखाने वाले रिवाजों में नहीं थी। उनकी शादी के बाद त्यागी जी ने शशि जी को अपने काम के बारे में बताया और उन्हें गाँधीवादी साहित्य पढ़ने को प्रेरित किया, उस समय शशि जी अपने पिता के घर आगे की पढ़ाई कर रहीं थी। अपनी माँ को तीन साल की उम्र में खो देने के बाद से, शशि जी 'पिता की बेटी' थीं। उनके पिता जी और दादा जी दोनों ही स्वतंत्रता सेनानी रहे जो समाधिकार के मूल्यों का पालन करते थे। उन्होंने समाज सेवा के बारे में कॉलेज में सीखा पर तब उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। वह गाँधीवादियों द्वारा दिये गए भाषणों को भी छोड़ देती थीं।

कुछ महीनों तक त्यागी जी के काम का अध्ययन और इस पर विचार करने पर शशि जी ने उस आदिवासी क्षेत्र में जहाँ त्यागी जी काम कर रहे थे जाने का निर्णय किया। त्यागी जी बहुत मेहनती थे और उनके स्वभाव के कारण लोग उनको बहुत पसंद करते थे और उनके साथ काम करने से खुश थे। लोग शशि जी से भी बहुत लगाव रखते थे। शशि जी और त्यागी जी दोनों एक साथ सर्वोदय विचार की किताबें पढ़ते और उन पर चर्चा करते थे और इस तरह उन्होंने यह अवलोकन किया कि यही जीने का सही तरीका है।

धीरे - धीरे त्यागी जी और शशि जी ने किसी ओर क्षेत्र में एक संगठन शुरू करने की सोची, पर जब गाँधीवादी नेता आचार्य कृपलानी ने उनसे राजस्थान में एक संस्था से जुड़ने की इच्छा जाहिर की, उन्होंने मना नहीं किया। हालांकि कुछ समय बाद ही कृपलानी जी का निधन हो गया और त्यागी जी और शशि जी ने अपने काम को बढ़ाने के लिए ग्राविस की स्थापना की। ग्राविस शुरूआत से ही गाँधीवादी संगठन था, जो लोगों को आवाज और आर्थिक शक्ति दोनों ही देता था। इन सब बातों के बीच शशि जी ने गाँधीवादी जीवन में अपने आपको आसानी से ढाल लिया, शशि जी ने जीवन के आराम छोड़कर पूरी तरह काम को अपना ध्येय बनाया।

1990 के आसपास मैं शशि जी अपने आप को पूरी तरह समर्थ नहीं मानती थी लेकिन वह स्वयंसंवी संगठनों के कार्यों व चुनौतियों से अनभिज्ञ भी नहीं थीं। राजनीतिक अस्थिरता और दूराचार के उत्पन्न होने की चुनौती सबसे बड़ी थी। लोगों से मिलना जुलना शुरू से ही उनका शौक और जिम्मेदारी रहा। वह अपने आपको खरीदारी और हिसाब - किताब के लिए निपुण नहीं समझती थीं। उनको जिसने आगे बढ़ते रहने दिया वह था काम के प्रति संतोष, उसकी चुनौतियों को स्वीकारना और उनसे उबरना। उन्हें धन या संपत्ति की कमी से कोई फर्क नहीं पड़ता था। उनकी खुशी हमेशा दूसरों की मदद करने में, उनकी परेशानियाँ ठीक करने और

अच्छी विचारधारा पर चर्चा करने में थी। वह मानती थीं कि समस्याएं काम का हिस्सा होती हैं और स्थिरता का कोई अहसास नहीं होता, कड़ी मेहनत और सम्पर्क स्थापित कर मिलजुल कर काम करने से बहुत कुछ हल किया जा सकता है। वह अपनी विरासत सजाने के लिए नहीं बल्कि उसका सहर्ष पालन करने के लिए छोड़ गयीं हैं।

सत्तू रान्ता तुर्को एक फिनिश समाज सेविका, शिक्षिका और शोधकर्ता है। दो बच्चों की माँ हैं और एक सक्रिय कार्यकर्ता है। जैवस्काइला विश्वविद्यालय में वह पारिस्थितिक व सामाजिक विकास, प्रतिभागिता व स्वयं सेवा, भारतीय और औपनिवेशिक सामाजिक कार्यों की विशेषज्ञ हैं। अपने शोध के दौरान ग्राविस के साथ जुड़ना उनके लिए निर्णायक रहा।

सत्तूरान्ता तुर्को, फिनलैंड

सुश्री सत्तू रान्ता तुर्को एक विश्वविद्यालय व्याख्याता और शशि जी की पुरानी मित्र हैं।

- 130 -

यादों में बसी शशि आंटी

बस इतना कहना चाहती थी कि मैं आपको बहुत याद करूँगी। मैं भाग्यशाली हूँ कि मैं उन्हें जानती थी और शशि आंटी कहकर बुलाती थी। वह हमारी पारिवारिक मित्र थीं, लक्ष्मी अंकल के साथ वे दोनों दिल्ली, लाजपत भवन में हमारे घर आते थे, जहाँ मेरे पिता स्वर्गीय प्रो. आर्य भूषण भारद्वाज और कई अन्य गाँधीवादी लोग सभाओं के लिए मिलते थे। मैं इन बैठकों की तैयारी के लिए अपनी माँ और शशि आंटी की मदद किया करती थी। मैं 1990 की बात कर रही हूँ जब मैं 10वीं में थी। प्रकाश भैया और आभा दीदी कभी - कभी उनके साथ हमसे मिलने आते थे।

मेरे 10वीं कक्षा खत्म करने के बाद, परिणामों की प्रतीक्षा करते हुए, शशि आंटी ने मेरे पिता से पूछा कि क्या मैं जोधपुर में एक अनुभव के लिए जा सकती हूँ और जेलू - गगाड़ी, ग्राविस में स्वयंसेवक के रूप में काम कर सकती हूँ। मुझे जल्द ही उनके साथ यात्रा करने की अनुमति दी गई। यात्रा दिल्ली स्टेशन से जोधपुर के लिए अहमदाबाद मेल में ट्रेन द्वारा हुई। यात्रा रात में थी और हम अपनी ट्रेन में समय पर पहुँच गए। शशि आंटी और मैं दोपहर के आसपास जोधपुर पहुँचे और हाजी भाई स्टेशन पर लेने आए।

मेरे पिता की तरह सभी बुद्धिजीवी गाँधीवादी बहुत गंभीर होते हैं। मुझे मेरा कमरा दिखाया गया जहाँ मुझे रहना था और फिर सबके साथ भोजन किया। लक्ष्मी अंकल और शशि आंटी ने मुझसे पूछा कि क्या मैं जेलू - गगाड़ी, ग्राविस जाना चाहूँगी। मैंने कहा क्यों नहीं और अगले दिन हम

जीवन संदेश

जोधपुर शहर से शशि आंटी और लक्ष्मी अंकल के साथ विभिन्न गतिविधियों का दौरा करने के लिए निकल पड़े जो वे विभिन्न गाँवों की ग्रामीण जनजातियों के साथ कर रहे थे। सबसे महत्वपूर्ण था पानी और स्वास्थ्य सहायता की सुविधा। रास्ते में हमने कई गाँवों का दौरा किया जहाँ शशि आंटी सभी महिलाओं को नाम से जानती थीं और हर ग्रामीण परिवार उन्हें अपने परिवार का हिस्सा मानता था। मेरे लिए इस तरह का अनुभव पहली बार था। इन ग्रामीण परिवारों का दौरा करने के बाद, रास्ते में हम कुछ स्थानीय कारीगरों के स्थान से गुजरे, जहाँ आंटी ने मुझे बताया कि ये कारीगर बैग, जूते, कढ़ाई और कई अन्य खूबसूरत उत्पादों को हाथ से बनाते थे। शशि आंटी ने मुझे बताया कि वह और उनका संगठन इन स्थानीय कारीगरों के उत्पादों को बिचौलियों द्वारा बेचे जाने से बचाने के लिए मदद करते हैं। उसने मुझे बताया कि संस्था ये उत्पाद कारीगरों से खरीदती है, उन्हें बेचा जाएगा और कारीगर को उचित दाम मिलेंगे।

15 साल की उम्र में मेरे लिए यह वास्तव में एक अनोखा अनुभव था। विभिन्न यात्राओं के बाद हम जेलू - गगाड़ी में भोजन के समय पहुँचे। शशि आंटी ने मुझसे पूछा कि क्या मैं कुछ दिनों के लिए जेलू - गगाड़ी रहना चाहूँगी और स्कूल के बच्चों को पढ़ाने में मदद करूँगी। मैंने तुरन्त हाँ कहा और मैं लक्ष्मी अंकल के साथ इन खूबसूरत झोपड़ियों में रही, ये अंदर से बहुत ठंडी थीं हालाँकि बाहर का तापमान 45 से अधिक डिग्री था। मैंने पास के गाँव के छोटे बच्चों को पढ़ाने के अनुभव का आनन्द लिया। अन्त में मैं धार्मिक अनुभव के लिए लक्ष्मी अंकल के साथ पुष्कर और अजमेर भी गई, यह जादुई था। मैं आखिरी बार शशि आंटी से 2019 में दिल्ली में हमारे घर मिली थी। मैं उस समय कुछ दिनों के लिए भारत आई थी। वह दो दिन हमारे साथ रहीं, हमने साथ में सुंदर समय बिताया। वह एक ऐसी इंसान थीं जो बच्चों के बीच बिल्कुल बच्चा बन जाती थीं और वयस्कों के बीच एक बुद्धिमान महिला। वह मेरी दूसरी माँ हैं। अम्मा, मुझे आपकी बहुत याद आएगी।

मेरा संक्षिप्त परिचय : मैं सद्भावना भारद्वाज हूँ और पिछले 20 वर्षों से इटली में रहती हूँ, आयुर्वेद और गाँधीवादी मूल्यों के साथ अपने जीवन में सामाजिक कार्य कर रही हूँ। मेरा संगठन मिलान, इटली में है।

सद्भावना भारद्वाज, इटली

सुश्री सद्भावना भारद्वाज एक प्राकृतिक चिकित्साविद हैं व इटली में कार्य करती हैं।

शशि बहिन एक कर्मवीर थीं

42 वर्ष पूर्व आदरणीय श्री लक्ष्मी चन्द त्यागी एवं श्रीमति शशि बहिन जी का परिवार उत्तर प्रदेश से जोधपुर पहुँचा। दोनों उच्च शिक्षा प्राप्त थे, किसी भी सरकारी सेवा में जाना चाहते तो अच्छा वेतन पा सकते थे लेकिन दिलों में अरमान थे, गरीब, उपेक्षित और सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक रूप से पीड़ित वर्ग की सेवा करने के। यह अरमान खींच लाये पश्चिमी राजस्थान में।

प्रारम्भ में सुचेता कृपलानी शिक्षा निकेतन संस्थान के माध्यम से जोधपुर जिले के माणकलाव गाँव में केन्द्र बनाकर आसपास के गाँवों में कार्य शुरू किया। उस समय तक ग्रामीण राजस्थान में किसी महिला द्वारा सामाजिक कार्य करना अजूबा था। श्रीमति शशि बहिन जी ने ऐसे सामाजिक माहौल में कार्य प्रारम्भ किया। शुरू में बच्चों में शिक्षा, नशामुक्ति मुख्य रूप से अफीम और सामाजिक बुराईयों से मुक्ति के लिए चेतना कार्य किया।

दोनों की गाँधी विचार के प्रति निष्ठा तो थी ही, अपने लक्ष्य के प्रति स्पष्टता भी थी। 1980 में ग्रामीण विकास विज्ञान समिति का गठन कर जेलू - गगाड़ी में केन्द्र बनाकर कार्य शुरू कर दिया। वहाँ भी 6-7 वर्ष बाद जातिवादी और साम्प्रदायिक मानसिकता ने हमला कर दिया लेकिन दोनों बच्चों एवं कार्यकर्ताओं की हौसला हफजाई करते हुये केन्द्र और क्षेत्र की सेवा को जारी रखा। यह हम सब लोगों ने देखा कि कैसे उन्होंने परिस्थितियों का मुकाबला किया। मुख्य बात शशि बहिन जी की कर्मशीलता और साहस की थी कि वे हर तरह के आँधी तुफानों में निर्भीकता से डटी रहीं। साथ ही गाँधी विचार का प्रादेशिक संगठन राजस्थान समग्र सेवा संघ की उपाध्यक्ष भी रही और श्री लक्ष्मी चन्द त्यागी दो सत्रों में अध्यक्ष भी रहे। मेरा आशय है कि क्षेत्र के कार्य के साथ - साथ गाँधी विचार के व्यापक कार्य में भी सक्रिय भूमिका दोनों की रही। क्षेत्र के लोगों में वैचारिक संदेश देने के लिए समय - समय पर शिविर सम्मेलन भी आयोजित करते रहे, जिनमें प्रबुद्ध, विचारशील लोगों को भी बुलाते रहते थे। समय - समय पर जन समस्याओं पर और नशामुक्ति के मुद्दों पर जिला और प्रदेश स्तरीय प्रतिरोध के कार्यक्रमों में कार्यकर्ताओं के साथ अहम भूमिका रहती थी। एन.जी.ओ. कहलाने वाली संस्थाओं में आमतौर पर परियोजना आधारित कार्य ही होते हैं। लेकिन त्यागी दम्पति ने संस्था के कार्य, विचार की भूमिका और एक्शन को जोड़कर रखा।

पश्चिमी राजस्थान में बहुत कम महिलायें सामाजिक क्षेत्र में रही हैं उन कम में भी बहुत सक्रिय भूमिका में जैसे आदरणीय श्रीमति शशि त्यागी जी रही। उनके असामयिक निधन से सामाजिक और वैचारिक क्षेत्र की बहुत बड़ी क्षति हुई है। अब भविष्य में संस्था को उनके लक्ष्य और दिखाये गये रास्ते पर चलाने का दायित्व अभी की जिम्मेदार पीढ़ी पर है।

सवाई सिंह, भारत

श्री सवाई सिंह एक जाने माने सामाजिक कार्यकर्ता, गाँधीवादी चिन्तक व वक्ता हैं तथा त्यागी परिवार के पुराने मित्र हैं।

शशि जी को पत्र

यह असामान्य सा हो सकता है आपको निजी पत्र लिखने का विचार, आपके निधन के पश्चात्। हम 20 वर्षों से मित्र हैं किन्तु कुछ ऐसी बातें हैं जो मैं आपके साथ साझा करना चाहती हूँ- वो भी तब जब आप चली गयीं - जिससे आपकी आत्मा और परिवार ये जान सके कि आपके जीवन और कार्यों ने मेरे और बहुत से लोगों को किस गहराई तक छुआ। मैं जानती हूँ कि आपके द्वार किये गये कार्य उन सामूहिक प्रयासों का अभिन्न अंग हैं जो आपके पति, बेटे प्रकाश, ग्राविस के सहकर्मियों और उन हजारों गाँव वालों ने मिल कर किये, लेकिन मैं आपकी लगन, दूरदर्शिता और प्रतिबद्धता को विशेष रूप से श्रद्धांजलि देना चाहती हूँ। आपके बिना थार मरुस्थल में बहुत सी बालिकाएँ पढ़ नहीं पातीं, बहुत सी महिलाएँ अन्याय से उबर नहीं पातीं और समाज में अपनी जगह नहीं बना पातीं और हजारों ग्रामीण महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन आत्मनिर्भरता और सामुदायिक विकास के लिए नहीं हो पाता।

मैं आशा करती हूँ कि यह कहना गलत नहीं होगा कि हममें बहुत सी समानताएँ हैं। हम दोनों ने एक से समय जन्म लिया- आप भारतीय, मैं ब्रिटिश - उसी साल जब भारत दशकों के संघर्ष के बाद ब्रिटेन से आजाद हुआ। हम दोनों गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित थे- आप के इतिहास, संस्कृति और मूल्यों का हिस्सा था, मैं एक बाहरी जिसने किशोरवस्था के अंतिम दिनों में अहिंसा को अपने जीवन का रास्ता बनाया। एक ही समय पर अलग - अलग यात्रा करते हुए, हम दोनों ग्रामीण समुदाय के सशक्तिकरण, जो ग्रामीण महिलाओं पर केंद्रित था, और बालिकाओं की आत्मनिर्भरता के प्रतिबद्ध थे। जब ग्राविस, इंटरनेशनल डवलपमेंट एक्सचेंज का सहयोगी बना, तब मैं कार्यकारी प्रबंधक थी। ये एक स्पष्ट मत था कि आप को निर्णय लेने और साझेदारी का दृष्टिकोण समझाने के लिए हमारे बोर्ड का सदस्य बनाया जाये। आप मान गयीं, पूरी तरह यह समझते हुये कि व्यवस्था में यह बदलाव जरूरी है और यह सिद्ध करना होगा कि भारतीय महिलाएँ अपनी बात स्पष्ट रूप से रख सकती हैं। आप बिना किसी शिकायत नियमित तौर पर लम्बी यात्रा कर जोधपुर से सैन फ्रांसिस्को आतीं, अपने साथ अपना जमीनी अनुभव, अपनी इच्छाशक्ति लाती, शांति मगर दृढ़ता से अपनी बात रखतीं और अपना वोट देतीं। अगर उस समय भी जूम होता, मुझे संदेह है कि आप तब भी लम्बी यात्रा कर के लोगों से मिलने आतीं, क्योंकि समाज को बदलने के लिए प्रत्यक्ष मुलाकातें बहुत आवश्यक हैं।

जब मैं जोधपुर आयी तब आप और त्यागी जी मुझे एक यादगार यात्रा पर ले गये, जहाँ ग्राविस काम कर रहा था और कुछ परियोजनाएँ हमने देखीं जिन्हें हम सहयोग कर रहे थे। आप तुरंत समझ गई कि मैं रेगिस्तान और गाँव के वातावरण में कितना खुश थी, लोगों के जीवन में आ रहे बदलाव को देख कर। मैं बहुत खुश थी, और जिस समय मैं अपने परिवार में बहुत कठिनाईयों को अनुभव कर रही थी, आपका साथ कितना सुखद था। तारों के नीचे सोना, सुबह उठ कर चाय की चुस्की लेना और आप दोनों से बातें करते हुए उबड़- खाबड़ रास्ते पर ग्राविस

की जीप में उछलना, मेरी आत्मा को भर जाता था। हमने साथ में क्षेत्र के खदान मजदूरों के साथ हो रहे अन्याय और स्वास्थ्य के खतरों को अंतर्राष्ट्रीय समर्थन और एकजुटता से उजागर करने की योजना बनाई थी। मैं खुश हूँ कि ग्राविस इस काम को आगे बढ़ा रहा है, उसी तरह जिस तरह वह एक सामुदायिक अस्पताल द्वारा 250,000 लोगों की सेवा कर रहा है।

आपने प्रतिदिन दूसरों की सेवा में काम कर अपना जीवन समर्पित कर दिया, साथ ही न्यायसंगत समाज की दूरदर्शिता रखी। आपने कभी नाराजगी, आलोचना या शिकायत नहीं की, जब कि आपको इस कार्य की कीमत अपनी सेहत से चुकानी पड़ी। आप शायद इस काम को किसी और तरीके से करना ही नहीं चाहती थी, जबकि हम सब चाहते थे, और इन सब के बीच आप अपनी राह पर दृढ़ता से चलती रहीं। मुझे अभी भी आपकी छवि याद है - आपके चेहरे का आकार, आपके कंधे पर आपकी साड़ी ठीक करना, कारडिगन जो आप पहनती थीं, कैसे सीधे आप बैठती थीं। मेरी यादों पर आपकी अमूर्त खुशबु मुझे सबसे ज्यादा छूती है। आपने मेरे लिए नैतिकता का एक स्तर बनाया। आपने दिखाया कि धीमे कदम गहरे, संरचनात्मक बदलाव ला सकते हैं। आपने मुझे सिखाया की आखिरी को पहले रखें और यह कि सादगी के साथ जटिलता एक मजबूत मिश्रण है।

सामुदायिक संगठनों के साथ काम कर रहे संगठनों में ग्राविस मेरी प्रिय संस्था है और मैं आप को जानकर, मिलकर कृतज्ञ और भाग्यशाली हूँ। आप एक महत्वपूर्ण, सफल संगठन छोड़ गई हैं, जो आर्थिक अनिश्चितता, नष्ट होते पर्यावरण और सकल असमानता के समय में समावेश, लोकतांत्रिक प्रक्रिया और विकेन्द्रीकृत आत्मनिर्भरता से आगे बढ़ता रहेगा। आपने निजी और कार्य जीवन को साथ रखा। मैं हमारे सहयोग और हमारी समानताओं को संजो कर रखूंगी।

सारा हॉब्सन, यू.एस.ए

श्रीमती सारा हॉब्सन एक वरिष्ठ सलाहकार हैं, इंटरनैशनल डवलपमेंट एक्सचेंज की पूर्व निदेशक हैं और पिछले 25 वर्षों से ग्राविस की मित्र हैं।

शशि जी - मेरी आदर्श

मेरे लिए शशि जी दृढ़ता की प्रतीक हैं, जो लोगों का जीवन सुधारने के बारे में केवल बात करने के बजाय बेहतर बदलाव के लिए प्रयास करती हैं।

मैं शशि जी से पहली बार 1998 में फिनलैंड में मिली थी, जब उन्होंने और ग्राविस प्रतिनिधियों ने ताम्पेरे यूनिवर्सिटी स्टूडेंट यूनियन (तामी) में जाकर छात्रों को ग्राविस के काम के बारे में बताया। शशि जी के बारे में मेरी पहली धारणा थी कि वह गर्मजोश और मिलनसार थीं और वह स्पष्ट और सीधे तरीके से बोलती थीं। वह एक ऐसी नेता थीं, जिन्हें हर जगह सम्मान मिलता था।

उनसे मिलकर मुझे अपनी भूमिका का भी एहसास हुआ। मैं अपने जीवन के शुरुआती बीसवें साल में एक पर्यावरण नीति की छात्रा थी। मैं वास्तव में गहराई से समझे बिना वैश्विक परिप्रेक्ष्य से दुनिया की असमानता को देखती थी। शशि जी ने भारतीय रेगिस्तान क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका और ग्रामीण समुदायों के विकास को ठोस उदाहरणों के साथ स्पष्ट रूप से परिलक्षित किया। विश्व राजनीति के मेरे सामान्य दृष्टिकोण की अपेक्षा तामी-ग्राविस सहभागिता से जमीनी स्तर पर किए जा रहे काम इन समस्याओं के समाधान में कहीं अधिक सहायक थे।

अगली बार हमारी मुलाकात दिसम्बर 2000 में हमारी पारस्परिक यात्रा पर जोधपुर में हुई थी। आठ छात्रों के समूह के रूप में, हम मुख्य रूप से कलरां और गगाड़ी केन्द्रों में रहे। हमारे कार्यक्रम की मेजबानी प्रकाश, वंसुधरा और कानाराम जी ने की थी। भारत में हमने अब शशि जी की वास्तविक भूमिका ग्राविस में देखी। उन्होंने काम के क्रियान्वयन एवं लोगों को प्रभावित किया, विभिन्न बैठकों में भाग लिया और गाँवों का दौरा किया। उन्होंने लोगों को चुनौती दी, उदाहरण दिए कि जीवन को अपने स्वयं के साहसी विकल्पों से बदला जा सकता है। वह हमारे लिए जितनी सुलभ और स्वीकार्य फिनलैंड दौरे के समय समूह के साथ थीं, उतनी ही गंभीर और सुलभ वह हमारे राजस्थान दौरे में थी, जबकि वह निरन्तर राजस्थान और ग्राविस केन्द्रों की यात्रा और प्रबंधन में भी संलग्न थीं। वह बहुत ही ममतामयी थीं और यह सुनिश्चित करती थीं कि पहली बार भारत आने वाले छात्रों के साथ सब कुछ ठीक हो।

शशि जी मेरे लिए एक रोल मॉडल हैं। आज मैं दो बच्चों की 46 साल की माँ हूँ। अपने जीवन में मैंने उन सिद्धांतों को अपनाया है जिनका मैं शशि जी में सम्मान करती हूँ : सभी के जीवन की सराहना, समाज को मजबूत बनाने में महिलाओं की भूमिका, लोगों की विभिन्न शक्तियों को पहचानना, समुदाय के उपयोग में लाना, बिना भय के किसी से भी बात करने का साहस, पर्यावरण के लिए सम्मान और संरक्षण के प्रयासों को मैंने अपने जीवन में अपनाया है। मैं शशि जी के चरित्र, किसी भी नए व्यक्ति के प्रति खुलापन, आतिथ्य, हास्य की भावना, प्रियजनों की

देखभाल, अपने परिवार और अपने पूरे समुदाय दोनों का ध्यान रखने की भावना और उनकी याद को हमेशा सहेज कर रखूंगी।

सारी नूसीआइनेन, फिनलैंड

सुश्री सारी नूसीआइनेन फिनलैंड में रहती व कार्यरत हैं तथा ग्राविस की पुरानी मित्र हैं।

- 134 -

लम्बी संगति

मैं ग्राविस के साथ 1985 में जुड़ा हूँ। मैंने संस्था में विभिन्न भूमिकाएं निभाई - शिक्षक की, परियोजना समन्वयक की व प्रशिक्षक की। मैंने त्यागी जी व शशि जी से बहुत कुछ सीखा। शशि जी पूर्णतया ग्रामीण विकास को समर्पित थीं। आप दोनों के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ, सामाजिक विकास में आपके योगदान के लिए शशि जी को मेरी विनम्र श्रद्धाजलि।

सिमरथा राम पथिक, भारत

श्री सिमरथा राम पथिक पूर्व में ग्राविस के साथ काम कर चुके हैं व समाज एवं पर्यावरण विकास संस्थान के संस्थापक हैं।

शशि जी के साथ मेरा जुड़ाव

मुझे याद हैं स्वर्गीय श्रीमती शशि जी त्यागी एक शांत, सरल और मृदुभाषी व्यक्ति थीं। वे किसी भी स्थिति में शांतचित्त रहती थीं और उनकी सलाह का हमेशा सम्मान किया जाता था। जैसा कि मुझे हमारे पूर्व शिक्षकों द्वारा बताया गया कि उनके पति स्वर्गीय श्री एल.सी. त्यागी, श्रीमती डॉ. मनोरमा पटवर्धन और कुछ अन्य लोग 'नवज्योति मनोविकास केन्द्र' के संस्थापक सदस्य थे (मानसिक रूप से कमजोर बच्चों के लिए स्कूल)। श्री त्यागी जी और शशि जी ने जोधपुर में एक सामाजिक संस्था 'ग्राविस' की स्थापना की। वह बाद में नियमित रूप से नवज्योति आते थे और श्री जी.एम. सिंघवी, तत्कालीन संचालक, को वे दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों और संस्था को चलाने में सलाह देते थे। श्री सिंघवी ने उनकी सलाह का अनुसरण किया जो कि नवज्योति के प्रारम्भिक वर्षों में अमूल्य थी। उनके पुत्र डॉ. प्रकाश त्यागी नवज्योति के उपाध्यक्ष रहे हैं और उनकी नियमित सलाह के साथ हम काम करते रहे हैं। शशि जी के साथ मेरी मुलाकात तब हुई जब वह नवज्योति में मिलने आईं और बाद में वह बैठकों में भाग लेती रहीं जहाँ वह सम्मानित सदस्यों के रूप में शामिल थीं। वहाँ उनकी सलाह सदैव सराही गई। नवज्योति उनके निधन से एक अमूल्य मार्गदर्शिका को खो चुका है। नवज्योति में उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा। भगवान उन्हें शाश्वत शांति प्रदान करें।

सी.पी. संचेती, भारत

श्री सी.पी.संचेती एक चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट व एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं तथा नवज्योति मनोविकास केन्द्र के अध्यक्ष हैं।

शशित्यागी - मेरी मौसी

शशि त्यागी मेरी मौसी थीं। मेरे स्मृति पटल में उनके और अंकल जी - लक्ष्मी चन्द त्यागी जी के साथ बिताए कई शानदान अनुभव हैं। उनका जीवन एक आशीर्वाद था और उनकी यादें एक खज़ाना। अपनी शादी से पहले वह हमें कई बार बाज़ार ले जातीं। उस समय फोटो खिंचवाना बहुत महंगा होता था। पर वो हमें इतना प्यार करती थी कि हमारे पास उस समय की बहुत सारी फोटो हैं जो उन्होंने खिंचवायी। वो बहुत अध्ययनशील, साहसिक और ऊर्जस्वी थीं।

1968 में उनकी शादी लक्ष्मी चन्द त्यागी से हुई जो एक सम्पन्न परिवार से थे। लेकिन अंकल जी एक गाँधीवादी थे और मौसी जी ने भी मानवता के उत्थान के लिए गाँधीवाद को चुना। 1970 में आभा ने दिल्ली में हमारे घर में जन्म लिया। मैं अपने बड़े भाई के साथ मौसी जी के लिए खाना

लेकर अस्पताल जाता था। इसके बाद मौसी जी मुझे बनवासी सेवा आश्रम, मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश ले गई। यह जगह बहुत कठिन थी। उनके घर की छत खपरैल की बनी थी। शौचालय बहुत दूर था। मौसी जी और अंकल जी वंचित आदिवासियों के लिए काम कर रहे थे। हमारी झोपड़ी रागिनी आंटी के ठीक बगल में थी। एक बार हमारी झोपड़ी में आग लग गई जिस पर बहुत कोशिशों से काबू पाया जा सका। मुझे याद आता है कि आश्रम के कार्यों पर एक फिल्म बनी थी। मेरी मौसी जी आदिवासी बच्चों को विद्यालय में पढ़ाती थी। वे इन बच्चों के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करती थी। मौसी जी के दयालु स्वभाव के कारण रागिनी आंटी, प्रेम भाई, रामानुज अंकल, हरनंद अंकल, जकाउल, गुरुजी और मानिक दादा (कुछ नाम जो मुझे अब याद हैं) - उनसे बहुत स्नेह करते थे। प्रकाश का जन्म आश्रम के अस्पताल में हुआ। मेरी माँ मौसी जी की देखभाल करने के लिए आई थी। शशि मौसी जी ने पूरी तरह से ग्रामीण जीवन को अपना लिया था।

हाल ही में मेरे जोधपूर भ्रमण पर वह मेरे परिवार को गगाड़ी ले गयीं, मुझे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ की ग्राविस के प्रयासों से एक मरुस्थलीय क्षेत्र हरा - भरा हो गया है। मेरे बच्चों को मंत्रमुग्ध कर देने वाला अनुभव प्राप्त हुआ, खुले आकाश के नीचे सोने, तारे देखना और मौसी जी से कहानियाँ सुनने का। वे हमें बहुत सी विकास परियोजनाओं दिखाने ले गयी। वह दिल से समुदाय से जुड़ी थी।

हमने उनसे बहुत कुछ सीखा। गाँधी निधि और गाँधी शांति प्रतिष्ठान, दिल्ली में वह बहुत लोकप्रिय थीं। जब लोगो को पता चलता की वह मेरी मौसी हैं तो भी उनमें से बहुत से लोग उनके साथ अपने दिल को छूने वाले अनुभव बताते। वह हमारे परिवार के हर रिश्तेदार के बारे में चिंतित रहती थीं। वे उनमें मिलने जाती और फोन पर भी सम्पर्क में रहतीं। मेरा उनके साथ आत्मिक बंधन रहा, हम दोनों पारिवारिक विषयों, राजनीति और सामाजिक विषयों पर चर्चा करते रहते थे।

मैं एक प्राकृतिक चिकित्सक हूँ। वे हमेशा मुझे डॉक्टर साहब कहकर बुलाती तो मैं उनको कहता कि मैं डॉक्टर नहीं हूँ। लेकिन वह कहतीं कि तुम बिना दवाईयों के लोगो का इलाज करते हो इसलिए तुम एक सच्चे डॉक्टर हो। मैंने उनसे दया, सहानुभूति और नेतृत्व के अलावा भी बहुत कुछ सीखा। सबसे महत्वपूर्ण चीज जो मैंने सीखी वह थी ईमानदारी।

मौसी जी, हम सब आपको हर पल याद करेंगे। आपकी चिरस्थायी मुस्कुराहट, हंसी, हर किसी की देखभाल की चिंता हमको मजबूत बनाती है और प्रेरित करती है। हम आपकी यादों और गुणों को हमेशा याद करेंगे। हमको गर्व है कि हम शशि त्यागी और एल.सी.त्यागी के परिवार का हिस्सा हैं।

सुनील त्यागी, भारत

श्री सुनील त्यागी दिल्ली में रहते हैं और सरकार के लिए काम करते हैं और शशि जी के सम्बन्धी है।

मेरी प्यारी दोस्त शशि जी की यादें

शशि और मैं ग्राविस - आईडैक्स (अब थाउसैंड करंट्स) के माध्यम से मिले। 1998 में एक आईडैक्स स्वयंसेवक के रूप में मैंने भारत में एक साथी के साथ यात्रा की और इसी दौरान मैंने पहली बार शशि को जाना। हालांकि हम शशि से ग्राविस के साथ काम के माध्यम से मिले थे, पर हमारा रिश्ता एक व्यक्तिगत दोस्ती के रूप में विकसित हुआ। वर्षों तक मैं शशि को जोधपुर में कई बार मिली, लेकिन उससे भी अधिक बार जब वह मेरे पति और मेरे साथ सैन फ्रांसिस्को में हमारे घर में रही, हमारे संबंध घनिष्ठ हुए।

भारत की उस पहली यात्रा पर, शशि जी ने मुझे और उनके पति के साथ जोधपुर में रहने के लिए आमंत्रित किया। वह मुझे उन गाँवों में ले गई जहां ग्राविस ने काम किया था और शशि जी के लोगों के साथ बातचीत करने के तरीके ने मुझे तुरन्त प्रभावित किया। ग्रामीणों के बीच उनका बहुत सम्मान था और मुझे नहीं लगता कि मैं कभी भी किसी ऐसे व्यक्ति के साथ रही थी जिसका उद्देश्य जनहित के काम करना था और लोगों पर उनका गहरा प्रभाव था।

कुछ यादें वास्तव में उस पहली यात्रा से जुड़ी हुई हैं। एक बहुत छोटे और अंधेरे घर में जहां हम गए थे, एक युवा मां बीमार थी। स्थिति को कैसे संभालना है, इस बारे में बहुत चर्चा हुई। मैं एक शब्द नहीं समझ सकती थी क्योंकि यह अंग्रेजी में नहीं था, लेकिन परिवार में शशि जी के सुझावों का विरोध समझ पा रही थी। आखिरकार वे बीमार महिला के बिस्तर को बाहर ले जाने के लिए तैयार हो गए ताकि उसे ताजी हवा और धूप - साधारण उपचार का लाभ मिल सके। शायद इससे मदद मिली, शायद यह नहीं हुआ, लेकिन उस समय, उस जगह पर, उस युवा महिला के लिए कोई विकल्प नहीं थे। उस समय मेरी समझ में यह था कि शशि ने परिवार को इस बात को समझाने में मदद की थी कि वे उस मुद्दे को कैसे संबोधित करें।

उस यात्रा की एक और याद, मैं शशि जी के साथ एक दिन गाँव के सदस्यों के एक बड़े घेरे में बैठी थी। शशि जी यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि समूह की सभी महिलाएं भाग लें, इसलिए उन्होंने जोर देकर कहा कि सभी को सुना जाए, भले ही यह केवल एक गाना गाने के लिए हो। ठीक ऐसा ही एक महिला ने किया और उसे करने के लिए उसने स्पष्ट रूप से साहस किया। मुझे बच्चों के साथ बातचीत करने वाली शशि जी की कुछ प्यारी यादें भी हैं। एक बार जब शशि जी हमारे साथ सैन फ्रांसिस्को में रह रही थी, उनकी एक सुबह खाली थी, जो बहुत ही असामान्य बात थी। हमने एक स्कूल की चौथी कक्षा में बच्चों से मिलने जाने का फैसला किया जहाँ मेरी बेटी पढ़ती थी। जब शशि जी ने बच्चों को बताया कि वह भारत से हैं, तो एक छोटे लड़के ने कहा कि उसके माता-पिता भी भारत से हैं। शशि जी ने उसको गर्मजोशी और अपनेपन के साथ जवाब दिया और मुझे यकीन है कि यह एक ऐसा दिन था जिसे बच्चा खुशी और गर्व के साथ याद रखेगा।

शशि जी के साथ मेरा आखिरी समय 2018 में था जब वह गांधी और कस्तूरबा की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में गतिविधियों के लिए सैन फ्रांसिस्को आई थी। शशि जी ने सभी तरह के महत्वपूर्ण संपर्कों के साथ कई बैठकें कीं। दोस्तों ने उनसे मिलने के लिए अमेरिका के अलग-अलग भागों से उड़ान भरी। शशि जी ने मेरे परिवार में जन्मदिन समारोह में शामिल होने के लिए समय पर घर वापस पहुँचना सुनिश्चित किया। मैं वास्तव में उनके ऐसा करने से भावविभोर हो गयी थी। शशि जी के अंदर परिवार और दोस्तों के साथ गहरे संबंधों को निभाने के साथ-साथ दुनियाभर में आवश्यक और महत्वपूर्ण काम के जीवन को संतुलित करने की एक अद्भुत क्षमता थी और मैं उनके मित्रों का हिस्सा होने के लिए आभारी हूँ।

सूसन कान, यू.एस.ए.

सुश्री सूसन कान एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं, कैलिफोर्निया में रहती हैं व कई संस्थाओं से जुड़ी हैं। शशि जी की नजदीकी मित्र हैं।

- 138 -

शशि जी के शक्तिशाली शब्द दिशा देते हैं

अप्रैल 2013 के अंतिम सप्ताह में आईडेक्स (अब 'थाउजेंड करेंट्स') ने जोधपुर, राजस्थान में कृषि पारिस्थितिकी सीखने के लिए आदान-प्रदान कार्यक्रम का आयोजन किया। 'आईडेक्स' के दीर्घकालिक सहयोगी ग्राविस ने कार्यक्रम की मेजबानी की। इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए मैंने नेपाल से यात्रा की और जेलू - गगाड़ी और राजस्थान के दो अन्य गाँवों 'भाम्बो की ढाणी' और 'गोविन्दपुरा' गाँव में ग्राविस केन्द्र का दौरा किया जहाँ ग्राविस अलग-अलग मॉडल पर काम कर रहा था। हमने स्वास्थ्य, महिला सशक्तीकरण, आय सृजन, जल संसाधन विकास और कृषि पर समुदायों की सक्रिय भागीदारी से ग्राविस के विभिन्न कार्यक्रम और गतिविधियों को देखा। ग्राविस के काम और मेरे संगठन 'नारी चेतना केन्द्र' नेपाल द्वारा किए गए कार्यों में बहुत समानताएं थीं।

मैं ग्राविस के काम से बहुत प्रभावित थी, विशेष रूप से जल प्रबंधन कार्य, टांका निर्माण और ग्राविस अस्पताल का निर्माण। काम देखते हुए मैंने पाया कि समुदाय ग्राविस के काम से बहुत खुश था और त्यागी परिवार के प्रति विशेष रूप से अपना आभार प्रकट कर रहा था। उस समय तक मैं अपने दोस्त प्रकाश जी द्वारा त्यागी परिवार के बारे में जानती थी। इसलिए मैं शशि जी से मिलने के लिए बहुत उत्सुक थी। आखिरकार, सीखने के आदान-प्रदान कार्यक्रम के तीसरे दिन मेरी इच्छा वास्तविकता में बदल गई और हम उनसे मिले। वह शशि जी के साथ मेरी पहली और आखिरी मुलाकात थी। भले ही मैं उनसे केवल एक ही बार मिली लेकिन एक मुलाकात ने मेरे दिमाग पर उन्होंने बहुत गहरी छाप छोड़ी है। वह बाहर से बहुत सरल और अंदर से बहुत मजबूत महिला नेता थीं। वह शायद उम्र में सबसे बड़ी व्यक्ति थीं, लेकिन उनके

जीवन संदेश

पास अद्वितीय व्यक्तित्व और चमक थी जो मुझे उनकी ओर खींच रही थी। अपने काम के लिए उनकी आजीवन प्रतिबद्धता, बलिदान उनके व्यक्तित्व में स्पष्ट रूप से दिखता था। अपने तीन दिनों के दौरे के दौरान मैंने शशि जी के समर्पण और प्रतिबद्धता के साथ आर्थिक और सामाजिक रूप से वंचित लोगों और क्षेत्र के उत्थान के लिए ग्राविस के जो भी काम चल रहे थे, वह सब देखे। मेरे जैसा व्यक्ति जो उस समय सामाजिक कार्यों के क्षेत्र में कदम रख ही रहा था, मेरे लिए उनके शब्द सिर्फ शब्द नहीं थे बल्कि एक मार्गदर्शन था। मैं उन शक्तिशाली शब्दों के लिए शशि जी की आभारी हूँ और व्यक्तिगत रूप से महसूस करती हूँ कि हर कोई जो उन्हें जानता है वह बहुत दुखी है क्योंकि उनके जैसा जीवंत नेता अब हमारे बीच नहीं है। स्वर्गीय शशि जी के परिवार और ग्राविस समुदाय के प्रति मेरी संवेदना। मैं सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शाश्वत शांति मिले।

सृजना पौडेल, नेपाल

सुश्री सृजना पौडेल नारी चेतना केन्द्र, नेपाल की अध्यक्ष हैं।

- 139 -

विनम्र श्रद्धाजलि

पेड़ की जड़ें जमीन के अंदर होती हैं और फल बाहर लगते हैं, लेकिन क्या जड़ों के बिना फल लग सकते हैं?

फलों के लिये जड़ों का जो योगदान है वही योगदान मरुधर में वटवृक्ष की तरह पल्लवित ग्राविस के लिये हमारी परम सम्मानीय शशि बहिन का है। कोई ईश्वर की सत्ता पर विश्वास करे न करे किन्तु मेरे परिवार के लिये शशि बहिन मसीहा थी। मैं जब भी उनसे मिली, एक सकारात्मक ऊर्जा मेरे अंतर में प्रवाहित होती रही। मैं उस महान दिव्य आत्मा की सदैव ऋणी रहूँगी। उनके व्यक्तित्व की प्रशंसा कर पाना मेरे लिए गागर में सागर भरने जैसा है।

संगीता चतुर्वेदी

सुश्री संगीता चतुर्वेदी एक प्राध्यपिका हैं व शशि जी को लम्बे समय से जानती हैं।

मेरी शशि दीदी!

सभी लोग उन्हें आदर और स्नेह से शशि दीदी कहते थे औरों की तरह मैं भी उन्हें दीदी ही कहता लेकिन वो दीदी से ज्यादा मेरे लिए मातृस्वरूपा थी। मुझे पूरी तरह याद नहीं की पहली बार उनसे कब मिला लेकिन जब मैं एम्स, जोधपुर, पब्लिक हेल्थ कॉन्फ्रेंस में प्रस्तुत करने के सिलसिले में 4 दिन जोधपुर में रहा तो उस दौरान दीदी मिलने आई थी। हमने काफी बातचीत की। दीदी ने मुझे सिलिकोसिस की एक बैठक के लिए बुलाया और मैं उस बैठक में गया। सर्व सेवा संघ के वार्षिक अधिवेशन, मुज्जफरपूर के लिए हमने साथ यात्रा की और पूरे अधिवेशन में साथ रहा। गाँधी विचार युवा वाहिनी द्वारा आयोजित शांति सदभावना यात्रा जो दीदी के आशीर्वाद और विचारों से 11 फरवरी 2016 को आरम्भ हुई थी, के दौरान दीदी का सानिध्य और आशीर्वाद मिला। यात्रा राजस्थान के कई जिलों में चली। यात्रा जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर आदि कई जिलों के गाँवों, शहरों, कस्बों के स्कूलों, कॉलेजों, संस्थानों, संगठनों, मंदिरों, मस्जिदों और पंचायतों में लोगों के बीच गांधी विचार प्रवाह का सफल प्रयास था। यात्रा दीदी की संकल्पना और प्रयासों का प्रतिफल था।

गाँधी विचारों के प्रति उनकी अटूट आस्था उनकी पूंजी थी। जितनी ही वह सहज, सरल और कोमल हृदय वाली थीं उतनी ही उनकी विचारों और मूल्यों के प्रति निष्ठा मजबूत और दृढ़ थी। गाँधी, विनोबा के प्रति उनका समर्पण और सक्रियता के कारण हम सब युवा उनसे बंधे रहे और सक्रिय रहे। हमेशा कहती थीं बहुत काम करना है बापू का। गाँधी युवा विचार वाहिनी को लेकर खूब बातें करती थी। बहुत सारे सपने बुने थे उन्होंने, गाँधी विचार युवा वाहिनी के लेकर। लोगों में उनकी अगाध आस्था और प्रेम था और लोगों ने उन्हें उतने ही श्रद्धा और समर्पण के साथ सर माथे पर बैठा रखा था। मुझे याद है कि यात्रा के दौरान सुदूर एक गाँव के, एक स्कूल में जब हम पहुँचे तो बच्चों के साथ साथ बहुत सारे बुजुर्ग और महिलायें भी आयी थी। दीदी को देखते ही सबने उनको घेर लिया। कोई उन्हें गले लगाता, तो कोई उनका आशीर्वाद लेता। हाथ जोड़े कई बुजुर्ग महिलायें और पुरुष उनसे देर तक बातें करते रहे। वो सब का हाल चाल ले रही थी। उसी दौरान एक बुजुर्ग ने मुझसे कहा कि- “आपको पता है, दीदी ने हमारे बच्चों के जीवन के पांच साल बचा दिए”।

ये शब्द मुझे थोड़े अजीब से लगे। मैंने पूछा वो कैसे। गीली आँखों से उन्होंने बताया कि हमारे गाँव में स्कूल नहीं था। बच्चों को पढ़ने दूसरे दूर के गाँव में जाना पड़ता था। हम इतने दूर अपने छोटे बच्चों को नहीं भेज सकते थे। अक्सर 10-12 साल के बाद ही हमारे बच्चे स्कूल जा पाते थे। बालिकाएँ तो पढ़ ही नहीं पाती थी। एक बार दीदी हमारे गाँव आयी तो हमने उनसे बिनती की। दीदी ने हमारे गाँव के लिए एक स्कूल खुलवाया। अब हमारे बच्चे 5-6 साल की उम्र में ही स्कूल जाते हैं। बालिकाएँ भी पढ़ रही हैं। ये बातें करते करते उनका गला भर आया था। उन गीली आँखों में दीदी के प्रति जो कृतज्ञता, श्रद्धा और समर्पण मैंने महसूस किया

जीवन संदेश

वो आज भी मुझे याद हैं। यात्रा के दौरान दीदी का स्वास्थ्य ठीक नहीं था फिर भी वो काफी समय हमारे साथ रही। हमने निवेदन किया कि दीदी आप आराम करिये और अपने स्वास्थ्य को सम्भालिये। पर वो कहां मानने वाली थी।

पूरे गाँधी विचार परिवार में सभी की चिंता करती थीं। सबके सुख दुख की साथी थीं। उन्हें बस पता चल जायें कि कोई मुसीबत में हैं तुरंत बात करतीं, मदद करतीं। वो गाँधी विचार परिवार की आज की “बा” थीं। खुद को बहुत ही सौभाग्यशाली मैं मानता हूँ कि मुझे उनकी मातृ छाया में समय गुजारने का अवसर मिला, जिससे मैं बहुत कुछ सीख पाया। उनके स्नेह और आशीर्वाद का भागी बना इसके लिए सदैव ईश्वर के प्रति कृतज्ञता रहेगा।

मेरी बा को मेरा अश्रुपूर्ण नमन।

संजय राय, भारत

श्री संजय राय सामाजिक कार्यकर्ता व गाँधीवादी चिन्तक हैं व शशि जी को करीब से जानते थे।

- 141 -

प्रेरणा की विरासत

अगर मुझे किसी सबसे ज्यादा दयालु और परोपकारी, भद्र महिला का नाम पूछा जाए तो मैं बेझिझक श्रीमती शशि त्यागी जी का नाम लूँगा। मैंने उनसे लगभग 40 साल पहले उनके घर पर मुलाकात की थी, जब मैं एक मेडिकल छात्र था। मैं जेलू - गगाड़ी में त्यागी जी के प्रोजेक्ट को देखने के लिए अपने माता-पिता के साथ गया था। उस समय प्रकाश और उसकी बहिन शायद प्राथमिक स्कूल में थे। श्रीमती और श्री त्यागी जी दोनों बहुत ही ईमानदार और प्रेरणादायक लोगों के रूप में सामने आए और मैंने उनसे बातचीत का भरपूर आनन्द लिया, जो गाँव में उनके दृष्टि और विकास कार्यों के बारे में था। उस पहली मुलाकात के बाद मैंने शशि जी के साथ कई बार बातचीत की और उनकी परिवर्तनकारी भावना से मोहित हुआ। मैं यह कह सकता हूँ कि जिस जिजीविषा के साथ उन्होंने परियोजना क्षेत्र की परिकल्पना की, वह उनके समूह का कार्य लोगों के जीवन में एक बड़ा परिवर्तन लाता है। वह हमेशा मदद के लिए तैयार रहती थीं, यहाँ तक कि सबसे छोटे संभव तरीके से भी और हमेशा सुनने के लिए तैयार रहती थीं, अगर किसी के पास चर्चा करने के लिए कुछ भी होता था। मुझे यह भी पता चला कि वह आशावादी रूप से समस्याओं से सामना करती हैं और इस रवैये ने उनकी टीम में चुनौतियों को स्वीकार करने और आगे बढ़ने में मदद की। यह कुछ ऐसा है जो मैंने उससे सीखा है और इससे मैंने आँखों की देखभाल सेवाएं प्रदान करने के लिए अपनी खुद की यात्रा में पिछले कुछ वर्षों में अच्छा प्रदर्शन किया है।

शशि जी की स्पष्ट दृष्टि और जोधपुर के आसपास के ग्रामीण समुदायों के विकास के प्रति उनकी धुन और उत्साह संक्रामक थे, जिसने वास्तव में हजारों लोगों के जीवन को बेहतर बनाया। उनकी विरासत उन सभी को प्रेरित और मार्गदर्शित करती रहेगी, जिनके जीवन को उन्होंने छुआ।

संजीव देसाई, भारत

डॉ. संजीव देसाई वरिष्ठ नेत्र चिकित्सक हैं तथा ताराबाई देसाई आई हॉस्पिटल के प्रमुख हैं।

- 142 -

एक मुलाकात एक यात्रा की ओर ले गई

मेरी पहली मुलाकात शशि जी से 2015 में ट्रेन में हुई थी। मैं मंडोर एक्सप्रेस से दिल्ली जा रही थी व उसी ट्रेन में शशि जी से मुलाकात हुई। हमने साथ में खाना खाया व काफी बातें भी की। उस वक्त शशि जी ने अपने गैर सरकारी संगठन ग्राविस के बारे में बताया था व मैंने उनसे बोला था कि मैं कभी न कभी आपकी संस्था में जरूर कार्य करना चाहूँगी। हमने साथ में खूब सारी बातें भी की। तभी से हमारा मिलना जुलना शुरू हुआ।

एक ही मुलाकात में वे मेरी प्रेरणा बन गई। उनका आकर्षक व्यक्तित्व शालीनता, ऊर्जा, शिष्टाचार, सकारात्मक सोच और पूर्णरूप से आत्मविश्वास से परिपूर्ण था। ताजगी भरा चेहरा व कभी भी उनके चेहरे पर थकान की रेखाएं न दिखी।

मेरे परिवार में अचानक से एक बहुत बुरा वक्त आया, उन्होंने मुझे संभाला और साथ - साथ मेरे परिवार का साथ दिया। उन्होंने मुझे ग्राविस परिवार का हिस्सा बनाया।

शशि जी को मैं दिल से धन्यवाद अर्पित करती हूँ व शुक्रगुज़ार हूँ उन तमाम चीजों व बातों के लिए जो उन्होंने मेरे लिए किया। मैं यह विश्वास दिलाती हूँ कि मैं जब तक ग्राविस मैं रहूँगी पूरी ईमानदारी, वफादारी व पूरे साहस के साथ समय पर अपना कार्य करती रहूँगी।

“अगर कोई आपके साथ बुरा करे तो बदले में उस इंसान के साथ अच्छा करें, बुरे के साथ कभी बुरा नहीं बनना बल्कि अपनी अच्छाई से उसे अच्छा बनाना चाहिए।”

संजू सिसोदिया, भारत

सुश्री संजू सिसोदिया ग्राविस के साथ लगभग 5 वर्षों से कार्यरत हैं।

अपने समय की एक मिसाल

मैं क्षमा चाहूँगी कि शशि जी के बारे में लिखने में हमें देर हो गयी। सन् 1980 से ग्राविस के साथ काम करने पर भी हम शशि जी से सिर्फ दो या तीन बार सिएटल में मिल पाए। इसलिए हम यह विचार कर रहे थे कि हम जो लिखेंगे वह पुस्तक के लिए आपकी उम्मीदों के अनुसार होगा या नहीं। भारत में हुई उनकी श्रद्धाजलि सभा में हमने लोगो के विस्तृत विचारो को सुना-उन लोगो से जिन के लिए उन्होंने काम किया। इसलिए हम असमंजस में थे कि हमारा लेख उस स्तर का होगा या नहीं।

ग्राविस के साथ हम 30 वर्षो से भी ज्यादा समय से कार्य कर रहे हैं, फिर भी हम शशि जी से कम ही मिल पाए, जब वह सिएटल आयी थीं। जब भी हमारी बात होती, उनकी सच्चाई, लगन और कोशिशें जो उन्होंने अपने समाज और दूसरे संगठनों के साथ कीं, अपनी अमिट छाप हम पर छोड़ती थीं। जब भी उनके बारे में सोचते हैं, उनका मुस्कुराता चेहरा हमारे सामने आता है। सादी सी साड़ी पहने एक विशाल हृदय, जिन्होंने हजारों लोगो की मदद की, वे स्वार्थरहित और महान महिला थीं। वह जब भी बात करतीं सिर्फ उन लोगो की ही करती थीं जिनके लिए वह कार्य करती थीं। अपने समय की जीवित मिसाल। हम उन्हें बहुत याद करेंगे।

संतोष और प्राण वाही, यू.एस.ए.

श्रीमती संतोष और श्री प्राण वाही सिएटल में रहते हैं और पीपुल फॉर प्रोग्रेस इन इंडिया से जुड़े हैं।

जीवन भर का समर्पण

मुझे शशि जी से मिलवाया गया जब मैं 'आशा' संगठन से जुड़ा और ग्राविस का आशा में सम्पर्क केन्द्र बना। मेरी पहली ग्राविस यात्रा के दौरान 2008 में उनसे मिलने का पहला अवसर मिला। मुझे वास्तव में शशि जी के साथ गाँवों में हुई सभी यात्राओं में बेहद आनन्द मिला। वह ग्राविस के काम में सक्रिय रूप से शामिल थीं और व्यक्तिगत रूप से सभी लाभार्थियों को जानती थीं। शशि जी के स्थानीय समुदाय के साथ गहरे जुड़ाव और ज्ञान ने इसे एक सार्थक यात्रा बना दिया। ग्राविस के संस्थापक सदस्य के रूप में लगभग 3 दशकों से वह काम के साथ सक्रिय रही हैं। मुझे अभी भी याद है शशि जी किस प्रकार जमीनी स्तर पर जुड़ी हुई थीं। ग्राविस ने रेगिस्तानी समुदायों की सेवा व कल्याण की दिशा में कई तरह के काम किए हैं: स्वास्थ्य शिविर, टांका, जन मुद्दों पर आवाज उठाना, जल सुरक्षा, शिक्षा और बहुत कुछ। मैं

चकित था उनके स्थानीय संस्कृतियों की बारीकियों के ज्ञान व व्यक्तिगत स्तर पर सभी से उनके संबंध पर। दौरे के दौरान उन्होंने मिलने वाले टीम के हर व्यक्ति, हमारे ड्राइवर सबके प्रति जो गर्मजोशी दिखाई, वह हमारे लिए अद्भुत थी।

“मुझे याद है जब शशि जी 2015 में सिएटल आई थीं और एक प्रेरक भाषण में उनकी सामाजिक कार्य यात्रा के कुछ विवरण साझा किये थे। इस स्तर के सामाजिक बदलाव लाने के लिए उनके जैसे नेताओं की जरूरत होती है”। बिनय पाठक ने याद किया जो ‘आशा’ सिएटल के साथ लम्बे समय तक स्वयंसेवक रहे।

2015 में अपनी बात के दौरान अपनी यात्रा और अपने अनुभवों को साझा करते हुए, हम में से कई लोग उनकी विनम्रता और उनकी दुरुह सामाजिक यात्रा से अचंभित हुए कि किस प्रकार सामाजिक न्याय के लिए काम की शुरुआत और काम को आगे बढ़ाने में उन्हें कई कठिन व चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। सामाजिक न्याय और विकास के प्रति उनकी दृढ़ता, प्रतिबद्धता, धैर्य और आजीवन समर्पण ने एक उदाहरण खड़ा किया है जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देता रहेगा। हम शशि जी को याद करते रहेंगे और उनके काम में सहयोग करके तथा प्रेरणा लेकर उनका सम्मान करते रहेंगे।

संदीप नैन, यू.एस.ए.

श्री संदीप नैन एक इंजिनियर व पर्वतारोही हैं। सिएटल में रहते हैं तथा आशा फॉर एज्युकेशन से जुड़े हैं।

- 145 -

श्रीमती शशि त्यागी-एक प्रतिबद्ध सामाजिक कार्यकर्ता

श्रीमती शशि त्यागी जी एक प्रतिबद्ध सामाजिक कार्यकर्ता थीं, जिन्होंने पिछले चार दशकों से अधिक समय तक राजस्थान के मारवाड़ जैसे कठिन भौगोलिक क्षेत्र में गरीब एवं वंचित लोगों के उत्थान के लिये काम किया। शशिजी ने अपने स्वर्गीय पति श्री लक्ष्मीचन्द जी त्यागी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर गरीब महिला, पुरुषों की आजीविका एवं प्रबंध सामर्थ्य को बढ़ाने के लिये निरंतर प्रयास किया। मारवाड़ भौगोलिक दृष्टि से देश एवं राज्य का काफी कठिन (रेगिस्तान) क्षेत्र होने के बावजूद उन्होंने ग्रामीण विकास विज्ञान समिति (ग्राविस) के माध्यम से जल संरक्षण, महिला जागृति, स्वास्थ्य शिक्षण, प्राकृतिक संसाधन विकास, कृषि विकास एवं लोगों के जीवन से जुड़े अन्य विषयों के माध्यम से गरीबों, वंचितों के जीवन प्रबंध को सामर्थ्यवान बनाने के निरंतर प्रयास किये।

श्रीमती शशि जी, लक्ष्मी चन्द जी एवं ग्रामीण विकास विज्ञान समिति से हमारा सम्पर्क एवं

जीवन संदेश

संवाद 80 के दशक के प्रारम्भ से हुआ। 1983 के आस-पास की बात है, जब राजस्थान के अग्रणी स्वैच्छिक संगठनों की एक बैठक जयपुर में आयोजित हुई थी, जिसमें राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान हेतु कार्यक्रम बनाने एवं उनके संचालन के लिये “राजस्थान वॉलेन्ट्री हेल्थ एसोसियेशन” का गठन किया। इसी बैठक के दौरान सूचना मिली कि जोधपुर में कार्यरत ग्रामीण विकास विज्ञान समिति (ग्राविस) के जेलू -गगाडी स्थित केन्द्र पर स्थानीय निहित स्वार्थी लोगों द्वारा तोड़-फोड़ कर विरोध किया गया है। इस पर चर्चा के बाद सभी उपस्थित संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने तय किया सभी लोग जोधपुर जाकर ग्राविस के कार्यकर्ताओं एवं लोगों के साथ समय बितायेगे और जो भी आवश्यक हो, साथ देंगे।

इसी तरह 90 के दशक में भी राजस्थान में प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंध एवं विकास के साझा कार्यक्रम के माध्यम से हमारा ग्राविस के साथ संवाद एवं सम्पर्क जारी रहा। बाद में श्री लक्ष्मी चन्द जी के स्वर्गवास के बाद भी शशि जी के नेतृत्व में ग्राविस का काम निरंतर आगे बढ़ा और हमारा संवाद एवं सम्पर्क जारी रहा।

समाज में परिवर्तन एक निरंतर प्रक्रिया है। श्रीमती शशि त्यागी जी ने प्रतिबद्धता एवं मेहनत से मारवाड़ में जो अच्छे काम किये उन्हें ग्राविस एवं अन्य समान विचार के लोगों को आगे बढ़ाना चाहिये और जो कमियां रहीं उनसे सीखकर सार्वजनिक हित में नये सामर्थ्य से आगे बढ़ाना चाहिये। हमारे समाज में न्याय एवं सच्चाई के रास्ते पर चलना, मेहनत एवं ईमानदारी से काम करना और सबके लिये अमन की जरूरत हर समय रहती है।

हीरा लाल शर्मा, भारत

श्री हीरा लाल शर्मा एक जाने माने सामाजिक कार्यकर्ता व सहयोग संस्थान के संस्थापक हैं।

सेवा की परम्परा

शशि त्यागी जी एक समर्पित सामाजिक कार्यकर्ता और परिवर्तनकारी नेता थीं। तीन दशक से अधिक समय तक उन्होंने थार रेगिस्तान के लोगों के लिए सतत विकास लाने के लिए अथक प्रयास किया। उनके नेतृत्व में ग्राविस राजस्थान में अग्रणी गैर-लाभकारी संगठनों में से एक बन गया। शशि जी ने अपने शांत स्वभाव से खुद की एक अलग पहचान बनाई। थार रेगिस्तान काम करने के लिए एक जटिल व चुनौतीपूर्ण स्थान है। उन्होंने क्षेत्र के लोगों के साथ संबंध बनाए क्योंकि वो उन तक पहुँचीं, उनकी जरूरतों और चिंताओं को सुना और वर्षों तक उनकी भलाई के लिए अपनी प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया। उन्होंने सभी के उत्थान के लिए धर्म और जाति के भेदभाव के बिना काम किया। उन्होंने प्रशंसा पाने पर ध्यान केन्द्रित नहीं किया, भले

ही अपने जीवन के दौरान कई पुरस्कार अर्जित किए। अपनी सेवा के वर्षों के दौरान उनकी अति उत्साही प्रेरणा थार रेगिस्तान के लोगों के लिए सहयोगी रही।

शशि जी ने पूरे समाज के लिए उदाहरण स्थापित किया। वह सादगीपूर्ण, विनम्र और आडंबरहीन थीं। साझा उद्देश्य और संपर्क की भावना को बढ़ावा दिया, जिसने ग्राविस को काम करने की जगह के बजाय एक परिवार बना दिया। शशि जी ग्राविस के कर्मचारियों और क्षेत्र के लोगों के लिए एक आदर्श थीं - विशेषकर महिलाओं के लिए। गाँव की कई महिलाएं एक निर्भीक महिला के उदाहरण को देखकर खड़ी हुईं और अपने विचारों को सामने रखा और स्वयं सहायता समूह, ग्राम विकास समिति से जुड़ीं या एक स्वास्थ्य कार्यकर्ता बन गईं। उन्होंने अपने नक्शे कदम पर चलने के लिए कई लोगों को प्रेरित किया। इस अर्थ में शशि जी की उपलब्धि क्षेत्र की अनगिनत बालिकाओं और महिलाओं का सामाजिक उत्थान है।

ग्राविस में मेरे कार्य के वर्ष के दौरान शशि जी ने परिवार में मेरा गर्मजोशी से स्वागत किया, जैसा कि उन्होंने सभी स्वयंसेवकों और आगंतुकों के साथ किया। वह अक्सर मुझे अपने घर भोजन के लिए आमंत्रित करती थीं। एक स्वादिष्ट दिवाली की दावत विशेष रूप से मेरे मन में बसी हुई है। जब भी हम मिलते, वह मेरे साथ संगठन के निर्माण के शुरुआती वर्षों के बारे में कहानियाँ साझा करतीं। उन्होंने मुझे अपने शोध में मदद की, सवाल पूछे, और नए विचारों का खुलेपन से स्वागत किया। उनकी मुस्कान और हंसी अद्भुत थी और वह विनोदपूर्ण स्वभाव की थीं। उनके समर्थन ने मेरे अपने कैरियर को आगे बढ़ाने में भी मदद की। उन्होंने त्यागी जी के निधन के ठीक बाद सब काम संभाले, और वह पूरे संगठन के लिए एक मजबूत ताकत बनीं। शशि जी अक्सर चुपचाप काम करती थीं, लेकिन परिणाम परिवर्तनकारी होते थे। वह कुछ सरल सिद्धांतों के अनुसार रहती थीं: सभी व्यक्तियों के लिए सम्मान, दलितों के उत्थान और दूसरों की दैनिक सेवा में आनन्द के साथ काम करना।

हेडन कैंटर, यू.एस.ए.

डॉ. हेडन कैंटर 2005 – 06 में ग्राविस के साथ एक शोधकर्ता रहे तथा ग्राविस के लिए दो पुस्तकों के (द स्टोरी ऑफ ग्राविस व सिटिंग ऑन वन कारपेट) लेखक हैं। वर्तमान में स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में पढ़ाते हैं व ग्राविस यू.एस.ए. के बोर्ड सदस्य हैं।

हमारी यादें

हमें शशि जी से पहली मुलाकात याद है। हम सब एक छोटे से लॉन में बैठे थे और उनकी बातें सुन रहे थे - कहानियाँ और अनुभव। उन्होंने हमारे साथ एक कहानी साझा की - “जन्मदिन पर किसी जरूरतमंद व्यक्ति के साथ उपहार या आवश्यक वस्तुएं साझा करना।” हम इस बात से इतनी प्रेरित हुई थीं कि तब से हम पार्टियों में खर्च करने के बजाये अपने जन्मदिन पर जो भी हो सकता है, योगदान करने की कोशिश करते हैं। हमारे लिए वह रोल मॉडल हैं और वह हमेशा मार्गदर्शक रहेंगी। हमने उनसे बहुत कुछ सीखा है और हम अपने कार्य संबंधी और व्यक्तिगत जीवन में उन सभी सीखों को लागू कर रहे हैं। शशि जी के लिए हमारी ओर से कुछ यादें नीचे दी गई हैं

“युवा छात्र, विकास की पृष्ठभूमि से जुड़ी, पहली बार जोधपुर आई हैं। “आप के शब्द हमें सहारा देने वाले थे जिसने हमारा मनोबल बढ़ाया।

आप के शब्दों ने हमारी उत्सुकता कम की तथा हमें स्थिर किया। आपकी माँ जैसी उपस्थिति से हमें बहुत सहारा मिला।

शक्ति, साहस और प्रेम से पूर्ण एक महिला, जो सुन्दर, शांत व सरल थीं।

एक ऐसी महिला जिनकी हम प्रशंसा करते थे और उनमें माँ जैसी छवि देखते थे।

पित्र शशि जी - आपका प्रभाव हमारे दिल पर हमेशा रहेगा व अपकी प्रेरणा हमारे साथ लम्बे समय तक रहेगी।

मैं अपने जीवन में बहुत लोगो से मिली हूँ पर शशि जी से मिलना सर्वाधिक प्रेरणादायी रहा है। उनकी आँखों में एक विशेष चमक थी। उनका सेवा भाव, समर्पण अविश्वसनीय था। महिला सशक्तिकरण की वह एक अनूठी मिसाल थीं। उनसे मिलकर मुझे दिशा और प्रेरणा मिली।

एक महान् नेता, सामाजिक कार्यकर्ता, एक प्रेम करने वाली महिला व एक परिवर्तनकारी के रूप में शशि जी की हमेशा याद किया जाएगा।

धन्यवाद।

हेमलता यादव, मनीषा, तन्वी, भारत

लेडी इरविन कॉलेज, दिल्ली यूनिवर्सिटी की छात्राएं जो ग्राविस के साथ इन्टर्नशिप कर चुकी हैं।

शशि जी, एक मानवाधिकार समर्थक, एक मित्र और एक प्रेरणास्त्रोत

हमारे हैलपेज समूह को शशि जी के निधन की खबर सुन बहुत दुख हुआ। शशि जी एक अद्भुत महिला थीं, उनसे जो भी मिलता गहरे रूप से प्रभावित होता था। मुझे अच्छे से याद है जब मैं 2004 में त्यागी जी और शशि जी से पहली बार मिला था। त्यागी परिवार के एक पुराने मित्र एडुवार्डो क्लीन जो कि हैलपेज इन्टरनैशनल एशिया पैसिफिक के क्षेत्रीय प्रमुख हैं के अनुसार शशि जी और त्यागी जी एक दूसरे के पूरक थे और वह इससे बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने कहा कि दोनो अपने दैनिक जीवन में सच्चाई, सरलता और सेवा जैसे गांधीवादी सिद्धांतों को व्यक्त करते थे।

बहुत सारे मूल्यों का वो पूर्ण समर्थन करती थीं, जैसे कि - लैंगिक समानता, शिक्षा, सुख को भौतिकवादी वस्तुओं से न जोड़ना, योग्य बने रहना और दुनिया के लिए निर्णायक बने रहना - आज, कल और हमेशा।

वह एक सक्रिय महिला मानवाधिकार कार्यकर्ता थीं। सन् 2018 में हैलपेज को यह सम्मान प्राप्त हुआ कि वह हमारे साथ न्यूयार्क में यूनाइटेड नेशन्स अधिवेशन में वृद्धजनों का प्रतिनिधित्व करने गईं, जहाँ पर सरकारें मैड्रिड इन्टरनैशनल प्लान ऑफ एक्शन ऑन एजिंग, 2002 की प्रगति पर विचार विमर्श कर रही थीं। राजस्थान से न्यूयार्क की 24 घंटे की यात्रा के बाद भी वह हमेशा की तरह ऊर्जावान थीं। शशि जी वहाँ थार मरुस्थल में वृद्धजनों की समस्याओं को रखने गई थीं। उन्होंने अपना पूरा जीवन वृद्धजनों की भलाई के लिए समर्पित कर दिया। वह एक सुदृढ़ कार्यकर्ता थीं जिनमें महिलाओं और दलितों के साथ हो रहे भेदभाव को खत्म करने की प्रबल इच्छाशक्ति थी।

शशि जी एक परम्परा छोड़ गयी हैं। वह अपने समय से काफी आगे निकल गयीं और हर उम्र की महिलाओं, बालिकाओं तक के लिए प्रेरणास्त्रोत बनीं। उन्होंने सिखाया की दृढ़निश्चय से बदलाव लाया जा सकता है, बस उस पर विश्वास करने की आवश्यकता है।

शशि जी ने एक असाधारण जीवन व्यतीत किया। हम त्यागी परिवार के साथ अपना दुख साझा करते हैं और बहुत गर्व से कहते हैं कि हमने शशि जी से बहुत कुछ सीखा। हम हैलपेज इन्टरनैशनल में बहुत सम्मानित महसूस करते हैं कि हमने शशि जी के साथ काम किया। हम अपनी इस लम्बे समय से चली आ रही मित्रता को हमेशा याद करेंगे।

हैलपेज इन्टरनैशनल एशिया कार्यालय समूह, थाइलैंड

हैलपेज इन्टरनैशनल एक वैश्विक संगठन है जो वृद्धजनों के अधिकारों और कल्याण के लिए पूरे विश्व में काम करता है।

दीपावली : एक अविस्मरणीय प्रकाश शशि जी को याद करने के लिए : नवम्बर, 2020

दुनिया भर में भारतीय रोशनी के त्यौहार का जश्न दीवाली पर मनाते हैं। एक ऐसा प्रकाश है जो लोगों के जीवन में रोशनी लाता है, लोग जो सालों से एक-दूसरे से दूर हैं उस प्रकाश को याद करते हैं जो उन्हें कशमकश के दौर में या ज्ञान की खोज में साथ लाया। इस दीवाली को शशि त्यागी एक प्रकाश बन कर आकाश में चमक रही थीं। शशि ने आखिरकार ल्यूकेमिया के खिलाफ अपनी लड़ाई को समाप्त कर दिया।

मैं आमतौर पर एक सार्वजनिक मंच पर अपने व्यक्तिगत जीवन के बारे में चर्चा नहीं करता हूँ, लेकिन इस उल्लेखनीय परिवार के बारे में इस दृष्टिकोण को एक व्यक्तिगत स्पर्श की आवश्यकता है, जैसा कि आप मेरी कहानी में देखेंगे।

अगर मेरी याददाश्त सही है तो 1991 का समय था जब मैं पहली बार अपनी मित्र सुसाना निनिवारा के साथ भारत आया था और एक पत्रकार था। वह भी ताम्पेरे छात्र संघ के सहयोग से कुछ प्रकार की सहभागिता विकसित करने के लिए वहाँ थी। मैं निश्चित रूप से अपनी खुद की संस्कृति और भारत के रोमांच के बारे में थोड़ा और जानने की कोशिश कर रहा था। मैं आपको एक ऐसे तथ्य के बारे में बता सकता हूँ, जब मैं भारत से असहज था। जब मैं वहाँ पहुँचा तो मुझे यह अजीब, शोरमय, गंदा और अराजक लगा। मैं अपने जीवन में नहीं समझ सका कि इतने सारे लोगों के लिए एक देश में रहना कैसे संभव था।

हम अंततः ग्राविस से मिलने के लिए राजस्थान गए और ताम्पेरे विश्वविद्यालय के साथ कुछ सहयोग स्थापित किया। जब हम लक्ष्मी जी और शशि जी के साथ मिले तो पाया कि वातावरण शांति और सुकून से भरा था। हम कई दिनों तक आपस में बात करते रहे, जो आज के समय में दुनिया के लिए असंभव प्रतीत होता है क्योंकि लोग हमेशा व्यस्त होते हैं। मैं भारत से इस बार भी नाखुश सा गया। लेकिन सवाल के एक स्पर्श के साथ, जिनका जवाब अभी भी नहीं मिला था।

1991 के बाद हर साल मैंने धन बचाया और भारत की यात्रा की। यह सामुहिक मानवीयता के बारे में अधिक जानने की उत्सुकता थी जो लगता है कि इसकी कठिनाइयों की परवाह किए बिना जी रही है। वर्ष की यात्रा की शुरुआत और समाप्ति त्यागी जी के घर पर होती। हम कभी-कभी हफ्तों के लिए सिर्फ लोगों की चर्चा करते हुए बैठते थे कि वास्तव में विकास का मतलब क्या है? चर्चा का दायरा विस्तृत था, लेकिन व्यक्तिगत रूप से हमारा एक-दूसरे को समझने का प्रयास था कि हम कैसे देखते हैं, कि हम कैसे बातचीत करते हैं। यह वास्तव में मेरे लिए, एक 23 वर्षीय व्यक्ति के रूप में, चरित्र निर्माण का समय था। साल बीतते गए और एक-दूसरे के लिए प्यार मजबूत होता गया।

1992 में मैं भारत में था और त्यागी दंपति ने ताम्पेरे का दौरा किया। उस समय मेरा फिनिश अधिकारियों के साथ मतभेद और विशेष रूप से संस्थागत भेदभाव को ध्यान में रखते हुए एक मुद्दा चल रहा था। फिनलैंड के प्रवासी भी फिनिश समाज में इस संकट से लड़ने के लिए

एकीकृत नहीं थे। यह इस कारण था कि अप्रवासी बहुत ही विविध समूहों से थे और उनके पास केवल एक बात समान थी कि वे सभी फिनलैण्ड में अप्रवासी थे।

मैंने भारत के अपने दो करीबी मित्रों से पूछा कि मुझे क्या करना चाहिए? अप्रवासियों में कोई नेतृत्व नहीं था। लक्ष्मी जी ने मेरी तरफ देखा और कहा “अगर कोई नेतृत्व नहीं है तो नेतृत्व तो और संभालो, अगर तुम्हारी पहल और अधिकार सही जगह है तो लोग तुम्हारे साथ आएंगे और तुम्हारा समर्थन करेंगे, डरो मत।” उस चर्चा के बाद मैंने UPNEON (राष्ट्रीय समान अवसर नेटवर्क) नामक एसोसिएशन की स्थापना की। जीवन के सभी क्षेत्रों से प्रयासों का समर्थन करने के लिए चारों ओर से लोग आये। कई बार त्यागी दंपति ने मुझे मित्रवत सलाह दी और मुझे और अन्य लोगों को सक्रिय संघर्ष का रास्ता दिखाया।

नवम्बर 2000 में मेरी माँ की मृत्यु हो गई, मेरे पिता का नवम्बर 1994 में निधन हो चुका था। मैं ब्रसेल्स में एक संगठन में काम कर रहा था जिसकी मैंने अन्य समान विचारधारा वाले सहयोगियों ENAR (यूरोपीय नेटवर्क अगेस्ट नस्लवाद) के साथ सह-स्थापना की थी।

मेरे पिता और माँ दोनों की नवम्बर में मृत्यु के बाद से नवम्बर मेरा पसंदीदा महीना नहीं था। मैं अपनी माँ की अस्थियों को गंगा में विसर्जित करने के लिए भारत गया था। मैं खुश नहीं था, बेशक मेरी माँ गुजर गई थी, लेकिन दूसरा कारण ब्रसेल्स में काम के प्रति ब्यूरोक्रेट्स का स्वभाव था और सच में वास्तविकता में कुछ भी नहीं बदल पा रहे थे। मैं पूरे समय उदास रहता था।

मैंने शशि जी और लक्ष्मी जी से बात की और उन्होंने कुछ ऐसा कहा, जिसने मुझे छुआ और मेरी आँखों में आंसू आ गए। उन्होंने कहा “भारत आओ, तुम हमारे पुत्र की तरह रहो, हम तुम्हारा ध्यान रखेंगे। जिस भी कार्य में अपने आप को संलग्न करना चाहते हो, हम आपकी सहायता करेंगे।” सच कहूँ तो मुझे जीवन में किसी का भी बहुत कम सहारा मिला था और उन शब्दों को सुनने के बाद और उन्होंने इसे जिस तरह व्यक्त किया, मेरी आँखों में आंसू आ गए। यह वह वाक्य था जिसमें मैंने भारत जाने का फैसला किया था।

शशि जी और लक्ष्मी जी मेरे माता-पिता जैसे थे, वे सभी चीजें जो माता-पिता करते हैं, उन्होंने मेरे लिए कीं। मैंने अपने माता-पिता को खो दिया था, मैं भाग्यशाली था कि मेरे वयस्क जीवन का ख्याल रखने वाले दो और थे।

मैं अब 53 साल का हो गया हूँ, 30 साल पहले मैं इन दो अद्भुत लोगों से मिला और उनके सभी दोस्तों से जैसे डॉ. मोहनोत, राजेन्द्र जी और अनगिनत लोग जो आज मेरे परिवार का हिस्सा हैं। यह बस आश्चर्यजनक है और उनके जीवन का एक योगदान है कि हम में से बहुत से लोग उनके कारण आपस में जुड़े हुए हैं, और संकट के समय में दयालुता, प्रेम और समझदारी से हम अपने प्यार को दिखाने के लिए एक साथ हैं। शशि जी शांति में विश्राम करें, हम दूसरों को वही देते रहेंगे जो आपने हमें दिया था।

होसलो जीवा, स्विट्जरलैण्ड

श्री होसलो जीवा एक पर्यावरणविद हैं व ग्राविस व त्यागी परिवार के मित्र हैं।

सेवा की भावना

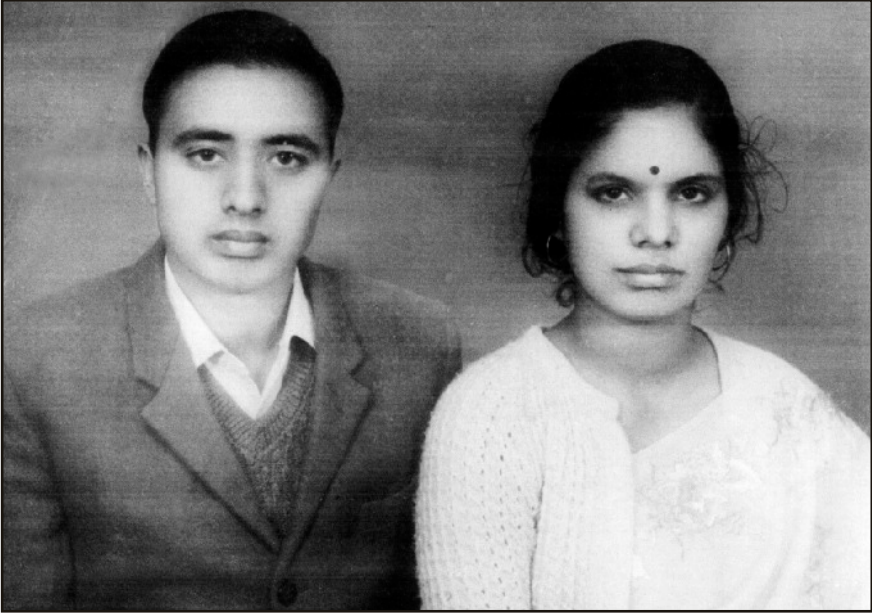
शशि जी को सब बहिन जी के नाम से संबोधित करते थे। वह ग्राविस का एक मजबूत स्तम्भ थीं। बहिन जी के मार्गदर्शन में ग्राविस ने प्रत्येक क्षेत्र में अत्यानुधिक, प्रशंसनीय कार्य किया जिसके लिए उन्हें सन् 2017 में जमनालाल बजाज पुरुस्कार से सम्मानित किया गया।

शशि जी से मेरा परिचय मई 2000 में हुआ था। उनका व्यक्तित्व उनके नाम के अनुरूप था—जैसे चांद शीतलता के साथ अपना प्रकाश एक समान भाव से चारों तरफ फैलाता है, उसी प्रकार उन्होंने अपना जीवन जरूरतमंदों के जीवन को प्रकाशमय करने में लगा दिया। उन्होंने ईमानदारी से गाँधी जी के सिद्धांतों व आदर्शों को अपनाकर उनका पूर्ण रूप से पालन किया। उन्होंने सदैव संस्था से जुड़े कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन एक माँ की तरह किया, जिस प्रकार एक माँ अपने बच्चों के गलती करने पर कभी उन्हें डांटती है तो कभी प्यार से समझाती हैं। उनका जुड़ाव संस्था से जुड़े कार्यकर्ताओं व ग्रामीणों के साथ सीमाबद्ध नहीं था बल्कि वह आत्मीय रूप से सबके दुख सुख में शामिल होती थीं। उनके मार्गदर्शन में राजस्थान के गाँवों में जरूरतमंदों की सहायता के लिए कार्य किया गया जिसमें बालिका शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी, पानी की समस्या इत्यादि कार्य किये गये जो क्षेत्र की गंभीर समस्याएँ थीं।

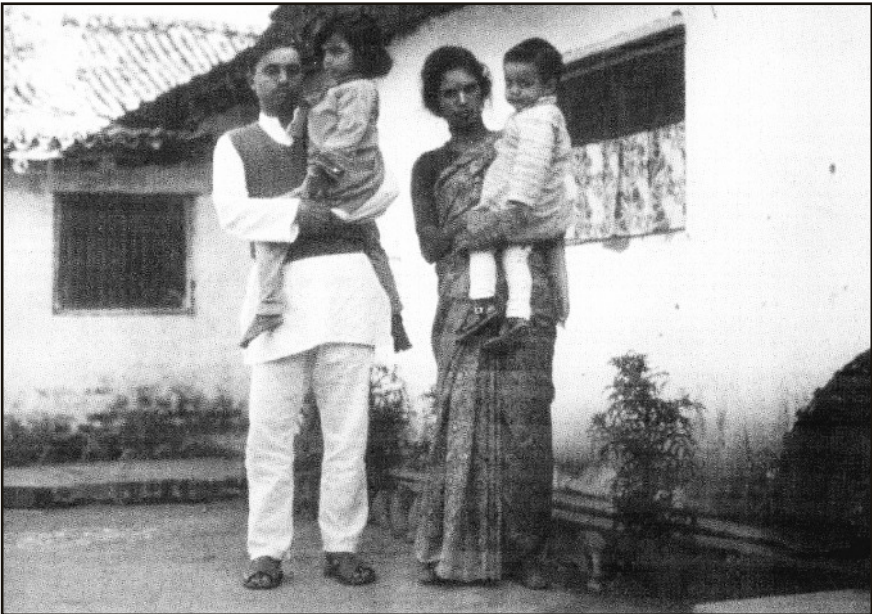
श्रीकांत, भारत

श्री श्रीकांत 20 वर्षों से अधिक से ग्राविस के साथ काम कर रहे हैं।

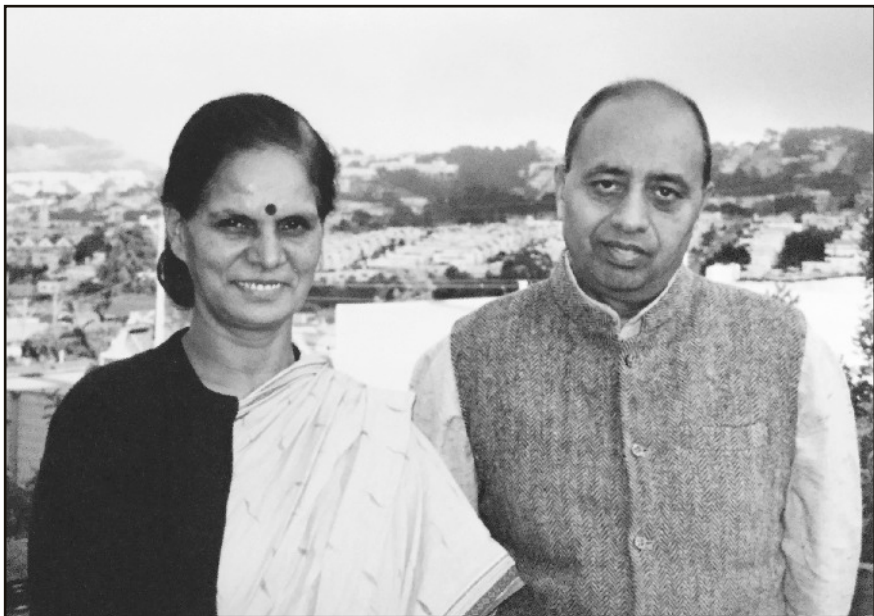
फोटो संकलन



शशि जी और त्यागी जी - युवावस्था के दिन



1970 के दशक में शशि जी व त्यागी जी अपने बच्चों के साथ



त्यागी दम्पति



एक गाँव में बच्चों के साथ



ग्राविस में हुए एक सम्मेलन के दौरान



ग्राविस कार्यकर्ताओं के साथ



ग्राविस के पुराने दिनों के समय की एक सभा में



ग्रामीण प्रतिनिधियों से मिलते हुए



एक कार्यशाला के दौरान सामूहिक फोटो



एक सर्वोदय सभा में बोलते हुए



ग्राम सभा को सम्बोधित करते हुए



संयुक्त राष्ट्र में एक सत्र के दौरान



एक कार्यक्रम में दीप प्रज्ज्वलित करते हुए, विशिष्ट अतिथियों के साथ



एक तालाब की खुदाई का उद्घाटन करते हुए



जमनालाल बजाज पुरस्कार पाते हुए



ग्रामीणों से बातचीत करते हुए



लंदन में त्यागी जी व पीटर सैडन के साथ



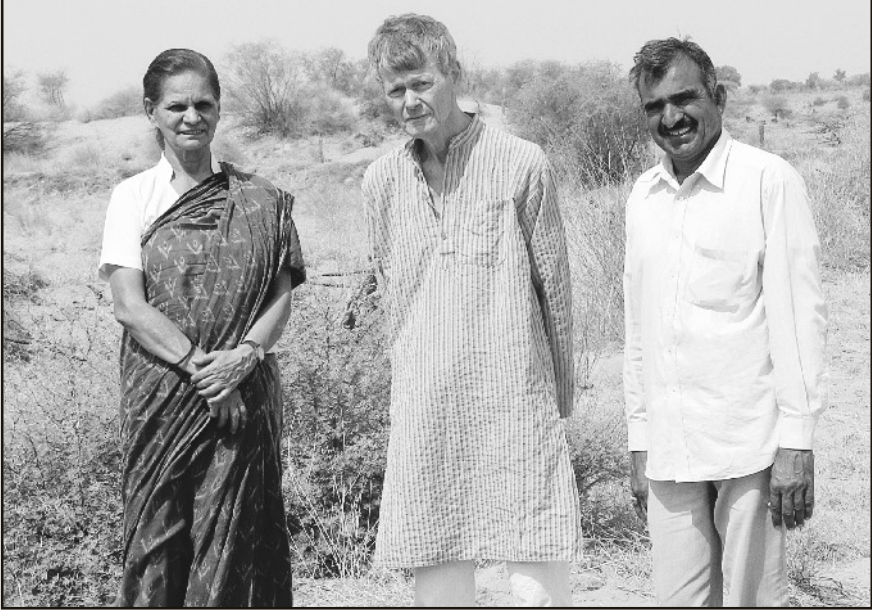
ग्रामीण महिलाओं के साथ



फिनलैंड में मारी कैरीनेन के साथ



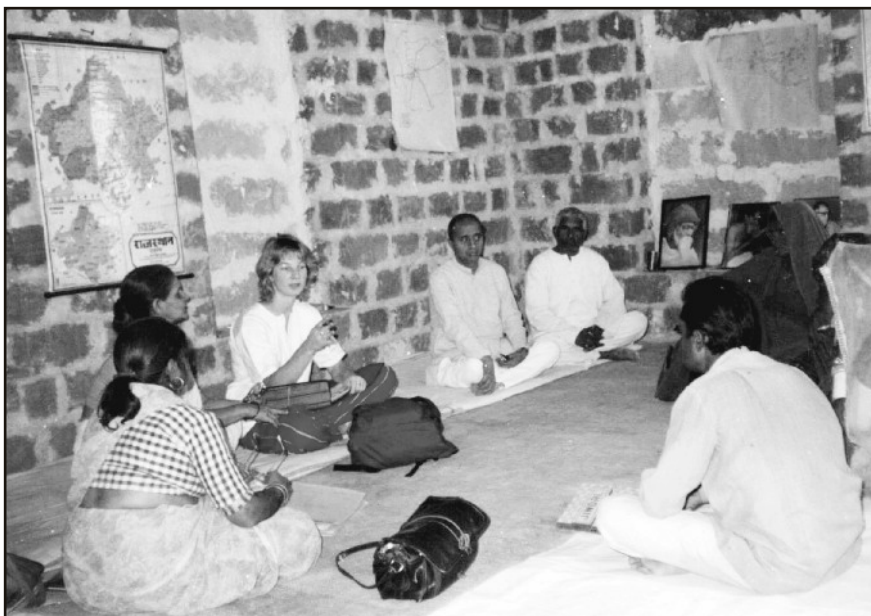
डॉ. निकोलस ग्रे एवं डॉ. वसुन्धरा के साथ इंग्लैंड में



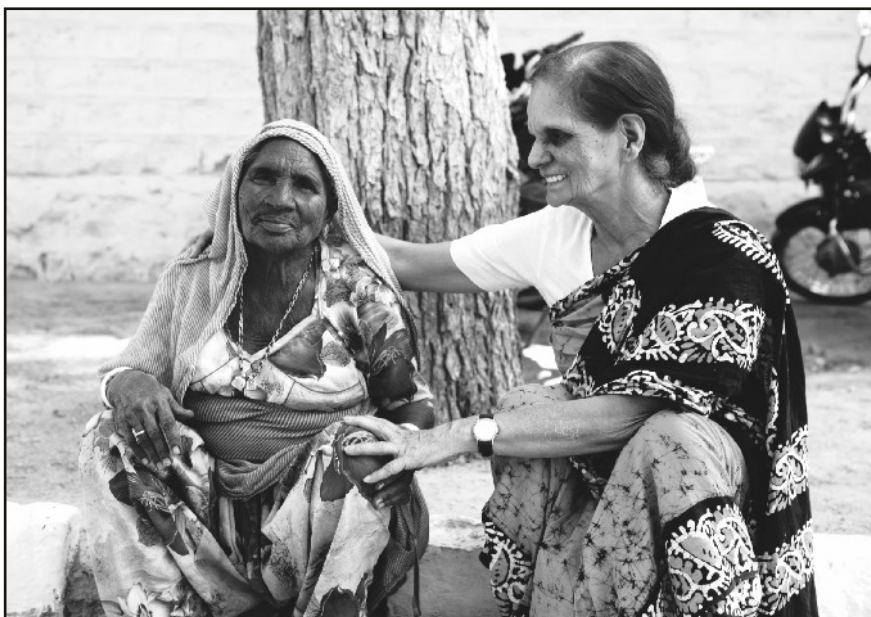
थार मरुस्थल के एक खेत का दौरा करते हुए



संयुक्त राष्ट्र, न्यूयार्क में वक्तव्य देते हुए



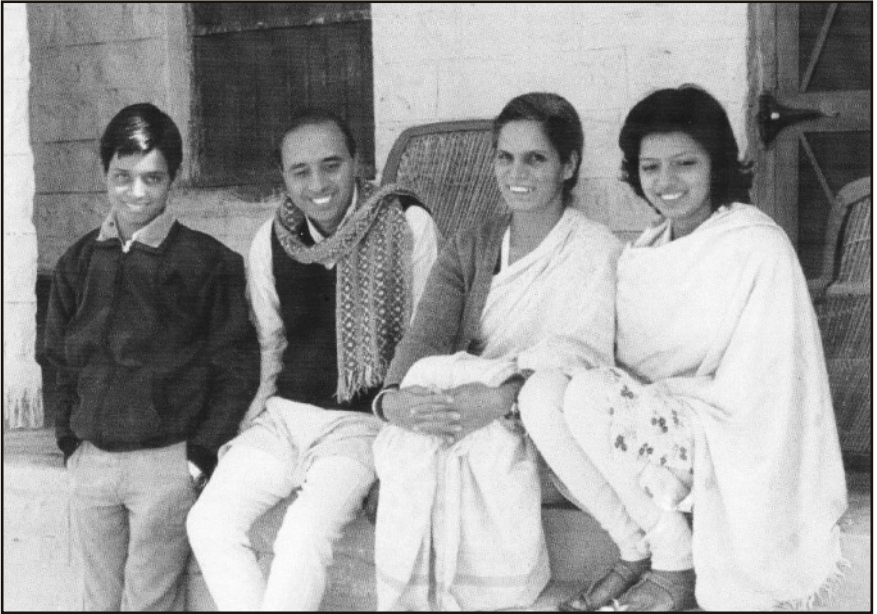
ग्राविस के रचनात्मक दिनों में



ग्रामीण समुदायों के साथ गहरा जुड़ाव



कैलिफोर्निया में रेनी टिलॉट्सन व अन्य मित्रो के साथ



एक पुरानी पारिवारिक फोटो



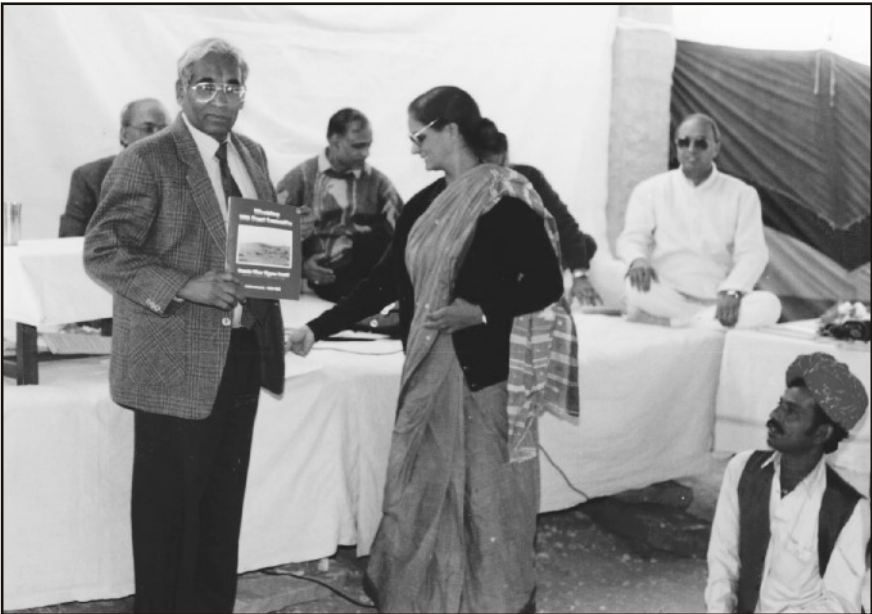
एक टांका लाभार्थी के साथ



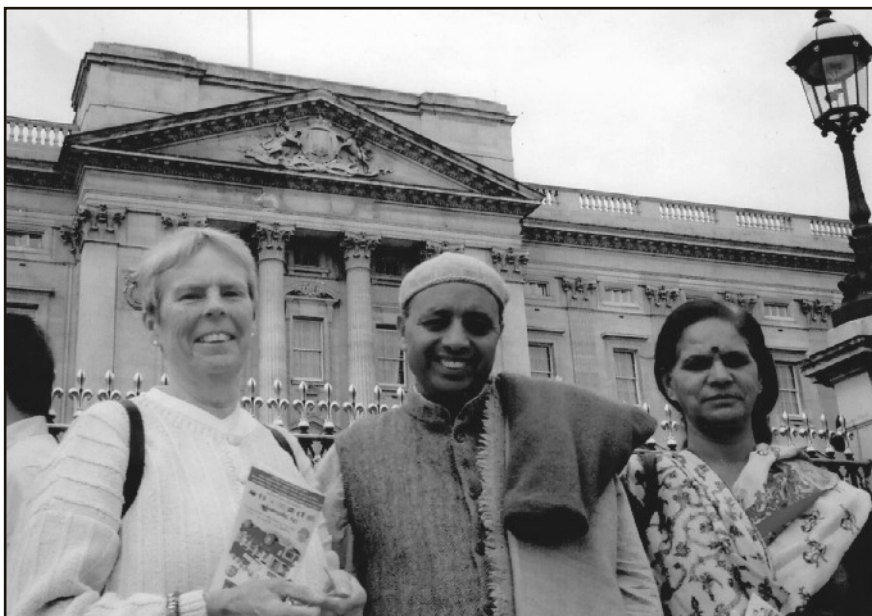
एक पुरस्कार समारोह में वक्तव्य देते हुए



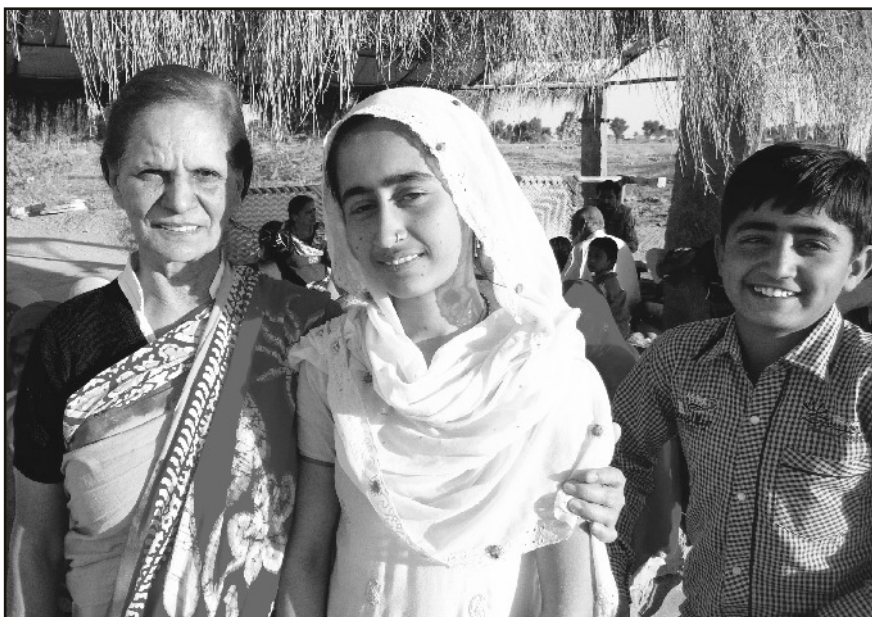
पीपल फॉर प्रोग्रेस इन इंडिया (पी.पी.आई.) के अतिथियों के साथ



1990 के दशक में श्री एम.एल.मेहता के साथ



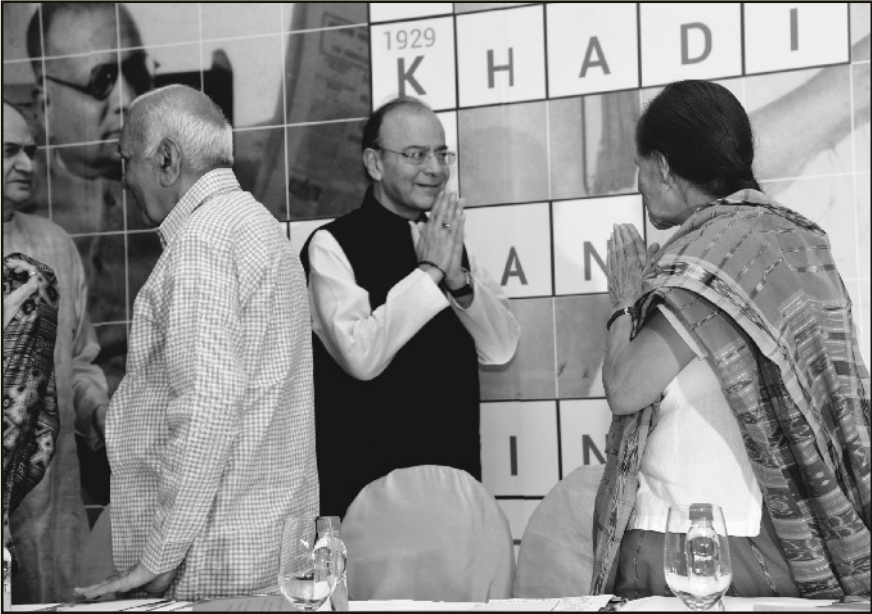
पुरानी मित्र वैरानिका सैडन के साथ



गाँव के बच्चों के साथ



पोतियों – काश्वी और प्रीशा के साथ



पूर्व वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली से मिलते हुए



स्वीडन के रॉबर्ट व घिसलेन के साथ एक गाँव में



वैल्स फॉर इंडिया के मित्रों के साथ श्री एडवर्ड एचलिन की स्मृति में वृक्षारोपण



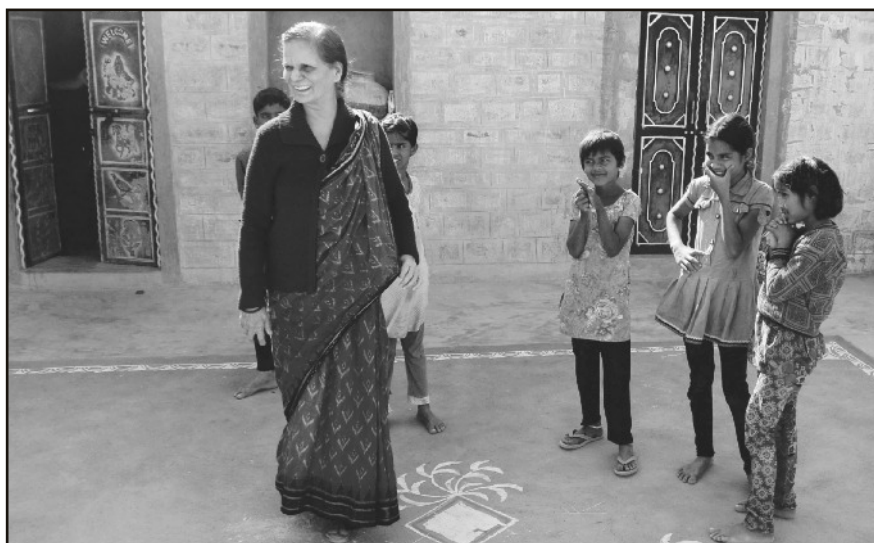
एक खेत में ग्रामीण महिला के साथ



युवाओं को सम्बोधित करते हुए



हल्के क्षण



बच्चों के साथ



बालिकाओं को साईकिल वितरण करते हुए



वृद्ध महिला का सम्मान करते हुए



केरल में बाढ़ राहत कार्यक्रम



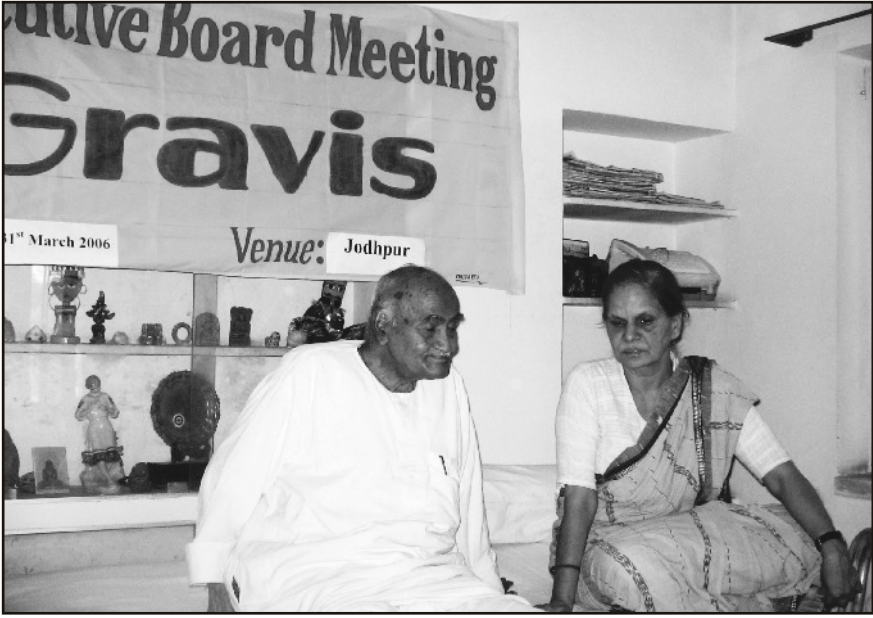
जल सम्मेलन के दौरान



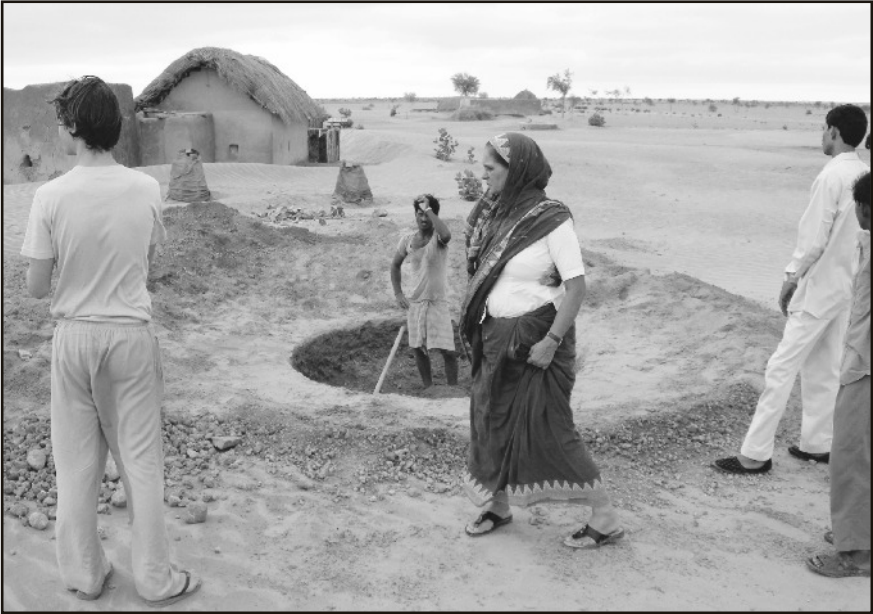
स्कूली बच्चों के साथ



डॉ. रागिनी प्रेम के साथ महिलाओं को सम्बोधित करते हुए



बंधु जी के साथ



क्षेत्रीय कार्य का अवलोकन

योगदानकर्ताओं की सूची

योगदानकर्ताओं की सूची

क्र.सं.	नाम	देश
1.	अखेराज खत्री	भारत
2.	अर्चना कुमार	भारत
3.	अभय कुमार एस. वायल	भारत
4.	अमरनाथ भाई	भारत
5.	अरुण त्यागी	भारत
6.	अरुण परिहार	भारत
7.	अवधेश कुमार	भारत
8.	अवधेश कुमार पाण्डे	भारत
9.	अशोक चौधरी	भारत
10.	अहमदुल्लाह मोलाखाइल	अफगानिस्तान
11.	आभा शर्मा	भारत
12.	आशा बोथरा	भारत
13.	इमके फ्रॉडरमैन और राल्फ लैंग	जर्मनी
14.	एकता त्यागी	भारत
15.	एंजेला हगेट और जॉन विलिस	यू.के.
16.	एम्ब्रोस सैडन	यू.के.
17.	एलिजाबेथ कुरियन	भारत
18.	एलिसन मैककॉल	न्यूजीलैंड
19.	ओम प्रकाश शर्मा	भारत
20.	क्लिफ, रेनी और संध्या टिलोट्सन	यू.एस.ए.
21.	किशोर कुमार व्यास	भारत
22.	कृष्णा जोशी	भारत
23.	कोनी मेरी	यू.एस.ए.

जीवन संदेश

24	कल्याण सिंह	भारत
25	कानाराम	भारत
26	गणपत लाल मेहरा	भारत
27	गिरजा शंकर गिरी	भारत
28	गुलाम अली	भारत
29	गैरी वर्थिंगटन, सैड्रा वर्थिंगटन	यू.एस.ए.
30	गॉडफ्रेड पॉल	म्यांमार
31	गौतम के. गट्स	भारत
32	चंदन पाल	भारत
33	जगदीश मेघवाल	भारत
34	जयपाल सिंह	भारत
35	जस्सा राम कडेला	भारत
36	जुस्सी नूसीआइनेन	फिनलैंड
37	जसदीप गरचा	यू.एस.ए.
38	जिनी श्रीवास्तव	भारत
39	जेन कैटहुरे बाइसहारा	केन्या
40	जेनी टिपर और डेविड कॉर्क	कनाडा
41	जे. पी. गुप्ता	भारत
42	जैरी फोलैंड	यू.एस.ए.
43	जॉर्ज सैन्टियागो एस.	मेक्सिको
44	डेनिस बैरो	यू.के.
45	तेज करण रतनू	भारत
46	थाउजेंट करट्स टीम	यू.एस.ए.
47	दिग्विजय सिंह	भारत
48	दिनकर चौधरी	भारत
49	दिनेश कुमार त्यागी	भारत

योगदानकर्ताओं की सूची

50	धर्मवीर कटेवा	भारत
51	धरमाप्रिय वेसुमपेरुमा	ऑस्ट्रेलिया
52	नरेन्द्र सिंह	भारत
53	निकोलस ग्रे और प्रो. मैरी ग्रे	यू.के.
54	निरु हजारिका	भारत
55	पदमजा शर्मा	भारत
56	पवन भार्गव	भारत
57	प्रताप नारायण त्यागी	यू.के.
58	पृथ्वीराज शर्मा	यू.एस.ए.
59	फराह खान	भारत
60	फादिल्लाह हानुम	इंडोनेशिया
61	फूसराज छलाणी	भारत
62	फैम थी होई जिआंग	वियतनाम
63	बाबूलाल लखानी	भारत
64	बिर्नोय आचार्य	भारत
65	बैट्रीस सैडन	यू.के.
66	बेगी सुखानी	भारत
67	बेन फॉल्क	यू.एस.ए.
68	बेन सोल्टोफ	यू.एस.ए.
69	भँवर सिंह चंदाणा	भारत
70	भाई खान	भारत
71	भूराराम देवासी	भारत
72	महितोष बागोरिया	भारत
73	महिपाल सिंह	भारत
74	महेन्द्र राजपुरोहित	भारत
75	माइकल गोल्डमैन	यू.एस.ए.

जीवन संदेश

76	मुहम्मद शफी बोइखान	पाकिस्तान
77	मारी करीनेन	फिनलैंड
78	मीनल बजाज	भारत
79	मीरा शिवा	भारत
80	मृदुला सामवेदी	भारत
81	महेश पनपालिया	भारत
82	मैक्स विल्सन	यू.के.
83	मैथ्यू चेरियन	भारत
84	मैरी ताल	दक्षिणी अफ्रीका/कैमरून
85	मंजूलता मिश्रा	भारत
86	येशिका वीरासेकरा	यू.एस.ए.
87	योलान्डा वेल्डिंग	नीदरलैंड
88	आर.पी.धीर	भारत
89	आर.एस. चतुर्वेदी	भारत
90	रणवीर सिंह	भारत
91	रमाकांत राय	भारत
92	रमेश चंद शर्मा	भारत
93	रमेश परिहार	भारत
94	रमेश बाबू वी	भारत
95	रवि कमल	भारत
96	रवि कुमार	भारत
97	रहीम खान	भारत
98	राकेश कुमार कौशिक	भारत
99	राजकमल पारीक	भारत
100	राजू अग्रवाल	कनाडा
101	राजेन्द्र कुमार और चन्द्रावती	भारत

योगदानकर्ताओं की सूची

102	राधा भट्ट	भारत
103	राम अकबाल सिंह	भारत
104	राम अवतार सिंह	भारत
105	रामबाबू भट्ट	भारत
106	राम स्वारथ प्रसाद	भारत
107	राहुल मिश्र	भारत
108	रीना चौहान और मीनेश पटनी	यू.के.
109	रुचि मित्रा	भारत
110	रेवरेंड जीन बोल्टन रेनॉल्ड्स	यू.के.
111	रोशन लाल कुकरेती	भारत
112	रॉबर्ट और घिसलेन एफ सैन्डबर्ग	स्वीडन
113	लीला बाई	भारत
114	लौरा पॉलस	बेल्जियम
115	वरुण शर्मा	भारत
116	विकी रेनॉल्ड्स	यूके
117	विनोद कुमार	भारत
118	विभा प्रेम	भारत
119	विवेक सामाजिक यायावार	ऑस्ट्रेलिया
120	विशाल जैन	भारत
121	वीणा माथुर	भारत
122	वंदना दाते और सतीश थट्टे	यू.एस.ए.
123	वंदना सिंह	यू.एस.ए.
124	शरद जैन	भारत
125	शिमोगा श्रीनाथ	यू.एस.ए.
126	शीरीन आरेन्ट	यू.एस.ए.
127	सलेम एन. सुब्बाराव	भारत

जीवन संदेश

128	सुरेन्द्र एम.मोहनोत	भारत
129	सतु रान्ता तुर्को	फिनलैंड
130	सद्भावना भारद्वाज	इटली
131	सवाई सिंह	भारत
132	सारा हॉब्सन	यू.एस.ए.
133	सारी नूसीआइनेन	फिनलैंड
134	सिमरथा राम पथिक	भारत
135	सी. पी. संचेती	भारत
136	सुनील त्यागी	भारत
137	सूसन कान	यूएस
138	सृजना पौडेल	नेपाल
139	संगीता चतुर्वेदी	भारत
140	संजय राय	भारत
141	संजीव देसाई	भारत
142	संजू सिसोदिया	भारत
143	संतोष और प्राण वाही	यू.एस.ए.
144	संदीप नैन	यू.एस.ए.
145	हीरालाल शर्मा	भारत
146	हेडन कैन्टर	यू.एस.ए.
147	हेमलता यादव, मनीषा, तन्वी	भारत
148	हैल्पेज इन्टर नैशनल एशिया कार्यालय समूह	थाईलैंड
149	होसलो जीवा	स्विट्ज़रलैंड
150	श्रीकांत	भारत

अंतिम शब्द

पाठक संभवतः शशि जी की स्मृति में इन आलेखों को पढ़कर भावुक व प्रसन्न होंगे। उन्होंने अपना पूरा जीवन सम्पूर्ण सादगी में बिताया और उनका एक मात्र ध्येय ग्रामीणों व वंचितों की सेवा करना रहा।

यह प्रसन्नता की बात है उनके द्वारा रचित संस्था ग्राविस सक्रिय रूप से कार्यरत है व भविष्य में भी प्रयासरत रहेगी।

आप सभी ग्राविस से व ग्रामीण समुदायों से किसी ना किसी रूप से जुड़े होंगे। यदि आप अपना जुड़ाव बढ़ाना चाहें तो आप ग्राविस से सम्पर्क कर सकते हैं। इस प्रकार शशि जी की विचारधारा व कार्यो का विस्तार होगा। ग्राविस की वेबसाइट - www.gravis.org.in व ग्राविस का ईमेल - email@gravis.org.in है।

आप सभी को इस विश्व में शांति और विकास के लिए आपके समस्त प्रयासों के लिए सादर धन्यवाद।

शुभकामनाएं।

शशि त्यागी, जिन्हें आदर से शशि जी कहा जाता था, एक प्रख्यात सामाजिक चिन्तक, एक महिला अधिकार कार्यकर्ता, एक विकासवादी व ग्राविस की संस्थापिका थीं। ग्राविस देश की प्रमुख गैर सरकारी संस्थाओं में से एक है जो लगभग 15 लाख ग्रामीणों के लिए कार्यरत है। शशि जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन मानवता की सेवा में समर्पित किया तथा शांति, समानता और सौहार्द का प्रसार किया। शशि जी के कार्यों का प्रभाव भारत में तथा उनके मित्रों के विचारों के माध्यम से विश्व के कई भागों में देखा जा सकता है। रक्त कैंसर से जूझने के बाद 14 नवम्बर, 2020 को उनका निधन हुआ और वे अपने पीछे प्रेम, करुणा और सेवा की एक अनमोल धरोहर छोड़ गईं।

ग्राविस